जाओ और शिष्य बनाओ

शिष्यता का प्रारम्भ

भाग 2

द्वारा

डोटा

मैनुएल 2

समूह के अगुवों के लिए

तीसरा संस्करण

परिचय

क्या आप यीशु मसीह के शिष्य के रूप में बढ़ना चाहते हैं?
क्या आप दूसरे विश्वासियों की बढ़ने में मदद करना चाहते हैं?

तब आप **शिष्य निर्माण करने के सम्बन्ध में अगुवों के चार मैनुएल** का अध्ययन, तथा प्राप्त शिक्षाओं का अभ्यास ज़रूर करें।
जिसे आगे को : मैनुएल 1–4 पुकारा जाएगा।

यीशु ने चेले बनाए। उसने लोगों से कहा, ''आओ और देखो' और ' मेरे पीछे हो लो' (यूहन्ना 1:39,43)। और हर जगह पर लोग यह ही देखने के लिए आते हैं कि उसने किस प्रकार को जीवन व्यतीत किया और किस कारण उसने अपने प्राणों की कुर्बानी दी। संसार भर के सभी राष्ट्रों में लोग उसकी विशेषताओं और उसके कामों के कारण ही उसका अनुसरण करते हैं। उसने उनके जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है। उसने हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है।

बाद में यीशु ने प्रार्थना के साथ बारह लोगों को चेला बनाने तथा उन्हें तैयार करने के लिए चुना। वह चाहता था कि वे प्रगतिशाील अगुवे 'उसके साथ' समय बिताएं, उसकी बातों को सुने तथा उसके जीवन को ध्यान से देखें, उसके जीवन तथा उसकी सेवकाई का अनुसरण करें(मरकुस 3:13–15)।
दो वर्षों के बाद यीशु ने अपने चेलों को लक्ष्य सौंपा ''जाओ और सारी जाति के लोगों को चेला बनाओ''(मत्ती 28:18–20)। और उन्होंने जाकर यरूशलेम से लेकर जगत के छोर तक के लोगों को अपना शिष्य बनाया। ये चेले उनकी बारी आने पर और भी अनछुए इलाकों तक गये और उन्होंने अन्य चेले बनाये। जो कुछ उन्होंने सीखा था वह दूसरों को भी सिखाया (2 तीमुथियुस 2:2)। अतः यीशु मसीह के चेले वर्तमान में सारे देशों में नये शिष्यों को बना रहे हैं।

प्रेरित पौलुस बताते हैं कि यीशु मसीह ने खास मसीहियों को एक काम दिया है।

> ''जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया
> जाए और मसीही की देह उन्नति पाए।'' (इफिसियों 4:11–16)

चार मैनुएल का उददेश्य मसीही समूह के अगुवे की उसकी देख रेख में रहने वाले दूसरे मसीहियों की यीशु मसीह का चेला बनाने में सहायता करना है।'एक चेला या शिष्य' परिपक्व मसीही होता है।

यह पाठयक्रम समूह के अगुवे को निम्नलिखित बातों के देने के द्वारा शिष्यों के प्रशिक्षण को प्रयोगात्मक बनाता है:
1.प्रत्येक मैनुएल में बारह अध्याय होते हैं जिन्हें तीन माह के अन्तराल में समाप्त किया जा सकता है।
2. बाइबल के महत्वपूर्ण हवाले विद्यार्थियों की मसीह व बाइबल को जानने में सहायता करते हैं।
3. समूह के अगुवे दिये गये प्रश्नों का उपयोग करें तथा विद्यार्थियों से चर्चा करने से पहले बाइबल के अनुच्छेद को पढ़ने के लिए बोलें।
4. अध्ययन सामग्री में हर एक प्रश्न के लिए संक्षेप में उत्तर दिये गये हैं। इसके द्वारा अगुवे को मार्गदर्शिका प्राप्त होती है।
5.प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों के साथ मिलकर अनुशासन के व्यवहारिक तरीकों का अभ्यास करना सिखाता है।
6.हर एक अध्याय में घर पर तैयार करने के लिए कुछ गृहकार्य होता है, जिसे विद्यार्थियों को दिया जाता है।
7.प्रशिक्षण कार्यक्रम दूसरों तक आगे बढ़ाने के लिए सहज है। 12 अध्याय के इस कोर्स को समाप्त कर लेने के बाद, जो विद्यार्थी दूसरे लोगों के छोटे समूह में इस शिक्षा को बांटेगें, उन्हें अगुवों के लिए तैयार किये गये मैनुएल की एक प्रति दी जाएगी।

हमारी यह प्रार्थना है कि परमेश्वर आपके क्षेत्र में शिष्यों के संख्या को तेज़ी से बढ़ाए और बहुत से लोग यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले हो सकें (प्रेरितों 6:7)।

सारी बातों में परमेश्वर को महिमा मिले! 'क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानयुग होती रहे: आमीन।''(रोमियों 11:36)

डोटा (शिष्यता प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रसारण। यह नाम उस समय की याद दिलाता है जब यह प्रशिक्षण कार्यक्रम केवल रेडियो में ही प्रसारित किया जाता था)
1994 (प्रथम संस्करण)
2009 (तीसरा संशोधित संस्करण)

सर्वाधिकार

चारों मैनुएल के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। उन्हें प्रशिक्षण के लिए निःशुल्क नकल किया जा सकता है, लेकिन उन्हें बिना लिखित अनुमति के बेचा या किसी दूसरी भाषा में अनुवाद नहीं किया जा सकता।

सिफारिश

इस सामग्री को बहुतायत से इस्तेमाल करने तथा लोगों को आशीषित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। लेकिन क्योंकि इन चारों मैनुएल का उद्देश्य मसीहियों को तैयार या प्रशिक्षित करना है, इसलिए यह सुझाव दिया जाता है कि शिष्य प्रशिक्षण कार्यक्रम के अगुवे जिनती ज़रूरत हो उतनी की प्रतियां बनाएं। जब कोई विद्यार्थी बारह अध्यायों के कोर्स को समाप्त कर ले तब ही उसे मैनुएल की एक प्रति दी जाए और तब ही वह किसी दूसरे व्यक्ति या छोटे समूह को इस कार्यक्रम की शिक्षा दे सकता है।

विषय सूची

समूह के अगुवों के लिए मैनुएल 2

शिष्यता का प्रारम्भ–भाग 2

परिचय व सर्वाधिकार

प्रशिक्षण कार्यक्रम 1

तीन माह के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम। सप्ताह में डेढ़ से लेकर 2 धण्टे के लिए। समूह 3–10लोगों तक का ही हो। प्रत्येक कार्यक्रम प्रार्थना के साथ शुरू होकर गृहकार्य देते हुए प्रार्थना के साथ ही समाप्त होता है।

अध्याय 13 — आराधना (परमेश्वर ही एकमात्र परमेश्वर व उद्धारकर्ता है।)
परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (यूहन्ना 15:1–18:27)
शिक्षा(फल लाना। सुसमाचार तथा अपनी गवाही बांटना)

अध्याय 14 — परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (यूहन्ना 18:28–21:25)
याद करना (मसीह : 2 कुरिन्थियों 5:17)
बाइबल अध्ययन (मसीही प्रेम। 1 कुरिन्थियों 13:1–13)

अध्याय 15 — आराधना
परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (प्रेरितों 1:1–3:10)
शिक्षा (मसीही चरित्र। मसीही आत्म–सम्मान)

अध्याय 16 — परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (प्रेरितों 3:11–7:60)
याद करना (वचनः मत्ती 4:4)
बाइबल अध्ययन (मसीही मित्रत्रा। यूहन्ना 15:13–15)

अध्याय 17 — आराधना (परमेश्वर विश्वासयोग्य है)
परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (प्रेरितों 8:1–11:18)
शिक्षा (स्त्री व पुरूष के बीच सम्बन्ध)

अध्याय 18 — परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (प्रेरितों 11:19–14:28)
याद करना (प्रार्थना 15:7)
बाइबल अध्ययन (विपरीत लिंग वालें लोगों के साथ मसीहियों का सम्बन्ध :1 थिस्लुनिकियों 4:1–8)

अध्याय 19 — आराधना (परमेश्वर सिद्ध है)
परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (प्रेरितों 15:1–18:17)
शिक्षा (प्रभुता। मसीही प्राथमिकता)

अध्याय 20 — परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (प्रेरितों 18:18–21:40)
याद करना (संगतिः 1 यूहन्ना 1:7)
बाइबल अध्ययन (मसीही विवाह। इफिसियों 5:22–33)

अध्याय 21 — आराधना (परमेश्वर महान व रचनात्मक है)
परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (रोमियों 1–4)
शिक्षा (पवित्र आत्मा। पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व व उसके कार्य)

अध्याय 22 — परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (रोमियों 5–8)
याद करना (गवाही देनाः मत्ती 10:32)
बाइबल अध्ययन (मसीही परिवार। इफिसियों 6:1–4)

अध्याय 23 — आराधना (परमेश्वर अनुग्रहकारी है)
परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (रोमियों 9–12)
शिक्षा (शिष्यता। शिष्य की विशेषताएं)

अध्याय 24 — परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (रोमियों 13–16)
याद करना (श्रृंखला का पुनरावलोकनः मसीह में नया जीवन)
बाइबल अध्ययन (असमान जुआ– सम्बन्ध 2कुरिन्थियों 6:14–7:1)

परिशिष्ट 8 — परमेश्वर। परमेश्वर का स्वभाव व परमेश्वर का पुत्र
परिशिष्ट 9 — पवित्र आत्मा। पवित्र आत्मा मसीहियों के परेशानियों में उन्हें सम्भालता है।
परिशिष्ट 10 — मसीही चरित्र। जीभ द्वारा चुगली व संयम
परिशिष्ट 11 — शिष्यता। शिष्यता कार्यक्रम में व्यवहारिक तरीकों के इस्तेमाल करने का लाभ।
परिशिष्ट — परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताने, बाइबल अध्ययन करने, मनन व वचन याद करने का तरीकाः समूह के अगुवों के लिए मॅनुएल 1 में परिशिष्टों को देखें

प्रशिक्षण कार्यक्रम 2

गहन कार्यक्रम का इस्तेमाल सप्ताह में एक बार पूरे दिन या 6 दिन के गहन प्रशिक्षण सेमीनार के दौरान किया जा सकता है। पूरे समूह को प्रशिक्षित समूह अगुवे के साथ छोटे समूहों में बांट दें। समूह को 3–10 लोगों के बीच ही सीमित रखें।

सुझावित कार्यक्रम

09.00–09.30	आराधना (सामुहिक)
09.30–11.00	शिक्षा (सामुहिक)
	अन्तराल
11.30–13.00	बाइबल अध्ययन (सामुहिक)
	अन्तराल
16.00–17.00	शिक्षा या बाइबल अध्ययन को पूरा करने, प्रश्नों के जवाब देने, या अतिरिक्त शिक्षा के लिए(सामुहिक)
	अन्तराल
17.30–17:45	मनन व वचन याद करना (दो दो के समूह में)
17:45–18:30	बाइबल पठन (अकेले)
18:30–19.00	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करना (दो दो के समूह में)
19.00–19:45	बांटना और प्रार्थना करना (10 लोगों से कम के समूह में)।

दिन 1 (अध्याय 13+14)
प्रार्थना
आराधना (परमेश्वर की इकलौता परमेश्वर व उद्धारकर्ता है)
शिक्षा(फल लानाः सुसमाचार व गवाही को बांटना)
बाइबल अध्ययन (1 कुरिन्थियों 13:1–13। मसीही प्रेम)
याद करना (मसीहीः 2 कुरिन्थियों 5:17)
बाइबल अध्ययन (यूहन्ना 15:21)
परमेश्वर के साथ समय बिताना (दो दो के समूह मेंः यूहन्ना 17:1–26)
बांटना व प्रार्थना करना।

दिन 2 (अध्याय 15+16)
प्रार्थना
आराधना (परमेश्वर शान्ति का रचयिता है)
शिक्षा(मसीही चरित्र व मसीही आत्म सम्मान)
बाइबल अध्ययन (यूहन्ना 15:13–15। मसीही मित्रता)
याद करना वचनः (मत्ती 4:4)
बाइबल अध्ययन (प्रेरितों 1–7)
परमेश्वर के साथ समय बिताना (दो दो के समूह मेंः प्रेरितों 3:1–26)
बांटना व प्रार्थना करना।

दिन 3 (अध्याय 17+18)
प्रार्थना
आराधना (परमेश्वर विश्वासयोग्य है)
शिक्षा(सम्बन्धः स्त्री व पुरूष के बीच सम्बन्ध)
बाइबल अध्ययन (1 थिस्लुनिकियों 4:1–8 मसीही लोगों के विपरीत लिंग वाले लोगों के साथ रिश्ते)
याद करना (प्रार्थना : यूहन्ना 15:7)
बाइबल अध्ययन (प्रेरितों 8–14)
परमेश्वर के साथ समय बिताना (दो दो के समूह मेंः प्रेरितों 11:1–30)
बांटना व प्रार्थना करना।

दिन 4 (अध्याय 19+20)
प्रार्थना
आराधना (परमेश्वर सिद्ध है)
शिक्षा(प्रभुता ,मसीह प्राथमिकता)
बाइबल अध्ययन (इफिसियों 5:22–33, मसीही प्राथमिकता)
याद करना (संगतिः 1 यूहन्ना 1:7)
बाइबल अध्ययन (प्रेरितों के काम 15:21)
परमेश्वर के साथ समय बिताना (दो दो के समूह मेंः प्रेरितों 20:13–38)
बांटना व प्रार्थना करना।

दिन 5 (अध्याय 21+22)
प्रार्थना
आराधना (परमेश्वर महान और रचनात्मक है)
शिक्षा(पवित्र आत्मा। पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व व उसके कार्य)
बाइबल अध्ययन (इफिसियों 6:1–4 मसीही परिवार।)
याद करना (गवाही देना : मत्ती 10:32)
बाइबल अध्ययन (रोमियों 1–8)
परमेश्वर के साथ समय बिताना (दो दो के समूह मेंः रोमियों 8:31–39)
बांटना व प्रार्थना करना।

दिन 6 (अध्याय 23+24)
प्रार्थना
आराधना (परमेश्वर अनुग्रहकारी है)
शिक्षा (शिष्यता । शिष्य की विशेषताएं)
बाइबल अध्ययन (2 कुरिन्थियों 6:14–7:1 असमान जुआ–सम्बन्ध)
याद करना (श्रृंखला का पुनरावलोकनः मसीह में नया जीवन)
बाइबल अध्ययन (रोमियों 9–16)
परमेश्वर के साथ समय बिताना (दो दो के समूह मेंः रोमियों 12:1–21)
बांटना व प्रार्थना करना।

सम्भावित अतिरिक्त शिक्षाएं

परिशिष्ट 8	परमेश्वर। परमेश्वर को स्वभाव व परमेश्वर का पुत्र
परिशिष्ट 9	पवित्र आत्मा। पवित्र आत्मा मसीहियों के परेशानियों में उन्हें सम्भालता है।
परिशिष्ट 10	मसीही चरित्र। जीभ द्वारा चुगली व संयम
परिशिष्ट 11	शिष्यता। शिष्यता कार्यक्रम में व्यवहारिक तरीकों के इस्तेमाल करने का लाभ।

अध्याय 13

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ अपने द्वारा परमेश्वर के लिए शिष्य निर्माण करने के इस पाठयक्रम व समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंपे।

2	आराधना (20 मिनट) *[परमेश्वर की विशेषताएं]* परमेश्वर ही एकमात्र परमेश्वर व उद्धारकर्ता है।

परिभाषा

सिखाए. आराधना क्या है? आराधना की परिभाषा निम्नलिखित है:

आराधना: परमेश्वर का भय मानने वाला, उसकी प्रशसां करने वाला, उसके प्रति अधीन व समर्पित भाव है, जो हमारी विविध प्रार्थनाओं और हमारी दिनचर्या प्रगट होता है।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि परमेश्वर कौन है। आराधना के प्रत्येक समय में हम परमेश्वर की एक विशेषता को सीखते हैं।

ध्यान करना.

इस सन्दर्भ में शिक्षा दें या पढ़ें कि 'बाइबल का परमेश्वर ही एकमात्र परमेश्वर व उद्धारकर्ता है'।

निम्नलिखित आयतों को पढ़ें एवं समझाएं तथा इन वचनों के आधार पर समूह को आराधना करने के लिए कहें।

1. **निर्गमन 20:2–3**, परमेश्वर ने सारी मानवजाति को अपने अलावा किसी दूसरे को ईश्वर मानकर उपासना करने के लिए मना किया। यहोवा परमेश्वर ही परमेश्वर है जिसने अपने आपको बाइबल में प्रगट किया। वही लोगों को पाप के घर और गुलामी से बचाने वाला है।
2. **यशायाह 9: 6–7.** परमेश्वर ने यीशु मसीह के रूप में मानव रूप धारण किया(2 कुरिन्थियों 1:3 'यीशु मसीह का पिता और परमेश्वर" का अर्थ है "पिता व परमेश्वर जिसने मसीह यीशु में होकर अपने आप को प्रगट किया)"। तुलना करें: परमेश्वर स्वयं को आग की लपटों में होकर प्रगट करता है तथा परमेश्वर के दूत के बीच(निर्गमन 3:2; 19:18)
3. **यशायाह 40:18.** परमेश्वर अतुल्य है। दूसरे ईश्वरों या देवी देवताओं की तुलना परमेश्वर से नहीं की जा सकती।
4. **यशायाह 42:8.** परमेश्वर किसी भी अन्य धर्म के देवता या ईश्वर के साथ अपनी महिमा (उसके ईश्वरीय गुणों तथा उपस्थिति) को साझा नहीं करेगा।
5. **यशायाह 43:10 बा–11.** यहोवा परमेश्वर, जिसने अपने आपको बाइबल में प्रगट किया है, एकमात्र जीवता परमेश्वर है। उस परमेश्वर को छोड़ और कोई हमारा उद्धारकर्ता नहीं है।
6. **यशायाह 44:6–8.** परमेश्वर आदि से अन्त तक सदैव विद्यमान रहने वाला परमेश्वर है। उसको छोड़ और कोई देवता अनादि काल से विद्यमान नहीं है। हालांकि इस संसार में बहुत सी दुष्ट शक्तियों ने अपने आप को ईश्वर होने का दावा किया है परन्तु न तो वे कभी भूतकाल की बातों को प्रगट कर पाए और न वे यह बता सकते हैं कि भविष्य में क्या होने वाला है।
7. **यशायाह 45:18–21.** परमेश्वर ही एकमात्र परमेश्वर है और उसके तुल्य कोई नहीं। परमेश्वर ने गुप्त में कोई बात नहीं की। बल्कि, परमेश्वर ने 1500 वर्षों के दौरान एक ही संदेश को 40 अलग अलग भविष्यवक्ताओं व प्रेरितों के पास पहुंचाया। वही परमेश्वर है जिसने जगत की सभी बड़ी घटनाओं के घटने से पहले उनके होने की सूचना दे दी थी।
8. **यशायाह 45:21–23.** यहोवा परमेश्वर को छोड़कर और कोई जीवता परमेश्वर नहीं है। इसलिए,संसार के सभी अन्य धर्मों के ईश्वरों में से कोई भी सच्चा परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर को छोड़कर कोई भी धर्मी व उद्धारकर्ता परमेश्वर नहीं है। अतः दूसरे धर्मों के देवी देवताओं या ईश्वरों में से कोई भी धार्मिक या उद्धारकर्ता नहीं है। इस कारण संसार के सभी लोगों को परमेश्वर की ओर फिर कर उद्धार पाना चाहिए। अन्त में, सारे जगत के लोगों के घुटने स्वेच्छा से या इच्छा के विरूद्ध उसके सामने टिकेगें। और हर एक जुबान निरूत्तर होकर या पछतावे के साथ यह अंगीकार करेगी कि जिस परमेश्वर ने अपने आप को यीशु मसीह में होकर प्रगट किया है वह ही सच्चा परमेश्वर है (फिलिप्पियों 2:9–11)।

आराधना.

समूह के सभी सदस्यों से आराधना करने के लिए अपनी बाइबल की आयत का इस्तेमाल करने के लिए कहें।

एकमात्र परमेश्वर व एकमात्र उद्धारकर्ता होने के लिए परमेश्वर की आराधना करें। आपका परमेश्वर व उद्धारकर्ता होने के लिए परमेश्वर की आराधना करें।

परमेश्वर की आराधना बड़े समूह में या फिर कम से कम तीन लोगों के समूह में करें।

3	बाँटना (20 मिनट) *[शान्त समय]* यूहन्ना 15:1– 18:27

अपनी बारी आने पर संक्षेप में बताएं कि आपने दिये गये वचनों के आधार परमेश्वर के साथ एकान्त में समय बिताने पर क्या सीखा। (यूहन्ना 15:1 से 18:27)।

जब कोई व्यक्ति अपने अनुभव को बाँट रहा हो तो उसे गम्भीरता से लें तथा स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**सिखाना** (70 मिनट) *[फल लाना]* **सुसमाचार व अपनी गवाही को बाँटना**

इस शिक्षा में आप पहले सुसमाचार के संदेश को समझेगें और फिर उसे दूसरों में बाँटना सीखेगें। इसके अलावा इस भाग में आपको अपनी उद्धार की गवाही को दूसरों में बांटना भी सिखाया जाएगा।

क. सुसमाचार का संदेश

सुसमाचार के संदेश का अभिप्राय परमेश्वर की योजना, अर्थात मनुष्य की समस्या व परमेश्वर ने उसकी समस्या का किस तरह समाधान किया, से है। मनुष्यों की समस्याओं के लिए परमेश्वर का समाधान यीशु मसीह है। परमेश्वर चाहते हैं कि हम मसीह में उद्धार पाने के लिए प्रतिउत्तर दें।

1. जीवन के सेतू का दृष्टान्त:

सिखाएं व प्रशिक्षित करें। विद्यार्थियों की जीवन के सेतू का दृष्टान्त समझने व उसे याद करने में सहायता करें। उसके पश्चात जब वे किसी के साथ सुसमाचार बांटते हैं तो उन्हें इस दृष्टान्त को इस्तेमाल करना सिखाएं।

बाइबल के पदों के एक एक करके ***पढ़ें।***

खोजें व चर्चा करें. (1) **परमेश्वर** के बारे में सच्चाई। (2) **मनुष्य** के बारे में सच्चाई । (3) **मसीह** के बारे में सच्चाई (4) **उद्धार** के बारे में सच्चाई (5) **मसीही व्यक्ति के नये जीवन** के बारे में सच्चाई।

(1) परमेश्वर की योजना

रोमियों 1:19–20 परमेश्वर ने अपने आप को प्रगट किया। आप परमेश्वर को जान सकते हैं।
1 यूहन्ना 1:5–6 परमेश्वर ज्योति है। यदि आप परमेश्वर को जानना चाहते हैं तो उसकी ज्योति में आयें।
1यूहन्ना 4:8 परमेश्वर प्रेम है। यदि आप परमेश्वर का अनुभव करना चाहते हैं, तो परमेश्वर के प्रेम को स्वीकार करें तथा दूसरों को प्रेम करें।
उत्पत्ति 1:27 परमेश्वर ने आपको परमेश्वर की गुणों को धारित करने के लिए बनाया ना की शैतान के।
यशायाह 43:7 परमेश्वर ने आपको उसके लिए जीवित रहने के उद्देश्य से बनाया, आपके लिए नहीं।

पाप

मनुष्य — परमेश्वर तक पहुंचने के लिए **मसीह** एक **सेतू** है — **परमेश्वर**

(II) **मनुष्य की समस्याएं (परिस्थितियां)**

6. यशायाह 59:1–2
पाप आपको परमेश्वर से अलग करता है ।

7. रोमियों 1:18,28–32
पाप ईश्वररहित व दुष्टतापूर्ण जीवन है

8.रोमियो 6:23
पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है

9.इब्रानियों 9: 27
मृत्यु के पश्चात न्याय होता है

10.रोमियों 3:23
सबने पाप किया है और सब परमेश्वर की महिमा से रहित हो गये है।

(III) **मनुष्यों की समस्याओं के लिए परमेश्वर का समाधान यीशु मसीह है।**

11.रोमियो 5:8
परमेश्वर का प्रेम मसीह की मृत्यु में होकर प्रगट हुआ (आपके पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए)
12. 1 पतरस 2:24
मसीह आपके पापों को दूर करने के लिए मरा (आपको धर्मी ठहराने के लिए)
13. 1 पतरस 3:18
मसीह परमेश्वर से आपका मिलाप कराने के लिए मरा (परमेश्वर से मिलाप कराने के लिए)
14.रोमियो 6:4–5.
मसीह वर्तमान काल में आपको नया जीवन प्रदान करने के लिए(आपको पवित्र करने के लिए) और मृत्यु पश्चात आपको मुर्दो में से जीवित करने के लिए मरा(आपको महिमा प्रदान करने के लिए)

15. इफिसियों 2:8–9
आपके भले काम आपका उद्धार नहीं कर सकते।

(IV) परमेश्वर चाहते हैं कि हम मसीह में उद्धार पाने के लिए प्रतिउत्तर दें।
16. यूहन्ना 5:24
- जो कोई सुनकर विश्वास करता है
- उसके पास अनन्त जीवन है।
- दण्डित नहीं होगा।
- मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

17.यूहन्ना 1:10–13
जिसने मसीह को स्वीकार किया है व परमेश्वर की नया जन्म पायी हुई सन्तान है।

18. रोमियो 10:9–13
प्रार्थना में अपने मन में विश्वास करो तथा अपने मुँह से अंगीकार करो।

प्रार्थना
हे प्रभु यीशु मसीह,
–मैं अंगीकार करता हूँ कि मैं एक भटका हुआ पापी मनुष्य हूँ।
–मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ कि आप मेरे पाप का मूल्य चुकाने के लिए मरे और मुझे अनन्त जीवन देने के लिए मृतकों में से जीवित हो गये।
–मैं आपको पुकारते हुए प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे जीवन और हृदय में आईये ।
–मैं अपने मुँह से आपको अपना उद्धारकर्ता व प्रभु स्वीकार करता हूँ। यीशु के नाम से आमीन!

(V) परिणाम : मसीहियों को नया जीवन

19. यूहन्ना 10:27–28	अब से –आप परमेश्वर के वचनों को सुनते और यीशु का अनुसरण करते हैं। – –मसीह से आपको यह निश्चय प्राप्त होता है कि कोई भी आपको उसके हाथों से छीन नहीं सकता है।
20. यूहन्ना 10:7–10:	मसीह आपको एक बहुतायत का जीवन प्रदान करेगा।

2.कठिन शब्दों का अर्थ:

आपके पापों के लिए पश्चाताप करने का अर्थ है कि आपके विरूद्ध परमेश्वर के धार्मिक क्रोध को समाप्त करना। मसीह की मृत्यु आपके लिए एक प्रायश्चित का बलिदान है, अर्थात ऐसा बलिदान जो आपके प्रति भड़के परमेश्वर के प्रेम को दूर का करता है। (रोमियों 3:25)

धर्मी ठहराना आपको धर्मी ठहराना एक कानूनी वाक्य है जो इस बात की घोषणा करता है कि आप परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी हैं। क्रूस पर मसीह ने आपकी अधर्मिकता को अपने ऊपर लेकर, आपको अपनी धर्मिकता प्रदान की है (2कुरिन्थियों 5:21) धर्मिक व्यक्ति के रूप में आप परमेश्वर के सामने क्षमा प्राप्त व परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध धारित व्यक्ति के रूप में खड़े होते हैं यह कार्य आपके विश्वास करते ही हो जाता है। उसी क्षण से परमेश्वर आपको पूर्ण रूप से धर्मिक व्यक्ति मानकर व्यवहार करने लगते हैं।

परमेश्वर से आपका मेल कराने का अर्थ, परमेश्वर के क्रोध को दूर करके अपनी जीवन शैली को पुनः बहाल करना है (भजन 5:4–5;11:5)आपके विश्वास करते ही, परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते में शान्ति आ जाती है, और आप अपने मन व हृदय में शान्ति का अनुभव कर सकते हैं (रोमियों 5:19, फिलिप्पियों 4:37)।

आपका शुद्धिकरण करने का अर्थ, आपको यीशु मसीह की समानता में ज़्यादा से ज़्यादा बदलना है (1कुरिन्थियों 3:18) यह प्रक्रिया आपके सम्पूर्ण मसीही जीवनकाल में बनी रहती है।

आपको महिमित करने का अर्थ, आपको यीशु के स्वरूप में बदलना है (1यूहन्ना 3:2)। इसमें आपकी वर्तमान देह में परिवर्तन, शामिल हैं, जो मसीही के देह के समान महिमित देह बन जाएगी (फिलिप्पियों 3:21)। यह घटना मसीह के पुनः आगमन पर होगी।

3) सुसमाचार के सन्देश का अल्प स्वरूप

आप मैनुएल1, के अध्याय 3 के आधार पर अपने समूह के सदस्यों को सुसामाचार बांटना सिखा सकते हैं।

ख. सुसमाचार के सन्देश को बाँटना

1. व्यवहारिक सुझाव

सुसमाचार परमेश्वर, का शुभ सामाचार है

- इसका सम्बन्ध परमेश्वर के प्रेम, अनुग्रह व प्रधानता से है।
- इसका सम्बन्ध मसीह की मृत्यु, पुनरूत्थान तथा सिंहासन पर विराजमान होने से है।
- इसका सम्बन्ध हर एक विश्वास करने वाले को क्षमा, उद्धार व विजय प्रदान करने से है।

सुसमाचार के सन्देश को पाँच चरणों में बाँटें।

आप जब कभी प्रचार करते सिखाते, अपने विचार बाँटते या वर्णन करते समय, निम्नलिखित पाँच चरणों का इस्तेमाल कर सकते हैं:

(1) परमेश्वर की योजना
(परमेश्वर पवित्र व प्रेम है)

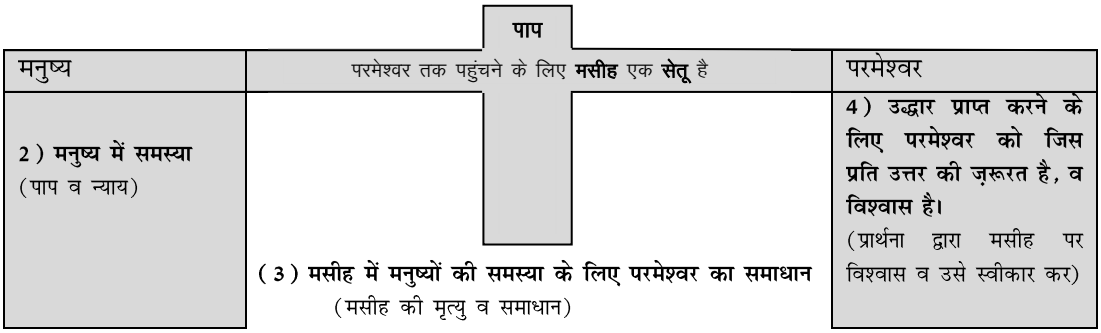

व्यक्ति की अपने आप सत्य खोजने में मदद करें:

- होने दें की गैर मसीही व्यक्ति बाइबल से सुसमाचार की व्याख्या करने वाले पद को पढ़ें।
- निम्नलिखित प्रश्नों को पूछने के द्वारा उस व्यक्ति को अपने आप सच्चाईयाँ खोजने के लिए प्रोत्साहित करें:
  –यह बाइबल पद परमेश्वर के बारे में क्या कह रहा है?
  –पाप के क्या परिणाम हैं?
  –यीशु के लिए क्यों मरना ज़रूरी था?
  –यीशु के अनुसार, आपको उद्धार पाने के लिए क्या करने की ज़रूरत है?
  –मसीही जन की क्या ज़िम्मेदारियाँ व अवसर हैं?
    - खोज व चर्चा में आगे बढ़ते हुए ''जीनव का सेतू के दृष्टान्त पर'' चिन्तन करें।
    - जैसे जैसे चर्चा आगे बढ़ती है, पदों व मुख्य शब्दों को लिखें ।
    - अन्त में उसे सुसमाचार स्मरण कराने के लिए,यह दृष्टान्त बताएं ।

उस व्यक्ति को यीशु को स्वीकार करने का निमन्त्रण दें।

जीवन का सेतू दृष्टान्त की व्याख्या करने के पश्चात, उस व्यक्ति को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार करने का न्योता दें या यीशु को अपना राजा मानते हुए अपना जीवन उसके हाथों में सौप दें। यदि वह व्यक्ति इच्छुक हो तो उसे प्रार्थना करने दें।

परमेश्वर की आत्मा के प्रति संवेदनशील बनें
सुसमाचार बाँटते समय अपने हृदय में प्रार्थना करें। याद रखें कि आप केवल परमेश्वर के दास हैं। केवल परमेश्वर ही उसके जीवन को नया बना सकते हैं। इसलिए, परमेश्वर द्वारा उस व्यक्ति के जीवन में किये जाने वाले कार्य के प्रति संवेदनशील बने।

2. सुसमाचार बाँटने का अभ्यास करें।

- होने दें कि समूह के सदस्य सुसमाचार के छोटे रूप को (12 पद के) आपस में बाँटने का अभ्यास करें। मैनुएल 1, अध्याय 3 को देखें।
- होने दें कि दो दो करके समूह के सदस्य आपस में जीवन के सेतू के दृष्टान्त (20 पद) की व्याख्या करें।
- होने दें कि यूहन्ना 110:7–18 इफिसियों 2:17–10 में से किसी एक का इस्तेमाल करते हुए समूह के लोग आपस में दो दो करके सुसमाचार बाँटे।

ग. अपने उद्धार की गवाही बाँटे

कोई भी जन "मसीही" पैदा नहीं होता। "आपको नया जन्म पाना ज़रूरी है" (यूहन्ना 3:3–8)
लेकिन नया जन्म कब, और कैसे होता है, इस संदर्भ में सबकी अपनी अलग कहानी है।
किसी को अपने मसीही अनुभव को बताना, एक व्यक्तिगत उद्धार की गवाही कहलाती है।

1. पौलुस के उद्धार की गवाही

पौलुस अपने उद्धार की गवाही को किस प्रकार बाँटता है?

पढ़ें प्रेरितों 26:1–29

पौलुस ने अपनी उद्धार की गवाही को चार भागों में बाँट दिया:

- परिचय (प्रेरितों 26:1–29)
- उसके जीवन परिवर्तन से पूर्व समय (प्रेरितों 26:4–11)
- उसके मन परिवर्तन की घटना (प्रेरितों 26:12–18)
- उसके मन परिवर्तन के बाद का समय (प्ररितों 26 :19–23)

(1) परिचय (प्ररितों 26:1-3)

- जब पौलुस को यीशु मसीह में उसके विश्वास को बताने का अवसर प्रदान किया गया, तो उसने अपनी उद्धार की गवाही बाँटी।
- उसने सबसे पहले अपने श्रोताओं के साथ मित्राता की (पद 2–3)

(2) उसके जीवन परिवर्तन से पूर्व समय (प्रेरितों 26:4-11)

- पौलुस अपने श्रोता को अपने साथ जुड़ने में सहायता करने के लिए अपनी पृष्ठभूमि के बारे में बताता है।
- पौलुस अपने पुराने जीवन के कुछ अच्छे पहलुओं के बारे में चर्चा करता है। (उसकी उच्च स्तरीय शिक्षा, उसकी धर्मिक लगन तथा सच्चे लक्ष्य)
- पौलुस ने अपने जीवन के नाकारात्मक पहलुओं पर भी प्रकाश डाला है (उसके द्वारा मसीहीयों को सताव, तथा मसीहि कलीसियों के विरूद्ध उसका उपद्रव करना है)
- पौलुस ने ऐसे विषयों पर भी चर्चा की जो उसके श्रोतागण समझ सके। उसने तर्क वितर्क के लिए माहौल बनाया (फरीसी लोग पुनरूत्थान की बातों में इच्छुक थें) और राजा यहूदियों की विरोधभास बातों व रीतियों में रूचि रखता था । उसने अपने समान समस्याओं का सामना करने वाले श्रोतागणों को यह बताते हुए यह सहायता की कि उसे इसका जवाब कैसे मिला।

(3) उसके मन परिवर्तन की घटना (प्रेरितों 26:12-18)

- पौलुस ने कभी "मैं सोचता हूँ" या "मैं महसूस करता हूँ" नहीं कहा, बल्कि वह दृढ़ता के साथ अपने मन परिवर्तन की घटना का बखान करता है।
- पौलुस स्पष्ट बताता है कि उसने परमेश्वर को नहीं, परन्तु खुद परमेश्वर ने उसे खोजा और पा लिया। पौलुस स्पष्ट बताता है कि मसीह ने खुद को उस पर प्रगट किया, लेकिन उसके जीवन को शुरू करने के बाद नहीं, बल्कि उस समय उसका जीवन बुरी तरह गड़बडियों में फंसा हुआ था।
- पौलुस हमेशा यीशु द्वारा कहे गये कथनों को दोहराता है। वह अपनी गवाही में सुसमाचार में बहुत से तत्वों को शामिल करता है। ;लोगों को अन्धकार से ज्योति की ओर, शैतान से परमेश्वर की ओर, फिरना चाहिए: लोगों को यीशु पर विश्वास करना चाहिए, विश्वासियों को पापों की क्षमा, परमेश्वर के लोगो के बीच स्थान प्राप्त होगा (पद 18)। उसके द्वारा चाहने पर श्रोतागणों को यीशु पर विश्वास करने में सहायता हुई।

4) उसके मन परिवर्तन के बाद का समय (प्रेरितों 26:19-23)

- पौलुस अपने जीवन के सबसे बड़ा बदलाव का वर्णन करता है (उदाहरण : मसीही कलीसियाओं को सताने वाला अब कलीसियाओं को प्रचार करने वाला बन गया है)। "उसके विचार" उसके मन परिवर्तन से पहले व मन परिवर्तन के बाद की दशा का वर्णन करते हैं।
- पौलुस स्वीकार करता है कि वह आज भी कठिन परिस्थितियों का सामना करता है। लेकिन वह यह भी कहता है कि परमेश्वर उसकी सारी कठिनाइयों में सहायता करता है।
- पौलुस अधिकार के साथ बाइबल की आयतों का इस्तेमाल करता है।

- पौलुस अपने उद्धार की गवाही में सुसमाचार के अनेक तत्वों को शामिल करता है। (यीशु मरा और मुर्दो में से जीवित हो गया! सुसमाचार सभी लोगों के लिए है, पहले यहूदियों और फिर यूनानियों के लिए प्रत्येक व्यक्ति को पश्चाताप करना व परमेश्वर की ओर फिरना चाहिए अतः प्रत्येक व्यक्ति को आज्ञाकारी मसीही जीवन व्यतीत करना चाहिए, जिसमें वे अपने कामों द्वारा अपने विश्वास को साबित करते हैं) (पद 23:20)।

2. पौलुस के उद्धार की गवाही के बाद होने वाली चर्चा:

- **पौलुस अभी भी सम्मानित व्यक्ति बना रहा (प्रेरित 26:24-25)**
  उसकी बेइज्जति होने पर भी, उसका सम्मान लगातार बढ़ता गया।
- **पौलुस अपने श्रोताओं के पीछे पड़ा रहा (प्रेरितों 26:26-27)**

  उसने अपने श्रोताओं को न तो धमकाया, न जोर डाला, परन्तु वह उनके पीछे पड़ा रहा ताकि वह यीशु के अनुयायी बन सकें।

- **पौलुस ने अपने श्रोताओं के सामने चुनौती पेश की (प्ररितों 26:28-29)**
  उसने अपने श्रोताओं का यीशु का अनुयायी बनने की चुनौती पेश की।

3) तीमुथियुस की सम्भव उद्धार की गवाही :

पढ़ें 1तीमुथियुस1:2, 2तीमुथियुस1:5, 3:10-15

सिखाएं . तीमुथियुस के समान बहुत से ऐसे मसीही जन हैं, जो युवावस्था में ही विश्वासी बन गये थे। हो सकता है कि उन्हें मसीही बनने का अपना अनुभव स्मरण न रहे। लेकिन वे जानते हैं कि वे यीशु मसीह के अनुयायी हैं।

- **अपनी पृष्ठ भूमि बताएं**

मसीही दादा, परदादा, अभिभावक, कलीसिया या अध्यापक के बारे में बताएं।

यीशु के बारे में बताएं

बताएं कि बीतें वर्षों में यीशु ने आपके जीवन में क्या कहा तथा इसके द्वारा आपका वर्तमान जीवन किस तरह परिवर्तित हुआ।

- **आपकी समझ के अनुसार सुसमाचार के मुख्य तत्वों को बांटें।**

कुछ तस्वीरों का इस्तेमाल करें।

4) अपनी गवाही को बाँटने का अभ्यास करें।

अपनी गवाही बाँटने के लिए एक पद्धति का चुनाव करें।

पौलुस की गवाही की पद्धति	तीमुथियुस की गवाही की पद्धति
• मसीह बनने से *पहले* के जीवन का वर्णन करें • बताएं के आप मसीही कैसे बनें। • विश्वासी बनने के उपरान्त जीवन का वर्णन (यीशु ने आपका जीवन कैसे परिवर्तन किया) • सुसमाचार सन्देश बाँटें (बाइबल से)	• विश्वासी बनने से पहले के जीवन का वर्णन करें। • मसीह के साथ अपने वर्तमान रिश्ते के मायने का वर्णन करें। • वर्णन करें कि कैसे यीशु ने आपके जीवन को परिवर्तन किया। • सुसमाचार सन्देश को बाँटें। (बाइबल)

अपनी गवाही को लिखें व बाँटें।

- किसी भी पद्धती का इस्तेमाल करते हुए अपनी गवाही को A4 आकार के पेपर पर लिखें (A5 से लेकर ज़्यादा से ज़्यादा A4 साइज़ पेपर)
- अपनी गवाही को अपने अगुवे के सामने पढ़े वे आपको सकारात्मक सुझाव दें।
- अपनी गवाही को याद कर लें।
- अपनी गवाही को छोटे समूह या घरेलू कलीसिया में बांटे।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[प्रतिक्रियाएं]* **परमेश्वर के वचन के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में प्रार्थना**

आज सीखी गयी शिक्षाओं की प्रतिक्रिया के रूप में अपने समूह में परमेश्वर से ***संक्षिप्त*** प्रार्थना करें।
या समूह को दो दो या तीन तीन में बाँट कर सीखी गयी बातों पर प्रतिक्रिया देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारो** (2मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति के समूह के साथ "सुसमाचार व अपनी गवाही बाँटना" को प्रचार करें। सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: यूहन्ना 18:28, 21:25 के आधर पर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्याय अगले बाइबल अध्ययन की घर पर तैयारी करें। 1कुरिन्थियों 13:1–13 विषयः "मसीही प्रेम की क्या विशेषता होती है? बाइबल अध्ययन के पाँचों चरणों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. प्रार्थना इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध अपने लेखे को अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 14

1.	प्रार्थना

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[एकान्त समय]* **यूहन्ना 18:28-21:25**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से पढं) संक्षेप में ***बताएं*** कि अपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (यूहन्ना 18:28-21:25)से क्या सीखा।
अपने अभुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[मसीह में नया जीवन]* **मसीहः 2 कुरिन्थियो 5:17**

याद करने वाले वचनों की अगली श्रृंखला "मसीयों में नयें जन्म के विषय में है। पाँच याद करने वाले वचनों के शीर्षक है: मसीह, वचन, प्रार्थना, संगती तथा साक्षी!

क-ध्यान करना

निम्नलिखित याद करने वाले को वचन को श्वेत/श्याम पट पर लिखें

मसीह 2 कुरिन्थियों 5:17
(इसलिए यदि कोई मसोह में है तो वह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गयी है, सब कुछ नया हो गया है।" 2 कुरिन्थियो 5:17)

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पद लिखें:

1. मसीह के साथ पौलुस का सम्बन्ध किस प्रकार बदला?

पौलुस के मन परिवर्तन से पहले, वह एक कट्टर फरीसी था! वह दिमागी तौर पर यीशु मसीह को जानता था तथा यीशु मसीह को सांसारिक दृष्टि से देखता था (16) अर्थात संसार की बाहरी रीति के अनुसार! संसार मनुष्य के बाहरी रूप को देखकर न्याय करता है, उन्हें हृदय में छुपी बातों को देखकर नहीं! यीशु के बढ़ई होने के कारण, उन्होंने उसे शिक्षक के रूप में अस्वीकार कर दिया। यीशु के रब्बियों के स्कूल में शिक्षा न लिए जाने की वजह से उन्होंने उसकी शिक्षाओं को अस्वीकृत कर दिया। पापियों व चुंगी लेने वाले से मित्रता होने के कारण, उन्होंने उसे पापी जाना। इसलिए यीशु ने उनसे कहा कि "तुम नहीं जानतें हो कि मैं कहाँ से

आया हूँ और अब कहाँ जाता हूँ! तुम शरीर के अनुसार न्याय करतें हो (यूहन्ना 8:14-15) आज भी संसार के दूसरे धर्म "शरीर के अनुसार" यीशु मसीह का न्याय करते हैं। लेकिन पालुस के मन परिर्वतन के समय, पौलुस यीशु से आमने सामने मिला (प्रेरितों 26:12-18)। उसके बाद पौतुस ने यीशु मसीह के बारे में पुराने तरीके से न सोचा।

2. मसीह में होने का क्या अर्थ?

स्वर्गीय दृष्टिकोण से केवल दो प्रकार के लोग पाये जाते हैं । लोग या तो "मसीह में" या सांसार में पाये जाते हैं। सवाल यह उठता है कि क्या आप मसीह में ह? इसका अर्थ है; "क्या आपने नया जन्म पाया है? क्या आपने पवित्र आत्मा पाया है?" (2 कुरिन्थियों 13:5) "क्या आप एक नई सृष्टि ह?" "क्या पुरानी बातें बीत गयी है?" "क्या सब कुछ नया हो गया है? 2 कुरिन्थियों 5:17 इसी बारे में बात कर रहा है।

मसीह में आने का अर्थ, यीशु मसीह व उसकी मृत्यु तथा आपके लिए उसके पुनरूत्थान पर विश्वास करना है। यीशु मसीह की मृत्यु व पुनरूत्थान पर विश्वास करने के द्वारा कोई भी जन यीशु मसीह से जुड़ जाता है। जिस क्षण कोई व्यक्ति यीशु पर विश्वास करता है वह "यीशु में" है।
"मसीह में" कहना, मसीह उद्धार की अति अल्प परिभाषा है यह मसीह उद्धार की असीमित महानता का निचोड़ है यीशु मसीह कौन है और उन्होंने क्या किया, का आपके भविष्य में क्या होने जा रहा है पर गहरा असर पड़ता है।

उदहारण:

- क्योंकि यीशु मसीह मरे, इसलिये आप भी मर गये। क्योकि यीशु ने आपके सारे पापों के दण्ड को अपने ऊपर उठा लिया, आपको क्षमा कर दिया गया, आपको धर्मी घोषित कर दिया गया है,और आप पर कभी दोष नहीं लगया जाएगा। और यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर कभी दोष नहीं लगाया जाएगा।
- यीशु मसीह जी उठने के कारण ,आपका आत्मा भी जी उठा, नया जन्म पाया या पुन: रचित हो गया, और यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर आपका शरीर भी जी उठेगा।
- क्योंकि यीशु मसीह ही एक मात्र ऐसा जन है, जिससे परमेश्वर पिता प्रसन्न है, इसलिए परमेश्वर ने आपको स्वीकार किया है और वह आपसे भी प्रसन्न है
- क्योंकि यीशु ने शैतान को बाँध दिया है, इसलिए आप भी शैतान का सामना कर सकते हैं तथा यीशु मसीह के साथ मिलकर लोगो को अन्धकार के राज्य से बाहर निकाल कर, उन्हें ज्योंति के राज्य में प्रवेश करा सकते हैं।
- यीशु मसीह सत्य है, इसलिए आप अब परमेश्वर के बारे में, अपने आप के बारे में, इस संसार और भविष्य के बारे में सच्चाई जानते हैं। तथा भविष्य से सम्बन्धित सत्य को जानते है।
- क्योंकि यीशु मसीह के वारिस होने के कारण, आप भी उसकी विरासत अर्थात नये स्वर्ग व नई धरती के वारिस होंगे।
- क्योंकि यीशु परमेश्वर के राज्य का राजा है, इसलिए आप यीशु के साथ राज्य करेंगे।

कोई भी इच्छुक जन मसीह में आ सकता है। उसे केवल यीशु मसीह पर विश्वास करना या अपने हृदय या मन को यीशु के हाथों में सौपने की जरूरत होगी। विश्वास करें कि वह पापों की क्षमा के लिए मरा और वह इसलिए पुन: जीवित हो गया ताकि आप एक नया जीवन पा सकें।

3. कौन सी पुरानी बातें बीत गयी हैं?

"पुरानी बातें बीत गयी हैं" को ही नये जीवन के रूप में परिभाषित किया गया है। इस वाक्य को यूनानी भाषा में भूतकाल में लिखा गया है जो यह बताता है *कि पुरानी बातें एक निर्धारित समय मे ढल गयी या जाती रहीं,* तथा उस अनुभव को नये जन्म का नाम दिया गया। बीत गयी पुरानी बातों में, पुरानी मान्यताएं, स्थापित मत, गलतफहमियाँ तथा जीवन की वह कुरीतियाँ शामिल ह, जिनका गुलाम व्यक्ति नया जन्म पाने से पहले हुआ करता था। यीशु मसीह प्रत्येक विश्वासी के पापों के लिए मरे (1पतरस 2:24) इसलिए प्रत्येक विश्वासी पहले से ही नई सृष्टि है।

एक मसीहो भविष्य में अपने लिए नहीं, बल्कि यीशु मसीह के लिए जीवन व्यतीत करता है, जिसने उसके लिए अपना प्राण दिया (2 कुरिन्थियों 5:15)। उसमें यीशु का रिश्ता बदल गया। मसोहो जन केवल संसारिक दृष्टि से मसीह का सम्मान नहीं करंगा (2 कुरिन्थियों 5:16)। यीशु मसीह से उसका रिश्ता बदल गया है। मसोही जन केवल संसारिक दृष्टि से दूसरों का सम्मान नहीं करंगा (2 कुरिन्थियों 5:16)। दूसरों के साथ उसका रिश्ता बदल गया है।

4) कौन सी नई बात प्रारम्भ हो गयी है?

नयी सृष्टि को "सब कुछ नया हो गया है" द्वारा सम्बोधित किया गया है। इस वाक्य को ग्रीक भाषा में निश्चित काल में लिखा गया है, जिसका अर्थ है कि "सभी पुरानी बातें नई हो गयी ह" तथा वह वर्तमान व भविष्य में सदा नई बनी रहेंगी। परमेश्वर की नई सृष्टि की नवीनता उन भौतिक वस्तुओं के समान नहीं है जिसे हम खरीदते हैं तथा वह समय के बीतने पर पुरानी हो जाती हैं। नई सृष्टि न धूमिल होती है, और न ही खराब होती है (1पतरस 1:3-4)। यह नवीनता सदैव नवीन बनी रहती है। यीशु मसीह में नया जीवन वास्तव में कितना सुन्दर है। मसीही लोग अब व्यवस्था को पूरा करने की कोशिश नहीं करते (गलातियों 6:15-16), बल्कि अनुग्रह के द्वारा जीवन व्यतीत करते हैं (यूहन्ना 1:16-17) मसीही लोग अन्य लोगों के साथ धार्मिक जीवन तथा परमेश्वर के साथ पवित्र जीवन व्यतीत करते हैं (इफिसियों 4:24)। मसीही लोग परमेश्वर की योजना के अनुसार जीवन व्यतीत करते तथा भले कामों के द्वारा परमेश्वर की योजना को पूरा करते हैं, जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें सौपा है (इफिसियों 2:10)।

ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** मसीह : 2 कुरिन्थियों 5:17
3) ***पुनः अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) *[सम्बन्ध]* **मसीही प्रेम 1 कुरिन्थियों 13:1-13**

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए 1 कुरिन्थियों 13-1-13 का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर 1 कुरिन्थियों 13:1-13 को एक साथ पढ़ें।
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है? या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?
लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हो। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बांटें)
आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।
(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँटे गयें विचार एक ही समान हों।

13:1-3

खोज 1. प्रेम, सांसारिक अभिलाषाओं से भिन्न होता है।

प्रेम संसार मे लोगों द्वारा अति सम्मानित सात बातों से भिन्न होता है (अन्य भाषा में बोलना, भविष्यवाणी करना, भेद प्रगट करना, ज्ञान प्रगट करना, विश्वास प्रगट करना, गरीबों में अपनी सम्पत्ति बांट देना तथा शहीद हो जाना) लेकिन यदि मैं इन सारे कामों को कर सकूँ लेकिन प्रेम न रखूँ तो मैं कुछ भी नहीं। मैं किसी अनन्त चीज का निर्माण नहीं कर सकता। यदि मैं बोलने में निपुण हूँ और अपने उपदेशों द्वारा लोगों के हृदय व मनों को बदलने की योग्यता रखता हूँ परन्तु मुझ में प्रेम नहीं है तो मैं सिर्फ उनकी मुसिबतों में उन्हें सांतावना प्रदान कर रहा या उनक विवेक से दोष दूर कर रहा हूँ। यदि मैं एक मसीही कार्यकर्ता बन जाता हूँ; महान बलिदान चढ़ाता और यहाँ तक कि कठिन परिस्थितियों व सताव के चलते अपने प्राणों की आहूति भी दे देता हूँ; लेकिन पम नहीं रखता, तो मुझे कुछ लाभ नहीं है। यदि मुझमें प्रेम नहीं है तो मुझे कोई भी बलिदान चढ़ाने से कोई फायदा नहीं है।

13:8-13

खोज 2. प्रेम को सबसे बडा माना गया है।

प्रेम को सबसे बड़ी सम्पत्ति माना गया है। प्रेम को महान सम्पत्ति इसलिए माना गया है क्योंकि वह सदैव बना रहता है पद 8 में लिखा है; "प्रेम कभी टलता नहीं" प्रेम का कभी अन्त नहीं होता। जबकि दूसरी वस्तुएं या चीजें जिन्हें संसार उच्चकोटि का सम्मान व मान्यता देते हैं, सभी टलने जा रही ह। भविष्यवाणियाँ हों तो समाप्त हो जाएंगी क्याकि उनका काम खत्म हो गया और उनके पास बोलने के लिए कुछ भी नहीं है। मनुष्यों और स्वर्गदतों की बोलियां टल जाएंगी। यहाँ तक कि जिस ग्रीक भाषा में कुरिन्थियों को लिखा गया था, उस भाषा को अब कहीं पर भी इस्तेमाल नहीं किया जाता है। ज्ञान को उच्च स्तरीय स्थान दिया जाता है, लोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए वर्षों स्कूलों, विद्यालयों में व्यतीत कर देते हैं और ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रति दिन अपना काफी समय सामाचार पढ़ने, तथा टी.वी देखने में बिता देते हैं। फिर भी सारा ज्ञान समाप्त हो जाता है। कल के समाचार पत्र को जला दिया जाता है तथा दस वर्ष पुरानी वैज्ञानिकों की पुस्तका को कबाड़े में बेच दिया जाता है। सारा ज्ञान पुराना हो जाता है और किसी काम का नहीं बचता, प्रेरित पौलुस कुछ और उदहारणों को ले सकता था। उसने धन या सफलता या सामर्थ्य या पद या प्रसिद्धि की चर्चा नहीं की ये सारी बातें टल जाएंगी। पौलुस इनमें से किसी चीज का गलत नहीं कहता। वह तो केवल यह कहता है कि ये सब वस्तुए टल जाएंगी। अनश्वर प्राणी को अनश्वर चीजों को हासिल करने का प्रयास करना चाहिए। केवल तीन बातें ही स्थाई व अनन्त तक रहने वाली है विश्वास, आशा व प्रेम। इन सब में सबसे बडा प्रेम है; क्योंकि "परमेश्वर प्रेम है"।

कदम 3 प्रश्न	**व्याख्या**

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद क आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?

आईये हम 1 कुरिन्थियों 13:1-13 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं आर फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछे।

लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये है)

13:4

प्रश्न 1. "प्रेम धीरजवन्त है" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी: धीरजवन्त प्रेम, इन्तजार कर सकता है। धीरज को प्रेम की प्रथम विशेषता के रूप में प्रगट किया गया है, क्योंकि धीरज के साथ ही प्रेम का प्रारम्भ होता है। प्रेम भलाई प्रगट करने में जल्दबाजो नहीं करता, बल्कि वह भलाई प्रगट करने में इन्तजार कर सकता है। अत: धीरज वह लगाम है जिसके द्वारा परमेश्वर अपने प्रेम प्रगट करने के भाव को नियन्त्रित करता है। प्रेम, लोगों के जीवनों व परिस्थितियों में परमेश्वर के काम करने का इन्तजार करता है।

प्रेम धीरजवन्त होने के साथ साथ, नम्रता व शान्त आत्मा द्वारा भी अलंकृत होता है। धीरज, कठिनाईयों, उसकाने, दर्द और लोगों की कमज़ोरियों को बिना चिड़चिड़ाए, निराश या गुस्सा हुए सह लेता है।

13:4

प्रश्न 2. "प्रेम कृपालु है" का क्या अभिप्राय हैं

टिप्पणी: कृपा प्रतिक्रिया करने वाला प्रेम भाव है। कृपा हमेशा दूसरों की सहायता व भले काम करने के प्रति जागरूक रहती है। बाइबल हमें बताती है कि यीशु किस प्रकार भले कामों को करता फिरा (प्ररितों 10:38)। उसने बीमारों को चंगा किया, उसने दुष्टात्मा ग्रसित लोगों को मुक्त किया, और उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाया (मत्ती 11:4-5)। कृपा का अर्थ अलोचनात्मक या प्रतिकारक होने की बजाय मिलनसार और सज्जन व्यवहार है।

आप सभी लोगों के मित्र कभी नहीं बन सकते, लेकिन आप सभी के प्रति सौम्यता प्रगट कर कर सकते हैं (फिलिप्पियों 4:5)। कृपा दूसरों को खुश करने का कोई मौका नहीं चुकना चाहती। किसी ने इस प्रकार से लिखा है, म इस संसार की यात्रा में केवल एक ही बार होकर गुजरता हूं, यदि किसी भी मनुष्य के लिए मुझे कोई भी भलाई करने या किसी की कैसी भी सहायता करने का अवसर मिलता है तो मुझे उसे अभी ही कर लेना चाहिए। मैं टालम-टोली या उपेक्षा न करूँ, क्योंकि मुझे दोबारा ऐसा अवसर नहीं मिलेगा।

13:4

प्रश्न 3. "प्रेम डाह नहीं करता" (जलता नहीं) का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : डाह न करने वाला पम उदार होता है, उदार प्रेम दूसरों से हिरस करने वाला प्रेम नहीं है। जब भी आप किसी काम को करना शुरू करते हैं तो आप को पता चलता है कि कुछ दूसरे लोग ह जो उसी काम को आप से बेहतर कर सकते हैं। उनसे डाह न करें। डाह एक ऐसी कु-भावना है, जो आपके समान व्यापार करने वाले अन्य लोंगों के विरूद्ध उत्पन्न होती है। डाह ऐसी आत्मा है जो दूसरों को अन्य की चीजों को हड़पना, दूसरों को मिलने वाले श्रेय या सम्मान को पान की कोशिश में लगी रहती है। उदारता अपने आप में अपनी कार्य क्षमता तथा अपनी परिस्थितियों में सन्तुष्ट व धन्यवादित रहती है। उदहारण, व्यक्ति किसी से नाराज नहीं होता, बल्कि दूसरों की आशोष, व्यक्तित्व और क्षमता को देखकर सहायता है।

13:4

प्रश्न 4. "प्रेम अपनी बढाई नहीं करता" का क्या अर्थ है?

टिप्पणी: मामूली बातों पर घमण्ड नहीं करने वाला प्रेम विनम्र काम करने के पश्चात प्रगट किया जाने वालो प्रेम विनम्रता कहलाता है। यह वह प्रेम है जिसे आपको भलाई, धीरज, व उदहारण दिखाने के बाद प्रगट किये जाने की जरूरत है। विनम्रता कभी ढ़िढोरा नहीं पिटती कि उसने क्या काम किया है। विनम्रता के कामों व उपलब्धियों की अपनी अलग सूची होती है,

विनम्र व्यक्ति बढा चढ़ाकर बातें नहीं सकता। वह किसी को जानकारी देते समय अतिश्योक्ति नहीं करते। विनम्रता दूसरों को आकर्षित करने, डींग, या दिखावा करने का प्रयास नहीं करती । विनम्र व्यक्ति लोगो का ध्यान अपनी ओर खीचने का प्रयास नहीं करता।

13:4

प्रश्न 5. "प्रेम फूलता नही" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : प्रेम घमण्डी नहीं वरन दीन होता है। काम करने से पहले प्रगट किया जाने वाला प्रेम दीनता है। दीन व्यक्ति अपनी खुशियों का बखान नहीं करता और न ही वह अपनी कमजोरियों को छुपाता है। विनम्र व्यक्ति अपनी क्षमता की वास्तविक्ता को जानता है। विनम्र कभी अपने महत्व, योग्यता, सम्पत्ति या उपलब्धि को लेकर घमण्ड नहीं करता। दीन व्यक्ति अहंकार के साथ अपने आप को उठाने का प्रयास नहीं करता। दीनता न तो किसी को दबाती है और न दूसरों को तुच्छ जानती।

13:5

प्रश्न 6. " प्रेम अनरीति नहीं चलता है" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : कभी अशिष्ट व्यवहार न करने वाला सभ्य प्रेम होता है। शिष्टाचार, सामाजिक सम्बन्धों में पाया जाने वाला प्रेम होता है। शिष्टाचार, हर परिस्थिति में उचित तरीके के साथ व्यवहार करता है। शिष्टाचार अपने व्यवहार व कार्य करने के तरीको में विनीत कृपालु, ख्याल करने वाला व सहानुभूतिशील करने वाला होता है। शिष्टाचार दूसरे लोगों की आदतों; संस्कृतियों और अहमियत के प्रति संवेदनशील होता है। वह दूसरों की जरूरतों व भावनाओं का ख्याल करता है। शिष्टाचार पास पार्ट के समान है जो आपको किसी भी समाज में मिलने जुलने की अनुमति देता है।

13:5

प्रश्न 7. "प्रेम अपनी भलाई नहीं चाहता" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : भलाई नहीं चाहनेवाला प्रेम नि:स्वार्थ प्रेम होता है। नि:स्वार्थ प्रेम अधिकार के क्षेत्र में काम करने वाला प्रेम है। नि:स्वार्थ व्यक्ति अपने अधिकारों की खोज में नहीं रहता। नि:स्वार्थ भावना अपने लिए बड़ी बातों की चाह नहीं करती। वस्तुओं में कोई महानता नहीं होती। केवल नि:स्वार्थ परमेश्वर ही महान है। नि:स्वार्थ भावना, दूसरे लोगों मे परमेश्वर के कार्यो व उसके राज्य को बढाने की खोज करती है। नि:स्वार्थ व्यक्ति अपनी महत्वाक्षाओं को पूरा करने की खोज मे नहीं रहता, उदहारण के लिये पद, प्रतिष्ठा, अधिकार, प्रसिद्धि, सम्पत्ति तथा सुख। नि:स्वार्थ कभी अपना फायदा नही देखता और न ही अपने फायदे के लिए दूसरों को नुकसान पहुचाता है। सांसारिक लोग आराम व खुशी की तलाश में लगे रहतें हैं और वे साचते हैं कि खुशी का अर्थ प्राप्त करना, पाना या लोगों द्वारा सेवा किया जाना है। जबकि लेने या पाने में वह आनन्द नहीं मिलता जो आनन्द हमें देने और सेवा करने में आता है। यीशु ने कहा "कि जो कोई तुम में बड़ा होना चाहता है वह तुम्हारा दास बने।" (मत्ती 20:26)

13:5

प्रश्न 8. "प्रेम झुझलाता नही" का क्या अर्थ है?

टिप्पणी : जो प्रेम झुझलाता नहीं वह नम्र होता है। नम्रता ऐसा प्रेम है जो दूसरे व्यक्ति को उसके प्राकृतिक अन्दरूनी स्वभाव में प्रेम करता है। मनुष्य के स्वभाव में बुराई से बढ़कर विनाशक तत्व और कुछ नहीं है। बुरा स्वभाव रिश्तों परिवारों को, तथा समाज तक को तोड़ डालता है। यह रिश्तों, दोस्ती और पडोसियों के बीच खटास पैदा करता है। मानव जाती के भीतर बुराई सबसे बडो विनाशक शक्ति है। बुरे स्वभाव में, तुनक मिजाज, क्रोध, क्रूरता, घमण्डी, आत्म धार्मिकता, हठीलापन, नाराजगी अक्षमा की आत्मा तथा उदासीनता शामिल होते हैं। बुरा स्वभाव या झुझलाहट किसी गहन समस्या का लक्षण है। यह ऐसे

समय में गढ़े मुर्दे उखाड़ देता है जब लोग सावधान न हों। यह हठिले मन तथा बेवफा लोगों सच्चाई बखान कर देता है। केवल अपने जीवन के सभी क्षेत्रों को पूरी तरह यीशु मसीह के हाथों में सौपने पर ही यीशु आप के स्वभाव को बदल सकता है। प्रेम आपके अन्दरूनी मनुष्यत्व में प्रवाहित होने लगेगा। नम्रता अधिकतर दूसरों या परिस्थियों से मिलने वाली चोटों या दु:खों को सह लेती है। नम्रता उत्तेजना के साथ किसी भी बात के प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं प्रगट करती। नम्र व्यक्ति कभी किसी सुनी-सुनाई बातों को लेकर व्यक्तिगत हमला नहीं करता है।

13:5

प्रश्न 9. "प्रेम बुरा नही मानता" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी: बुरा नहीं मानने वाला प्रेम,क्षमा करने वाला प्रेम है। क्षमा करने वाला प्रेम कटे रिश्तों के बीच भी प्रेम करता है। कई लोग दूसरों के बुरे कामों की लम्बी सूची बनाये रखते हैं। वे अपनी नाराजगी को लगातार हवा देते रहते हैं अपनी आत्म-धार्मिकता का बहुतायत से बचाव करते और वह आपको अपने पक्ष में करने के लिए अभियुक्त की बुराईयों की सूची दिखाते रहते हैं। इब्रानियों 12:15 हमें सावधान करता है कि कडवाहट से भरे लोग परेशानियाँ खड़ी करतें तथा बहुत से लोगों को भ्रष्ट कर देते हैं। वे किसी भी व्यक्ति पर शक करने लगते हैं रिश्तों को तोड़ देते हैं, और एक दूसरे की चुगली बदनामी करने के द्वारा माहौल खराब करते हैं। केवल परमेश्वर ही इस प्रकार दूषित परिस्थितियों को ठीक कर सकते हैं। यदि मनुष्य यह स्मरण रखें कि परमेश्वर उसके पापों को क्षमा करता है तथा फिर उसे कभी याद नहीं करता, तो मनुष्य भी उसके पापों को क्षमा कर सकता है। क्षमा करने वाला प्रेम तुरन्त लोगों द्वारा पहुँचाई गई चोट को क्षमा करके उन्हें भूल जाता है। क्षमा करने वाले प्रेम से कड़वाहट या नाराजगी नही होती। वह पल्टा नहीं लेता और दूसरों की पुरानी गलतियों को याद नहीं करता।

13:6

प्रश्न 10. "प्रेम कुकर्म से आनन्दित नहीं होता। परन्तु सत्य से आनन्दित होता है" का क्या अर्थ है?

टिप्पणी : वह प्रेम जो कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दि होता है, ईमानदार है। ईमानदार प्रेम अपनी असफलता व कमजोरी को मान लेता है। ईमानदारी स्वीकार करती है कि हर व्यक्ति अपने जीवन में कभी न कभी असफल होता है और उनमें कमजोरियाँ होती हैं।

ईमानदार व्यक्ति कभी किसी असफल या कमजोर व्यक्ति को सफलता से चढ़ी आँखों से देखता या घूरता नहीं है। इसके बजाय ईमानदार व्यक्ति दूसरों को सत्य व धार्मिकता में प्रगति करते हुए देखकर आनन्दित होता है ।

13:7

प्रश्न 11. "प्रेम सब बातों को सह लेता है" का क्या अभिप्राय है

टिप्पणी : सहन करने वाला प्रेम लापरवाह लोगों की सह लेने वाला प्रेम है। सहन करने वाला प्रेम कभी दूसरों को डराता या धमकाता नहीं है वह दूसरों की अनुचित बातों को देखकर चुपचाप रहता है। वह दुसरों का प्रतिष्ठा का घयाल रखता है और बुराई नहीं करता।

13:7

प्रश्न 12. "प्रेम सब बातों की प्रतीति करता है" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : प्रतीति करने वाला प्रेम संदहाजनक लोगों के प्रति प्रगट किया जाने वाला प्रेम है। आपको प्रभावित करने वाले लोग ही आप पर भरोसा करने वाले लोग होते हैं। लेकिन संदेहजनक परिस्थिति में लोग बहुत उदास हो जाते हैं सच्चाई को जाने बिना ही, कई बार लोग अनुमान लगाने लग जाते है कि दूसरें लोगों का विचार या मकसद बुरा है। जबकि भरोसा करने वाला प्रेम उच्च व सकारात्मक विचार रखता है। बिना किसी उचित कारण के किसी पर संदेह करना: या दूसरे के विचारों या कामों पर संदेह करना सही नहीं है। भरोसा या प्रतीति करने वाला प्रेम दूसरों पर भरोसा करते हुए अपनी जीवन के गहन व गुप्त

विचारों, समस्याओं व कमजोरियों को दूसरें के सामने खोलकर रख देता है। वे चाहें तो आपके बारे में प्राप्त जानकरियों का नाजायज फायदा भी उठा सकते हैं, परन्तु आप उनसे प्रेम करने के कारण उन पर भरोसा करते हैं।

13:7

प्रश्न 13. "प्रेम सब बातों की आशा रखता है" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी: आशावादी प्रेम आत्म-धार्मिक लोगों के प्रति प्रगट होने वाला प्रेम है। आत्म -धार्मिक जन सोचता है कि वह हमेशा ठीक व दूसरा व्यक्ति गलत है। दुसरें उसकी नजरों में कभी ठीक साबित हो ही नहीं सकता। वह उन्हें कभी बदलते हुए भी नहीं देखना चाहता। सबसे बड़ी बात यह है कि वह उसे बदलते हुए इसलिए नहीं देखना चाहता है ताकि वह अपने आप को सही साबित कर सके। लेकिन आशावादी प्रेम दूसरों के जीवन में परिवर्तन देखें बिना हार नहीं मानता, बल्कि वह अपेक्षा करता है कि परमेश्वर उसके जीवन में कार्य करके उसे बदलेगा। इस प्रकार आशवादी प्रेम किसी भी परिस्थिति में आशा नहीं छोड़ता वरन अपेक्षा करता है कि परमेश्वर कठिन से कठिन परिस्थियां मे भी अपनी सर्वसिद्ध योजना को पूरा कर सकता है।

13:7

प्रश्न14. "प्रेम सब बातों में धीरज धरता है" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : धीरज धरने वाले प्रेम की माप समय से पहले होती है। धीरज धरने वाला प्रेम लगातार उन्ही कामों को करता रहता है जो परमेश्वर की निगाहों में ठीक हैं। वह अपने भले काम करने, फल लाने, विश्वास की दौड़ दौड़ने से बाज नहीं आता चाहे उसे किसी भी कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़े। धीरजवन्त प्रेम की कोई समय सीमा नहीं होती। प्रेम किसी समय सीमा में सीमित नहीं होता। बल्कि यह हर मसीह के दैनिक जीवन की बहुमूल्य शक्ति है।

13:8

प्रश्न 15: "प्रेम कभी टलता नहीं" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : अटल प्रेम, प्रेम का सार है। प्रेम कभी खत्म नहीं होता। वह हमेशा उपलब्ध होता है। जितने लोग उसे धारण करते हैं वह उन सब को प्रभावित तथा पूर्ण रूप से सन्तुष्ट करता है परमेश्वर ही प्रेम है, इस कारण वह कभी नहीं टलता।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम 1कुरिन्थियों 13:1-13 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा, और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करं। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. 1 कुरिन्थियों 13 से कुछ सम्भावित प्रयोगों के उदहारण

13:1, आत्मिक वरदानों की बजाय प्रेम पर ध्यान केन्द्रित करें।

13:1-3 होने द को आपके बोलते व बलिदान चढ़ाते समय प्रेम झलके।

13:4 अपने जीवन साथी व बच्चों के साथ धीरजवन्त बनें। बिना चिढ़चिढ़ाये हुए दर्द को सह लें।

13:4 कृपालु बने! जिस भी व्यक्ति से आप मिलते हैं उसके साथ भलाई ही करें और सदा उनकी सहायता करने की खोज में रहें।

13:4 उदारवादी बने! लोगों में पायी जाने वाली खूबियों व उनके द्वारा प्राप्त की गयी उपलब्धियों को सराहें।

13:4 अपनी खूबियों व उपलब्धियों के प्रति विनम्र बने रहें।

13:4 नम्र बने! अपने को बढ़ा-चढ़ा कर पेश न करें, प्रभुता न करें व दूसरों को तुच्छ न जानें।

13:5 शिष्ट बने! हर परिस्थिति में उत्तम व्यवहार व आचरण करने का प्रयास करें।

13:5 नि:स्वार्थी बने! अपनी स्वार्थी महत्वाक्षाओं को नहीं बल्कि दूसरों के जीवन में परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने का प्रयास करें।

13:5 नम्र बने! गुस्से से बचे, जल्दी से दूसरों की कही बातों पर विश्वास न कर लें, उन पर निजी आक्रमण न करें।

13:5 जिस प्रकार से परमेश्वर ने आपको क्षमा किया है ठीक उसी प्रकार से आप अपने अपराधियों को क्षमा करें।

13:6 ईमानदार बने! लोगों की असफलता को बुरी निगाहों से न देखें बल्कि उनकी उन्नति को देखकर प्रसन्न हों।

13:7 लोगों की चुगली करने से बचने के द्वारा लोगों के सम्मान व प्रतिष्ठा को बनायें रखें!

13:7 भरोसा रखें। किसी ठोस वजह के बिना लोगों के नीयत या प्रतिक्रियाओं को लेकर संदेह न करें।

13:7 आशावादी बने! किसी भी व्यक्ति कि प्रति आशा न छोड़े लेकिन अपेक्षा करें कि परमेश्वर इस कठिन परिस्थियों के बीच में भी अपनी योजना को पूरा करेगा।

13:7 धैर्यवान बने! परमेश्वर की निगाहों में भले कामों को करने से कभी न चूकें।

13: 8-13परमेश्वर तथा लोगों को प्रेम करना अपने जीवन का महत्वपूण लक्ष्य बनाये।

2. 1 कुरिन्थियों 13 से व्यक्तिगत जीवन में इस्तेमाल की जाने वाली बातों के उदहारण।

जब मेरे बच्चे तुरन्त मेरा कहना नहीं सुनते तो मुझे बहुत झुझलाहट होती है। इसलिए मैं उनके साथ धैर्यवन्त तथा कृपालु होने का अभ्यास करता हूँ।

मैं ने गौर किया है कि मेरे जीवन में दूसरों के जीवन प्रति हमेशा सन्देह की भावना रहती है। प्रेम का अर्थ भरोसा होने के कारण, मैं उसके द्वारा भली मनसा से किये गए कार्यो के प्रति सकारात्मक विचारों को रखने और उसके कामों व बातों को सम्मान देने का अभ्यास करता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें 1 कुरिन्थियों 13:1-13 में सिखाई हैं।

(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूह में होकर प्रार्थना करते रहें। एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारो** (2मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ 1कुरिन्थियों 13:1-13 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: प्रेरितों के काम 1:1-4:22 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। मसीह : 2 कुरिन्थियों 5:17। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे को अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 15

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा। प्रार्थना के साथ अपने द्वारा परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	आराधना (20 मिनट)	परमेश्वर की विशेषताएं परमेश्वर शान्ति का रचयिता है।

मनन करना।

परमेश्वर 'शान्ति का रचयिता है' विषय पर **पढ़ें या सिखाएं।**

1. **स्वाभाविक व्यक्ति परमेश्वर के क्रोध के अधीन है।**

- **मनुष्य की स्वाभाविक परिस्थिति के सन्दर्भ में दृष्टान्त।**

स्वाभाविक मनुष्य के प्रति मनुष्य का दृष्टिकोण	स्वाभाविक मनुष्य के प्रति परमेश्वर का दृष्टिकोण
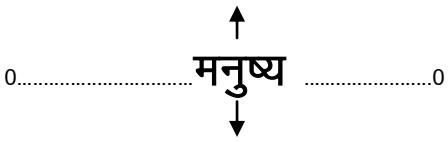	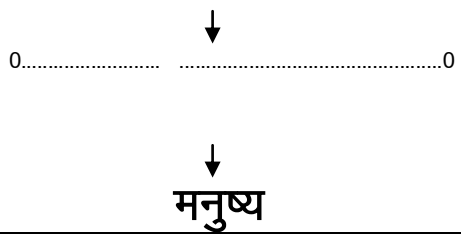

• हर एक जन पाप के बिना जन्मा हुआ है। स्वाभाविक मनुष्य का आधार उदासीन जीवन है। • प्रत्येक व्यक्ति स्वेच्छा व अपने प्रयासों से अपने जीवन के लिए धार्मिकता व उद्धार को कमा सकता है। • इस दृष्टिकोण से प्राकृतिक मनुष्य कभी आश्वस्त होकर नहीं कह सकता कि उसने उद्धार प्राप्त कर लिया है, क्योंकि यह इस बात पर निर्भर करेगा कि निर्णायक न्याय के समय उसकी परिमाप उसके पक्ष में होती है या नहीं। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि उसके भले या धार्मिक कार्य पर्याप्त मात्रा में हैं या नहीं।	• प्रत्येक जन पाप में उत्पन्न हुआ है (अय्यूब 14:4; 15:14; भजन 51:5; रोमियो 5:12) और सब परमेश्वर की महिमा से रहित है (रोमियो 3:23)! प्राकृतिक मनुष्य का आधार परमेश्वर के क्रोध के अधीन,शून्य की रेखा के काफी नीचे होता है। • केवल यीशु ने ही अपने प्रथम आगमन पर मनुष्य की धार्मिकता और उद्धार को कामा लिया है (रोमियो 5:8)। कोई भी व्यक्ति खाली हाथ होने पर ही परमेश्वर की धार्मिकता को कामा सकता है। • इस दृष्टिकोण में हर एक विश्वासी पूरी तरह अपने उद्धार के निमित्त आश्वस्त हो सकता है (यूहन्ना 10:28)। परमेश्वर ने उसे शत प्रतिशत धर्मी ठहराया है और वह उसे अपनी निगाहों में शत प्रतिशत धार्मिक जन के रूप में सम्मान देता व उसको ध्यान में रखते हुए व्यवहार भी करता है। उसने विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार प्राप्त किया है।

- **मनुष्य व परमेश्वर के भिन्न विचारों के सन्दर्भ में बाइबल से तथ्या।**

श्याम पट पर लिखकर पढ़ें:

- प्राकृतिक मनुष्य की जीवन शैली के प्रति परमेश्वर का धार्मिक क्रोध(नफरत, शत्रुता)।

पढ़ें: भजन संहिता 5:4–6; 11:5; यशायाह 63:10;यूहन्ना 3:36;रोमियो 1:18; इफिसियों 2:1–3; कुलुस्सियों 3:5–9

- मनुष्य का परमेश्वर के प्रति अधार्मिक व स्वभाव।

पढ़ें ;रोमियों 5:10 ; कुलुस्सियों 1:21

- परमेश्वर का हमारे प्रति वह प्रेम, जिसके हम लायक नहीं थे।

पढ़ें रोमियों 5:1–2,6,8–10, इफिसियों 2:12–14; कुलुस्सियों 1:19–22

- **"परमेश्वर के शत्रु" होने का क्या अर्थ है?**

अपनी प्राकृतिक अवस्था में सभी लोग "मसीह से दूर, परमेश्वर के लोगों के साथ की नागरिकता से वंचित, वाचा की प्रतिज्ञाओं से अनजान,इस संसार में परमेश्वर व आशा रहित जीवन व्यतीत करने वाले, परमेश्वर से दूर , अन्धकारमय समझ के साथ तथा ईश्वरीय जीवन से अलग "हैं (इफिसियों 2:12–13; 4:18)। परदेशियों की सी यह अवस्था मात्र अनजान या अबोध होने की वजह से नहीं पैदा हुई। अन्यजातियों में कोई भी अबोध नहीं है! बल्कि उनकी स्वाभाविक अवस्था में वे सभी, निकाले हुए और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे(कुलुस्सियों 1:21)। यह उनकी अपनी गलती है कि वे परमेश्वर से दूरी बनाये रहे, उन्होंने वास्तव में परमेश्वर से नफरत की और वे परमेश्वर के बैरी हैं। जब परमेश्वर ने अपनी तरफ से पहल करते हुए उनके विवेक व प्रकाशनों के द्वारा अपने आप को उन पर प्रगट करने का प्रयास किया तो उन्होंने "सत्य को अधर्म" से दबा दिया(रोमियों 1:18–23)। परमेश्वर से उनका मन से बैर , उनके विवेक में परमेश्वर की वाणी सुनने की उनकी अनिच्छा, तथा प्रकृति व इतिहास में प्रगट परमेश्वर की सच्चाईयों को दबाना उनके दुष्ट कामों में प्रगट होते हैं, जो कि कुलुस्सियों 3:5–9 में भी दर्शाये गये हैं। उनके दुष्ट जीवनों में प्रगट उनका अक्षम्य बैर उन्हें परमेश्वर के क्रोध या गुस्से का भागीदार बनाता है (रोमियो 1:18; कुलुस्सियों 3:6)। अतः स्वाभाव ही से सभी लोग पापी (रोमियों 3:23)"परमेश्वर के क्रोध की सन्तान हैं"(इफिसियों 2:3)।

2. तीन सम्बन्धों में शान्ति अति आवश्यक है।

- **परमेश्वर आगे बढ़कर मनुष्य के साथ मेल मिलाप कायम करता है।**

स्वाभाविक तौर पर, नया जन्म प्राप्त करने से पहले हम सभी लोग, परमेश्वर की निगाहों में गलत काम करने वाले तथा उससे बैर रखने वाले लोग थे। इस कारण परमेश्वर हमसे नाराज़ था। परमेश्वर का क्रोध संसार के लोगों पर उनकी अभक्ति तथा दुष्टता के कारण प्रगट हुआ था (रोमियों 1:18)! परमेश्वर का क्रोध संसार के उन लोगों पर बना रहा जिन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास नहीं किया या उसकी बातों को नहीं माना (यूहन्ना 3:18,36)। "शत्रु" (रोमियों 5:10) शब्द का अर्थ 'भक्तिहीन"(रोमियों 5:6)या "पापी" है (रोमियो 5:8)।

फिर भी परमेश्वर का क्रोध कभी भी अन्याय या नफरत भरा नहीं होता। परमेश्वर का क्रोध हमेशा पवित्र व धर्मी होता है। वह कभी "पापमय" नहीं होता (इफिसियों 4:26)। परमेश्वर के ईश्वरीय स्वभाव में ही केवल धार्मिकता व प्रेम का सुन्दर संगम देखने को मिलता है। परमेश्वर का प्रेम इस बात में झलकता है कि उसने हमारे साथ मेल मिलाप करने और हमें वापस जीतने के लिए अपनी ओर से पहल की। हम नहीं, बल्कि हमारे साथ शान्ति प्रिय सम्बन्ध को बनाने के लिए परमेश्वर ही पहला कदम उठाते हैं। क्रूस पर यीशु मसीह द्वारा किये गये हमारे पापों के लिए प्रायश्चित के बलिदान ने हमारे पापों (अभक्ति ,दुष्टता)के विरूद्ध भड़के परमेश्वर के धार्मिक क्रोध व शत्रुता(बैर) को दूर कर दिया। यीशु द्वारा चढ़ाये गये प्रायश्चित के बलिदान ने परमेश्वर की माँगों को पूरा करके, परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध को फिर से बहाल कर दिया। यीशु मसीह की क्रूस के द्वारा परमेश्वर हमारे साथ शान्ति को स्थापित करते हैं। परमेश्वर अब हमारी ओर गुस्से से नहीं देखते! क्योंकि अब परमेश्वर के साथ हमारा शान्तिप्रिय रिश्ता कायम हो चुका है।

- **एकमात्र तरीके से परमेश्वर के साथ शान्ति कायम की जा सकती है।**

यीशु मसीह पर विश्वास करने पर ही परमेश्वर के साथ हमारा सुगम सम्बन्ध स्थापित होता है (रोमियों 5:1–2)। विश्वास के द्वारा ही हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर ने यीशु मसीह के बलिदान द्वारा हमारे शान्ति को स्थापित व मेल मिलाप कर लिया है, ताकि हम भी परमेश्वर के साथ शान्ति स्थापित कर सकें तथा उसके साथ मेल मिलाप कर सकें। पवित्र आत्मा भूतकाल में मसीह द्वारा किये गये उद्धार के निमित्त कार्यों को लेकर विश्वासियों के वर्तमान जीवन में कार्य करता है। पवित्र आत्मा मसीह द्वारा उद्धार के निमित्त किये गये कार्यों के फलस्वरूप हमारे जीवन व हृदय में बहुतायत की शान्ति प्रदान करता है (गलातियों 5:22–23)। जब हम यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं तो हम परमेश्वर के साथ शान्ति कायम करते हैं जिसके कारण हमारे हृदयों में परमेश्वर की शान्ति आ जाती है। अब हम अपने स्वभाव से परमेश्वर के बैरी नहीं है और न ही हम अब परमेश्वर से नफरत करते हैं। अब हम परमेश्वर को अपना दुश्मन नहीं मानते! अब हमारा परमेश्वर के साथ रिश्ता जुड़ गया है।

- **अन्त में, इस संसार में रहते हुए आपस में एक दूसरे के साथ शान्ति स्थापित कर सकते हैं।**

परमेश्वर के साथ बहाल की गयी शान्ति का अनुभव करने पर ही हम इस धरती पर अपने शत्रुओं के साथ का सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। यीशु मसीह की मृत्यु व पुनरूत्थान से पहले,व्यवस्था ने यहूदियों और गैर यहूदियों को आपस में एक दूसरे का शत्रु बना दिया था। सामाजिक व धार्मिक क्षेत्रों में यहूदी और गैर यहूदी आपस में एक दूसरे के शत्रु थे। सामाजिक व धार्मिक नियमों व रीति रिवाजों ने उन लोगों के लिए एक दूसरे के साथ मिलकर शान्तिमय जीवन व्यतीत करना मुश्किल कर दिया। लेकिन क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु ने व्यवस्था की माँग (मत्ती 5:17) को पूरा कर दिया, और विधियों के लेख व रीतियों को नाश (इफिसियों 2:15) व रद्द (कुलुस्सियों 2:14) कर दिया। यीशु मसीह

पर विश्वास करने के द्वारा ही, यीशु मसीह उन राष्ट्रों व लोगों में बीच में शान्तिदाता बन जाता है, जो पहले आपस में शत्रु हुआ करते थे (इफिसियों 2:14)। यहूदी और गैर यहूदी, जिन्होंने परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लिया है, आपस में एक दूसरे के साथ शान्ति प्रिय सम्बन्ध बना सकते हैं।
यीशु मसीह अपेक्षा करते हैं कि सारे मसीही जन अपने शत्रुओं के साथ भी मेल मिलाप के साथ जीवन व्यतीत करें। धन्य हैं वे जो मेल मिलाप कराने वाले हैं (मत्ती 5:9)। इसके अलावा पौलुस कहता है कि, जितना हो सके, तुम भरसक सब लोगों के साथ में मेल मिलाप रखो(रोमियो 12:18)।

3.शान्ति के अपने दो प्रमुख तत्व हैं।

बाइबल में शान्ति के निश्चित तौर पर दो महत्त्वपूर्ण अर्थ हैं।

- **शान्ति का अर्थ किसी बुरी चीज़ की अनुपस्थिति है।**

शान्ति का अर्थ है कि उस स्थान पर किसी प्रकार कोई बाहरी लड़ाई या झगड़ा नहीं है। शान्ति का अर्थ भीतरी गुस्सा, झुंझलाहट, भय, भड़काऊ भावनाएं,क्लेश इत्यादि नहीं होते हैं। संसार में ज़्यादातर लोग जब 'शान्ति' शब्द का इस्तेमाल करते हैं तो उनका अर्थ होता है कि उस जगह कोई लड़ाई या झगड़ा नहीं है।

- **शान्ति का अर्थ किसी भली चीज़ की उपस्थिति है।**

शान्ति का अर्थ परिपूर्णता है। शान्ति उन चीजों को जोड़ देती है जो पहले से टूटी पड़ी थी। शान्ति का अर्थ एक टूटे रिश्ते का बहाल होना है; जीवन में टूटे लक्ष्यों की पुनः शुरूआत करना है; चोटिल मनोभावों की चंगाई है; उन सारी बातों की बहाली है जिसे परमेश्वर जरूरी समझते हैं। उदाहरण के लिए, जब आप अपने अभिभावक में से किसी एक के गुज़र जाने पर जल्दी स्वर्गवासी हो जाने पर या खुद पुराने समय में पापमय जीवन व्यतीत करने के कारण दुःखी महसूस करते हैं, तो परमेश्वर आपको पूरी तरहे से विश्राम व शान्ति प्रदान कर सकते हैं, और आपको ऐसा प्रतीत होगा जैसे मानो वह घटना कभी आपके जीवन में घटी ही नहीं थी। परमेश्वर किसी भी सासांरिक माता, पिता, मित्र से बेहतर पिता, माता या मित्र है। परमेश्वर केवल आपके पुराने पापों को क्षमा ही नहीं करता बल्कि वह पाप के प्रभाव को भी आपके जीवन से मिटा डालता है। वह हमारे जीवन से शत्रुता व टूटेपन को दूर कर देता है। परमेश्वर केवल मेल मिलाप कराने वाला ही नहीं, बल्कि वह एक चंगा करने वाला, और आपको पूर्ण बनाने वाला परमेश्वर है।

4. शान्ति एहसास पर नहीं बल्कि सच्चाई पर आधारित होती है।

यूहन्ना 8:31–32,36 को **पढ़ें।**

- **सत्य अनन्त है।**

बाइबल की सच्चाईयां ही शान्ति का मज़बूत आधार है। जितनी बातें आपके दिमाग, भावनाओं, जीवन और रिश्तों को बांधकर रखती हैं, उनसे केवल परमेश्वर की सच्चाई ही आपको स्वतन्त्र कर सकती है।

- **आपके एहसास बदलते रहते हैं।**

बदलती परिस्थितियों चलते आपके एहसास भी बदलते रहते हैं।
आपके जीवन में शान्ति का अभाव हमेशा सच्चाई पर आधारित नहीं होता। उदाहरण के लिए, आपके भीतर आत्म–हीन भावना या यह विचार कि परमेश्वर आपकी परवाह नहीं करेगा, शैतान की झूठ पर आधारित विचार हैं (यूहन्ना 8:44; इफिसियों 6:16)।
कई बार आप अपनी अशान्ति से बच नहीं पाते हैं। उदाहरण के लिए,आप परमेश्वर की निगाहों में सहीं काम करने के बावजूद भी,लोगों द्वारा विरोध का अनुभव कर सकते हैं, जिन्हें आपका काम पसन्द नहीं होगा। विरोध,उपहास या सताव शान्तिमय परिस्थितियां नहीं हैं, और इनके कारण आपका मन कच्चा, निराश और भयभीत हो सकता है। ऐसी बातें मसीहियों के साथ होती हैं। इसलिए आपके लिए अपने भीतर पायी जाने वाली शान्ति, जो कि आपके भीतर परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली बातों का बोध होता है तथा बाहरी अशान्ति के बीच में अन्तर को पहिचानना सीखना ज़रूरी है, जो कि लोगों के द्वारा असहमत होने पर मन कच्चा होने वाली भावना होती है जब लोग आपके विचारों का विरोध करते हैं।

लेकिन यदि आप कोई ऐसा काम करते हैं जो कि परमेश्वर की दृष्टि में गलत होता है, जैसे कि परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में टाल मटोल करना, तो उसका परिणाम आपके सम्बन्धों व जीवन में अशान्ति का एहसास होता है। लेकिन अधीनता ,परमेश्वर की इच्छा को तुरन्त पूरा करने तथा अपने आप को परमेश्वर की इच्छा अनुसार काम करने के लिए समर्पित करने से, आपकी भावनाओं और आपके रिश्तों में शान्ति उत्पन्न होती है। परमेश्वर केवल आपका मेल मिलाप कराने वाला ही नहीं बल्कि वह आपको स्वतन्त्र कराने वाला भी है। वह आपको सारे बन्धनों से स्वतन्त्र करना चाहता है।

आराधना

परमेश्वर को अपना मेल कराने वाला, चंगाई देने वाला और उद्धारकर्ता मानकर आराधना करें। आपका मेल मिलाप कराने, चंगा करने तथा आपका उद्धार कराने के लिए परमेश्वर की आराधना करें। प्रत्येक समूह में तीन तीन लोग मिलकर आराधना करें।

3	**बाँटना** (20 मिनट) [शान्त समय] प्रेरितों के काम 1:1–4:22

अपनी बारी आने पर संक्षेप में बाँटे कि आपने निर्धारित बाइबल अनुच्छेद(प्रेरितों 1:1–4:22) से परमेश्वर के साथ निजी समय बिताने पर क्या सीखा।
उस व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुनें, उसे गम्भीरता से ले और उसे स्वीकार करें। उसकी कही गयी बातों पर वाद विवाद न करें।

4	**शिक्षा** (70 मिनट) [मसीही चरित्र] मसीही आत्म–सम्मान

क. लोग अपने बारे में क्या सोचते हैं।

आत्म सम्मान अपनी अहमियत का मूल्याँकन होता है। कई लोग कहते है, "मैं अपने आप को पसन्द नहीं करता" या " मेरे जीवन का कोई मूल्य नहीं है"। आप आज अपने आपको कितना मूल्यवान समझते है? आप आज स्वयं को कितना योग्य समझते हैं? क्या आप अपने बारे में कोई अनुकूल या प्रतिकूल विचारधारा को रखते हैं? क्या आप अपने को दूसरों की तुलना में हीन समझते हैं? क्या आपको ऐसा प्रतीत होता है कि आपके जीवन का कोई मूल्य नहीं है?
बाइबल आत्म–सम्मान के बारे में हमें क्या शिक्षा देती है?

ख. परमेश्वर(मसीह) पर ध्यान केन्द्रित करें

जब कभी भी आप इस चित्र का इस्तेमाल करें, तो **दिये गये अंक क्रम का पालन ज़रूर करें।**
पहले अंक 1 से 3 तक, फिर बीच में अंक 4 तथा बाद में 5 से 7 अंक तक देखें।

7.मेरा चरित्र ज़्यादा से ज़्यादा मसीह के समान बन जाता है।
इफिसियों 5:1–2 तथा 2 कुरिन्थियों 3:18 को **पढ़ें**। **प्रश्नः** परमेश्वर मेरे बारे में क्या सोचते हैं?
यीशु का अनुसरण करते हुए,मैं प्रेम से भरा जीवन व्यतीत करता हूँ। अपने जीवन के द्वारा मसीह को प्रगट करने के द्वारा मैं अधिकाई से मसीह की समानता में बदलता जाता हूँ।

6. मसीह में वृद्धि करने के द्वारा मैं अपने आत्म सम्मान को अर्जित करता हूँ?
क.यशायाह 43:4 व यिर्मयाह 29:11 को **पढ़ें। प्रश्नः** परमेश्वर की दृष्टि में मेरी क्या कीमत है?
मैं परमेश्वर की दृष्टि में बहुमूल्य हूँ। मैं परमेश्वर के द्वारा आदरणीय व प्रिय ठहरा हूँ?
परमेश्वर के पास मेरे जीवन के लिए कीमती योजना है। मेरे बारे में परमेश्वर के कथन पर विश्वास करने के द्वारा, अपने जीवन के प्रति मेरा मूल्यांकन सकारात्मक ढंग से बदलता जाता है।
ख. कुलुस्सियों 2:6–7 को **पढ़ें। प्रश्नः** मसीह में जड़ पकड़ने तथा निर्माण किये जाने से आपका आत्म सम्मान में कैसे वृद्धि होती है। मसीह में मेरी परिपक्वता बढ़ने से मेरी जड़े " (मेरी सुरक्षा : मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर मुझसे बिना किसी शर्त प्रेम करते हैं) अति गहराई में जड़ पकड़ने लगती हैं, और मेरी 'इमारत'(मेरा महत्वः मैं जानता हूँ कि परमेश्वर की दृष्टि में मेरा जीवन बहुमूल्य है) ऊँचाईयों को छूने लगती है।

ग. इब्रानियों 10:24–25 को **पढ़ें**। **प्रश्नः** भाईयों व बहनों का क्या योगदान है?
दूसरे विश्वासियों के साथ लगातार मिलने से,परमेश्वर के प्रति, दूसरों के प्रति तथा अपने प्रति मेंरा प्रेम लगातार गहरा होता चला जाता है, और लगातार मेरे कामों (परमेश्वर के राज्य में मेरा लक्ष्य)का प्रभाव बढ़ता चला जाता है।
5. **मैं संसार पर नहीं वरन मसीह पर अपना ध्यान केन्द्रित करता हूँ।**
कुलुस्सियों 3:1–4, 23–24 को पढ़ें। प्रश्नः मेरे ध्यान का केन्द्र बिन्दू क्या होना चाहिए?
मुझे लोगों तथा संसार की भौतिक वस्तुओं पर ध्यान न लगाकर मसीह पर, मसीह के लिए जीने तथा उसके साथ काम करने ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, क्योंकि मैं जानता हूँ कि अन्त में मुझे मसीही के साथ उसकी महिमा में प्रगट होना और अनन्त मीरास को प्राप्त करना है।

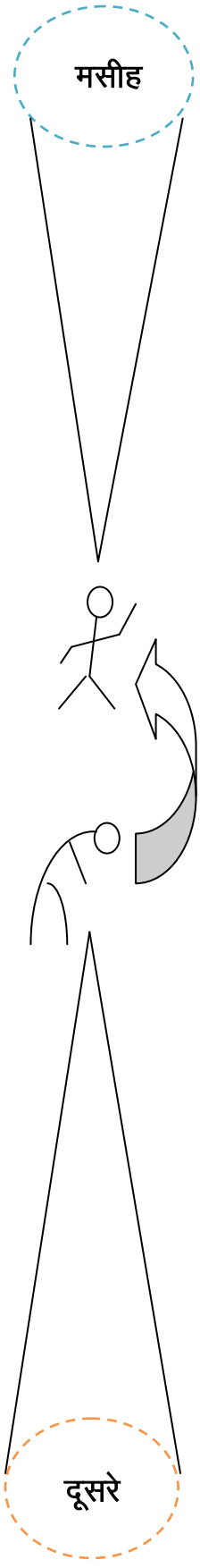

4. <u>मैं अपने केन्द्र बिन्दु को बदल देता हूँ।</u>

1 यूहन्ना 1:8–9 को **पढ़ें। प्रश्नः** मैं गलत जगह पर अपने ध्यान लगाने से बदलकर कैसे सही स्थान पर अपना ध्यान केन्द्रित करता हूँ?

किसी भी व्यक्ति (या अपने आदर्श से) से अपनी तुलना करना पाप है। ऐसी बहुत सी तुलनाओं का नतीजा पाप है। मैं अपने पापों को अंगीकार करने तथा परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा व शुद्धिकरण प्राप्त करने के द्वारा ध्यान केन्द्र परिवर्तित करता हूँ।

1.<u>मैं दूसरों के साथ अपनी तुलना करता हूँ (या अपने आदर्श के साथ)</u>

जिसका परिणाम निम्नलिखित नकारात्मक भावनाएं व विचार होते हैं।

मैं अपने आपको हीन (दूसरों की तुलना में तुच्छ)

क. मैं अपने आपको पसन्द नहीं करता

ख. मैं परमेश्वर द्वारा बनाए गये मेरे स्वरूप से सन्तुष्ट नहीं हूँ

ग. मैं दूसरे की भौतिक वस्तुओं को देखकर जलता हूँ

घ. मैं डरता हूँ कि वह मेरे बारे में क्या सोचेगा

ड़ मैं अपनी कमियों के प्रति आलोचनात्मक रवैय्या रखता हूँ और खुद को तुच्छ जानता हूँ

च.मैं उसे यह सोचकर नज़रअन्दाज़ करता हूँ क्योकि मुझे डर है कि वह मुझे चोट पहुँचा कर मुझे अस्विकार कर देगा

छ. मैं उसे इसलिए प्रसन्न करने का प्रयास करता हूँ ताकि वह मुझे स्वीकार व पसन्द करे।

या श्रेष्ठ (दूसरे व्यक्ति से बेहतर) महसूस कर सकता हूँ।

या मुझे वह व्यक्ति पसन्द नहीं है।

या मैं खुद को लेकर धमण्डी हूँ और शेखी बघारता हूँ।

या मैं उसे तुच्छ जानता हूँ।

या मैं उसकी बिल्कुल की उसकी परवाह नहीं करता।

या फिर मैं दूसरों की कमियों की आलोचना करते हुए उनकी निन्दा करता हूँ

या मैं असंवेदनशील और बेशऊर हूँ और यदि उसे मेरे द्वारा किसी को चोट पहुंचती है या वह अस्विकार होता है तो मुझे कोई परवाह नहीं है।

या मैं एक सत्यवादी हूँ और अपेक्षा करता हूँ कि वह मुझे प्रसन्न करे।

2.<u>जब भी कभी मैं इस व्यक्ति से मिलता हूँ तो मैं और भी बुरा बन जाता हूँ।</u>

जब भी कभी मैं इस व्यक्ति से मिलता हूँ

मैं अपनी बातों में अपने आप को लेकर तथा दूसरों के साथ व्यवहार करने में अधिक असुरक्षित व नकारात्मक हो जाता हूँ, इत्यादि। यह प्रक्रिया निरन्तर बुरी होती चली जाती है।

या दूसरों के प्रति मैं बातों और व्यवहार में चिड़चिड़ा हो जाता हूँ और मुझसे सहन नहीं होता।

3.<u>जैसा मैं सोच विचार करता हूँ मेरा चरित्र ठीक उसी प्रकार का हो जाता है।</u>

आखिर में मैं बिल्कुल वैसा हो जाता हूँ जैसा मैं अपने बारे में सोचता या महसूस करता हूँ। यहां तक कि मैं दूसरे के समान बन जाता हूँ।

गलातियों 6:7–8 ***पढ़ें***। ***प्रश्नः*** कौन से सिद्धान्त मेरे चरित्र को बनाते हैं?

सिद्धान्त वह बातें हैं: जिन्हें मैं लगातार देखता या जिनके व्यवहारों के बारे में मैं सोचता हूँ, और बाद में मैं मेरा चरित्र उसी रूप में ढल जाता है।

लगातार निम्न विचारों प व्यवहारों के बीज को बोने का परिणाम असुरक्षित, भयभीत व असन्तुष्ट चरित्र होता है।मैं खुद को तुच्छ जानकर हमेशा दूसरों से डरूंगा। मेरा आत्म सम्मान निम्न स्तर का होगा।

लगातार उच्च विचारों व व्यवहारों के बीज को बोने का परिणाम क्रोधित, घमण्डी, असंवेदनशील, अप्रिय चरित्र होता है। मैं दूसरों को तुच्छ जानकर उन पर प्रभुता करूंगा। मेरा आत्म सम्मान फूला व गलत होगा।

सारांशः दूसरों से अपनी तुलना न करें बल्कि मसीह पर ध्यान केन्द्रित करें।

ग. परमेश्वर के उददेश्य पर ध्यान केन्द्रित करें।

वह मेरे बारे में क्या सोचता है?

वह मेरे बारे में कैसा महसूस करता है?

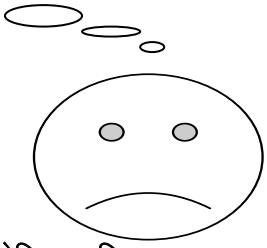

आत्म केन्द्रित व्यक्ति
ये श्रीमान 'केवल अपने आप पर ही ध्यान लगाते हैं।'

परमेश्वर उसके जीवन में क्या कर रहा है?
मैं उसकी कैसे सहायता या सहयोग कर सकता हूँ?

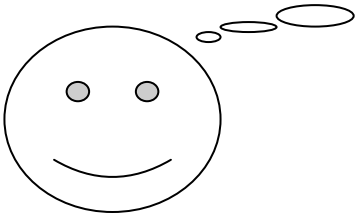

दूसरों के बारे में सोचने वाला व्यक्ति
यह श्रीमान' दूसरों के जीवन में परमेश्वर के उददेश्यों पर ध्यान लगाते हैं'

परमेश्वर आपसे क्या करने के लिए कहते हैं?
पढ़ें: फिलिप्पियों 2:3–5, 20–21
टिप्पणी। परमेश्वर ने आपसे केवल अपने ही जीवन पर ध्यान लगाने के लिए नहीं परन्तु दूसरों के जीवन में परमेश्वर के जीवन में परमेश्वर की योजना पर ध्यान लगाने के लिए भी कहा है। जब कभी आप अपने सारे विचारों को केवल अपने ही बारे में सोचते हुए पाएं तो खुद से यह प्रश्न पूछना ' कि मैं अपने बारे में इतना ध्यान केन्द्रित क्यों रहता हूँ? यह स्वाभाविक है कि कई बार हमारा ध्यान अपने जीवन की समस्याओं और चोटों से भी घिरा रहता है। तब उसे दूसरों के प्रेम व ध्यान की भी जरूरत होती है। उस समय पर उसे लोगों की सहायता व सहारा मांग लेना चाहिए ताकि वक्त पड़ने पर वह भी दूसरों को सहारा दे सके व सहायता कर सके।
सारांश। अपने आप पर ध्यान न लगाएं वरन दूसरों के जीवन में परमेश्वर की योजना ध्यान केन्द्रित करें।

घ. परमेश्वर की सच्चाई पर ध्यान केन्द्रित करें।

1. आप परमेश्वर की अद्भुत रचना है।

परमेश्वर ने आपको कितना सुन्दर बनाया है?
पढ़ें: भजन संहिता 139:14
टिप्पणी। ध्यान दें कि आपके शरीर के कुछ भाग कितनी अद्भुत रीति से रचे गये हैं, जैसे आपकी आंखें या हाथ। इसके अलावा अपनी आत्मा (परमेश्वर को जानने की योग्यता), अपने विवेक (सही या गलत को जानने की आपकी योग्यता), अपनी अंर्तात्मा (झूठ और खतरे का पूर्वाभास करने की आपकी योग्यता) अपनी रचनात्मकता (आपके भीतर नई नई चीज़ों को रचने की सामर्थ्य) पर भी ध्यान दें।
बांटे: आप अपने बारे में कौन सी बात पसन्द नहीं करते हैं?
सबक। परमेश्वर द्वारा आपको बनाये गये तरीके को नापसन्द करने का परिणाम परमेश्वर पर भरोसा करने की योग्यता का अभाव होता है। लेकिन परमेश्वर के बनाए तरीके को स्वीकार करने से, हम में परमेश्वर पर भरोसा करने की योग्याता का र्निमाण होता है।

2. परमेश्वर के साथ आपको किसी भली वस्तु की कमी नहीं होती है।

आपको किस चीज़ की कमी महसूस होती है?
पढ़ें :भजन संहिता 23: 1. 34:10 को
बांटे: जब आपको यह महसूस होता है कि आपको किसी चीज़ की कमी है तो आप क्या करते हैं?(उदाहरण के लिए, भोजन या बसेरा,सुरक्षा या विश्राम, मृत्यु की घाटी में सहायता, या शत्रु के खिलाफ सहायता या परमेश्वर के साथ सम्बन्ध बनाना)
चर्चा करें: घटी की क्षतिपूर्ति करने के लिए मनुष्यों द्वारा किये जाने वाले सारे प्रयासों, जैसे ढांपना, कठिन परिश्रम करना, अतिरिक्त काम करना,आदी होना, चीज़ें खरीदना, नाटक करना इत्यादि. पर चर्चा करें। इन बातों को आत्मिक तरीके से घटि को पूरा करने के तरीकों प्रार्थना, स्तुति, सन्तोष, शुक्रगुज़ार होना आदि बातों से तुलना करें।
सबक: लगातार अपनी घटि पर ध्यान केन्द्रित करने से आपकी प्राथमिकताएं गलत हो जाती हैं। परन्तु मसीह में प्राप्त चीज़ों पर ध्यान केन्द्रित करने से आपकी प्राथमिकताएं ठीक होती हैं।

3. परमेश्वर के साथ होने पर आपको आत्म सम्मान को बढ़ाने के लिए किसी अन्य बात की आवश्यकता नहीं होती।

लोगों की नज़रों में स्वयं को ग्रहण योग्य साबित करने की जरूरत को पूरा करने के लिए आप क्या करते हैं?

पढ़ें : गलातियों 1:10; यिर्मयाह 17:5–8 ।

चर्चा करें: किस प्रकार लगातार दबाव डालने, दूसरों की चापलूसी करना, किसी जन की सामाजिक जरूरत को भौतिक वस्तुओं के द्वारा पूरा करना या लोगों से अलग होने का एहसास जैसी घारणाएं आपको मसीह की सेवा करने के लिए अयोग्य ठहराती हैं?

सबक: दूसरों को प्रेम करना या गलत उद्देश्य के तहत दूसरों को प्रेम करने से आप मसीह की सेवा करने से आप अयोग्य नहीं ठहरते। लेकिन लगातार अपने आप पर या आत्म सम्मान पर ध्यान केन्द्रित करने से आपको कोई फल प्राप्त नहीं होगा। लेकिन यदि 'मसीह आपके जीवन का सोता है'(भजन 36:9; यूहन्ना 7:37–39) या आपके जीवन की 'दाखलता' है (यूहन्ना 15:5) तो आप बहुतायत से फल लायेंगें।

सार। संसार के धन पर भरोसा न करें, लेकिन परमेश्वर की सच्चाई व बाइबल में प्राप्त धनी बातों पर ध्यान केन्द्रित करें।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	प्रतिक्रिया प्रार्थना परमेश्वर के वचनों का प्रतिउत्तर है

जो कुछ आज आपने सीखा उन बातों का प्रतिउत्तर देने के लिए समूह में एक छोटी सी प्रार्थना करें। या समूह को दो दो या तीन लोगों में बांटकर उन बातों का प्रतिउत्तर देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें जो आज आपने सीखी हैं।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	[निर्धारित कार्य] अगले अध्याय के लिए

समूह का अगुवा : समूह के सदस्यों को यह तैयारी गृह कार्य के रूप में लिखित तौर पर प्रदान करे या उन्हें इस डाउन लोड करने दें।

1. सर्मपण: चेले बनाने के लिए समर्पित हों।

किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के जन के साथ 'मसीही आत्म–सम्मान' पर आधारित शिक्षाओं को पढ़ें, सिखाये या प्रचार करें।

2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना। प्रेरितों के काम 4:23–7:60 तक रोज एक अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताएं। पसन्दीदा सच्चाई के तरीके का इस्तेमाल करें। लिखें।
3. बाइबल अध्ययन। अगली बाइबल अध्ययन की घर ही में तैयारी करें। यूहन्ना 15:13–15। विषय: 'कौन सी बातें मसीही मित्रता को प्रगट करती हैं? बाइबल अध्ययन के पांच कदमों वाली पद्धति को इस्तेमाल करें। मुख्य बातों को लिखें।
4. प्रार्थना: किसी व्यक्ति या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं (भजन 5:3)
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे को अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 16

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	बाँटना (20 मिनट) [शान्त समय] प्रेरितों के काम 4:23–7:60

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **बताएं** (या अपनी कॉपी में से **पढ़ें**) की आपने परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत तौर पर बिताएं समय में निर्धारित बाइबल खण्ड (प्रेरितों 4:23–7:60) में से क्या सीखा।
बताने वाले व्यक्ति की बातों को गम्भीरता से लें तथा स्वीकार करें। उसकी बातों पर वाद विवाद न करें।

3	याद करें (20 मिनट) [मसीह में नया जीवन] वचन : मत्ती 4:4

क. मनन

याद करने वाले वचन को श्याम या श्वेत पट पर निम्नलिखित तरीके से लिखें

वचन मत्ती 4:4
यीशु ने उत्तर दिया, लिखा है कि 'मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं परन्तु परमेश्वर के मुँह से निकले प्रत्येक वचन से जीवित रहता है।'' मत्ती 4:4

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के वचन को लिखें।

1. **'लिखा है' शब्दों को क्या आशय है?**
यीशु ने जब भी कभी बाइबल में लिखे वचनों को उद्धरित किया तो इन शब्दों का इस्तेमाल ज़रूर किया। यीशु को बाइबल का उच्च ज्ञान था। वह बाइबल को जीवन व सिद्धान्तों के लिए मील का पत्थर मानते थे। वह हर बात के लिए बाइबल के सिद्धान्तों को निर्णायक माना करते थे। शैतान द्वारा यीशु की परीक्षा किये जाने पर , यीशु ने तीन बार बाइबल के पदों का इस्तेमाल किया (व्यवस्थाविवरण 8:3;6:16;6:13)।

2. **भूतकाल में परमेश्वर द्वारा बोले गये वचनों ने किस प्रकार लोगों को जीवन प्रदान किया?**

पहला उदाहरण। हम बाइबल के पहले अध्याय में ही देखते हैं कि परमेश्वर ने कहा, कि ' ज्योति हो जा!' और ज्योति हो गयी। परमेश्वर के मुँह से निकला हर एक वचन इतना शक्तिशाली था कि उसके द्वारा धरती उसमें पायी जाने वाली सारी वस्तुओं के साथ तथा सारा सौर्य मण्डल सारे सितारों के साथ अपने अस्तित्व में आ गया। (भजन 33:6; इब्रानियों 11:3)।

दूसरा उदाहरण। इस्राएलियों को नम्र व दीन करने तथा उनकी परीक्षा करने के लिए परमेश्वर उन्हें चालीस वर्षों तक निर्जन प्रदेश में से लेकर चला (व्यवस्था विवरण 8:2–3)। ' नम्र या दीन करने ' को 'उन पर दबाव डालना' भी कहा जा सकता है। परमेश्वर इस्राएलियों की परीक्षा करने के लिए उन्हें उस परिस्थिति में ले आया जिसमें उन पर दबाव था। वे निर्जन प्रदेश में थे, जहाँ उनके पास पर्याप्त मात्रा में रोटी नहीं थी, जिस कारण उन्हें भूख का सामना करना पड़ता था। हालांकि परमेश्वर इस्राएलियों के हृदय की गति को भलि भाँति जानते थे लेकिन परीक्षा के द्वारा वह उनकी मनोदशा को प्रगट करना चाहते थे। लेकिन परमेश्वर ने उनकी इस दबावपूर्ण परिस्थिति में उनका बहुतायत से ख्याल भी रखा। उसके बोले गये शब्दों के द्वारा उसने उनके खाने के लिए मन्ना का प्रयोजन किया। इसके अलावा उसने उनकी अन्य जिम्मेदारियों को उठाया और इस दौरान

उनके न तो कपड़े फटे और इतना लम्बा सफर करने पर भी उनके पांव नहीं सूजे। परमेश्वर इस्राएलियों को इस दबाव पूर्ण परिस्थितियों में इसलिए लाया और उनकी परवाह की ताकि वे खुद पर और अन्य किसी सृष्टि पर भरोसा न करके, केवल परमेश्वर पर ही भरोसा करें। परमेश्वर इस घटना के द्वारा इस्राएलियों को सिखाना चाहते थे कि वे तथा बाकि संसार पूरी तरह उसके वचनों पर निर्भर है जो इस जगत की नींव को सम्भाले रहते हैं।

तीसरा उदाहरण। जिब्राएल स्वर्गदूत ने मरियम से कहा,' परमेश्वर का कहा वचन कभी प्रभावरहित नहीं होता'(लूका 1:37)। वह इस बात को बता रहा था कि मरियम कुंवारी अवस्था में अर्थात किसी आदमी से किसी प्रकार का शारीरिक सम्बन्ध बनाये ही एक पुत्र को जन्म देगी। परमेश्वर के सामर्थी वचनों के द्वारा ही यीशु ने एक मनुष्य रूप धारण किया (लूका 1:34–38)।

चौथा उदाहरण। मरूस्थल में चालीस दिन उपवास रखने के बाद, यीशु को भूख लगी। शैतान ने चाहा कि यीशु परमेश्वर पर विश्वास न करके, अपनी सामर्थ्य पर भरोसा करे और पत्थरों को रोटी बना दे। शैतान लोगों को विश्वास दिलाना चाहता है कि लोग अपनी ताकत व ज्ञान से अपनी परिस्थितियों को सहज बना सकते हैं और उन्हें परमेश्वर की ज़रूरत नहीं है। लेकिन यीशु मसीह ने बताया कि यह सब मनुष्य की ताकत से नहीं है, परन्तु परमेश्वर ही अपने शब्दों द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ज़रूरी परिस्थितियों को उत्पन्न करता है। आप परमेश्वर पर विश्वास करें या न करें, लेकिन यदि परमेश्वर अपने सामर्थी व रचनात्मक शब्दों को न बोले, तो वहाँ रोटी का नामों निशान नहीं होगा।

3. परमेश्वर द्वारा बोला गया प्रत्येक वचन मनुष्य के लिए क्यों महत्वपूर्ण हैं?

परमेश्वर द्वारा बोले गये शब्द इतने शक्तिशाली हैं कि उनसे हवा बनी ताकि मनुष्य सांस ले सके, वर्षा व रौशनी बनी ताकि मनुष्य फसल उगा सके और भोजन खा सके। वह इतने सामर्थी हैं मनुष्य को हम मिनट व हर क्षण सम्भाल कर रखते हैं। यदि परमेश्वर ने अपने शब्दों को न बोला होता तो, न वर्षा होती, न रौशनी होती, न भोजन होता, न पानी होता, न सांस लेने के लिए हवा होती, न सुन्दर पेड़ व पौधे होते। कुछ भी नहीं होता, क्योंकि परमेश्वर ही अपने शब्दों द्वारा सृष्टि बनाता और संभालता है। इसलिए ही यीशु ने कहा कि मनुष्य परमेश्वर के मुँह से बोले गये वचनों द्वारा जीवित रह सकता है! परमेश्वर द्वारा बोले गये वचन, सारी सृष्टि, सारी परिस्थितियों तथा सम्पूर्ण इतिहास पर परमेश्वर के राजकीय अधिकार को दर्शाते हैं।

4. परमेश्वर का प्रत्येक लिखित वचन मनुष्य के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

परमेश्वर ने आज्ञा दी की उसके द्वारा बोले गये किन वचनों को लिखा जाए और वे परमेश्वर के लिखित वचन बन गये! बाइबल में लिखे गये परमेश्वर के वचन भी सामर्थी व प्रभावशाली हैं। मनुष्य परमेश्वर के द्वारा निर्धारित किये गये जीवन को तभी जी सकता है, जब वह अपने जीवन में परमेश्वर के लिखित वचनों का पालन करता है। बाइबल में लिखे परमेश्वर के वचनों में परमेश्वर के रहस्यों को प्रगट करने की शक्ति पायी जाती है (लूका 8:10), और जिस प्रकार कोई हथौड़ा किसी पत्थर को तोड़ता और आग भूंसे को जलाती है उसी तरह परमेश्वर का वचन मनुष्य के झूठे विचारों तथा तर्कों को नाश कर देता है (यिर्मयाह 23:29)। लिखित परमेश्वर के वचनों में मनुष्यों के विचारों व उसकी मनोदशा को जाँचने की शक्ति (इब्रानियों 4:12), वचनों पर विश्वास करने वाले लोगों को बचाने की शक्ति (रोमियों 10:13–17) तथा विश्वासियों को आत्मिक बातों में बढ़ाने की शक्ति होती है (1 पतरस 2:2)। परमेश्वर के लिखित वचन लोगों को परमेश्वर की सच्चाई बताने, लोगों को उनके पापों से अवगत कराने तथा लोगों की गलतियों में सुधार करके उन्हें परमेश्वर का सशक्त दास बनाने के लिए अति कारगर साबित होते हैं(2 तीमुथीयुस 3:16–17)।

ख. याद करना और पुनरावलोकन

1. किसी खाली कार्ड या कोपी के किसी पन्ने पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2. बाइबल की आयत को सही तरीके से ***याद करें।*** आयतः मत्ती 4:4
3. ***पुनरावलोकन करें।*** दो दो के समूह में बंट जाएं तथा एक दूसरे से पिछली याद की गयी आयत को सुनें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट) (सम्बन्ध) मसीही मित्रता, यूहन्ना 15:13–15

पाँच चरणों वाले अध्ययन पद्धति का इस्तेमाल करते हुए यूहन्ना 15:13–15 का अध्ययन करें।

कदम1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढें। आइये हम साथ मिलकर यूहन्ना 15:13–15 पढ़ें।
बारी बारी करके सब लोग तब तक एक पद पढ़ें जब तक वह निर्धारित वचन समाप्त न हो जाएं।

कदम 2. खोजें। अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में पाया जाने वाली कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद की सच्चाई ने आपके हृदय और मन को छुआ है?

लिखें। एक या दो बातों की सच्चाई की खोज करें जो आपको समझ में आ रही हो। उनके बारे में विचार करें तथा अपनी कॉपी में अपने विचार लिखें।

बांटें। (समूह के लोगों को दो मिनट का समय सोचने और लिखने के लिए देने के बाद, अपनी बातों को आपस में बाँटें) आईये बारी बारी बताएं कि आपको क्या प्राप्त हुआ है।

(नीचे कुछ लोगों द्वारा बांटी गयी गवाही के कुछ उदाहरण हैं कि उन्हें क्या खोज की। याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग अलग बातें बाँट सकते हैं, ऐसा कोई ज़रूरी नहीं कि वे ये ही बातें बोलें)

15:13

खोज 1. मैं,जो पहले दुश्मन था, यीशु का मित्र कहलाया।

यीशु ने कहा कि सबसे बड़ा प्रेम है कि कोई अपने मित्र के लिए अपने प्राण दे दे। मुझे यह बात सबसे ज्यादा छूती है कि यीशु ने मुझे अपना मित्र कहा। रोमियों 5 में मैं पढ़ता हूँ कि मैं मसीही बनने से पहले क्या था। उस समय मैं कमज़ोर, भक्तिहीन, एक पापी और परमेश्वर का शत्रु था। मैं अपने चरित्र में बुरी तरह कमजोर था और खुद को परिवर्तित करने में असहाय। मैं भक्तिहीन था। हालांकि मैं किसी 'भगवान' कहे जाने वाले जन पर विश्वास करता था, लेकिन सच्चे और जीवित परमेश्वर के बारे में मेरे विचार बिल्कुल गलत थे। मैं सोचता था कि वह इतनी ऊँचाई पर विराजमान है कि कोई भी उसके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकता। मैं इस डर के मारे कि कहीं वह मुझे अपने स्वर्ग में जगह न दे, मैं दिन में काफी बार प्रार्थना किया करता,लम्बे समय के लिए उपवास करता, पर्याप्त मात्रा में दान दिया करता और धार्मिक गतिविधियों में भाग लिया करता था। मैंने कभी ऐसा सोचा ही नहीं था कि कभी परमेश्वर मेरा मित्र बनना पसन्द करेंगे। लेकिन अब यीशु मुझे अपना मित्र कहते हैं। इस संसार में मेरे बहुत से मित्र हैं, लेकिन उनमें से कोई भी यीशु के तुल्य नहीं है। एक मित्र के रूप में वह हमेशा मेरे नज़दीक रहते हैं और मेरे साथ मिलकर काम करते हैं। मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जो पहले कभी परमेश्वर का शत्रु हुआ करता था अब यीशु मसीह का मित्र कहलाता है।

15:14

खोज 2. मित्रता के अर्न्तगत जिम्मेदारी है।

यीशु ने कहा''यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानते हो तो तुम मेरे मित्र हो।'मैं मानता हूं कि मित्रता अपने आप नहीं हो जाती। मित्रता में बहुत सी जिम्मेदारियां शामिल होती हैं। मैं यीशु का मित्र केवल तभी हो सकता हूँ जब मैं उसकी आज्ञाओं का पालन करूं। यूहन्ना 15:9–10 में यीशु कहते हैं ''मेरे प्रेम मे बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानते हो तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे।'' अपने जीवन में लगातार मसीह की इच्छा पूरी करने से मैं आश्वस्त होता हूँ कि मैं उसके प्रेम में बना हुआ हूँ। यह मेरी जिम्मेदारी है कि मैं उसकी आज्ञाओं को जानूं, लेकिन उसके साथ साथ यह भी मेरी जिम्मेदारी है कि मैं उसकी आज्ञाओं का पालन करूँ। मेरे लिए सबसे बड़ी बात यह है कि यदि मैं मित्रता करना चाहता हूँ, तो उस मित्रता के रिश्ते के अन्तर्गत मेरी कुछ जिम्मेदारियां भी है।

कदम 3. प्रश्न। वर्णन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद के आधार पर आप इस समूह से क्या प्रश्न पूछना चाहेगें?
आईये हम यूहन्ना 15:13–15 में पायी जाने वाली सारी सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें, और उन बातों को लेकर प्रश्न करें जिन्हें अभी तक हम समझ नहीं पायें हैं।

लिखें। स्पष्ट तौर पर अपने प्रश्नों को स्वरूप प्रदान करें। तथा अपने प्रश्नों को अपनी कॉपी में लिखें।

बांटें। (समूह के लोगों को दो मिनट का समय सोचने और लिखने के लिए देने के बाद, हर एक जन पहले अपने प्रश्न के बारे में बताए)

चर्चा करें। (फिर, कुछ प्रश्नों को चुनाव करके, अपने समूह के सदस्यों के साथ चर्चा करने के बाद इन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें।)

कुछ ऐसे प्रश्नों के उदाहरण जो विद्यार्थी पूछ सकते है और कुछ प्रश्नों पर की गयी चर्चा के सम्बन्ध में लेख निम्नलिखित हैं।

15:13

प्रश्न1. अपने मित्र के लिए अपने प्राण को दे देने का अर्थ क्या है?

टिप्पणी। हमें इस बात की फरक को पहिचानना ज़रूरी है कि मित्र के रूप में यीशु ने किस प्रकार हमारे लिए अपना प्राण दिया और जिन लोगों को हम अपना मित्र कहते हैं उनके लिए हम किस प्रकार से अपने प्राण कों दें।

एक तरीके से देखा जाए तो यीशु का प्रेम अनोखा था।

क्रूस पर अपने प्राण हमारे लिए कुर्बान करते समय जो प्रेम यीशु हमसे करते थे वह अनोखा था। उसे अथाह प्रेम की अहमियत,उसके प्रेम के वैकल्पिक रूप तथा उसके प्रेम के द्वारा प्राप्त छुटकारे की तुलना हम अपने प्रेम में नहीं कर सकते। इस तरह यीशु का प्रेम बिल्कुल अनोखा था और कोई भी जन उसके प्रेम की नकल नहीं कर सकता। यीशु केवल हमारे फायदे के लिए ही नहीं मरा, बल्कि वह हमारे बदले मरा। मसीह का प्रेम वैकल्पिक प्रेम है। उस प्रेम करने की कीमत हमारे पापों के दण्ड को भुगतने और हमारे कारण अपने पिता द्वारा छोड़ दिये जाने की यातना सहने के द्वारा चुकानी पड़ी। हम इस तरह अपने मित्रों के बदले दुःख उठाकर वैकल्पिक प्रेम नहीं कर सकते हैं।

दूसरी तरह से देखा जाए तो यीशु का प्रेम हमारे लिए एक आदर्श है।

यूहन्ना 15:12–15 में लिखा है, ' मेरी आज्ञा यह है कि जिस तरह मैंने तुम्हें प्रेम किया है, वैसे ही तुम एक दूसरे को प्रेम करो। इससे बढ़कर और कोई प्रेम नहीं है कि कोई जन अपने मित्र के लिए अपना प्राण दे।'' यह इस बात को दर्शाता है कि यीशु मसीह का हमारे लिए दर्शाया गया प्रेम एक आदर्श है जिसके आधार पर हम भी अपने मित्रों को प्रेम कर सकते हैं। यह मसीह के प्रेम की विशेषता है, जिसका हमें अनुसरण करना चाहिए, जो कि अपने आप में एक कुर्बानी चढ़ाने वाला प्रेम है। यीशु कह रहे हैं कि जिस प्रकार मैंने तुम्हें "आत्म–बलिदान चढ़ाते हुए प्रेम किया है, उसी प्रकार तुम भी आत्म–बलिदान चढ़ाते हुए एक दूसरे के साथ प्रेम करो। हम तब आत्म बलिदान चढ़ाते हुए प्रेम करते हैं जब हम दूसरों को प्रेम करने के लिए अपने आप का और अपनी इच्छाओं का इनकार करते हैं। आत्म बलिदान चढ़ाने वाले प्रेम की सदैव एक कीमत होती है। इसके लिए धन, समय, शक्ति देनी पड़ती है और अपने आपे का इनकार करना पड़ता है। हालांकि मैं अपने मित्रों को वैकल्पिक प्रेम नहीं दिखा सकता, लेकिन मुझे अपने मित्रों को आत्म बलिदान चढ़ाने वाला प्रेम करना चाहिए। जब मैं अपने मित्रों के लिए कुछ कुर्बान करता हूँ तो मैं आत्म बलिदान करने वाले प्रेम को दर्शाता हूँ।

मसीही मित्रता की प्रथम विशेषता

मसीही मित्रता की प्रथम विशेषता यह है कि सच्ची मित्रता हमेशा दूसरों के लिए पहले करती है और दूसरे के लिए कुर्बानी चढ़ाती है। मसीही मित्र कभी यह नहीं पूछते,'' मुझे इस रिश्ते से क्या हासिल होगा?'' मसीही मित्र हमेशा पूछते हैं, ''इस सम्बन्ध में मेरा क्या योगदान है?''

15:14

प्रश्न 2. कोई जन यीशु का मित्र तभी क्यों बन सकता है जब वह उसकी आज्ञाओं का पालन करे?

टिप्पणी.

यीशु की ज़िम्मेदारी। वह हमें कृपापूर्ण प्रेम करता है।

यदि मैं यीशु की कुछ आज्ञाओं को मानने से चूक जाऊँ, तौभि क्या मैं यीशु का मित्र ठहरूंगा? यह एक रूचिकर प्रश्न है। आईये ध्यान से देखें के उस समय चेले कैसे थे। फसह के समय भोजन करते समय उसके चेले आपस में इस बात पर बहस कर रहे थे कि उनमें से बड़ा कौन है (लूका 22:24)। लेकिन जब वे उपरौठी कोठरी पर पहुँचे तो कोई भी जन किसी के पांव धोने को तैयार नहीं था (यूहन्ना 13)। उसके बाद हम देखते हैं कि वे यीशु के साथ एक पहर भी प्रार्थना न कर सके। और जब भीड़ यीशु को गिरफ्तार करने के लिए आयी तो पतरस ने अपनी तलवार निकालकर एक सैनिक का कान काट दिया। उसके बाद सारे चेले यीशु को अकेला छोड़कर भाग गये। उसकी अगली सुबह ही पतरस ने यीशु का तीन बार इनकार किया। इस प्रकार की बहुत सी घटनाओं के द्वारा चेलों ने अपने चरित्र की कमियों को प्रगट किया। फिर भी, जबकि यीशु जानते थे की उनके साथ यह सब कुछ होने वाला हैं, उसने अपने चेलों को मित्र कहा। वास्तव में यीशु का प्रेम कितनी कृपा से पूर्ण है। हमारे प्रति उसका प्रेम हमारी कमजोरियों या असफलताओं पर आधारित नहीं है बल्कि वह हमारे प्रति दिखाये गये कुर्बानी चढ़ाने वाले प्रेम पर आधारित है!

हमारी ज़िम्मेदारी। हमें यीशु की शर्तों व सिद्धान्तों पर आधारित होकर मित्रता करनी चाहिए।

यीशु मसीह के साथ मित्रता बनाए रखने के लिए, हमारी भी एक ज़िम्मेदारी है। हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि हम यीशु की शर्त्रों पर ही उसके साथ मित्रता करें। यीशु के साथ मित्रता हमारी शर्त्रो पर कायम नहीं होती बल्कि उसकी शर्तों पर कायम होती है। यीशु ही निर्धारित करते हैं कि उसके साथ मित्रता बनाने में कौन सी चीजें शामिल होती हैं और कौन सी बातें इस मित्रता में शामिल नहीं हो सकतीं। वह ही आज्ञाओ को देता है। वह ही इस मित्रता की सीमाओं को निर्धारित करता है। यह बहुत ज़रूरी है। यीशु के साथ मित्रता करना संसार के साथ मित्रता करने जैसा नहीं है। संसार के साथ मित्रता में दो पक्षों की भावनाओं का मिलन होता है, जिसमें

लोगों की पसन्द या नापसन्द का ख्याल रखा जाता है, और एक साथ रहने और काम करने में बढ़ा मज़ा भी आता है। लेकिन यीशु के साथ मित्रता करना बिल्कुल अलग है। इस सम्बन्ध की अपनी सीमाएं व स्तर होता है। हम यीशु की आज्ञाओं का पालन करने पर ही उसके मित्र बन सकते हैं। यीशु उसके साथ सम्बन्ध बनाने की सीमाओं को तय करता है।

हम उसके चुने हुए लोग हैं इसीलिए हमारे प्रति यीशु का प्रेम तथा यीशु के प्रति हमारा प्रेम सम्भव हो पाया है।

हम एक तरफ यीशु की आज्ञाओं को पूरा करने की ज़िम्मेदारी पूरा करते हुए, कैसे हमारे प्रति यीशु की कृपापूर्ण प्रेम को प्राप्त कर सकते हैं, जबकि हम में दूसरी ओर बहुत सी कमियां होती हैं? इसका जवाब हमें यूहन्ना 15:19 में मिलता है, जहां यीशु कहते हैं, 'मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है'। उसने चेलों को अपना होने के लिए चुन लिया था। उसने अपने चेलों को शैतान के अधिकार तथा पाप से बचाया। जल्द ही वह उन पर अपनी पवित्र आत्मा को उण्डेलने वाला था। पवित्र आत्मा की शक्ति व बुद्धि के द्वारा वे यीशु की आज्ञाओं को पूरा करने के योग्य हो जाएंगे। यीशु हमारे साथ भी कुछ इसी तरह व्यवहार करते हैं। यीशु हम से केवल उन्हीं चीजों की मांग करते हैं जो वह पहले हमें बहुतायात से प्रदान कर चुके होते हैं! यीशु कभी हमसे ऐसी बातों की मांग नहीं करते, जिसे हम कभी पूरा न कर सकें। यीशु केवल हमें उसकी आज्ञा मानने के लिए ही नहीं कहते, बल्कि हमें पवित्र आत्मा द्वारा शुद्ध भी करते हैं ताकि हम उसकी आज्ञा *मानना चाहें* और आज्ञा *मान सकें* तथा उसकी *आज्ञा मानेगें* (1 पतरस 1:1–2)

मसीही मित्रता की दूसरी विशेषता।

मसीही मित्रता की दूसरी विशेषता यह है कि सच्ची मित्रता का हमेशा एक आधार व उसकी सीमाएं होती हैं, जो यीशु मसीह की शिक्षाओं व उसकी आज्ञाओं पर आधारित होती हैं। मसीही मित्र कभी भी पापमय संसार के सिद्धान्तों को पालन नहीं करते। बल्कि मसीही मित्र उन नियमों और शिक्षाओं को पालन करते हैं जो यीशु ने बाइबल में बतायी हैं। वे उसके मार्गों पर चलना *चाहते* हैं, वे उसके मार्गों पर *चल सकते* हैं और वे उसके मार्गों पर *चलेगें*। अच्छे मित्रों की मित्रता का आधार व सीमाएं बाइबल की शिक्षाओं पर आधारित होते हैं।

15:15

प्रश्न 3. यीशु के चेलों को दास क्यों नहीं कहा गया?

टिप्पणी। यीशु ने कहा, 'अब से मैं तुम्हें दास न कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है, परन्तु मैं ने तुम्हे मित्र कहा है क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं। उससे पहली ही शाम को यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि यदि मैं ने प्रभु और गुरू होकर तुम्हारे पांव धोए, तो तुम्हे भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए, क्योंकि कोई भी दास अपने स्वामी से बढ़ा नहीं होता(यूहन्ना 13:14–16)। यूहन्ना 13 में चेलों को दास कहके सम्बोधित किया गया, लेकिन यूहन्ना 15 में उन्हें 'दास' कहकर सम्बोधित नहीं किया गया। अतः यीशु के चेले अब दास क्यों नहीं कहे जाते हैं।

"दास "शब्द एक पद को दर्शाता है।

"दास "शब्द यीशु व दूसरों के साथ चेलों के सम्बन्धों को दर्शाता है। उस शाम को यीशु ने अपने चेलों को नम्रता के महत्व के बारे में शिक्षा प्रदान की थी। इस संसार में एक दास कभी अपने स्वामी से बड़ा नहीं हो सकता है। लेकिन यदि गुरू होकर यीशु अपने चेलों के पैर धोते हैं तो, चेलों को एक दूसरे के पैर क्यों नहीं धोना चाहिए। जी हां, चेलों को लगातार ''एक दूसरे का दास होना चाहिए'' और एक दूसरे के पैरों को धोना चाहिए। ''किसी के पैरों को धोने" का अर्थ है कि आप किसी काम को करने के लिए सबसे छोटे स्थान को लेने के लिए तैयार है बाकि लोग नहीं लेना चाहते या फिर वे इस योग्य नहीं हैं। इसी कारण यूहन्ना 13 में यीशु और चेलों तथा चेलों के एक दूसरे के साथ बीच सम्बन्ध पर ज्यादा ज़ोर दिया गया है। चेले "दास" हैं।

"मित्र" शब्द धनिष्ठता को दर्शाता है।

मित्र शब्द चेलों की यीशु के साथ व अन्य चेलों के साथ धनिष्ठता को दर्शाता है। यीशु ने पहले ही अपने चेलों को अनेकों महत्वपूर्ण बातें बता दी थीं। उसने उन्हें बताया था कि उसके इस धरती पर क्यों भेजा गया था। परमेश्वर पिता ने उसे खोये हुओं को ढूढ़ंने और उनका उद्धार करने के लिए भेजा था। उसने उन्हे बताया था कि वह क्यों कष्ट सहने जा रहा है। उसने कहा कि वह अपने सारे लोगों के पापों को मूल्य चुकाने के लिए सारे कष्ट सहेगा। उसने उन्हे बताया कि उसे क्यों इस संसार को छोड़कर जाना ही होगा। वह पुररूत्थान व स्वर्ग पर उठा लिये जाने के द्वारा धरती को छोड़ देगा ताकि वह अपने चेलों पर पवित्र आत्मा को उण्डेल सके तथा स्वर्ग में उनके लिए एक स्थान तैयार कर सके। उसने उन्हे बताया कि किस प्रकार से किसी व्यक्ति का

उद्धार हो सकता है। लोग उस पर विश्वास करने के द्धारा उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। देखिये, सामान्यतः एक स्वामी अपने दासों को यह सारी बातें नहीं बताता। यीशु ने अपने चेलों को ये सारी बातें इसलिए बतायी थीं क्योंकि वे अब उसके मित्र बन चुके थे। जब गुरू और चेलों के बीच सम्बन्धों में घनिष्ठता पर ज़ोर दिया जा रहा हो तो "दास" एक उचित सम्बोधन प्रतीत नहीं होता, वरन " मित्र " के द्वारा उनके सम्बन्ध को सही मायने में परिभाषित किया जा सकता है।

मसीही मित्रता की तीसरी विशेषता।

मसीही मित्रता की तीसरी खासियत यह है कि वे सामान्य बातों तथा परमेश्वर पिता से सीखी हर बात को आपस में बांटते हैं। मसीही लोग खुद मेहनत करके सीखी गयी बातों को भी गुप्त नहीं रखते। मसीही लोग जिनती भी अच्छी बातें उन्होंने सीखी होती हैं दूसरों में ज़रूर बाँटते हैं।

मसीही जन अब व्यवस्था के अधीन नहीं है बल्कि व्यवस्था देने वाले यीशु के मित्र हैं।

दास और मित्र में एक और फरक होता है। यहूदी लोग बहुत से मानवीय प्रथाओं और परम्पराओं में दबे हुए थे। वे व्यवस्था के सेवक नहीं, बल्कि गुलाम थे। लेकिन चेलों को यीशु की ओर से उठाने के लिए हल्का और आसान जूआ दिया गया (मत्ती 11:28–30)। वे अब व्यवस्था के दास नहीं थे, जो मनु य द्वारा बनायी गयी परम्परा व नियमों के हिसाब से जीवन व्यतीत करते थे। वे अब यीशु के मित्र थे, जिन्होंने अपने जीवन को यीशु मसीह के लिए समर्पित कर दिया था। यीशु मसीह का मित्र स्वयं को व्यवस्था या नियमों से नहीं भरता बल्कि वह परमेश्वर के राज्य की बढ़ौतरी को देखना चाहता है। यीशु को मित्र यीशु मसीह को ज़्यादा से ज़्यादा अपने ह्रदय और जीवन को राजा बनाना चाहता है और दूसरों की सहायता करता है ताकि वे भी उसे अपने ह्रदय और जीवन का राजा बना सकें।

15:13–15

प्रश्न 4. मैं किस प्रकार मित्र बनाता हूँ और किस प्रकार मैं उनके साथ मित्रता बनाएं रखता हूँ?

टिप्पणी। यीशु उन लोगों को अपना मित्र करके बुलाता है जिनके लिए उसने वैकल्पिक तौर पर अपने प्राणों को बलिदान कर दिया। उसने उन लोगों को अपना मित्र कहा, जो उसकी आज्ञाओं को पूरा करते हैं। वरन वह उन लोगों को अपना मित्र कहता है जिनके साथ वह अपने पिता से सीखी हुई बातों को साझा कर सके।
यह अनुच्छेद हमें यह भी बताता है कि हम मसीही होने के नाते किस प्रकार सच्चे मित्र बना सकते हैं। यूहन्ना 15:13–15 हमें मसीही मित्रता के तीन महत्वपूर्ण सिद्धान्तों के बारे में बताता है।

मसीही मित्रता का पहला सिद्धान्त पद 13 में मिलता है। आप त्यागपूर्ण भाव से किसी व्यक्ति को प्रेम करके उसे अपना मित्र बना लेते हैं।
किसी को आपका मित्र बनने के लिए इन्तज़ार न करें। पहले करें और मित्र बनाएं। संसार में ज्यादातर लोग प्रश्न पूछते हैं,' मेरा मित्र कौन है?' लेकिन एक मसीही व्यक्ति का प्रश्न होना चाहिए, 'मैं किसका मित्र हूँ?' यीशु ने आगे बढ़कर उन लोगों से मित्रता की जो पहले उसके शत्रु हुआ करते थे। यीशु मसीह की तरह मसीही लोग भी प्रेम रहित लोगों के पास जाकर उन पर अपने आत्म–त्यागपूर्ण प्रेम को प्रगट कर सकते हैं। वे सबसे अलग रहने वाले लोगों के पास जाकर दोस्ती दिखा सकते हैं। वे अकेले लोगों के पास जाकर उन पर अपने प्रेम को प्रगट कर सकते हैं। इसके अलावा वे खोये हुओं के पास जाकर उन्हें यीशु के पास ला सकते हैं।

मसीही मित्रता का सिद्धान्त पद 14 में पाया जाता है। हम एक दूसरे को उस अवस्था में खीचंकर मित्रता को बनाये रखते हैं जहां यीशु हमें पहुंचते हुए देखना चाहते हैं।
एक दूसरे को सांसारिक स्तर व पापमय जीवन शैली की ओर नीचे न खीचें। वरन, एक दूसरे को यीशु मसीह की आज्ञाकारिता पूरा करने वाले स्तर पर खींचे। सच्ची मित्रता केवल मसीह तथा मसीह की आज्ञाओं को पूरा करने के माहौल में ही बना कर रखी जा सकती है। संसार के लोग समझते हैं कि हमें लोगों को दोस्त बनाने तथा उनके द्वारा स्वीकृति प्राप्त करने के लिए अपने सिद्धान्तों और जीवन शैली से समझौता करना पड़ता है। लेकिन मसीही लोग जानते हैं कि यदि वे दूसरों के साथ सही मायनों में मित्रता बनाना चाहते हैं, तो उन्हें दूसरों की जीवन शैली व अहमियत को सकारात्मक तौर पर प्रभावित करना होगा। मसीही लोग बुरे लोगों के समान बनकर नहीं, बल्कि लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा मसीह की समानता में बढ़ाकर मित्र बनाते हैं।

मसीही मित्रता का तीसरा सिद्धान्त 15 वचन पर आधारित है। परमेश्वर से प्राप्त प्रकाशनों को आपस में बांटने के द्वारा आप मित्रता की गहराई को बढ़ाते हैं।
अपनी बातों को भौतिक वस्तुओं व उस दिन के समाचारों तक ही सीमित न रखें। लेकिन परमेश्वर,बाइबल तथा उन बातों के बारे में भी जिक्र करें जो परमेश्वर आपको दिन प्रतिदिन सिखा रहे हैं। इस संसार के लोग

अधिकतर आत्मिक बातों के बारे में बातें करते हुए डरते हैं, क्योंकि वे उनसे अनजान होते हैं। मसीहियों को उनकी इस तरह से आत्मिक सत्यों को ढूढ़ने में सहायता करनी चाहिए जिससे उन्हें कोई शर्मिन्दगी न हो। अतः मैं दूसरों का सच्चा मित्र तब हूँ जब मैं कुर्बानी देते हुए दूसरे को प्रेम करने के लिए पहल करता हूँ,जब मैं दूसरों को मसीह के स्तर व आज्ञाओं की सीमा तक खींच लाता हूँ; और जब मैं उनके सामने उन बातों को खोलकर रखता हूँ जिसे परमेश्वर ने मुझे सिखाई हैं।

कदम 4, उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में पायी जाने वाली कौन सी सच्चाई को मसीहीयों के लिए उपयोग करना सम्भव है? ***लिखें और बाँटें*** । आईये हम यूहन्ना 15:13–15 में पायी जाने वाली सारी सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें, और उनकी सूची बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई की विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को निःसंकोच दूसरों के साथ बाँटे।

(याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा, और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1यूहन्ना 15:13–17 से सम्भावित उपयोगी बातें।

15:13 पहल करते हुए उन लोगों को अपना मित्र बनाएं, जो आपका विरोधी, अकेला,प्रेम रहित और भटका हुआ हो।

15:14 अपने दोस्तों को मसीह की शिक्षाओं व स्तर तक पहुचाने का प्रयास करें।

15:15 परमेश्वर से सीखी बातों को अपने मित्रों में जरूर से बांटें।

नीतिवचन की पुस्तक से सम्भावित उपयोगी बातें।

12:26 एक धर्मी जन दोस्ती में सर्तक रहता है।

13:20 बुद्धिमान की संगति करने वाला बुद्धिमान बन जाता है।

16:28 कानाफूसी करने से धनिष्ठ मित्रता भी टूट जाती है।

17:17 मित्र सब समयों में प्रेम रखता है, और विपत्ति के दिन भाई बन जाता है।

18:24 मित्रों के बढ़ाने से तो नाश होता है, परन्तु ऐसा एक मित्र होता है जो भाई से भी अधिक मिला रहता है।

19:4,6 कंगाल के मित्र भी उससे अलग हो जाते हैं,दानी पुरूष का मित्र हर कोई बनता है।

19:20 सम्मति को सुन और शिक्षा को ग्रहण कर, कि तू अनन्त काल में बुद्धिमान ठहरे।

19:25 समझवाले व्यक्ति को डाँट, तब वह अधिक ज्ञान पाएगा।

20:19 जो लुतराई करता फिरता है वह भेद प्रकट करता है, इसलिए बकवादी से मेलजोल न रखना।

22:11 जो मन की शुद्धता से प्रीति रखता है, और जिसके वचन मनोहर होते हैं, राजा उसका मित्र होता है।

22:24,25 क्रोधी मनुष्य का मित्र न होना, और झट क्रोध करने वाले के संग न चलना, कहीं ऐसा न हो कि तू उसकी चाल सीखे और तेरा प्राण फन्दे में फँस जाए।

23:20 दाखमधु के पीने वालों में न होना, न माँस के अधिक खाने वालों की संगति करना।

24:1,2 बुरे लोगों के विषय में डाह न करना,और न उनकी संगति की चाह रखना, क्योंकि वे उपद्रव सोचते रहते हैं और उनके मुँह से दुष्टता की बात निकलती है।

26:4–5 मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर न देना, ऐसा न हो कि तू भी उसके तुल्य ठहरे। मूर्ख को उसकी मूढ़ता के अनुसार उत्तर देना, ऐसा न हो कि वह अपने लेखे में बुद्धिमान ठहरे।

26:9–10 जैसे मतवाले के हाथ में कांटा गढ़ता है, वैसे ही मूर्खों का कहा हुआ नीतिवचन भी दुःखदायी होता है। जैसे कोई तीरंदाज जो अकारण सबको मारता हो,वैसा ही मूर्खों व राहगीरों का मजदूरी में लगाने वाला भी होता है।

27:5–7 खुली हुई डाँट,गुप्त प्रेम से उत्तम है। जो घाव मित्र के हाथ से लगे वह विश्वासयोग्य है, परन्तु बैरी अधिक चुम्बन करता है।

27:9 जैसे तेल और सुगन्ध से, वैसे ही मित्र के हृदय की मनोहर सम्मति से मन आनन्दित होता है।

27:10 जो तेरा और तेरे पिता का भी मित्र हो, उसे न छोड़ना और अपनी विपत्ति के दिन अपने भाई के घर न जाना। प्रेम करने वाला पड़ोसी, दूर रहने वाले भाई से कहीं उत्तम है।

27:17 जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है।

2. यूहन्ना 15:13–15 से व्यक्तिगत प्रयोग।

यूहन्ना सुसमाचार ने मुझे दोस्त बनाने का तरीका सिखाया है। बजाय यह सोचने के कि कौन मेरा दोस्त है, अब मैं पहल करते तथा कुर्बानी के साथ प्रेम करते हुए मित्र बनाना चाहता हूँ। उनकी तरफ से दोस्ती का हाथ बढ़ाये जाने का इन्तज़ार करने की बजाय, मैं दूसरों का मित्र बनाना चाहता हूँ। मैं और ज्यादा आत्म–त्याग व आत्म–इनकार के बारे में सीखना चाहंता हूँ। मैं नीतिवचन की पुस्तक पढ़ूँगा जो बहुतायत से सच्ची मित्रता के बारे में बताती हैं। मैं इन तीन शब्दों को याद रखना चाहता हूँ: आत्म–इनकार, आत्म–त्याग तथा आत्म–अनुशासन।

एक मित्र होने के नाते मैं लगातार अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करना चाहता हूँ। यूहन्ना सुसमाचार से मुझे शिक्षा मिली है कि मुझे अपने मित्र को यीशु मसीह की सिद्धान्तों व शिक्षाओं के बारे में बताना हैं और उसे मसीह की शिक्षाओं व आज्ञाओं को मानना सिखाना है। जो कुछ मैंने परमेश्वर से सीखा है वह मैं उन्हें बताना चाहता हूँ। नीतिवचन की पुस्तक बताती है कि अपने मित्र को चमकाना मेरी ज़िम्मेदारी है जिससे वे परमेश्वर व दूसरे लोगों के लिए एक उत्तम व्यक्ति बन सकें। मैं यहां एक शब्द अर्थात *प्रभाव* को याद रखना चाहता हूँ। मैं अपने दोस्तों को उत्तर व सही तरीके से प्रभावित करना चाहता हूँ।

कदम 5.प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें यूहन्ना 15:13–15 में सिखाई हैं।
(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	(प्रतिक्रियाएं) दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन के समूह में होकर प्रार्थना करते रहें। एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट)	(निर्धारित कार्य) अगले अध्याय के लिए

(समूह के अगुवे! समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ यूहन्ना 15:13–15 के आधर पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: प्रेरितों के काम 8:1–11:18 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। वचन : मत्ती 4:4। रोज 5 याद की हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे को अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 17

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	आराधना (20 मिनट) [परमेश्वर की विशेषताएं] परमेश्वर विश्वासयोग्य है।

मनन।

प्रत्येक बाइबल के अनुच्छेद को ***पढ़कर*** उसकी ***व्याख्या*** करें तथा अराधना करने के लिए समूह के सदस्यों को कार्य ***सौंपें***।

1.निर्गमन 34:6–7। परमेश्वर निश्चय ही अपने तरस, प्रेम, अनुग्रह और क्षमा को प्रगट करने में विश्वासयोग्य है लेकिन जो लोग अपने पापों व दोषों के लिए पश्चाताप नहीं करते वह उनको कड़ाई से दण्ड भी देता है।

2. गिनती 23:19। बाइबल में परमेश्वर अपने वचनों और प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य है।

3. भजन संहिता 33:4–5। परमेश्वर सभी कामों में विश्वासयोग्य है। वह हमेशा सही व उचित कामों को ही करना पसन्द करता है। उसका प्रेम कभी असफल नहीं होगा।

4. भजन 33:10–11। परमेश्वर बाइबल में प्रगट की गयी प्रत्येक योजना और उद्देश्य के प्रति विश्वासयोग्य है।

5. भजन 40:1–3,9–10। परमेश्वर आपको दलदल के गड्ढ़े से बचाने के लिए विश्वासयोग्य है।

6. कुरिन्थियों 10:13। परमेश्वर हर परीक्षा से आपको बाहर निकालने के लिए मार्ग बनाता है।

7. फिलिप्पियों 1:6 (1 थिस्लुनिकियों 5:23–24)। परमेश्वर विश्वासयोग्य है और जो कार्य उसने आप में प्रारम्भ किया है वह उसे पूरा भी करेगा।

8. 2 तीमुथियुस 2:13। जब आप परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य हो जाते हैं, तब भी परमेश्वर (अपने न्याय में) विश्वासयोग्य बना रहता है।

9. इब्रानियों 10:23। परमेश्वर बाइबल में की गयी अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति पूरी तरह से विश्वासयोग्य है।

10. इब्रानियों 11:6 परमेश्वर यत्न के साथ उसकी खोज करने वालों को प्रतिफल देने में विश्वासयोग्य है।

11. इब्रानियों 13:5–6। परमेश्वर कभी आपको न भूलेगा और न त्यागेगा।

आराधना।

समूह के सदस्यों से अराधना करते समय इन वचनों का इस्तेमाल करने के लिए कहें।

अपनी प्रतिज्ञाओं तथा अपने लोगों के लिए विश्वासयोग्य होने की विशेषता के लिए परमेश्वर की आराधना करें।

आपके जीवन में विश्वासयोग्य होने के लिए परमेश्वर की अराधना करें

बड़े या तीन तीन लोगों के छोटे समूहों में होकर परमेश्वर की आराधना करें।

3	बाँटें (20 मिनट) [शान्त समय] प्रेरितों के काम 8:1–11:18

आपने जो कुछ दिये गये बाइबल अनुच्छेद (प्रेरितों 8:1–11–18) से अपने शान्त समय में सीखा है उसे संक्षेप में **बाँटें या (अपनी कॉपी में से पढ़ें)।**

बताने वाले व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुने, उसे गम्भीरता से लें और स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70 मिनट) **[रिश्ते]** **स्त्री–पुरूष के बीच रिश्ता**

यह शिक्षा दोस्ती के रिश्ते में परमेश्वर को महिमा देने की लौ का नतीजा है।
कुछ व्यवहारिक बातें केवल आपको सुझाव के तौर पर प्रदान की गयी हैं, आप उनका इस्तेमाल प्रार्थना के साथ अपने समाज में कर सकते हैं।

क. किसी से प्रेम करना तथा सच्चा मसीही प्रेम

1. किसी से प्रेम करना

हम रोमांस से भरे युग में रहते हैं। लोग तुरन्त एक दूसरे के साथ घनिष्ठ समन्ध बनाना चाहते हैं। कई लोगों का मानना है कि जब उन्हें अपने सम्बन्धों में अच्छी अनुभूति या खास तौर पर जब उन्हें शारीरिक सम्बन्धों में सन्तुष्टि महसूस होने से उनका वैवाहिक जीवन अच्छा बना रहता है। फिर भी, सभी संस्कृतियों में टूटते विवाहों की भयानक बढ़ौतरी यह साबित करती है कि शारीरिक व भावनात्मक घनिष्टता के कारण रिश्ते पूर्ण नहीं होते। किसी से प्रेम होने का अर्थ है ऐसे प्रेम से है जिसके तहत एक स्त्री व पुरूष एक दूसरे के प्रति सामाजिक,शारीरिक व आत्मिक क्षेत्र में आकर्षित महसूस करते हैं। वे एक दूसरे को प्राप्त करने की चाहत रखते व स्वपन देखते हैं। वे सदैव एक दूसरे के साथ रहना और एक दूसरे को छूना चाहते हैं।

युवा अवस्था में, आपके शरीर के होर्मोन बढ़ना शुरू कर देते हैं और वे आपको अपनी उपस्थिति को एहसास करा देते हैं। आप एक व्यस्क होने से पहले ही युवावस्था में बहुत लोगों के साथ प्रेम सम्बन्ध में पड़ सकते हैं। जब कभी आपको किसी व्यक्ति से प्रेम होता है तो आप सोचते हैं कि ' यह व्यक्ति मेरा जीवन साथी होने के लिए बिल्कुल उपयुक्त व्यक्ति है''। लेकिन जब बाद में आपको पता चलता है कि दूसरा व्यक्ति पहले से बेहतर है तो आपका आकर्षण पहले व्यक्ति के प्रति कम हो जाता है, और रोमांचित करने वाली भावनाएं भी खत्म होने लगती हैं। और तभी जाकर आपको पता चलता है कि आपको भावनाओं ने आपको गुमराह किया है! किसी के साथ प्रेम करना एक सुन्दर एहसास, लेकिन बहुत बुरा सलाहकार होता है। अनुभूतियां हमेशा अनुमान रहित, अस्थिर तथा हमेशा बदलती रहती हैं। अनुभूतियां सदैव आपकी ओर इशारा करती हैं दूसरों की ओर नहीं। विवाह के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए आपको, एक स्थिर व अटल बुनियाद की ज़रूरत होती है जिसे 'अगापे प्रेम' कहा जाता है।

2.अगापे प्रेम

'अगापे' एक ग्रीक शब्द है जिसका इस्तेमाल नये नियम में 'प्रेम' के सन्दर्भ में बहुतायत से किया गया है। अगापे प्रेम सच्चा मसीही प्रेम है। परमेश्वर का स्वभाव अगापे प्रेम है (1यूहन्ना 4:8)। परमेश्वर हमें अगापे प्रेम से प्रेम करते हैं (यूहन्ना 3:16) और उन्होंने हमें अपने पड़ोसियों को अगापे प्रेम (मरकुस 12:30–31)। जब परमेश्वर हमारे ह्रदयों में अगापे प्रेम को डालते हैं, तब हम भी दूसरों को उसी अगापे प्रेम के साथ प्रेम करना चाहते हैं, हम लोग अगापे प्रेम के साथ दूसरों को प्रेम कर सकते हैं और हम दूसरों को अगापे प्रेम के साथ प्रेम करेगें।

अगापे (मसीही प्रेम) क्या होता है?(अध्याय 14 में बाइबल अध्ययन को देखें)
अगापे प्रेम की विशेषताएं स्पष्ट होती हैं जैसे धीरज, भलाई, संतोष,धैर्य, निःस्वार्थ भावना, क्षमा करने वाली आत्मा, सत्य, सहन शीलता, विश्वासयोग्यता तथा वफादारी (1कुरिन्थियों 13:4–8)। अगापे प्रेम निःस्वार्थ तथा आत्म–केन्द्रित–हीन प्रेम होता है। अगापे प्रेम निःस्वार्थ भावना के साथ दूसरों की उन्नति के लिए काम करता है। अगापे प्रेम दूसरों को इसलिए प्रेम नहीं करता, क्योंकि उन्हें दूसरों से कुछ प्राप्त होने वाला है, बल्कि वह दूसरों को सहयोग प्रदान करता है। वह निःस्वार्थ व कुर्बानी चढ़ाने वाला प्रेम होता है। अगापे प्रेम किसी को गिराने या तोड़ने की बजाय दूसरों की उन्नति करता है। अगापे प्रेम हर व्यक्ति को एक सम्भव उत्तम व्यक्ति बनाने में सहायता करता है। रोमांचक प्रेम अनियन्त्रित रूप में अग्रसर होता है, परन्तु अगापे प्रेम रोमाचंक प्रेम को प्रगट करने का इन्तज़ार कर सकता है। रोमांचक प्रेम मात्र एक या दो वर्षों तक ही बरकरार रहता है, जबकि अगापे प्रेम हमारे चरित्र और जीवन का स्थाई भाग बन जाता है।

स्त्री –पुरूष के बीच सम्बन्ध का लक्ष्य शारीरिक धनिष्टता नहीं परन्तु अगापे प्रेम का फल होना चाहिए। जब दो लोग विवाह को ध्यान में रखते हुए (जिसे हम एक दूसरे के साथ 'डेटिगं' करना भी कहते हैं) एक दूसरे को जानने के लिए एक साथ एकत्रित होते हैं तो उनका लक्ष्य आपस में एक दूसरे के साथ अगापे प्रेम को मज़बूत करना होना चाहिए। इस प्रकार के सम्बन्ध में वे लोग अपने विचारों (उनके विचार व लक्ष्यों), उनकी अनुभूतियों (उनकी भावनाएं व स्वभाव) तथा उनके निर्णयों (जिनमें उनकी इच्छाएं व चुनाव शामिल हैं) को ज्यादा से ज्यादा एक दूसरे के साथ बाँटते हैं। वे आपस में अपने महत्वपूर्ण रिश्तों को, जैसे कि परमेश्वर के साथ (मसीह) उनके रिश्ते, अपने अभिभावकों के साथ उनके रिश्ते, तथा दोस्तों के साथ उनके रिश्तों को बाँटते हैं। एक स्त्री और पुरूष का एक दूसरे को घनिष्टता से जानने का मकसद एक दूसरे के साथ अगापे प्रेम को विकसित करना तथा यह जानना है कि क्या वास्तव में परमेश्वर चाहता है कि वे दोनों विवाह करें या न करें।मज़बूत अगापे प्रेम का परिणाम सच्ची मित्रता (अध्याय 16 में बाइबल अध्ययन को देखें) व घनिष्टता होती है।

ख. किसी को जानना

1. विश्वासियों के बीच में मित्रता

सम्पूर्ण मानवजाति व मानव जीवन परमेश्वर की दृष्टि में बहुमूल्य है। इससे कोई फरक नहीं पड़ता कि हम चाहे काम करते हों, अध्ययन करते हों, खेलते हो, चर्च जाते हों या दोस्तों से मिलने जाते हों। इसी कारण जिस तरह से हम अपनी समझ व अवसर का इस्तेमाल करते हैं हमारे व्यक्तित्व व हमारे कामों पर गहरा प्रभाव डालता है। हमारे विचारों (झूठ और सत्य) का हमारी अनुभूतियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हमारी अनुभूतियों के द्वारा हमारे कपड़े पहनने के ढंग व हमारे व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हमारी आत्मा की स्थिति दूसरों के साथ हमारे व्यवहार पर गहरा प्रभाव डालती है। हमारे विचारों व भावनाओं पर गहरा प्रभाव पड़ें बिना हम शारीरिक रूप में कुछ नहीं कर सकते।

विश्वासियों (मसीहियों) के बीच मित्रता का मतलब है कि वे आपस में एक विश्वासी के रूप में (मसीही भाई बहन के रूप में) सम्बन्ध बनाकर रखते हैं। विश्वासी लोग आपस में ऐसे सम्बन्ध बनाकर रखते हैं मानों वे एक बड़ा परिवार हैं। एक दूसरे को बेहतर रूप से जानने पर विश्वासियों के बीच में विवाह के सन्दर्भ में बल्कि वैवाहिक जीवन में मज़बूत सम्बन्ध बना रहता है! विशेष मित्र होने के अलावा, वे जीवन भर एक दूसरे के लिए मसीह में भाई बहन बने रहते हैं।

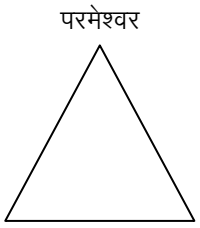

विश्वासियों के बीच में मित्रता को स्थापित करने का मकसद एक दूसरे की उन्नति करना और अन्ततः कलीसिया की उन्नति करना है। इस संगति या मित्रता का मकसद कभी किसी को नीचा दिखाना नहीं है। साधारणतः विशेष प्रकार की मित्रता सामान्य रिश्तों के बीच में से ही उत्पन्न होती है। विश्वासियों की दूसरे विश्वासियों से मित्रता के बीच कुछ ज़िम्मेदारियां होती हैं।

- **एक मसीही विश्वासी होने के नाते हमारी अपने प्रति ज़िम्मेदारियां होती हैं।**

हमारे लिए नया जन्म पाना ज़रूरी है (यूहन्ना 3:3–8),हमें परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने वाला होना चाहिए (मरकुस 3:31–35), और हमें एक शिष्य के रूप में मसीह का अनुसरण करना चाहिए (लूका 9:23–26)।

- **एक मसीही विश्वासी होने के नाते हमारी एक दूसरे के प्रति ज़िम्मेदारियां हैं।**

  बाइबल हमें ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है कि, हमारे बीच में कोई पापमय तथा अविश्वासी हृदय का व्यक्ति न हो जो जीवते परमेश्वर से फिर जाए (इब्रानियों 3:12–15)। हमें अपने आपसी रिश्तों में एक दूसरे को मसीही प्रेम तथा अपनी गतिविधियों में भले कामों को करने के लिए प्रेरित करना चाहिए (इब्रानियों 10:24–25)। हमें एक दूसरे को सिखाना और चिताना चाहिए (कुलुस्सियों 3:16)। हमें एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे के लिए प्रार्थना करना चाहिए (कुलुस्सियों 4:2 ; रोमियों 15:16)। हमें मसीही विश्वास के लिए एक साथ मिलकर संघर्ष करना तथा

एक साथ मिलकर कष्ट उठाना चाहिए (फिलिप्पियों 1:27,29)। हमें विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ पूर्ण पवित्रता के साथ व्यवहार करना चाहिए (1 तीमुथीयुस 5:1–2)।

- **एक मसीही विश्वासी होने के नाते हमारी उन लोगों के प्रति भी जिम्मेदारी है जो अपने विश्वास में कुटिल हैं।**

हमें बुरे लोगों से दूर रहना चाहिए (नीतिवचन 4:14–15, इफिसियों 5:7)। हमें कुटिल भाईयों व बहनों से दूर रहना चाहिए (2 थिस्लुनिकियों 3:6; 1 कुरिन्थियों 5:9–13)

- **बाइबल में प्राप्त कुछ मसीही मित्रता की विशेषताएं।**

सच्चे मित्र परमेश्वर के भी मित्र होते हैं (याकूब 4:4)। मित्र बुद्धिमानी के साथ चलते हैं (नीतिवचन 13:20)। मित्र आपस में सलाह देते व लेते हैं (नीतिवचन 27:5–6, 9–10, 17)। मित्र एक दूसरे के लिए अपने प्राण न्यौछावर करते हैं, एक दूसरे को मसीही जीवन स्तर पर खीचने का प्रयास करते हैं और जिन बातों को उन्होने परमेश्वर से सीखा होता है उन्हें खुले रूप में एक दूसरे को बताते हैं (यूहन्ना 15:13–17)।

2. विश्वासियों के बीच में मित्रता को मजबूत करने के लिए कुछ व्यवहारिक सुझाव।

यदि आपकी संस्कृति में व्यवस्थित विवाह को मान्यता दी जाती है तो होने दें कि आपके पुरनियें आपके लिए पत्नि होने के लिए किसी विश्वासी बहन को या पति होने के लिए किसी विश्वासी भाई को ढूंढ़े। तब आप विवाह के पश्चात आपस में एक दूसरे के साथ स्वस्थ मित्रता को विकसित कर सकते हैं।

यदि आपके देश में युवक व युवतियों को पवित्रता के साथ आपस में मिलने जुलने की आज़ादी दी जाती है तो निम्नलिखित बातें विवाह पूर्व मसीही युवकों व युवतियों के बीच मज़बूत रिश्ते के बनाने में सहायक होगें।

- **मसीहियों के समूह में शामिल हो जाएं।**

मसीही समूह में कुछ पुरूषों व स्त्रियों के साथ में मित्रता करने के बाद ही आप एक मसीही विश्वासी से दूसरे विश्वासी के बीच में फरक को पहिचान सकते हैं। जब आप मसीही विश्वासियों के समूह में आत्मिक तौर पर बढ़ते तथा मसीही कामों को एक साथ मिलकर अन्जाम देते हैं तब आप दो मसीही विश्वासियों के बीच ताकत या कमजोरी के फरक को पहिचान सकते हैं। एक दूसरे के व्यक्तित्व को गहराई से जानने, एक दूसरे के चरित्र, किसी व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति पर प्रभाव तथा परमेश्वर के साथ प्रत्येक व्यक्ति के बारे में जानने के लिए हमें काफी समय देने तथा दूसरों के जीवन में शामिल होने की ज़रूरत पड़ती है।

- **मसीही समूह में अपनी बात को बताना व बाँटना सीखें।**

परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध के बारे में बात करें और बाइबल की सच्चाई को एक दूसरे के साथ बाँटें। यदि आप मसीही समूह में रहकर इन सारी बातों को करते हैं, तो आप विवाह उपरान्त भी उन सारी बातों को नियमित तौर पर कर पाएंगे।

- **मसीही समूह होने के नाते एक साथ मिलकर काम करें।**

आत्मिक गतिविधियों में भाग लें, जैसे कि बाइबल अध्ययन समूह, प्रार्थना समूह, तथा बच्चों को शिक्षा देने में भागीदार बनना। इसके अलावा आप सामाजिक गतिविधियों जैसे, सामुहिक खेल, सामुहिक रूप में भोजन करना तथा सामुहिक तौर पर बाहर घूमने चले जाना।

ग. उचित जीवन साथी का चुनाव करने के सम्बन्ध में परमेश्वर की इच्छा को पहिचानने के लिए सात सिद्धान्त

किसी दूसरे लिंग के व्यक्ति से घनिष्ट मित्रता स्थापित करने से **पहले** आपको अपने जीवन में कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों को लेना बहुत ज़रूरी है। ये सारे सातों निर्णय बाइबल पर आधारित हैं।

1. सबसे पहले निर्णय लें कि आप विवाह करना चाहते हैं या नहीं ।

विवाह करने के क्या फायदे हैं और कुंवारा रहने के क्या फायदे हैं?

पढ़ें। 1 कुरिन्थियों 7:1–7, 32–35 (सभोपदेशक 4:9–12; यशायाह 54:1–5; मत्ती 19: 10–12)
ध्यान दें। कुवारे या अकेले रहने का फायदा यह है कि आप यीशु मसीह तथा परमेश्वर के राज्य के लिए अपना पूर्ण समर्पित समय दे सकते हैं। जिन लोगों के पास अपनी सन्ताने नहीं होतीं उनके बहुत से आत्मिक बच्चे हो सकते हैं! लेकिन अकेले रहने के नुकसान, सम्भावित अकेलापन, ज़रूरत के समय पर जीवन साथी का अभाव, तथा जीवन भर कामातुर बने रहना हैं।

एक सम्भावित अभ्यास। आप आत्मिक तथा भावनात्मक तौर पर परिपक्वता में बढ़ने, कुछ महत्वपूर्ण मसीही प्रशिक्षण प्राप्त करने या मसीही सेवकाई में कुछ महत्वपूर्ण अनुभव प्राप्त करने के लिए आप कुछ समय परमेश्वर से अकेले या कुवारे रहने की सलाह ले सकते हैं। जब परमेश्वर बाद में आपको विवाह करने की अगुवाई प्रदान करते हैं तो आप निश्चय ही अपने जीवन में अधिक परिपक्व व अनुभवी होगें। परमेश्वर अपने राज्य के कुछ विशेष कामों को पूरा करने के लिए कुछ मसीही लोगों को अविवाहित जीवन व्यतीत करने हेतू बुलाते हैं।

2. केवल किसी विश्वासी(मसीही) से ही विवाह करने का निर्णय लें।

एक मसीही जन, दूसरे मसीही से ही क्यों विवाह कर सकता है?
पढ़ें। 2 कुरिन्थियों 6:14–7:1।
ध्यान दें। बाइबल एक मसीही विश्वासी को दूसरे मसीही विश्वासी से विवाह करने की अनुमति देती है (1कुरिन्थियों 7:39; 2 कुरिन्थियों 6:14; 7:1)। ज़्यादातर एक अविश्वासी, यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले व्यक्ति को यीशु से दूर खींच लेता है (व्यवस्थाविवरण 7:3–4)। विवाहित जीवन के सम्बन्ध को यीशु मसीह व कलीसिया के बीच सम्बन्ध को प्रगट करने के लिए बनाया गया है। इसलिए मसीही जीवन में यीशु मसीह व कलीसिया का आदर करना एक महत्पूर्ण तत्व है (इफिसियों 5:22–25)।
इस्तेमालः यदि आप किसी व्यक्ति को विवाह के सन्दर्भ में गहराई से जानने का प्रयास करना चाहते हैं तो वह व्यक्ति एक विश्वासी (नया जन्म पाया हुआ मसीही) होना चाहिए।

3. केवल उसी व्यक्ति से विवाह करने का निर्णय करें जिसे आप अच्छी तरह से जानते हैं।

दूसरे व्यक्ति की सच्चाई को असल में जानने के लिए आप क्या कर सकते हैं?
नीतिवचन 27:19, 23 **पढ़ें।**
ध्यान दें। आपके लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप दूसरे लोगों को विशेषतौर पर उनके हृदय तथा आत्मिक परिस्थिति को जान लें। यदि आप किसी जन को ठीक से जानते तक नहीं तो उससे विवाह करने का विचार भी न करें।

सम्भावित अभ्यास। मसीह लोगों के समूह का एक हिस्सा बनें। एक दूसरे के साथ बात करना तथा आपस में बाँटना सीखें। सामुहिक रूप में कार्य करें। निम्नलिखित विशेषताओं पर ध्यान दें:
– क्या वह स्त्री या पुरूष परमेश्वर (मसीह)व दूसरों के साथ मेरे सम्बन्धों को बढ़ावा देता है?
– क्या उस स्त्री/पुरूष ने मेरे जीवन पर प्रभाव डाला तथा मेरी उच्च कोटि का जीवन व्यतीत करने में सहायता की है? क्या उस स्त्री या पुरूष ने मेरी आनन्दमय, अर्थपूर्ण या रचनात्मक जीवन व्यतीत करने में सहायता की है? क्या वह स्त्री व पुरूष मुझे अच्छा व्यवहार करने में प्रेरित करता है? क्या वह स्त्री व पुरूष कभी मुझे पाप करने के लिए तो नहीं उकसाते, बल्कि सदैव मुझे यीशु मसीह के स्वभाव के अनुसार जीवन व्यतीत करने में सहायता करते हैं?
– क्या वह मेरी बात को सुनने वाले, उसे गम्भीरता से लेने वाले तथा उसे स्वीकार करने वाले हैं?
– क्या वह मेरे लिए उपलब्ध रहने वाला तथा ऐसा जन है जिनके पास मैं सच में सहायता तथा सलाह प्राप्त करने के लिए जा सकता हूँ?
– क्या वह ऐसे जन हैं जिनके साथ मुझे अपनापन महसूस होता है तथा जिनके साथ मैं हँस सकता, रो सकता तथा गम्भीर बातों पर चर्चा कर सकता हूँ?
– क्या वे ईमानदार और सच्चे जन हैं, जो हमेशा सत्य बोलते हैं और वह दिखाने की कोशिश तो नहीं करते जो वो असल में हैं नहीं?

– क्या वह अपने दूसरे मित्रों से मेरा परिचय कराते हैं, वे मुझे अपने रिश्तेदारों से अलग रखने का प्रयास नहीं करते, वरन दूसरों के साथ में एक स्वस्थ सम्बन्ध बनाने में मेरी सहायता करते हैं?

4.केवल उसी व्यक्ति से विवाह करने का मन बनायें जो संयमी हो।

स्त्री व पुरूष के बीच संयम बनाये रखने के बारे में बाइबल हमें क्या बताती है?
इब्रानियों 13:4 को **पढ़ें।** (बाइबल अध्ययन को अध्याय 18 में पढ़ें) **खोजें व चर्चा करें।**
ध्यान दें। परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध का नतीज़ा ही संयम है(गलातियों 5:22–23)! विपरीत लिंग के लोगों में व्यवहार व हर प्रकार यौन नैतिकता में संयम का होना अनीवार्य है। जो कुछ आप अपने जीवन में बोते हैं उसकी फसल को आप अपने जीवन में बाद में जरूर काटेंगे (गलातियों 6:7–8)
सम्भावित अभ्यास। यौन सम्बन्धी अनैतिकता के प्रत्येक प्रारूप व उपद्रव से बचें। अपने देखने के प्रति संयम को बरतें अर्थात सतर्क रहें कि आप क्या देखते हैं; अपने दिमाग के प्रति संयम रखें अर्थात आप क्या सोचते हैं; अपने हाथों के प्रति संयम बरतें अर्थात आप क्या छूते हैं;इत्यादि। परमेश्वर से प्रतिज्ञा करें कि आप कभी विवाह से पूर्व या विवाह के बाहर यौन सम्बन्ध स्थापित नहीं करेंगे (इब्रानियों 13:4)। परमेश्वर ने आपको अपने जीवन साथी को उन सिद्धान्तों के आधार पर हासिल करने की आज्ञा प्रदान की है जो पवित्र और आदर के योग्य हों न कि कामुक अभिलाषाओं के द्वारा जैसा कि गैर विश्वासी लोग करते हैं (1 थिस्लुनिकियों 4:1–8)। अपने जीवन साथी को कभी चोट न पहुँचाए और न मारें। विपरीत लिंग के जन के साथ रिश्ते कायम करते समय बाइबल के आधार पर अपने रिश्तों को सीमाएं प्रदान करें।

5. जीवन में समान लक्ष्य रखने वाले व्यक्ति के साथ ही विवाह करने का निर्णय करें।

जीवन में समान लक्ष्यों को होना क्यों ज़रूरी है?
आमोस 3:3 को **पढ़ें। खोजें व चर्चा करें।**
ध्यान दें। यदि दोनों के जीवन के लक्ष्य समान नहीं हैं तो आप कभी भी एक दिशा में जीवन यात्रा नहीं कर सकते हैं (आमोस 3:3)। यीशु मसीह ने हमें सिखाया है कि हर एक मसीही के जीवन के दो प्रमुख लक्ष्य होने चाहिएः सर्वप्रथम परमेश्वर के राज्य (अपने जीवन में मसीह की प्रभुता खोजना) तथा उसकी धार्मिकता की खोजन करना (उन चीजों को मानना जिसे परमेश्वर सही ठहराता है) (मत्ती 6:33), जिसका अर्थ परमेश्वर की महिमा की खोज करना है (रोमियों 11:36)। दूसरा, एक साथ मिलकर मसीही विश्वास व मकसद के लिए एक साथ मिलकर संघर्ष करें (फिलिप्पियों 1:27; 2:2–4)।

सम्भावित अभ्यास। ध्यान से देखें कि आपके समूह में किन लोगों के जीवन के लक्ष्य आपके समान हैं। दूसरे मसीहियों के साथ बहुतायत के साथ अपने व उनके जीवन लक्ष्यों व महत्वाकाक्षाओं के बारे में बातचीत करें। अपने जीवन के लक्ष्यों को अभी प्राप्त करने का प्रयास करें।

6. केवल उसी व्यक्ति के साथ विवाह करने का निर्णय करें जिसने अपने अन्धकारमय भूतकाल को शुद्ध कर लिया हो।

अपने भूतकाल को शुद्ध करना क्यों महत्वपूर्ण है?
निर्गमन 20:5–6 के सिद्धान्तों को **पढ़ें।** 2 शमूएल 11:2–4 की तुलना 2 शमूएल 13:10–14 की तुलना करें।
2इतिहास 22:2–4 में दिये गये सिद्धान्तों को **पढ़ें।**
2 इतिहास 25:2 की 26:4 से **तुलना करें।**
ध्यान दें। निर्गमन 20:5–6 में सिखाये गये सिद्धान्त बताते हैं कि यदि आप अपनी समस्याओं को सुलझाते नहीं हैं तो आपके माता पिता (भाई और बहन, मित्र, शिक्षक और सहकर्मियों आदि) व आपके बीच अनसुलझी समस्याएं बाद में आपके जीवन तथा वैवाहिक जीवन की समस्याएं बन जाती हैं।

आपके माता पिता के बीच खराब रिश्ते किस प्रकार बाद में खुद आपके पारिवारिक रिश्तों पर प्रभाव डाल सकते हैं? उदाहरण के लिए,जिस तरह से किसी स्त्री या पुरूष ने अपने माता पिता के साथ व्यवहार किया होगा बाद में वह दूसरे

लोगों के साथ भी वैसा ही व्यवहार करेगा। जिस तरह से कोई पुरूष अपनी मां के साथ व्यवहार करता है ठीक उसी प्रकार से वह आने वाले समय में अपनी पत्नी के साथ भी व्यवहार करता है। और जिस तरह से एक स्त्री अपने पिता के साथ व्यवहार करती है ठीक उसी प्रकार से ही वह आने वाले समय में अपने पति के साथ व्यवहार करेगी।

परमेश्वर भी कभी उस व्यक्ति को क्षमा नहीं करेगा जो अपने अपराधी को क्षमा नहीं करेगा (मत्ती 6:14–15)। एक क्षमारहित व्यक्ति एक कड़वा व्यक्ति बन जाता है जो अपने साथ रहने वाले सारे लोगों को भ्रष्ट कर देता है (इब्रानियों 12:15)।
भूतकाल की समस्या व उनके नतीजों का सामना करना तथा उनका समाधान करना बहुत ज़रूरी है। टूटे रिश्तों को बहाल होना बहुत ज़रूरी है। चोटिल रिश्तों को चंगा होना बहुत जरूरी है। हमारे प्रत्येक पुराने पापों को क्षमा करने के लिए,हर एक टूटे रिश्ते का बहाल करने तथा प्रत्येक चोट को चंगा करने के लिए परमेश्वर का अनुग्रह काफी है। परमेश्वर का अनुग्रह आपकी एक स्वस्थ व परिपक्व व्यक्ति बनने, आत्मिक व भावनात्मक वृद्धि करने में सहायता करेगा।

7. सही समय आने पर विवाह करने का निर्णय लें।

ववाह के लिए सही समय का इन्तजार करना कितना सही है?
सभोपदेशक 3:5; 8:5–6 (उत्पत्ति 29:20; 1 कुरिन्थियों 7:9) **पढ़ें।**

ध्यान दें। इस धरती पर हर एक काम का एक समय होता है। लोगों को गले लगाने और गले लगाने से बचने का समय होता है। एक बुद्धिमान जन अपने विपरीत लिंग के जन के साथ व्यवहार करने के उचित समय व उचित तरीके को जानता है। जो व्यक्ति परमेश्वर पर भरोसा करता है, वह यह भी भरोसा करता है परमेश्वर उसके साथ सही समय पर सही काम होने देगा। सच्चा प्रेम धीरजवन्त होता है और वह विवाह से पूर्व प्रतीक्षा कर सकता है (1 कुरिन्थियों 13:4)

सम्भावित अभ्यास। आप पहले अपनी शिक्षा को पूर्ण कर सकते हैं। पहले आप आर्थिक रूप में अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं। आप विवाह करने से पहले अपने व्यवसाय में या अपनी मसीही सेवकाई में अधिक अनुभव हासिल कर सकते हैं। बहुत सी संस्कृतियों में आप दोनों पक्ष के अभिभावकों को विवाह की अनुमति प्रदान करने के लिए पर्याप्त मात्रा में समय प्रदान करते हैं।
लेकिन यदि दो मसीहियों के लिए संयम बरतना कठिन जान पड़ता हो तो, जल्दी विवाह कर लेना ज्यादा अच्छा है (1 कुरिन्थियों 7:9)। लेकिन याद रखें: मसीही विवाह पूर्ण जीवन काल के लिए होता है (मलाकी 2:14–16)।

घ.कुछ व्यवहारिक सलाह जब आप किसी से प्रेम करने लगें।

जब आपको किसी से प्रेम हो जाए तो आप सबसे पहले अपनी भावनाओं और सच्चाई में फरक को पहचाने। आपके भीतर उठने वाली उत्तेजना उसकी बाहरी सुन्दरता पर आधारित है या उसके बाहरी स्वरूप पर आधारित है या आप वास्तव में उसे प्रेम करते हैं या उसके व्यक्तित्व और चरित्र पर आधारित है? बाइबल हमें बताती है कि हमें जल्दबाज़ी करते हुए पदभ्रष्ट नहीं हो जाना चाहिए (नीतिवचन 19:2–3), बल्कि वह हमसे अनुरोध करती है कि आप सच्चाई की तह तक जाने का प्रयास करें (सभोपदेशक 7:25–26)

1. इस व्यक्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको उसे (स्त्री या पुरूष) जानने में सहायता करे, और यदि परमेश्वर की इच्छा में वही जन है तो उसे प्रेम करने के लिए सच्चा प्रेम दें। या परमेश्वर से प्रार्थना करें कि परमेश्वर उस (स्त्री या पुरूष) के प्रति आपकी प्रेम युक्त भावनाओं को कम करे। प्रार्थना करें कि आप मात्र अपनी भावनाओं से आगे देख पाएं।

2. उस व्यक्ति को जानने का प्रयास करें।

बिना अपनी की ज़रूरत नहीं है उस स्त्री या पुरूष के प्रति अपनी भावनाओं को जाहिर किये हुए, उसके साथ विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों तथा सामूहिक गतिविधियों में शामिल हों। अवलोकन करें तथा ध्यान से सुनें। जानने का प्रयास

करें कि उसका परमेश्वर (मसीह) के साथ, दूसरों के साथ और अपने साथ किस प्रकार को सम्बन्ध है। उस स्त्री या पुरूष के व्यक्तित्व, चरित्र, उस व्यक्ति के मज़बूत या कमजोर बातों और आप व दूसरों पर उनके प्रभाव को जानने का प्रयास करें।

उस व्यक्ति की संगति में रहकर उन्नति करने व सम्पन्न होने पर ही आप जान सकते हैं कि उस व्यक्ति का आपके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। उदाहरण के लिए: वह कब उस पुरूष को बदला लेने के लिए रोकती है (1शमूएल 25:32–34); या वह पुरूष कब उस स्त्री की प्रतिष्ठा को (उसके मसीही चरित्र में) बढ़ाता है (इफिसियों 5:26–27)।

3. उस व्यक्ति के विषय में सलाह लें।

किसी ऐसे व्यक्ति से सलाह लें, जो परिपक्व हो और जिसका रिश्ता मसीह के साथ मज़बूत हो, और जो आप दोनों पक्षों को अच्छी तरह से जानता हो (नीतिवचन 19:20–21)। उस व्यक्ति को जानने के लिए उससे सम्बन्धित जानकारियों को हासिल करें ताकि आपको यह जानने में सहायता हो कि आपकी भावनाएं वास्तव में सच्चाई पर आधारित हैं।

4. कभी किसी अविश्वासी के साथ समय व्यतीत करने न जाएं।

फिर भी यदि आपको किसी अविश्वासी से समूह में ही मिले जिसके बारे में आप रूची रखते हैं। प्यार हो जाए तो आप उसके साथ कभी अकेले न जाएं और हर परिस्थिति में उस व्यक्ति से उचित दूरी बनाए रखें। उस (स्त्री या पुरूष को) किसी मसीह सभा में आमन्त्रित करें, उसका परिचय अपने मसीही मित्रों के साथ करें तथा उसे मसीह में जीतने का प्रयास करें। आपके लिए यह बेहतर है कि आप केवल उस अविश्वासी से ही समूह में मिलें जिसको लेकर आप रूची रखते हैं।

ड़.विवाह के सम्बन्ध में रिश्ते को मज़बूत करने का व्यवहारिक दौर

चर्चा करें। विवाह को ध्यान में रखते हुए विपरीत लिंग वाले व्यक्ति को जानने के लिए कौन से निर्देश उत्तम हो सकते हैं?

ध्यान दें। तीन व्यवहारिक स्तरों पर रिश्तों को विकसित होते देखना एक व्यवहारिक सुझाव व निर्देश हो सकता है: अर्थात जान पहचान का दौर, मुलाकात का दौर, मंगनी का दौर। हर एक दौर की स्पष्ट शुरूआत और स्पष्ट अन्त, एक स्पष्ट लक्ष्य और एक मकसद तक पहुँचने के लिए स्पष्ट व्यवहारिक कदम होते हैं।

1. जान–पहचान का दौर

जान पहचान के दौर का मतलब

बिना नज़दीकी बनाये हुए एक दूसरे के बारे में जानकारी हासिल करना।

जान पहचान के दौर का उद्देश्य।

आपकी यह निर्णय लेने में सहायता करने के लिए तथ्यों को इकट्ठा करना कि आप उस व्यक्ति के साथ सम्बन्धों को आगे बढ़ाना चाहते हैं या नहीं।

जानकारी हासिल करने का तरीका

जब आपको किसी से सच में प्यार हो जाता है या आप किसी व्यक्ति में सच में रूची रखते हैं तो आप निम्नलिखित कामों को कर सकते हैं:

- अपनी भावनाओं व सच्चे मसीही प्रेम के बीच फरक को पहचाने।
- ऐसे व्यक्ति से सलाह लें जो आपको व दूसरे पक्ष को अच्छी तरह से जानता हो।
- उस व्यक्ति (स्त्री या पुरूष) से पूछें कि क्या वह चाहता या चाहती है की आप एक दूसरे को धनिष्टता से जानें। (कई संस्कृतियों में लड़की कभी पहल नहीं करती है।)
- यदि व जन तैयार हो जाते हैं तो एक दूसरे के साथ विशेष समय पर व किसी खास सार्वजनिक स्थल पर मिलने की योजना बनाएं, उदाहरण के लिए, एक दूसरे को जानने के लिए सप्ताह में एक बार किसी खास भोजनालय में सप्ताह में एक बार करीब छः माह तक मिलें।

जान पहचान बढ़ाने के दौरान की जाने वाली कुछ व्यवहारिक गतिविधियां।

- जितना हो सके एक दूसरे के बारे में जानने की कोशिश करें। एक दूसरे का परमेश्वर के साथ सम्बन्ध, मसीही विश्वास, आकांक्षाएं, व विशिष्टताओं को जानने का प्रयास करें।
- सयंम बरतने के क्षेत्र में कुछ व्यवहारिक सलाहें निम्नलिखित है (गलातियों 5:22)

कोई शारीरिक सम्बन्ध नहीं। यह बहुत अच्छा होगा कि आप कोई शारीरिक सम्बन्ध न बनाएं, क्योंकि ऐसा करने के द्वारा आप अपने भीतर उठने वाली उंमग को नियन्त्रित कर सकते हैं। आप अपनी समझ के अनुसार निर्णय लेने के लिए स्वतन्त्र महसूस कर पायेंगे।

किसी प्रकार की सहमति स्थापित न करें। आधिकारिक तौर पर किसी भी बात का करार न करें–आप इस समय पर एक अच्छे मित्र को छोड़ और कुछ नहीं हैं। यह भी अच्छा है कि आप अपने मित्र से कुछ निश्चित अपेक्षाओं को न करें। 'मित्रता' के विषय में चर्चा करें, निर्णायक सहमति हो जाने के बाद 'मुलाकात' के तौर पर नहीं। इसके द्वारा आप अपने दोस्तों द्वारा आप पर डाले जाने वाले दबाव को कम कर सकते हैं।

अपनी भावनाओं को प्रगट न करें। एक दूसरे को लेकर कोई काल्पनिक कहानी न बनाना, एक दूसरे के प्रति उठने वाली उंमग के बारे में बात न करना और न ही अपनी भावनाओं को एक दूसरे पर जाहिर करना इस समय के लिए अच्छा है। इन बातों को प्रगट करने के सही समय आने का इन्तज़ार करें। यदि आप एक दूसरे के प्रति अपनी भावनाओं और उमंग के बारे में बात करने की जल्दी करते हैं तो आप खुद अस्वाभाविक अपेक्षाओं को जन्म देते हैं, जिसके कारण एक सच्चे आत्मिक रिश्ते को बनने में दिक्कत होगी और जिसके कारण बाद में दूसरे जन को चोट पहुंचेगी।

विवाह के सम्बन्ध में कोई बात न करें। बहुत अच्छा रहेगा कि इस समय आप विवाह के सम्बन्ध में या विवाह सम्बन्धित किसी योजना के बारे में बात न करें। क्योंकि ऐसा करने से भी आपके बीच में अनापेक्षित अपेक्षाएं उत्पन्न होगी। कुछ समय के लिए आप केवल एक अच्छे दोस्त से बढ़कर और कुछ नहीं हैं।

जान पहचान के दौर को खत्म करना

यह दौर तब खत्म हो जाता है जब आपको या दोनों पक्षों को यह महसूस होने लगता है कि इस तरह से मिलना उचित नहीं है। लेकिन यदि आप दोनों पक्ष इस मित्रता को एक रिश्ते का नाम देने के लिए सहमत हो जाते हैं तो आप इस दौर को 'मुलाकात' के दौर की ओर ले जा सकते हैं।

2.मुलाकात का दौर।

मुलाकात के दौर का अर्थ।

मुलाकात के दौर का अर्थ, एक दूसरे की नज़रों में आदर व आकर्षण को प्राप्त करना तथा विवाह की पूर्ण सम्भावना को ध्यान में रखते हुए मित्रता को मज़बूत करना है।

मुलाकातों का मकसद

यह जानना कि क्या आप दोनो का विवाह होना परमेश्वर की इच्छा है (इफिसियों 5:17)। यह जानना कि वहां पर विवाह के सम्बन्ध में बंधने के लिए पर्यान्त बुनियादी तत्व मौजूद हैं।

मुलाकात करने का तरीका

एक दूसरे व अन्य लोगों के सामने स्पष्ट करें कि आप एक दूसरे को पसन्द करते हैं और इस दौरान विवाह की योजना बना रहे हैं। होने दें कि आपकी मुलाकात खुले रूप में हों और जो कुछ हो वह सहमति के साथ सीमाओं के दायरे में हो।

मुलाकात के दौर में की जाने वाली कुछ व्यवहारिक गतिविधियाँ।

- मुलाकात के दौरान अपने रिश्ते के लिए कुछ सीमाओं को निर्धारित करें। ये सीमाएं बाइबल में दिये गये सिद्धान्तों पर आधारित हों। निम्नलिखित क्षेत्रों में सीमाओं को निर्धारित करना:

समय:कितनी बार और कितने समय के लिए आप मिलेंगे? शाम को किस समय आपको अपने धर वापस चले जाना चाहिए ?

स्थान: आप एक दूसरे को कहां पर मिलते हैं? आपने किस जगह पर न जाने का निर्णय किया है?

शारीरिक सम्बन्धः किस प्रकार का शारीरिक सम्बन्ध परमेश्वर की नज़रों में उचित है, आपके समाज में ग्रहणयोग्य और एक दूसरे की उन्नति करने वाला है? किसी प्रकार की शारीरिक मुद्रा से आप बचना चाहते हैं?इस विषय पर आपके लिए एक सहमति बनाना बहुत जरूरी है?

गतिविधियाँः आप किन कामों को एक साथ मिलकर करते हैं? आपने किन कामों को नहीं करने का निर्णय किया है?

- परमेश्वर की उपस्थिति में होकर वायदा करें (परमेश्वर को अपना गवाह मानकर) कि आप कभी भी अपने स्तर को गिरने नहीं देंगे बल्कि एक दूसरे को अपने स्तर को बनाये रखने के लिए उत्साहित करेंगे (1 थिस्लुनिकियों 4:3–8)
- एक दूसरे को आत्मिक रीति से बढ़ने के लिए उत्साहित करें। एक दूसरे को प्रेरित करें। मिलकर परमेश्वर की सेवा करें। दूसरे स्त्री व पुरूषों के साथ मिलकर नये मित्र बनाएं।
- विवाह की योजना पर केवल तभी चर्चा करें जब आप विवाह करनें के लिए सहमत हों। नहीं तो आप केवल तनाव उत्पन्न करने वाली अपेक्षाओं को उत्पन्न करेंगे और ऐसे वायदे कर लेगें जिसे आप कभी पूरा नहीं कर सकते।

मुलाकात के दौर व रिश्ते की समाप्ति

यह दौर तब खत्म हो जाता है जब आप या दोनो यह महसूस करते हैं कि अब हमें नहीं मिलना चाहिए। उसके बाद आप निर्णय लेते हैं कि आप अब कभी एक दूसरे से नहीं मिलेंगे या सिर्फ एक दूसरे के अच्छे मित्र बने रहेंगे। यह काफी दुःखदायी हो सकता है, लेकिन बाद में तलाक होने की तुलना में यह दुःख कम है। लेकिन यदि आप सुनिश्चित हो जाते हैं कि वास्तव में यह परमेश्वर की इच्छा है कि आप दोनों विवाह करें, तो आप मग्नी कर सकते हैं। चाहे आपकी मंग्नी हो या न हो, आपको मिलकर विवाह की योजना व विवाह के दिन का चुनाव कर लेना चाहिए।

3. मग्नी का रिश्ता व दौर

मग्नी का रिश्ता।

मंग्नी का अर्थ है कि आपने विवाह करने की इच्छा जाहिर कर दी है और अभी आप विवाह की तैयारी व विवाह के दिन का चुनाव करने में व्यस्त हैं। इसका अर्थ है कि विवाह के सन्दर्भ में आप अब किसी और के लिए खाली नहीं हैं।

मंग्नी का मुख्य उद्देश्य।

आपके होने वाले विवाह व विवाह के दिन की तैयारी करना।

मंग्नी करने का तरीका।

- एक दूसरे से विवाह करने के लिए प्रतिज्ञा करना।
- विवाह की तारीख तय करना तथा विवाह की तैयारी के लिए एक पुख्ता योजना बनाना बहुतायत से सहायक रहता है।
- यदि आप अपने परिवार जनों के साथ मिलकर अपनी मंग्नी के उत्सव को मनाते हैं तो उन सबको बहुत खुशी होगी।
- विवाह के लिए तुरन्त तैयारी प्रारम्भ करना और तैयारी के समय सीमा को निर्धारित करना आपके लिए सहायक रहेगा। ऐसा करने से आप किसी परीक्षा में नहीं पड़ेगें।

मंग्नी के दौर की व्यवहारिक गतिविधियाँ।

- एक साथ जीवन व्यतीत करने तथा एक साथ काम करने के प्रति अपनी अपेक्षाओं पर चर्चा करें। अपने रिश्ते से सम्बन्धित हर एक क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण अपेक्षाओं की चर्चा करें। उदाहरण के लिए अपने भावी घर व जीवन–शैली को लेकर, अपनी भावी कलीसिया और परमेश्वर की सेवा के लिए, अपने मायके व ससुराल वाले रिश्तेदारों के लिए, आपकी नौकरी के लिए, अपनी आर्थिक परिस्थिति, यौन सम्बन्ध व बच्चों की योजना को लेकर चर्चा करें। आप किसी गुप्त बात को न छुपाएं। यदि आवश्यक हो तो अपने बीते जीवन के बुरे अनुभवों को भी बताएं, एक दूसरे के सामने अपने पापों को मान लें तथा एक दूसरे के अपराधों को क्षमा करें।(याकूब 5:16)

- सहमति बनायी गयी शारीरिक सीमाओं को बनाये रखें। आप दोनों पक्षों को विवाह के दिन के आने तक अधिक संयम व एक दूसरे के प्रति पवित्र बने रहने के समपर्ण को बनाये रखना होगा।
- आपके लिए अच्छा रहेगा कि आप विवाह की योजना बनाते समय अपने माता पिता वा अगुवा को भी अपने साथ शामिल कर लें।

मंग्नी के दौर की समाप्ति।

यह दौर तब खत्म हो जाता है जब दोनों पक्ष यह महसूस करते हैं कि अब उन्हें इस रिश्ते को हमेशा के लिए समाप्त कर देना चाहिए। हांलाकि यह दौर काफी हद तक दुःखदायी होता है लेकिन बाद तलाक होने से अभी यह रिश्ता टूट जाना बेहतर है। लेकिन यदि आप को ऐसा महसूस होता है कि अब आपको विवाह कर लेना चाहिए, तो आप विवाह करें और विवाह उत्सव का आनन्द मनाएं।

5	**प्रार्थना** (8मिनट)	[प्रतिक्रिया]
		परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए प्रार्थना करें

जो कुछ आपने आज सीखा है उसके प्रतिउत्तर में **अपनी बारी आने पर** समूह में छोटी **प्रार्थना करें।** या दो और तीन के झुण्डों में बंटकर, आज जो कुछ आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	[निर्धारित कार्य]
		अगले अध्याय के लिए

(***समूह का अगुवा*** : समूह के सदस्यों को यह तैयारी गृह कार्य के रूप में लिखित तौर पर प्रदान करें या उन्हें डाउन लोड करने दें।)

1. **सर्मपणः** चेले बनाने के लिए समर्पित हों।

किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के जन के साथ 'स्त्री व पुरूष के बीच रिश्ते' बाइबल पर आधारित शिक्षाओं को पढ़ें, सिखाये या प्रचार करें।

2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना। प्रेरितों के काम 11:19–14:28 तक रोज एक अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताएं। पसन्दीदा सच्चाई के तरीके का इस्तेमाल करें। लिखें।
3. बाइबल अध्ययन। अगली बाइबल अध्ययन की घर ही में तैयारी करें। 1 थिस्लुनिकियों 4:18। विषयः ' विपरीत लिंग के लोगों के साथ किस प्रकार से सम्बन्ध को मसीही कहा जा सकता है। बाइबल अध्ययन के पांच कदमों वाली पद्धति को इस्तेमाल करें। मुख्य बातों को लिखें।
4. प्रार्थनाः किसी व्यक्ति या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं (भजन 5:3)
5. चेलों को बनाने के सम्बन्ध में वर्तमान स्थिति को किसी कॉपी में लिखें। जिसमें आराधना के गीत, शिक्षा तथा तैयारी की सामग्री को भी लिख सकते हैं।

अध्याय 18

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) [शान्त समय] प्रेरितों के काम 11:19– 14:28

आगे बढ़कर संक्षेप में ***बताएं*** (या अपने नोट्स में से पढ़ें) कि आपने शान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (प्रेरितों के काम 11:19–14:28) से क्या सीखा।
अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) (मसीह में नया जीवन) प्रार्थना: यूहन्ना 15:7

क–ध्यान करना

निम्नलिखित याद करने वाले पद को श्वेत/श्याम पट पर लिखें

प्रार्थना यूहन्ना 15:7
(यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।'' यूहन्ना 15:7)

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के हवाले लिखें:

1. प्रार्थना के उत्तर पाने के सुनिश्चित होने की दो शर्तें हैं।
यीशु ने '' यदि '' शब्द का इस्तेमाल किया जिसका अर्थ है कि यदि उसकी दो शर्तें पूरी की जाएं तो ही वह हमारी प्रार्थनाओं को सुनेगा।

- **आपको यीशु में बने रहना है।**

यीशु द्वारा प्रार्थनाओं के उत्तर को प्राप्त करने हेतू सुनिश्चित होने के लिए हमें मसीह व उसके प्रेम में बने रहना अनिवार्य है। (यूहन्ना 15:5,9)

मसीह, मसीहियों में बना रहता है। मसीह पवित्र आत्मा के द्वारा आपमें बना रहता है। बाइबल बताती है, ''क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? (1 कुरिन्थियों 3:16)''

मसीही को मसीह व उसके प्रेम में बने रहना चाहिए। मसीह व आपके बीच रिश्ते में दोनों पक्षों की ज़िम्मेदारियां शामिल हैं। एक तरफ देखें तो, यदि मसीह आप में नहीं बना रहता तो आप कभी भी विश्वासी नहीं बन सकते। बाइबल बताती है कि मसीह यदि आपके हृदय में नहीं है, तो आप मसीह के नहीं हैं (रोमियों 8:9–10)। दूसरी ओर, यदि आप मसीह में नहीं बने रहते, तो आप दर्शाते हैं कि आप वास्तव में कभी मसीह के थे ही नहीं। मसीह में बने रहना आपकी ज़िम्मेदारी है।

मसीह में बने रहने का अर्थ क्या है? ''मसीह में बने रहने का अर्थ'' लगातार मसीह के साथ में व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाने के लिए अपने आप को समर्पित करना है। इसका अर्थ है कि आप मसीह में बने रहने का प्रयास करते हैं। इसका अर्थ अपने आपको मसीह व आपके जीवन में उसकी योजनाओं के प्रति समर्पित कर देना है। 'बने रहना' शब्द अपूर्ण काल में लिखा गया है, जिसका अर्थ है कि यह सम्बन्ध दैनिक जीवन में लगातार बने रहना चाहिए। बिना निरन्तर प्रयास के कभी कोई उद्धार नहीं होगा, कोई बढ़ौतरी नहीं होगी और न ही कोई फल प्राप्त होगा।

- **आपको मसीह के वचनों में बने रहना चाहिए।**

दूसरी शर्त जिसके द्वारा आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि आपको यीशु मसीह की ओर से प्रार्थनाओं का जवाब मिलेगा, उसके वचनों में बने रहना है (यूहन्ना 15:7)

मसीहियों को मसीह के वचनों में बने रहना चाहिए। यूहन्ना 8:31–32 में यीशु ने कहा,''यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा''। मसीह के वचनों में बने रहना आपकी ज़िम्मेदारी है ,उदाहरण के लिए सात नियमों का पालन करना। जब और जहां कहीं भी यीशु मसीह के वचनों को प्रचार किया जाता है आपको वचन को सुनना चाहिए। आपको बाइबल में मसीह के वचनों को रोज़ पढ़ना चाहिए। आपको हर सप्ताह बाइबल अध्ययन समूह में परमेश्वर के वचनों का अध्ययन करना चाहिए। आपको नियमित तौर पर मसीह के वचनों को याद करना चाहिए। आपको मसीह के वचनों पर मनन करना चाहिए, जिसका अर्थ है कि आप अपने व्यक्तिगत जीवन में उन वचनों के अर्थ पर विचार करें तथा प्रभु से प्रार्थना करके समझ मांगे कि आप उसका इस्तेमाल अपने जीवन में किस प्रकार कर सकते हैं। आपको मसीह के वचनों को अपने जीवन में इस्तेमाल करना चाहिए। (उदाहरण, मत्ती 7:24; यूहन्ना 15:10)। और आपको प्रचार करने व शिक्षा देने के द्वारा मसीह के वचनों को दूसरों तक पहुँचाना चाहिए।

मसीहियों को मसीह के वचनों को अपने आप में बसने देना चाहिए। यूहन्ना 15:7 में आपकी ज़िम्मेदारी यूहन्ना 8:32 में दी गयी आपकी ज़िम्मेदारी से बिल्कुल अलग है। यहाँ पर आपकी ज़िम्मेदारी यह है कि आप यीशु मसीह के वचनों को अपने जीवन में काम करने व आपको परिवर्तित करने दें! मसीह के वचनों को पढ़ने, अध्ययन करने व उनका अभ्यास करने से, मसीह का वचन आपके हृदय, मन व जीवन में बस जाता है। इसलिए आपको यीशु मसीह के वचनों को अनुमति प्रदान करनी चाहिए जो आपके हृदय, मन व जीवन में बसा है, ताकि वो आपके जीवन का चालक व विस्फोटक शक्ति बन जाये, जिसका आपके जीवन पर पूर्ण रूप से नियन्त्रण हो। आप में बसे हुए मसीह के वचनों से आपकी समझ व विचारों, आपके लक्ष्यों व इच्छाओं व आपके स्वभाव व अनुभूतियों तथा आपकी बातों व कार्यों पर नियन्त्रण करना चाहिए। यीशु ने चेतावनी दी,''परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाई ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया (मत्ती 7:26)। यदि आप केवल मसीह के वचनों की जानकारी ही हासिल करते हैं मगर उसका अभ्यास अपने हृदय, मन और व्यवहार में नहीं करते तो आपका जीवन नाश व विखण्डित हो जाएगा। आपको मसीह के वचनों को अपने जीवन में प्रभाव डालने की अनुमति प्रदान करनी चाहिए। मसीह के वचन आपके जीवन में प्रभुता करने वाला प्रभाव होना चाहिए जिस पर आपकी समझ व विश्वास आधारित हो। यह ऐसा प्रभुता करने वाला प्रभाव होना चाहिए जो आपके लक्ष्यों व स्वभाव को निर्धारित करता है। यह आपके जीवन का वह प्रमुख कारण होना चाहिए जिसके बारे में आप बातें करते और जिसके लिए अपने जीवन को समर्पित कर देते हैं। तभी मसीह के वचन आप में बने रहते हैं!

2. क्या आप जो चाहें वह माँग सकते हैं?

जी हाँ, लेकिन यदि आप सच्चे मसीही हैं, तो आप जो चाहे वह नहीं मांगेगे, क्योंकि आप जानते हैं कि कुछ चीजों से परमेश्वर प्रसन्न नहीं होते। यदि आप मसीह में बने हैं और मसीह के वचन आप में वास करते हैं तो आप केवल उन ही बातों को मांगेंगे जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हो। आप कभी भी उन बातों की मांग नहीं करेंगे जो मसीह के चरित्र के या बाइबल में प्रगट इच्छा के विरूद्ध हो। यीशु ने बड़े आत्म विश्वास के साथ प्रार्थना में चीजों की मांग की, लेकिन उसने हमेशा कहा कि 'मेरी नहीं पर तेरी ही इच्छा पूरी हो' (लूका 22:42)। जब कभी आप परमेश्वर से कहेंगे कि आप की इच्छा पूरी हो, तब परमेश्वर हमेशा आपकी प्रार्थनाओं को उत्तर देगें और उसकी इच्छा को पूरी करेगें। जब कभी आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करते हैं, तो आप बड़े आत्म विश्वास के साथ प्रार्थना कर सकते हैं (1यूहन्ना 5:14)। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी ऐसी बात के लिए प्रार्थना करते हैं, जिससे आपके लालच को सन्तुष्टि प्राप्त हो या जिससे आपकी स्वार्थी शक्ति में सफलता प्राप्त हो या आपको प्रसिद्धि मिलती हो, तो परमेश्वर आपकी प्रार्थना को नहीं सुनेंगे। लेकिन यदि आप मसीह में बने रहने का प्रयास करते हैं, और मसीह के वचनों पर आधारित होकर जीवन

व्यतीत करने के लिए समर्पित होते हैं, तो आप बड़े हियाव के साथ प्रार्थना कर सकते हैं। आपकी प्रार्थनाएं सुनी जाएंगी और शक्तिशाली व प्रभावशाली ठहरेगी! याकूब 5:16 ''धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है''।

ख. याद करना व पुनरावलोकन करना

1. किसी खाली कार्ड पर या कॉपी के किसी पेज पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2. ठीक तरीके से बाइबल की आयत को ***याद करें।*** प्रार्थना : यूहन्ना 15:7
3. ***पुनरावलोकन*** / दो–दो के समूह में बंट जाएं तथा एक दूसरे से पिछली याद की गयी बाइबल की आयत को पूछें।

4 बाइबल अध्ययन (70 मिनट) [*सम्बन्ध*]

विपरीत लिंग वालें लोगों के साथ मसीहियों का सम्बन्ध थिस्लुनिकियों 4:1–8

एक साथ मिलकर बाइबल अध्ययन के पाँच कदम वाले तरीके का इस्तेमाल करें तथा 1थिस्लुनिकियों 4:1–8 का अध्ययन करें।

कदम 1. पढें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम 1थिस्लुनिकियों 4:1–8 को एक साथ **मिलकर पढ़ें**।
आइये हम बारी बारी करके तब तक एक एक आयत पढ़े जब तक निर्धारित आयतें खत्म न हो जाएं।

कदम 2. खोज। पुनरावलोकन

ध्यान दें । इस अनुच्छेद की कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद की कौन सी सच्चाई ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लिखें। एक या दो बातों को लिखें जो आपकी समझ में आयी हो। उन बातों के बारे में विचार करें तथा उन विचारों को अपनी कॉपी में लिखें।
बाँटें। (समूह के लोगों को दो मिनट सोचने व लिखने का समय प्रदान करने के बाद, अपने विचारों को व्यक्त करें। आइये हम एक दूसरे के साथ उन विचारों को बाँटे जो हमने सीखा या समझा है।
(नीचे कुछ लोगों द्वारा अपने अनुभवों को बाँटने के उदाहरणों को दिया है। याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य भिन्न भिन्न बातों को बाँटेंगे, यह ज़रूरी नहीं है कि उनके भी अनुभव समान हों।)

4:3

खोज 1. मसीहियों को यौन अनैतिकताओं से बचे रहना चाहिए।

बाइबल बताती है कि ''यह परमेश्वर की इच्छा है.....कि आप यौन अनैतिकताओं से बचे रहें। ''हम ऐसे समय में जीवन व्यतीत कर रहे हैं जहाँ पर यौन अनैतिकता, अश्लीलता, विवाह पूर्व यौन सम्बन्ध, और बलात्कार बढ़ते चले जा रहे हैं। स्कूल के बच्चे बहुत अधिक मात्रा में इन कामों में शामिल हो रहे हैं। यौन अनैतिकता को प्रदर्शित करने वाली कहानी की घटिया किताबें बेची जा रही है, जिन घरों में टी.वी हैं उनमें अश्लील चलचित्र परोसे जा रहे हैं।

हालांकि आधिकारिक तौर पर ''सुरक्षित यौन सम्बन्ध'' (गर्भनिरोधक का इस्तेमाल करने का) बनाने का सुझाव दिया जा रहा है, फिर भी सारी दुनिया में युवाओं के बीच में गर्भपात की घटनाएं बढ़ती ही जा रही हैं। विपरीत लिंग के लोगों के साथ परम्परागत व्यवहार की जगह आधुनिक तरीकों ने ले ली है, जिसकी वजह से अनैतिक यौन सम्बन्धों में कोई नियन्त्रण नहीं है। जवान लोग और यहाँ तक कि कुछ व्यस्क लोग भी यौन अनैतिकता के खतरे को नहीं जानते हैं। वे इस सत्य को नहीं पहिचान पा रहे हैं कि जिसे सुरक्षित यौन सम्बन्ध कहा जाता है वह किसी भी तरह से सुरक्षित नहीं है।

बहुत से जवानों को यह पता ही नहीं है कि विपरीत लिंग के लोगों के साथ किस तरह से व्यवहार करना चाहिए। आदर्श या उदाहरण के नाम पर उनके सामने अश्लील चलचित्र या फिल्में, अश्लील पत्रिकाएं और अनैतिक मित्रगण हैं। लेकिन मैं, बाइबल में सिखाए जाने वाले सिद्धान्तों को सीखना चाहता हूँ।

4:1

खोज 2. मसीहियों को स्पष्ट निर्देश दिये गये हैं कि उन्हें परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए किस प्रकार से जीवन व्यतीत करना चाहिए।

बाइबल कहती है कि'' हम तुम्हें चिताते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर को भाने योग्य जीवन व्यतीत करना चाहिए। ''यह खण्ड हमें स्पष्ट तौर पर बताता है कि लोग जैसा चाहें वैसा जीवन व्यतीत नहीं कर सकते, विशेष तौर पर यदि वह विपरीत लिंग के लोगों के साथ व्यवहार करने की बात हो तो। परमेश्वर को केवल हमारी पवित्रता ही प्रसन्न करती है। यौन क्षेत्र में शुद्धता के अर्न्तगत चार बातें शामिल हैं:

- सर्वप्रथम, अनैतिकता यौन सम्बन्धों से बचें।
- दूसरा,अपने देह को नियन्त्रित करना सीखें।
- तीसरा, सयंम के साथ एक पत्नी को प्राप्त करना सीखें।
- चौथा, यौन अनैतिकता के क्षेत्र में किसी भाई को गलत रास्ता न दिखाए।

मैं संसार भर में हर जगह जवानों को लगातार सच्चाई बताना चाहता हूँ, ताकि वे सीख सके कि परमेश्वर को किस तरह प्रसन्न किया जाता है।

कदम 3. प्रश्न वर्णन

ध्यान दें: इस खण्ड के आधार पर आप समूह से कौन सा प्रश्न पूछना चाहेंगे?
आइये हम 1थिस्लुनिकियों 4:1–8 में दी गयी सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जिनके बारे में हम अभी तक नहीं जानते हैं।
लिखें। अपने प्रश्नों को सम्भव स्पष्ट स्वरूप प्रदान करें। उसके पश्चात अपने प्रश्नों को अपनी कॉपी में लिखें।
बाँटें (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट तक विचार विमर्श करने तथा उन्हें लिखने के बाद, सभी लोगों को अपने प्रश्न पूछने का अवसर प्रदान करें।
चर्चा करें। (फिर, उनमें से कुछ प्रश्नों को चुनकर, अपने समूह में चर्चा करते हुए उन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें)
(नीचे कुछ प्रश्नों व चर्चा करने के बाद उत्तरों को उदाहरण के तौर पर दिया गया है जिन्हें विद्यार्थी पूछ सकते हैं)

4:1–2

प्रश्न 1. यौन अनैतिकता व व्यभिचार में क्या अन्तर है?

ध्यान दें। इब्रानियों 13:4 में लिखा है,''विवाह सब से आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।
'व्यभिचार' किसी दूसरे विवाहित व्यक्ति के साथ किसी प्रकार का गैरकानूनी शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना है। इसका अर्थ किसी दूसरे व्यक्ति के वैवाहिक जीवन में हस्तक्षेप करना है। जिसमें तलाक शुदा व्यक्ति भी शामिल हैं।
'परस्त्रीगमन व यौन अनैतिकता' का अर्थ अपने जीवन साथी को छोड़ किसी भी व्यक्ति के साथ शारीरिक सम्बन्ध को स्थापित करता है। इसमें विचारों में, इच्छाओं में तथा बातों में किसी के साथ यौन सम्बन्ध बनाना शामिल है। इसमें हर प्रकार का अनुचित यौन व्यवहार शामिल है। (लैव्यव्यवस्था 18:6, 20,22,23)।
बाइबल सब बातों के निचोड़ के तौर पर बताती है कि उचित यौन सम्बन्ध अपने जीवन साथी के साथ ही होता है और वह भी विवाह के बाद। बाइबल हमें चेतावनी देती है कि परमेश्वर व्यभिचारियों व परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा। दोनों शब्द परमेश्वर के त्याग व मूर्तिपूजा को प्रगट करते हैं, जो कि आत्मिक अनैतिकता या आत्मिक व्यभिचार है।

4:3–4

प्रश्न 2: 1 थिस्लुनिकियों 4:3–4 का सबसे ज्यादा पसन्द किया जाने वाला अनुवाद क्या है?

ध्यान दें। 1 थिस्लुनिकियों 4:3–4 को तीन तरीकों से समझा जा सकता है, और तीनों ही अपनी जगह पर ठीक हैं।
' क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो; अर्थात व्यभिचार से बचे रहो। और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपने पात्र को प्राप्त करना जाने।'' वह पात्र आपकी अपनी देह है।
' क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो; अर्थात व्यभिचार से बचे रहो। और तुम में से हर एक परस्त्रीगमन से बचा रहे, तुम में से हर एक अपने ही पात्र को हासिल करना सीखे। वह पात्र आपकी अपनी पत्नी है।
' क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो; अर्थात व्यभिचार से बचे रहो। और तुम में से हर एक परस्त्रीगमन से बचा रहे और अपने पात्र के साथ रहना सीखें'। वह पात्र आपकी अपनी पत्नी है।

4:3–4

प्रश्न 3. मैं अपनी देह को नियन्त्रित करना कैसे सीखता हूँ?

ध्यान दें।

- **अपनी जीभ को नियन्त्रित करना सीखें।**

इफिसियों 5:3–4 पढ़ें। ''और जैसे पवित्र लोगों के योग्य है वैसा तुम में व्यभिचार और किसी प्रकार का अशुद्ध काम या लोभ की चर्चा तक न हो। और न निर्लजता, न मूढ़ता की बातचीत की, न ठट्टे की क्योंकि ये बातें सोहती नहीं, वरन धन्यवाद ही सुना जाए। परस्त्रीगमन या यौन अनैतिकता का जिक्र जीभ से जोड़कर किया गया है। जुबान से फैलाई जाने वाली अश्लीलता का अर्थ है आप दूसरों के यौन सम्बन्धी जीवन को लेकर असभ्य बात करना या कसम खाते समय आप जननांगो या यौन शब्दों का इस्तेमाल कर रहे हैं। घटिया चुटकुलों का अर्थ है आप गन्दे चुटकुले सुना रहे हैं या यौन सम्बन्धी अश्लील चुटकुले बता रहे हैं। मसीहियों को अपने बच्चों को स्वस्थ्य यौन सम्बन्धी शिक्षा देनी चाहिए और उन्हें गम्भीरता से सिखाना चाहिए कि वे विवाह के भीतर किस प्रकार शारीरिक रिश्तों को बना सकते हैं। लेकिन यौनाचार के बारे में कानाफूसी करना या तंज कसना अनैतिक यौनाचार है। मसीहियों के बीच में यौनाचार को लेकर किसी चुटकुले या कानाफूसी का छोटा सा लक्षण भी नहीं पाया जाना चाहिए।

- **अपनी आंखों को नियन्त्रित करना सीखें।**

***पढ़ें* अय्यूब 31:1।** :' मैं ने अपनी आखों से वाचा बांधी है, फिर मैं किसी कुंवारी पर क्योंकर आंखें लगाऊँ।''। सारे संसार भर में पुरूष ज़्यादातर अपने दृष्टि दोष के कारण परीक्षा में पढ़ते हैं। यदि पुरूष किसी ऐसी स्त्री को देख लेता है, जिसने सही तरीके से कपड़े न पहन रखें हों या जिसका बदन वस्त्रों से ठीक तरह से ढका न हो तो,उसे देखकर पुरूष के मन में अनैतिक विचार उत्पन्न होने लगते हैं। यदि पुरूष किसी पत्रिका में किसी स्त्री की अश्लील तस्वीर देख लेता है तो भी उसके मन में कामुक भाव उत्पन्न होने लगते हैं। ज्यादातर कामुक विचार, आपके देखेने के द्वारा प्रारम्भ होते हैं। दृष्टि दोष के कारण आपके मन में कामुक विचार उत्पन्न होने लगते हैं। जिसके कारण व्यक्ति अनैतिक निर्णय ले लेता है और अन्ततः अनैतिक काम कर बैठता है। अनैतिक यौनाचार की लड़ाई हमारे देखने, हमारे सुनने व हमारे विचार से प्रारम्भ होती है। इसी कारण से परमेश्वर ने बाइबल में इन वचनों को लिखा है:' मैं ने अपनी आखों से वाचा बांधी है, फिर मैं किसी कुंवारी पर क्योंकर आंखें लगाऊँ। ''परमेश्वर से प्रतिज्ञा करें कि आप उघाड़े वस्त्र पहने हुई स्त्री को देखने से, अश्लील चित्रों वाली पत्रिका व चलचित्र को देखने से तथा अनैतिक पुस्तकों को पढ़ने से बचेंगे। परमेश्वर से एक प्रतिज्ञा करें कि जब कभी अनापेक्षित ढंग से इस प्रकार के लोग व अनैतिक पुस्तकें आपके सामने आ जाएंगी तो आप उसे देखने के लिए दुबारा नहीं पलटेंगे।

- **अपने ह्रदय और मन को नियन्त्रित करना सीखें।**

नीतिवचन 6:25 को पढ़ें। ''उसकी सुन्दरता देखकर अपने मन में उसकी अभिलाषा न कर, वह तुझे अपने कटाक्ष में फंसाने न पाये"। परमेश्वर ने लगभग सभी स्त्रियों को सुन्दर बनाया है। इसलिए कुछ स्त्रियां, अपनी सुन्दरता का इस्तेमाल अनैतिक यौनाचार करने के लिए इस्तेमाल करती है। वे अपने वस्त्र पहिनने के तरीके, अपने शारीरिक लटकों झटकों, अपनी आखों के इशारों से वे पुरूषों को अपने जाल में फंसाना चाहते हैं। संसार में सभी जगहों पर वैश्याएं अपनी कमजोरियों के साथ साथ पुरूषों की कमज़ोरी को भी जानती है। हर एक व्यक्ति को नियन्त्रित करने वाला केन्द्र बिन्दु उसका ह्रदय होता है। ह्रदय के द्वारा ही मन के विचार, ह्रदय की इच्छाएं और हमारी इच्छाओं का चुनाव और निर्णय लेना नियन्त्रित किया जाता है। कई बार आप किसी स्त्री को देखने से अपने आप को रोक नहीं पाते, लेकिन आप उन्हें लगातार या बार बार देखने से अपने आप को रोक सकते हैं। बाइबल कहती है कि आपको उनकी सुन्दरता पर या आपको अपने कब्ज़े में करने के उसके प्रयासों पर ध्यान नहीं देना है। अपने मन में उसको पाने की अभिलाषा न करें। आपके भीतर बसे पवित्र आत्मा को आपके मन व ह्रदय को नियन्त्रित करने की अनुमति प्रदान करें। 2 कुरिन्थियों 10:5 में बाइबल कहती है कि हम ''हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।''

- **अपने पैरों को नियन्त्रित करना सीखें।**

नीतिवचन 5:7–10 पढ़ें। '' इसलिए अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो, और मेरी बातों से मुँह न मोड़ो। ऐसी स्त्री से दूर ही रह, और उसकी डेवड़ी के पास भी न जाना; कहीं ऐसा न हो कि तू अपना यश औरों के हाथ, और अपना जीवन क्रूर जन के वश में कर दे; या पराये तेरी कमाई से अपना पेट भरें, और परदेशी मनुष्य तेरे परिश्रम का फल अपने घर में रखें। संसार के हर शहर में वैश्याएं व दलाल पाए जाते हैं। हर एक गांव में बदनाम स्त्री व पुरूष होते हैं। आप सामान्य तौर पर उनके अड्डों व उनके शिकार करने के स्थानों को जानते हैं। इन स्थानों से बचे रहें। बाइबल कहती है, ''ऐसी स्त्री से दूर ही रहना उसकी डेवढ़ी के पास भी न जाना''। रैड लाइट या यैलो लाइट क्षेत्रों, डिस्को, मसाज केन्द्र तथा क्लब से दूर रहें जहाँ इस प्रकार के लोग अपने शिकार पर आक्रमण करने की फिराक में बैठे रहते हैं। अपने स्कूल में बदनाम

लड़के व लड़कियों से बच कर रहें। हमें अपने पैरों पर नियन्त्रण करके इस प्रकार की जगहों के पास से भी गुज़रने से बचना चाहिए।

- **अपने हाथों को नियन्त्रित करना सीखें**

नीतिवचन 5:15–21पढ़ें। ' तू अपने ही कुण्ड से पानी, और अपने ही कुंए से सोते का जल पिया करना। क्या तेरे सोतों का पानी सड़क में, और तेरे जल की धारा चौकों में बह जाने पाए? यह केवल तेरे ही लिए रहे, और तेरे संग औरों के लिए न हो। तेरा सोता धन्य रहे; और अपनी जवानी की पत्नी के साथ आनन्दित रह। प्रिय हरिणी वा सुन्दर सांभरनी के समान उसके स्तन सर्वदा तुझे सन्तुष्ट रखें, और उसी का प्रेम नित्य तुझे आकर्षित करता रहे। हे मेरे पुत्र, तू अपरिचित स्त्री पर क्यों मोहित हो, और पराई को क्यों छाती से लगाए? क्योंकि मनुष्य के मार्ग यहोवा की दृष्टि से छिपे नहीं है, और वह उसके सब मार्गों पर ध्यान करता है।'' आधुनिक युग में लोग चाहे गुप्त में हो या खुले रूप में विपरीत लिंग के लोगों के साथ व्यवहार करते समय किसी सीमा का ख्याल नहीं रखते। लोग परिणाम की परवाह किये बगैर सोचते हैं कि वे जो चाहें वह कर सकते हैं। इसी कारण बहुत से जवान लोग अपने हाथों को नियन्त्रित नहीं करते। जब युवक युवतियों के साथ अकेले होते हैं तो वे उनके शरीर के विभिन्न अंगों को यहाँ वहाँ छूने लगते हैं और कई बार तो वे एक दूसरे के कपड़ों के अन्दर भी हाथ डाल देते हैं। पुरूषों के छूने से ज्यादातर स्त्रियां कामुक हो जाती हैं इसलिए पुरूषों को अपने हाथों पर नियन्त्रण करना चाहिए। जिस प्रकार से किसी देश के नियम उसके सामाजिक जीवन की सीमाओं को दर्शाते, ट्रैफिक के नियम सुरक्षित ड्राइविंग को दर्शाते हैं, इसी प्रकार से बाइबल यौन सम्बन्धों के क्षेत्र की सीमाओं को दर्शाती है। हमें अपने हाथों को नियन्त्रित करना सीखना चाहिए और एक दूसरे को पवित्र व सम्मानजनक तरीके से छूना चाहिए।

4:3–4

प्रश्न 4. मैं अपनी पत्नि को प्राप्त करना या जीतना किस प्रकार सीख सकता हूँ?

ध्यान दें। उपरोक्त बताये गये किसी भी क्षेत्र में, मसीहियों को गैर मसीहियों की तुलना में अलग तरीके से विपरीत लिंग वाले लोगों को साथ व्यवहार करना चाहिए। बाइबल हमें बताती है कि जवान पुरूष अपनी पत्नी को जीत या हासिल कर सकते हैं। लेकिन इसके साथ बाइबल हमें यह भी बताती है कि पुरूष कामुकता के कामों के द्वारा कभी अपनी पत्नी को नहीं प्राप्त कर सकता। 'पवित्र' तरीके का मतलब है कि एक तरीका जो इस संसार के पापमय तरीके से बिल्कुल अलग है। एक सम्मान जनक तरीके का अभिप्राय उस तरीके से है जिसे परमेश्वर व दूसरे लोग पसन्द करते हैं। पत्नी हासिल करने के तरीके पर परमेश्वर दोष न लगा पाए और न ही लोग आपकी निन्दा कर सकें। विवाह पूर्व एक दूसरे को जानने के दौर में लोगों को अपने शरीरों व भावनाओं पर संयम बरतना चाहिए। उन्हें अपनी जुबान, आंखों, पैरों और हाथों पर नियन्त्रण रखना चाहिए। परमेश्वर ही ने स्त्री व पुरूष के सम्बन्ध में सीमाओं को बनाया है। परमेश्वर ने आदेश दिया है कि जान पहिचान करते समय (जिसे आधुनिक युग में डेटिंग कहा जाता है), स्त्री व पुरूष को आपस में क्या नहीं करना चाहिए। स्त्री व पुरूष को परस्त्रीगमन या अनैतिक यौनाचार से बचना चाहिए।

4:3–4

प्रश्न 5. स्त्रियों के साथ व्यवहार करते समय मुझे किस प्रकार की सीमाओं को बनाकर रखना चाहिए?

ध्यान दें। मसीहियों को विपरीत लिंग के लोगों के साथ व्यवहार करते समय सीमाओं को निर्धारित करना चाहिए। मसीही अभिभावकों व मसीही अगुवों को अपनी देखरेख में आने वाले युवक व युवतियों को इन सीमाओं के बारे में जरूर से बताना चाहिए। जब मसीही युवक व युवतियां एक दूसरे को जानने या सम्भवतः विवाह करने से पहले एक दूसरे को आकर्षित करने का प्रयास करते हैं तो उन्हें निश्चित तौर पर सहमति के साथ कुछ सीमाओं को निर्धारित कर लेना चाहिए। उनकी सहमति में निम्नलिखित चार क्षेत्रों को लेकर स्पष्ट सीमाएं निर्धारित हो जानी चाहिए जिन्हें वे आने वाले समय में बनाये रखने वाले हैं। उन्हें साथ मिलकर निम्नलिखित विषयों पर चर्चा करते हुए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ना चाहिए।

- समय। आप कब मिलते हैं? आप कितनी बार मिलते हैं? कितनी देर के लिए आप मिलते हैं? कितने बजे तक आपकी अपनी बातचीत को समाप्त कर देना चाहिए?
- स्थान। आप किस स्थान पर मिलते हैं? आप किस स्थान पर जा सकते हैं? आप किस स्थान में नहीं जाएंगे?
- गतिविधियाँ। कौन से काम आप साथ मिलकर करते हैं? कौन से काम आप नहीं करेंगे? ध्यान रहे कि जो कुछ भी आप करते हैं वह परमेश्वर देखता है!

- शारीरिक सम्बन्ध। सुरक्षित कहा जाने वाला यौन सम्बन्ध (गर्भनिरोधक का इस्तेमाल) कभी भी सुरक्षित नहीं होता। यह शारीरिक रूप में सुरक्षित नहीं होता और वास्तव वे वह आत्मिक रूप में तो बिल्कुल भी सुरखित नहीं है। बाइबल विवाह से पहले इस प्रकार के सम्बन्ध के लिए मना करती है (इब्रानियों 13:4)। लोगों को परमेश्वर के सम्मुख प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि किसी भी परिस्थिति में वे विवाह से पूर्व किसी प्रकार के सम्बन्ध को स्थापित नहीं करेंगे।

पुरूष व स्त्री को विवाह से पूर्व अपने सम्बन्ध के लिए एक पैमाना निर्धारित कर लेना चाहिए और वह पैमाना बाइबल पर आधारित हो। एक पुरूष व स्त्री को मिलकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देना चाहिए। बाइबल की शिक्षाओं के अनुसार, हमें किस प्रकार के शारीरिक सम्बन्ध बनाने चाहिए? किस प्रकार के शारीरिक सम्बन्ध हमें स्थापित नहीं करने चाहिए? बाइबल में अनुमति मिलने के बावजूद किस प्रकार के शारीरिक सम्बन्ध हमारे समाज में ग्रहण योग्य नहीं है। किसी प्रकार के स्पर्श के द्वारा दोनों पक्षों की उन्नति होगी? बाइबल में अनुमति मिलने पर भी किस प्रकार के स्पर्श से दूसरे व्यक्ति को कोई मदद नहीं मिलती है?

निष्कर्ष: जिस प्रकार से मसीही स्त्री या पुरूष आपस में व्यवहार करतें है वह गैर मसीहियों द्वारा स्त्री व पुरूषों द्वारा किये गये आपसी व्यवहार से बिल्कुल अलग होता है। बाइबल आज्ञा देती है कि मसीही पुरूष व स्त्रियों को विपरीत लिंग के लोगों के साथ पवित्र, सम्मानजनक तरीके से व्यवहार करना चाहिए, कामातुर होकर नहीं। जो भी जन परमेश्वर की इन आज्ञाओं को अस्विकार करता है वह स्वयं परमेश्वर को अस्वीकार करता है (पद 8)।

4:6

प्रश्न 6 विश्वासधात करने वाला भाई कौन है?

ध्यान दें। जब भी कभी कोई पुरूष परमेश्वर की आज्ञा के विरूध किसी स्त्री के साथ अपवित्र व असम्मानजनक तरीके से बर्ताव करता है या गैर मसीहियों के समान उसे कामुक करने का प्रयास करता है, तो वह विश्वास करने वाला भाई है। यह विश्वासघात करने वाला भाई या तो उस स्त्री का पिता होगा, या उस स्त्री का भाई होगा, या फिर उस स्त्री का होने वाला पति होगा, या फिर मण्डली में पाया जाने वाला कोई भाई (या बहन) होगा। यह पुरूष की ही ज़िम्मेदार होती है, क्योंकि वह ही स्त्री को इस गतिविधि के लिए उसकाता है। जब कभी कोई पुरूष किसी औरत के साथ सोता या उसे काम वासना के लिए उसकाता है, तो वह उस पुरूष को धोखा देता है जिसका सम्बन्ध उस स्त्री से होता है। वह अपने भाईयों को धोखा देकर गलत फायदा उठाता है, वह उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाता है, वह उस स्त्री के भावी पति से उसके कुंवारी पत्नी हासिल करने के अधिकार को चुरा लेता है। बाइबल ऐसे लोगों से बदला लेने के लिए मना करती है, क्योंकि पलटा लेना परमेश्वर का काम है (रोमियों 12: 17–21)।

जब कभी कोई मसीही व्यभिचार करे, तो उसके लिए यह जानना बहुत ज़रूरी है कि उसने आखिर क्या किया है, तथा प्रायश्चित करते हुए परमेश्वर के सम्मुख अपने पापों का अंगीकार कर लेना चाहिए। जिन स्त्री व पुरूषों ने व्यभिचार या अनैतिक यौनाचार किया है वे क्षमा प्राप्त कर सकते तथा नये तरीके से अपने जीवन की शुरूआत कर सकते हैं, लेकिन यह तभी सम्भव हो सकता है जब वे यीशु की ओर फिरे और सच्चे मन से अपने पापों से पश्चाताप करें।

कदम 4. उपयोग — इस्तेमाल

ध्यान दें: इस अनुच्छेद का कौन सा सत्य मसीहियों के लिए सम्भवतः उपयोगी है?

बाँटें व लिखें। आइये हम एक दूसरे के साथ विचार विमर्श करके 1थिस्लुनिकियों 4:1–8 के आधार पर इस्तेमाल में आने वाली बातों की एक सम्भावित सूची बनाएं।

ध्यान दें। इनमें से कौन सी उपयोगी बातें हैं जिन्हें परमेश्वर चाहते हैं कि आप उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन में इस्तेमाल करें?

लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को अपनी कॉपी में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को बाँटने में स्वतन्त्र महसूस करें। (ध्यान रखें कि हर एक समूह में लोग अलग सच्चाईयों का इस्तेमाल करेंगे या उसी सच्चाई का अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगे। सम्भावित इस्तेमाल की सूची निम्नलिखित है।)

1. 1 थिस्लुनिकियों 4:1–8 से उपयोग की जाने वाली सम्भावित बातें।

4:1 इस एक प्रश्न को लेकर बाइबल पढ़ें, "परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए मैं किस प्रकार का जीवन व्यतीत करूँ?"

4:1 परमेश्वर को प्रसन्न आ सकने वाले जीवन को व्यतीत करने के लिए मुझे अपने भीतर किन बातों को बदलने की ज़रूरत है?

4:3 परस्त्रीगमन से बचने के लिए मैं क्या करूँ?
4:4 मेरी देह को बेहतर तरीके से नियन्त्रित करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?
4:4 यदि मैं अविवाहित हूँ तो मैं अपनी होने वाली पत्नी को पवित्र व सम्मानजनक तरीके से हासिल करने के लिए क्या करूँ?
4:5 गैर मसीहियों के जीवन में पायी जाने वाली कामुकता से बचने के लिए मैं क्या करूँ?
4:6 यदि मैंने किसी स्त्री या भाई को अनैतिक यौनाचार के क्षेत्र में धोखा दिया है, तो मैं अपने पापों से पश्चाताप कर सकता हूँ, क्षमा प्राप्त करके, विपरीत लिंग के लोगों के साथ व्यवहार करने के क्षेत्र में नये व पवित्र तरीके से जीवन की शुरूआत करें।
4:7 मैं एक कार्ड पर कुछ वचनों को लिखकर " परमेश्वर ने तुम्हें पवित्र जीवन जीने के लिए बनाया है" मेज पर रख सकता हूँ, जहाँ से मैं उसे रोज़ देख सकूं।
4:8 हमेशा याद रखें कि यदि परस्त्रीगमन या व्यभिचार के क्षेत्र में मैं परमेश्वर के वचनों को अस्वीकार करता हूँ, तो मैं स्वंय परमेश्वर को अस्वीकार करता हूँ।

2. 1थिस्लुनिकियों 4:1–8 में पाये जाने वाले व्यक्तिग तौर पर इस्तेमाल किये जाने वाले तत्व।

मैं अपने विचारों व अपनी आंखों को नियन्त्रित करना सीखना चाहता हूँ। मैं ने परमेश्वर के साथ वाचा बाँधी है कि मैं किसी स्त्री या पुरूष को कुदृष्टि से नहीं देखूंगा और जब कभी मेरे मन में अश्लील या गन्दे विचार आएंगे तो मैं उन्हें दूर करने का प्रयास करूँगा।
मैं लगातार हर जगह पर युवाओं को यह सिखाना चाहता हूँ कि मसीही तरीके से विपरीत लिंग के लोगों के साथ करना व अद्भुत तरीके से अपने जीवन साथी को हासिल करना सम्भव है। जिस किसी जवान के साथ मुझे अवसर मिलता है मैं उनके साथ मिलकर इस बाइबल अध्ययन को करना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आइये 1 थिस्लुनिकियों 4:1–8 में परमेश्वर द्वारा सिखाई गये सत्यों के आधार पर प्रार्थना करें।
(जो कुछ आपने बाइबल अध्ययन के दौरान सीखा है, प्रार्थना में उसका प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करना सीखें। याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग विषयों के लिए प्रार्थना करेंगे)

5	**प्रार्थना** (8मिनट)	[मध्यस्थता] दूसरों के लिए प्रार्थना करे

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें***। एक दूसरे तथा संसार के अन्य लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	निर्धारित कार्य अगले अध्याय के लिए

(***समूह का अगुवा*** : समूह के सदस्यों को यह तैयारी गृह कार्य के रूप में लिखित तौर पर प्रदान करें या उन्हें डाउन लोड करने दें।)

1. सर्मपण: चेले बनाने के लिए समर्पित हों।
किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के जन के साथ 'स्त्री व पुरूष के बीच रिश्ते' बाइबल पर आधारित शिक्षाओं को पढ़ें, सिखाये या प्रचार करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना। प्रेरितों के काम 15:1–18:17 तक रोज एक अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताएं। पसन्दीदा सच्चाई के तरीके का इस्तेमाल करें। लिखें।
3. याद करना: प्रार्थना। यूहन्ना 15:7। प्रतिदिन बाइबल की 5 याद की गयी आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना: किसी व्यक्ति या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं (भजन 5:3)
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे को अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 19

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	आराधना (20 मिनट)	[परमेश्वर की विशेषताएं] परमेश्वर सिद्ध है

मनन।

परमेश्वर सिद्ध है पर शिक्षा दें या पढ़ें।

व्यवस्थाविवरण 10:17–18;व्यवस्था विवरण 16:18–19; भजन संहिता 34:15–16; यशायाह 5:8, 11–12, 18,20–23 **पढें**।

1. परमेश्वर पक्षपात नहीं करता।

परमेश्वर न तो धनी, न शक्तिशाली का और न ही गरीबों को पक्षपात करता है। (लैव्यव्यवस्था 19:15)। परमेश्वर किसी भी जाति में भेद भाव नहीं करता, वरन वह सभी जाति,वर्ग, संस्कृति व समाज के लोगों के साथ मिलता जुलता है। (प्रेरितों 10:28,34–35)।

2. परमेश्वर घूस नहीं लेता।

भजन संहिता 115 हमें सर्तक करते हुए बताता हैं जितने मूर्तिपूजा या मनुष्यों द्वारा बनाये देवताओं की पूजा करते हैं वे बिल्कुल अपने देवताओं के समान हो जाते हैं। उनके देवी देवता भ्रष्ट हैं, क्योंकि उनके लोग चढ़ावा चढ़ाकर अपने प्रति उनके पक्ष को खरीद सकते हैं। मूर्तिपूजक और अपने देवी देवताओं को बनाने वाले भी भ्रष्ट हो जाते हैं, क्योंकि वे भी घूस देकर लोगों से अपने काम करवा लेते हैं। परमेश्वर को कभी घूस देकर नहीं खरीदा जा सकता। कोई भी जन किसी धार्मिक संस्था को दान देकर या रोज किसी धार्मिक रीति रिवाज़ को पूरा करके परमेश्वर के पक्ष या अनुग्रह को खरीद नहीं सकता है। कोई भी जन जीवित परमेश्वर को अपने दृष्टिकोण से नहीं जीत सकता और न ही वह कुछ भी करके परमेश्वर से इस संसार में कोई कार्य करवा सकता है। जीवित परमेश्वर किसी भी प्रकार की घूस को स्वीकार नहीं करता। मनुष्य जीवित परमेश्वर से हेर फेर नहीं कर सकता। जीवित परमेश्वर अपनी शर्तों पर लोगों से रिश्ता बनाता है, लोगों की शर्तों पर नहीं।

3. परमेश्वर कमज़ोर लोगों की सुरक्षा करता है।

इस संसार के बहुत से लोग केवल ' सेहतमन्द लोगों के निर्वाह पर'' या 'सही काम करने वालों के निर्वाह पर' या 'अपने आप के निर्वाह पर ' ही विश्वास करते हैं। वे अनाथों, विधवाओं, बुजुर्गों व कुवांरियों तथा परदेशियों को दबाते व उनका शोषण करते हैं। आधुनिक काल में बाल मज़दूरी, बाल दासत्व व बाल सैनिकों में जोरों से बढ़ौतरी हो रही है। धनी लोग गरीब लोगों की मजदूरी व कामों के बल पर अमीर होते ही जा रहे हैं जबकि गरीब लोग और भी अधिक गरीब हो रहे हैं। करीब नव्वे लाख बच्चे और व्यस्क लोग प्रतिवर्ष भूख व कुपोषण का शिकार होकर मर जाते हैं (जो लगभग 24000 प्रतिदिन है)। उनके देश के बच्चे व उनका देश भी विधवाओं व बुजुर्गों को भूल जाते हैं। और अल्पसंख्यक व परदेसियों पर बहुतायत से सताया जा रहा है।

संसार भर के लोगों के इस अनैतिक व्यवहार के बिल्कुल विपरीत, जीवित परमेश्वर कमजोर लोगों के हक की सुरक्षा करता है। धनी, दबाने वाले व शोषण करने वालों के विपरीत, जीवित परमेश्वर गरीबों,दरिद्र तथा शोषित लोगों के बीच में काम करता है। इस संसार में जिन लोगों के पास पिता नही हैं,वह उन लोगों का स्वर्गीय पिता बन जाता है। जिन लोगों के पास उनकी सुरक्षा करने के लिए पति नहीं है, वह उनकी सुरक्षा करने वाला बन जाता है। वह परदेसियों के लिए विशेष रक्षक बन जाता है। अकेलापन महसूस करने वाले लोगों के लिए वह अच्छा मित्र बन जाता है। जिन लोगों को आलिंगन की आवश्यकता होती है उनको वह आगे बढ़कर बाहों में उठा लेता है (होशे 11:1–4)। जीवित परमेश्वर लोगों की परवाह करता है, खास तौर पर वह ध्यान रखता है कि लोगों के पास खाने के लिए भोजन,पहनने के लिए वस्त्र व रहने के लिए घर हो। परमेश्वर संसार भर के मसीहियों को शोषित व परेशान लोगों तक पहुंचनें के लिए पैरों के रूप में, गरीबों की मदद करने के लिए उन्हें हाथ के रूप में तथा असहाय लोगों को उत्साहित करने व प्रेरित करने के

लिए मुँह के रूप में इस्तेमाल करते हैं। अन्ततः, न्याय के दिन में परमेश्वर संसार में पैदा हुए सभी शोषण करने, दबाव डालने, तथा बिगाड़ करने वालों को दण्ड देगा।

4.परमेश्वर की सुनिश्चित अहमियत व मानदण्ड होते हैं।

परमेश्वर के पास अहमियत व मानदण्ड की आत्मिक व नैतिक पद्धति होती है। परमेश्वर बुराई, गलत बातों, अधर्म, अपवित्र व अभक्ति से बिल्कुल परे है। परमेश्वर के मानदण्ड किसी वस्तु से जुड़े नहीं होते,वे कभी परिस्थितियों पर निर्भर या बदलते मानव युग पर निर्भर करते है। परमेरवर के आत्मिक व नैतिक मानदण्ड सदैव सिद्ध होते हैं। बाइबल के सारे वचन इस तरह से लिखें गये हैं कि उन्हें उनकी मूल अवस्था में उच्चारित किया जाए। वह चाहता है कि सम्पूर्ण मानव जाति उसकी उसे जाने व उसकी इच्छा को समझे। परमेश्वर द्वारा अहमियत दी जाने वाली चीज़ों को उसकी आज्ञाओं व उसके द्वारा मनाही के द्वारा समझा जा सकता है। परमेश्वर की आज्ञाएं व निषेध हर एक संस्कृति व इतिहास के हर काल में एक जैसी ही बनी रहती है। इसलिए परमेश्वर का मानदण्ड हर काल में सिद्धता, भलाई व सत्य का एक निर्धारित बिन्दू है। जो कोई जन परमेश्वर द्वारा ठहराये नियमों आज्ञाओं व निषेध का उल्लंघन करता है, वह वर्तमान में कभी भी शान्ति का अनुभव नहीं करेगा और भविष्य में उसे परमेश्वर की ओर से दण्ड भुगतना पड़ेगा। परमेश्वर दुष्ट का सामना करता है, लेकिन वह धर्मी के साथ रहता है (भजन 34:15–16)। अतः जो कोई परमेश्वर के निर्धारित नियमों व आज्ञाओं का पालन करता है उसका विवेक अच्छा होगा, वह शान्ति का अनुभव करेगा तथा सुरक्षित रहेगा। वे जानते हैं कि जीवित परमेश्वर उनके बारे में क्या सोचता है और वे जानते हैं कि परमेश्वर उनके द्वारा किस प्रकार का व्यवहार चाहता है।

आराधना ।

परमेश्वर की सिद्ध विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए उसकी आराधना करें! प्रत्येक समूह में तीन लोग मिलकर आराधना करें।

3	**बाँटना** (20 मिनट) [शान्त समय] प्रेरितों के काम 15:1– 18:17

आगे बढ़कर संक्षेप में ***बताएं*** (या अपने नोट्स में से पढ़ें) कि आपने शान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (प्रेरितों के काम 15:1–18:17) से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4.	**शिक्षा** (70मिनट) [प्रभुता] मसीही प्राथमिकताएं

क. जीवन के पाँच अति महत्वपूर्ण क्षेत्र

1 प्राथमिकता क्या है।

प्राथमिकता जीवन की रूची या ऐसा क्षेत्र है जो सबसे पहले हमारे ध्यान को चाहता है और जो जीवन के बाकि महत्वपूर्ण क्षेत्रों, क्रमों तथा अन्य रूचियों से पहले आता है।

2. जीवन के पांच सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र।

जीवन के पाँच महत्वपूर्ण क्षेत्र निम्नलिखित हैः परमेश्वर के साथ आपका सम्बन्ध, आपका नौकरी(उद्यम, व्यवसाय), आपका परिवार, परमेश्वर के लिए आपकी सेवकाई(सेवा) तथा आपका व्यक्तिगत विकास। परमेश्वर नहीं चाहते कि आप अपना समय व शक्ति को इनमें से केवल एक ही क्षेत्र के लिए खर्च करें। उसकी निगाहों में दूसरे क्षेत्र भी आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं और उन्हें उचित समय, ध्यान और शक्ति मिलनी ही चाहिए! इनमें से प्रत्येक क्षेत्र दूसरे चार क्षेत्रों में भी कार्य करता है। बाइबल बताती है कि इनमें से किसी भी दो क्षेत्रों के बीच सम्बन्ध प्राथमिकताएं हैं।

3. क्या प्राथमिकताए नियत होती है?

बहुत से मसीही विश्वास करते हैं कि मसीही प्राथमिकताएं नियत होती हैं, परन्तु हर एक के जीवन में प्राथमिकताओं का क्रम अलग होता है। कई मसीही सोचते हैं प्राथमिकताओं के क्रम में पहले परमेश्वर, दूसरा परिवार, तीसरा सेवकाई,चौथा

नौकरी और पाँचवा व्यक्तिगत विकास का स्थान होता है। ये मसीही सदैव परमेश्वर की सेवकाई को अपने परिवार से ज्यादा महत्व देते हैं। जबकि दूसरे मसीही विश्वास करते हैं कि प्राथमिकताओं के क्रम में पहला स्थान परमेश्वर, दूसरा सेवकाई, तीसरा नौकरी, चौथा परिवार, और पांचवा व्यक्तिगत विकास का होता है। ये मसीही परमेश्वर की सेवकाई या उनकी नौकरी को बाकि क्षेत्रों से सदैव ऊपर रखते हैं।

4. केवल परमेश्वर ही नियत प्राथमिकता है।

बाइबल भी हमें बताती है कि परमेश्वर हमारे जीवन की प्रथम प्राथमिकता है और परमेश्वर ही इस बात को निर्धारित करते हैं कि आपके जीवन की किस परिस्थिति में किस क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए। कुछ निश्चित परिस्थितियों में परमेश्वर ठहराते हैं कि परिवार हमारी सेवकाई से ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। जबकि कई परिस्थितियों में वह सेवकाई को परिवार से ज़्यादा महत्व देते हैं।

ख. जीवन के पाँच सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बीच सम्बन्ध

किसी विशेष क्षेत्र में सारी बातें समान रूप से महत्वपूण नहीं होती हैं। पांचों सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्रों की अपनी सीमाएं होती हैं। लेकिन हर क्षेत्र में कुछ बातें ऐसी भी होती हैं जिन्हें प्राथमिकता मिलना जरूरी है। यह बहुत जटिल प्रतीत होता है, लेकिन जटिल है नहीं, क्योंकि वास्तव में केवल एक ही प्राथमिकता है और स्वयं परमेश्वर है। बाइबल हमें इन क्षेत्रों के बीच में सम्बन्ध के बारे में बताती है।

1. आपके काम या नौकरी में परमेश्वर के अनुसार क्या महत्वपूर्ण है?

आपके काम या नौकरी में क्या महत्वपूर्ण है?

2 थिस्लुनिकियों 3:10। आपको अपने परिवार व अपने आप की देखभाल करने के लिए **कार्य करना चाहिए।**

1 तीमुथियुस 6:7–8। जब आप अपने जीवन निर्वाह करने की वस्तुओं को कमा लेते हैं–अर्थात भोजन व कपड़ों को, तो आपको **सन्तुष्ट हो जाना चाहिए**।

आपके कामों के लिए परमेश्वर किन सीमाओं को निर्धारित करते हैं?

मरकुस 8:36। अपने काम या भविष्य की चिन्ता में ही सारा समय खर्च करने के द्वारा अपने प्राण का नुकसान न उठायें!

नीतिवचन 23:4–5, धनी होने के लिए परिश्रम न करना, अपने समझ का भरोसा छोड़ना। बुद्धि के साथ सीमित करना कि आप अपना कितना समय व शक्ति को अपने कामों में खर्च कर रहे हैं। अपने जीवन के अन्य क्षेत्रों में खर्च करने के लिए भी अपना समय बचा कर रखें। कहीं ऐसा न हो कि आपके जीवन के अन्य क्षेत्रों को नुकसान उठाना पड़े।

परमेश्वर के साथ आपका व्यक्तिगत सम्बन्ध आपके कामों से किस प्रकार जुड़ा है?

लूका 10:38–42। शान्त समय। अपने कामों को शुरू करने से पहले यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत संगति में समय बिताएं।

निर्गमन 23:12; लैव्य 23:3 ;मरकुस 3:4। विश्राम का दिन। अपने कामों से विश्राम लेने के लिए,ताज़गी प्राप्त करने, दूसरे विश्वासियों के साथ परमेश्वर से मिलने, भले काम करके जीवन बचाने के लिए, सप्ताह में कम से कम एक दिन को अलग करें।

भजन संहिता 127:1–2। निर्भरता । बुद्धि, शक्ति,प्रभाव,तथा अपने कामों के परिणाम के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहें।

नीतिवचन 16:3; कुलुस्सियों 3:23। लक्ष्य। अपने सारे कामों को परमेश्वर के लिए करना मनुष्यों को दिखाने के लिए नहीं। तब वह काम कभी असफल नहीं होगा।

प्रेरितों के काम 5:29। प्राथमिकता। अपने कामों में परमेश्वर के प्रति वफादार रहें, चाहे आपको उसके बीच में अपने स्वामी की बुरी मांगों का विरोध ही क्यों न करना पड़े।

आपकी सेवकाई आपकी नौकरी से किस प्रकार जुड़ी है?

कुलुस्सियों 3:22–4:1। सम्मानजनक कामों को करें व अपने अधिकारियों का आदर करें।

1 तीमुथीयुस 3:7। अपने कामों को निपुणता से करें तथा अपने सहकर्मियों के बीच में अच्छे नाम को कमाएं।

मत्ती 6:31–33। अपने कार्यालय में काम करने के तरीके से परमेश्वर के राज्य व धार्मिकता को आगे बढ़ाएं।

2.परमेश्वर आपके परिवार में किस चीज को महत्वपूर्ण बताते हैं?

आपके परिवार में क्या महत्वपूर्ण है?

कुलुस्सियों 3:18–21। (इफिसियों 5:22–6:4)। रिश्तों के नियम। हर एक परिवार परमेश्वर के द्वारा दिये गये नियमों का पालन करें।

परमेश्वर के साथ आपका व्यक्तिगत सम्बन्ध आपके परिवार के साथ कैसे जुड़ा है?

मत्ती 10:37। प्राथमिकता। अपने परिवार में परमेश्वर के लिए अधिकाई से वफादार रहें, यहाँ तक कि अपने परिवार के सबसे प्रिय के प्रति वफादारी से बढ़कर।

आपका काम आपके परिवार से किस प्रकार जुड़ा है?

2 कुरिन्थियों 12:14; 1तीमुथीयुस 5:4,8। अपने परिवार की सारी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए काम करें।

आपकी सेवकाई आपके परिवार से किस प्रकार जुड़ी है?

व्यवस्थाविवरण 6:5–7। अपने परिवार में बाइबल को पढ़ें और उस पर चर्चा करें तथा उससे प्राप्त सत्य को अपने जीवन में इस्तेमाल करें।

इफिसियों 5:22–33। अपने वैवाहिक सम्बन्ध को मज़बूत बनाये और एक आदर्श बनें।

इफिसियों 6:4। अपने बच्चों की परवरिश परमेश्वर के सिद्धान्तों पर आधारित होकर करें, जिसका अर्थ है बाइबल में प्राप्त सच्चाईयों का इस्तेमाल करते हुए।

लूका 2:52; (इफिसियों 6:1–4)। अपने बच्चों के जीवन के सभी क्षेत्रों का विकास करें।

नीतिवचन 23:22–25। अपने बच्चों को आज्ञाकारिता,आदर करना,सच्चाई, बुद्धि व धार्मिकता की शिक्षा दें।

मरकुस 10:29–30। प्राथमिकता। जब कभी यीशु मसीह आपको अल्प या दीर्घ काल के लिए सेवा करने हेतू बुलाएं तो आज्ञा पालन करें।

1 तीमुथीयुस 3:4–5,12। प्राथमिकता। अपने परिवार का ढंग से प्रबन्ध करना, कलीसिया में प्रबन्ध करने या अगुवाई करने से ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

3. परमेश्वर क्या कहते हैं आपकी सेवकाई में क्या महत्वपूर्ण हैं?

आपकी सेवकाई में क्या महत्वपूर्ण है?

मरकुस 10:45। एक दास बनना। जीवन का सही मतलब, यीशु मसीह की खातिर दूसरों की सेवा करना।

परमेश्वर के साथ में आपका व्यक्तिगत सम्बन्ध आपकी सेवकाई से किस प्रकार जुड़ा है?

यूहन्ना 15:5 । प्राथमिकता। अपने व्यक्तिगत सम्बन्ध को यीशु मसीह के साथ विकसित करें। यह आपकी सेवकाई की गतिविधियों से ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। यदि अपका व्यक्तिगत सम्बन्ध प्रभु यीशु से नहीं है, तो कोई वास्तविक या स्थाई फल नहीं होगा।

कलीसिया के भीतर आपकी सेवकाई क्या है?

यूहन्ना 4:23–24। आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करें।

यूहन्ना 13:14–15। लोगों की सेवा करने के द्वारा परमेश्वर करें,खासतौर पर उन कामों में जो कोई न करना चाहे या न कर पाएं

यूहन्ना 13:34–35। रिश्तों को मजबूत बनाएं, क्योंकि यह करना किसी कार्यक्रम के संचालन करने या गतिविधियों में भाग लेने से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

इफिसियों 4:12–16। चेले बनाना और तैयार करना। अपनी कलीसिया के सभी मसीहियों को यीशु मसीह का चेला बनाएं, और उन्हे विभिन्न प्रकार की सेवकाईयो या सेवा के लिए तैयार करें जिससे मसीह की देह की उन्नति हो।

कलीसिया के बाहर आपकी सेवकाई क्या है?

2 कुरिन्थियों 2:14–16;3:2–3। प्रभाव। ऐसे व्यक्ति बने जो अपने आस पास के लोगों पर लगातार प्रभाव डालता हो।

मत्ती 10:32–33। गवाही देना। मसीह के गवाह बने, सुसमाचार प्रचार करें और दूसरों को बाइबल की सच्चाईयों की शिक्षा दें।

याकूब 1:27; 2:15–17। दया। संसार भर में, गरीबों व दरिद्रों पर दया करने वाली सेवकाई के भाग बने।

4. परमेश्वर आपके व्यक्तिगत विकास के लिए किन बातों को महत्वपूर्ण बताते हैं?

आपके व्यक्तिगत विकास के लिए कौन सी बातें महत्वपूर्ण हैं?

मरकुस 8:34–38। आत्म–इनकार करना : अपना इनकार करें, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाएं और मसीह के पीछे हो लें।
मरकुस 12:30–31; यशायाह 43:4। प्रेमः अपने आप और दूसरों के लिए परमेश्वर की प्रेम में बढ़ें।
भजन 101:3; 141:3–4। आंखें, मुंह और हृदय। अपनी आखों, हृदय और मुँह पर नियन्त्रण रखें।

परमेश्वर आपके व्यक्तिगत विकास से किस प्रकार जुड़े हैं?

भजन संहिता 16:2; 73:25। आत्मिक कल्याणः परमेश्वर को छोड़ और किसी बात की लालसा न करें।
1 तीमुथीयुस 4:7–8। आत्मिक कल्याणः भक्ति का अभ्यास करना शारीरिक अभ्यास (सुडौलता, खेल कूद) से ज्यादा महत्वपूर्ण है।
इफिसियों 5:2। भावनात्मक कल्याणः प्रेम में चलें।
भजन संहिता 34:18। भावनात्मक कल्याणः होने दें कि परमेश्वर आपके टूटे मन (चोट, कमजोरी व जीवन में असफलताओं) की देखभाल करें।
नीतिवचन 9:10। बौद्धिक कल्याणः परमेश्वर का ज्ञान व परमेश्वर पर भरोसा रखना बुद्धि और समय का आरम्भ है।
नीतिवचन 3:5–6; (इफिसियों 5:10,17)। बौद्धिक कल्याणः पता करने का प्रयास करें कि परमेश्वर को क्या भाता है।
1 कुरिन्थियों 6:19–20: शारीरिक कल्याणः अपनी देह, स्वास्थ्य, सुडौलता व अपने रूप के द्वारा महिमा का आदर करें।
1 कुरिन्थियों 15:33:सामाजिक कल्याणः बुरी संगति आपके अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है इसलिए ऐसी संगति से बच कर रहें।
1 पतरस 2:11। नैतिक कल्याण : पापमय लालसाओं से बचे रहें क्योंकि वे आत्मा से लड़ाई करती है।
निर्गमन 31:3– दी 5। योग्यताएंः परमेश्वर द्वारा गयी योग्यताओं का विकास करें और रचनात्मक बनें।
इफिसियों 5:15–16 (मत्ती 25:15)। अवसर (चुनौतियां): परमेश्वर द्वारा प्रदान किये गये अवसरों का भरपूर फायदा उठाएं।
रोमियो 5:3–5; (याकूब 1:2–4)। कष्ट व परेशानियांः चरित्र का निर्माण करें।

कैसे आपकी सेवकाई आपके व्यक्तिगत विकास से जुड़ी होती है?

लूका 16:10। जो कोई थोड़ी बातों में विश्वासयोग्य और वफादार होगा वह बहुत बातों में भी विश्वासयोग्य और वफादार बना रहेगा।
2 कुरिन्थियों 10:18; फिलिप्पियों 2:22। आपके निर्धारित कामों की परख होती है। ग्रहण योग्य ठहरने पर आपकी प्रशंसा होगी।

आपके काम किस प्रकार आपके व्यक्तिगत विकास से जुड़ते हैं?

नीतिवचन 12:3। अटल। दुष्ट (भ्रष्ट) कभी स्थिर नहीं रह सकता, लेकिन कोई धर्मी को अपने स्थान से हिला न पाएगा।

आपका परिवार किस प्रकार आपके व्यक्तिगत विकास से जुड़ता है?

नीतिवचन 15:22; 19:20। बुद्धिः अपने परिवार से सलाह लें और उनकी सलाह पर ध्यान दें।

5. परमेश्वर के साथ आपके व्यक्तिगत सम्बन्ध हेतू परमेश्वर किन बातों को महत्वपूर्ण बताते हैं?

यूहन्ना 15:5–8;प्रकाशितवाक्य 2:4–5। मसीह। मसीह को प्रथम स्थान दें और उसमें बने रहें। बाकि बातें टल जाएंगी!
कुलुस्सियों 2:6–7। आज्ञाकारिता। मसीह के रूप में जीयें और मसीह के रूप में बढ़ें।
कुलुस्सियों 3:16; मत्ती 7:24–27। वचन। परमेश्वर के वचनों या प्रकाशनों को बहुतआयत से प्राप्त करें और लगन के साथ उसे अपने जीवन में इस्तेमाल करें।
मत्ती 7:7–8। प्रार्थना। प्रार्थना करना बन्द न करें।
इब्रानियों 10:24–25। संगति। संगति व शिक्षा प्राप्त करने के लिए नियमित तौर पर मिले।
यूहन्ना 15:16। फल लाना। दूसरों के जीवन में मसीह के फल लाने हेतू पहल करें ।

6.जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परमेश्वर सर्वोच्च प्राथमिकता है।

मत्ती 4:10। परमेश्वर की आराधना करें केवल उसी की सेवा करें। उपरोक्त बाइबल की सारी आयते बताती हैं कि परमेश्वर चाहते हैं कि वह आपके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का केन्द्र बिन्दु हो। इस कारण किसी भी प्रकार की प्राथमिकता ने यह निर्धारित नहीं करना चाहिए कि आप किस जगह पर अपना समय व शक्ति खर्च करेंगें। इसके बजाय होने दें कि परमेश्वर निर्धारित करे कि आप किस जगह पर आपकों जीवन देना तथा अपना समय व शक्ति खर्च करनी चाहिए। परमेश्वर पवित्र आत्मा के माध्यम से आपके जीवन में राज्य करना चाहता है।

परमेश्वर आपके जीवन के हर क्षेत्र का सर्वश्रेष्ठ राजा है! आपकी प्राथमिकताओं की सूची ने नहीं, वरन परमेश्वर ने निर्धारित करना चाहिए कि आप किन बातों के लिए अपने प्रतिदिन जीवन, अपने समय और अपनी शक्ति को समर्पित करते हैं।

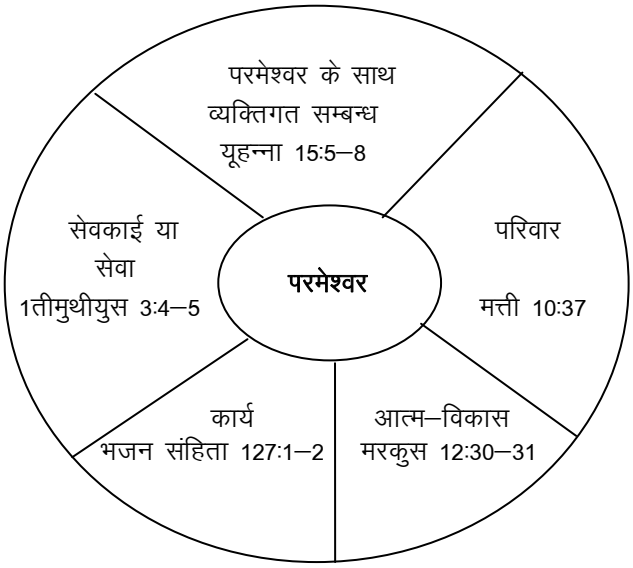

7. हर एक चीज़ का समय होता है।

आप इन पाँच प्राथमिकताओं व जीवन की अन्य आपातकालीन चीजों के बीच में किस प्रकार सन्तुलन बनाये रखते हैं?

- **गतिविधियाँ और समय।**

बाइबल आपकी गतिविधियों और आपके समय के बीच सम्बन्ध को किस प्रकार से देखती है?

पढ़ें। सभोपदेशक 3:1–8;8:5–6

ध्यान दें। हर एक चीज़ का समय होता है।

सुनिश्चित करें कि आप अपने जीवन के सभी महत्पूर्ण क्षेत्रों को समय व ध्यान दे पाएं।

- **परमेश्वर द्वारा दिये गये कार्यो को पूरा करें।**

बाइबल काम पूरा करने के बारे में क्या कहती है?

पढ़ें

- 2 तीमुथियुस 4:7 ;(प्रेरितों 22:10; 20:24)(पौलुस)
- कुलुस्सियों 4:17;(मरकुस13:34; 1 कुरिन्थियों 3:5;इफिसियों 6:13) (मसीही);
- यूहन्ना 17:4;(यीशु)

ध्यान दें

- पौलुस। उसने प्रभु यीशु द्वारा दिये गये कार्यों को पूरा किया।
- मसीही। परमेश्वर ने प्रत्येक मसीही को एक लक्ष्य दिया है। उसने हर एक मसीही को परमेश्वर द्वारा दिये गये काम को पूरा करने के लिए हर रोज़ 24 घण्टे भी दिये हैं। यह काम कैसे किया जा सकता है?
- यीशु । हालांकि यीशु ने सारे बीमारों को चंगा नहीं कर दिया और न ही उसने सारे संसार को सुसमाचार सुना दिया लेकिन जो काम परमेश्वर पिता ने उसे सौंपा था उसने वह काम पूरा कर दिया। यीशु ने इस काम को कैसे किया?

यीशु मसीह के पास हर दिन के काम के लिए कोई सुनिश्चित सूची नहीं थी। यीशु की रीति के अनुसार, वह प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के दिशा निर्देश का इन्तज़ार करते थे तथा उन निर्देशों को पूरा करने के लिए परमेश्वर से शक्ति मांगा

करते थे। परमेश्वर के साथ प्रतिदिन संगति निभाने के द्वारा, यीशु ने परमेश्वर की इच्छा को तथा उन मामलों के बीच अन्तर पहिचानना सीखा जो उस पर दबाव डालते थे और जो वास्तव में ज़रूरी होते थे। इस तरह से उसने आपातकालीन कामों को किनारे कर के महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा किया।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) [प्रतिक्रिया]
	प्रार्थना परमेश्वर के वचनों का प्रतिउत्तर है

जो कुछ आज आपने सीखा उन बातों का प्रतिउत्तर देने के लिए समूह में एक छोटी सी प्रार्थना करें। या समूह को दो दो या तीन लोगों में बाँटकर उन बातों का प्रतिउत्तर देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें जो आज आपने सीखी हैं।

6	**तैयारी** (2 मिनट) [निर्धारित कार्य]
	अगले अध्याय के लिए

(***समूह का अगुवा*** : समूह के सदस्यों को यह तैयारी गृह कार्य के रूप में लिखित तौर पर प्रदान करे या उन्हें इस डाउन लोड करने दें।)

1. सर्मपण: चेले बनाने के लिए समर्पित हों।
किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के जन के साथ 'मसीही प्राथमिकताओं' पर आधारित शिक्षाओं को पढ़ें, सिखाये या प्रचार करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना। प्रेरितों के काम 18:18–21–40 तक रोज एक अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताएं। पसन्दीदा सच्चाई के तरीके का इस्तेमाल करें। लिखें।
3. बाइबल अध्ययन। अगली बाइबल अध्ययन की घर ही में तैयारी करें। इफिसियों 5:22–23। विषय: ''मसीही विवाहकी क्या विशेषताएं होती हैं?'' बाइबल अध्ययन के पांच कदमों वाली पद्धति को इस्तेमाल करें। मुख्य बातों को लिखें।
4. प्रार्थना: किसी व्यक्ति या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं (भजन 5:3)
5. चेलों को बनाने के सम्बन्ध में अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें आराधना के गीत, शिक्षा तथा इस तैयारी की सामग्री को भी शामिल कर सकते हैं।

अध्याय 20

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	बाँटना (20 मिनट) [शान्त समय] प्रेरितों के काम 18:18– 21:40

आगे बढ़कर संक्षेप में ***बताएं*** (या अपने नोट्स में से पढ़ें) कि आपने शान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (प्रेरितों के काम 18:18–21:40) से क्या सीखा।
अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	याद करना (20मिनट) [मसीह में नया जीवन] प्रार्थना: 1यूहन्ना 1:7

क–ध्यान करना

निम्नलिखित याद करने वाले पद को श्वेत/श्याम पट पर लिखें

प्रार्थना 1यूहन्ना 1:7
पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता हैं। 1 यूहन्ना 1:7

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के हवाले लिखें:

1.ज्योति क्या है?

ज्योति एक ऐसा शब्द है जो परमेश्वर की विशेषताओं तथा चरित्र को दर्शाता है, जैसे उसका प्रेम, धार्मिकता, पवित्रता व उसकी कृपा इत्यादि। यीशु मसीह ने परमेश्वर के गुणों को हमारे बीच में प्रगट किया। यीशु मसीह के अनुयायियों को यह आदेश है कि वे ज्योति में चलें, जिसका अर्थ परमेश्वर के गुणों या स्वभाव के अनुसर व्यवहार करना है।

2. आपके विचार से परमेश्वर, मसीह और मसीहियों को 'ज्योति' कहकर क्यों पुकारा गया?

परमेश्वर को ज्योति कहा गया है। (1 यूहन्ना 1:5)
परमेश्वर सारे शारीरिक व आत्मिक जीवन का स्रोत है। उसी ने संसार भर की सारी भौतिक वस्तुओं को रचा है। उसी ने हमें मसीह की मृत्यु व पुनरूत्थान के द्वारा नया आत्मिक जीवन प्रदान किया है।

यीशु मसीह को जगत की ज्योति कहा गया है (यूहन्ना 8:12)।
यीशु मसीह ने ही हम पर प्रगट किया कि परमेश्वर कौन है, विशेष तौर पर परमेश्वर के गुणों व उसकी विशेषताओं को । परमेश्वर की महिमित विशेषताएं, इस संसार के अन्दर यीशु मसीह के द्वारा अधिकाई से चमकती हैं। यीशु अज्ञानियों को ज्ञान प्रदान करता; उसने पापियों के सामने सत्य प्रगट किया; तथा वह मूर्खों को बुद्धि प्रदान करता। वह अशुद्धों को शुद्ध करता; दुष्टों को धार्मिकता प्रदान करता और नफरत से भरे लोगों पर अपना प्रेम प्रगट करता है। वह दुःखी लोगों को आनन्द की भरपूरी प्रदान करता; वह भयभीत लोगों को प्रोत्साहित करता तथा वह त्यागे हुओं और अकेलापन महसूस करने वालों को अपनी उपस्थिति का एहसास प्रदान करता है।

यीशु , मसीहियों को जगत की ज्योति कहते हैं (मत्ती 5:14)
मसीही लोग अपने स्वभाव से कभी ज्योति नहीं हैं, परन्तु वे इस संसार में परमेश्वर के गुणों को प्रगट करते हैं, विशेषकर उसकी पवित्रता, धार्मिकता, तथा प्रेम (इफिसियों 5:8)

3.' मसीही संगति' का क्या अर्थ है?

मसीही संगति का अर्थ घनिष्ठ सम्बन्ध,सहभागिता तथा साझेदारी है।
मसीही संगति का अर्थ परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के (1 यूहन्ना 1:3; 1 कुरिन्थियों 1:9; 2 कुरिन्थियों 13:14), जगत में रहने वाले दूसरे मसीहियों के (1यूहन्ना 1:7) साथ घनिष्ठ सम्बन्ध, सहभागिता तथा साझेदारी करना है। मसीह के साथ संगति करने का अर्थ मसीह की देह के साथ संगति करना है, जो मसीही समाज या कलीसिया है (1कुरिन्थियों 12:12–13)। मसीही जन अपने आप को बाइबल से शिक्षा पाने व प्रार्थना करने,एक दूसरे के साथ संगति करने तथा ज़रूरत पड़ने पर एक दूसरे की सहायता करने के लिए, तथा एक साथ रोटी तोड़ने व दूसरों को सुसमाचार सुनाने के लिए समर्पित करते हैं(प्रेरितों 2:42–47)। मसीही संगति में मात्र घनिष्ठ संगति ही शामिल नहीं है, वरन इसका अर्थ एक तरफ दूसरों के साथ उनकी आशिषों में भागीदार होना (गलातियों 6:9–10) व दूसरी तरफ उनके दुःखों में शामिल होना है(फिलिप्पियों 3:10)। मसीही संगति में, एक दूसरे के साथ मज़बूत सम्बन्ध का एहसास होना तथा एक दूसरे को भली बातों द्वारा सहयोग प्रदान करना भी शामिल है(2 कुरिन्थियों 8:4)।

मसीही संगति तथा साझेदारी उस क्षण प्रारम्भ हो जाती है जिस क्षण आप सुसमाचार सुनते तथा उस पर विश्वास करते हैं।
मसीही संगति तथा साझेदारी उस क्षण प्रारम्भ हो जाती है जिस क्षण आप सुसमाचार सुनते तथा उस पर विश्वास करते हैं, कि यीशु मसीह सम्पूर्ण मानव जाति के पापों के लिए मरे तथा सम्पूर्ण मानवजाति को बचाने के लिए मुर्दो में से ज़िन्दा हो गय` (फिलिप्पियों1:5)। मसीही लोग अन्यजातियों के साथ असमान जुए में नहीं जुतते (2 कुरिन्थियों 6:14)। मसीही लोग सदैव ज्योति में होकर चलते हैं क्योंकि बिना ज्योंति के संगति करना असम्भव है।

4. यीशु मसीह का लहू का क्या अर्थ है?

'यीशु मसीह का लह' कोई अद्भुत शक्ति वाली जादूई छड़ी नहीं है। मसीही विश्वास या मत में जादू टोने के लिए कोई स्थान नहीं है। यीशु मसीह के लहू का तात्पर्य उस लहू से है जो क्रूस पर बहाया गया था। यह वाक्य यीशु मसीह की मृत्यु तथा उस मृत्यु से विश्वासियों को होने वाले लाभ को दर्शाने वाला प्रतीक है। ज्योति में जीवन व्यतीत करने वाले मसीही अपने पापों का अंगीकार करके अपने पापों से क्षमा प्राप्त करते हैं, क्योंकि यीशु मसीह ने पहले ही उनके पापों के दण्ड को अपने ऊपर ले लिया है।

ख. याद करना व पुनरावलोकन करना

1. किसी खाली कार्ड पर या कॉपी के किसी पेज पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2. ठीक तरीके से बाइबल की आयत को ***याद करें।*** संगति : 1यूहन्ना 1:7
3. ***पुनरावलोकन*** / दो–दो के समूह में बंट जाएं तथा एक दूसरे से पिछली याद की गयी बाइबल की आयत को पूछें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट) [सम्बन्ध] मसीही विवाह :इफिसियों 5:22–23

एक साथ मिलकर बाइबल अध्ययन के पाचं कदम वाले तरीके का इस्तेमाल करें तथा 1 थिस्लुनिकियों 4:1–8 का अध्ययन करें।

कदम 1. पढें। **परमेश्वर का वचन**
पढ़ें / आइये हम इफिसियों 5:22–23 को एक साथ **मिलकर पढ़ें**।
आइये हम बारी बारी करके तब तक एक एक आयत पढ़े जब तक निर्धारित आयतें खत्म न हो जाएं।

कदम 2. खोज। पुनरावलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद की कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद की कौन सी सच्चाई ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लिखें। एक या दो बातों को लिखें जो आपकी समझ में आयी हो। उन बातों के बारे में विचार करें तथा उन विचारों को अपनी कॉपी में लिखें।
बाँटें। (समूह के लोगों को दो मिनट सोचने व लिखने का समय प्रदान करने के बाद, अपने विचारों को व्यक्त करें। आइये हम एक दूसरे के साथ उन विचारों को बांटे जो हमने सीखा या समझा है।
(नीचे कुछ लोगों द्वारा अपने अनुभवों को बांटने के उदाहरणों को दिया है। याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य भिन्न भिन्न बातों को बांटेंगे, यह ज़रूरी नहीं है कि उनके भी अनुभव समान हों।)

5:22,25

खोज 1. मसीही विवाह लगाता यीशु मसीह की सच्चाई का गवाह है।

'पतियों, जिस प्रकार से मसीह ने कलीसिया को प्रेम किया, तुम भी अपनी अपनी पत्नियों से प्रेम करो...'',''हे पत्नियों, अपने पतियों के अधीन रहो।'' विवाह निश्चय ही परमेश्वर की दृष्टि में अति आदरणीय रिश्ता है क्योंकि उन्होंने मसीह पति पत्नी की तुलना मसीह व विश्वासियों के रिश्ते के साथ में की है। मसीह व कलीसिया हर एक मसीही विवाह के लिए आदर्श हैं। मसीही विवाह सदैव संसार के लिए एक प्रत्यक्ष गवाही है! मसीही विवाह के द्वारा भी परमेश्वर को महिमा मिलनी चाहिए।

5:31

खोज 2. मसीही विवाह, में अभिभवावकों से आपके रिश्ते बदल जाते हैं।

'इस कारण मनुष्य माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और दोनों एक तन होंगे।' हर समाज में विवाह एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है, क्योंकि विवाह के दौरान दो युवा जन अपने अपने माता पिता को छोड़कर एक अलग परिवार की शुरूआत करते हैं! विवाह के साथ में आप अपने माता पिता के साथ विशेष सम्बन्ध खत्म हो जाता है और आपके जीवन साथी के साथ एक महत्वपूर्ण रिश्ता प्रारम्भ हो जाता है।

कदम 3. प्रश्न वर्णन

ध्यान दें: इस खण्ड के आधार पर आप समूह से कौन सा प्रश्न पूछना चाहेंगे?
आइये हम इफिसियों 5:22 में दी गयी सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जिनके बारे में हम अभी तक नहीं जानते हैं।
लिखें। अपने प्रश्नों को सम्भव स्पष्ट स्वरूप प्रदान करें। उसके पश्चात अपने प्रश्नों को अपनी कॉपी में लिखें।
बाँटें (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट तक विचार विमर्श करने करने तथा उन्हें लिखने के बाद, सभी लोगों को अपने प्रश्न पूछने का अवसर प्रदान करें।
चर्चा करें। (फिर, उनमें से कुछ प्रश्नों को चुनकर, अपने समूह में चर्चा करते हुए उन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें)
(नीचे कुछ प्रश्नों व चर्चा करने के बाद उत्तरों को उदाहरण के तौर पर दिया गया है जिन्हें विद्यार्थी पूछ सकते हैं)

प्रश्न1. मसीही विवाह की विशेष विशेषताएं क्या होती हैं?
ध्यान दें

1. विवाह परमेश्वर की योजना व संस्थापन है (इफिसियों 5:31)।

सृष्टि के समय, परमेश्वर ने पुरूष की एक जीवन साथी की ज़रूरत को देखा और उसने उसके लिए एक स्त्री की रचना करने की पहल की (उत्पत्ति 2:18–24)। इसके अलावा परमेश्वर ने विवाह के संस्थान को बनाने की पहल भी की। पुरूष व स्त्री के पाप करने से पहले ही परमेश्वर ने विशेष विशेषताओं के साथ विवाह के रिश्ते को स्थापित कर दिया था। विवाह के समय पर स्त्री व पुरूष अपने माता पिता के घर को छोड़ देते हैं। विवाह के सम्बन्ध के दौरान स्त्री व पुरूष एक इकाई बन जाते हैं तथा जीवन भर एक साथ रहते हैं। उनके विवाह के बाद,उन्हें विवाह के दायरे में यौन सम्बन्ध बनाने का आनन्द अवसर प्राप्त होता है। (उत्पत्ति 2:24)

परमेश्वर ने न केवल विवाह के सम्बन्ध को संस्थापित किया वरन मनुष्य जाति के पाप में गिरने के बाद भी विवाह को बनाये रखने का प्रबन्ध किया। यीशु मसीह (मत्ती 19:1–6) और प्रेरित पौलुस (इफिसियो 5:31) दोनो ने इस बात पर

ज़ोर दिया कि विवाह परमेश्वर की ओर तैयार किया गया संस्थान है इसलिए उस सस्थान के नियमों का पालन करना बहुत ज़रूरी है।

पुराने नियम के जमाने में, विवाह परमेश्वर व उसके निज लोगों अर्थात इस्राएल के बीच रिश्ते को प्रगट करता है (यिर्मयाह 3)। नये नियम के ज़माने में, विवाह यीशु मसीह व उसके लोगों के बीच अर्थात कलीसिया के बीच रिश्ते को प्रगट करता है(इफिसियों 5)। हालाकिं इस संसार की रीति ने विवाह के मूल संस्थान को बदल दिया है, लेकिन परमेश्वर सम्पूर्ण मानव जाति से चाहते हैं कि वे परमेश्वर के मूल सस्थान की ओर वापस लौटें।

(2) विवाह तय या स्वेच्छा से किया जा सकता है (उत्पत्ति 24:3–4, 67; उत्पत्ति 29:17–20)।
पाश्चात्य देशों में पुरूष जिस स्त्री से प्रेम करते हैं केवल उन्हीं से विवाह करते हैं। पूर्वी देशों में पुरूष वर्ग जिस स्त्री को ब्याह लाता है उसे प्रेम करता है। पश्चिमी देशों में लोग वैवाहिक जीवन की शुरूआत भावनात्मक उंमग के साथ प्रारम्भ करते है, तथा बाद में उनके बीच समर्पण किये जाते हैं। पूर्वी देश के लोग एक समर्पण के साथ जीवन प्रारम्भ करते हैं और बढ़े आनन्द के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। अगर परमेश्वर इन विवाहों का केन्द्र बिन्दू हो तो दोनों ही प्रकार के विवाह कामयाब होते हैं।

3. विवाह एकपत्नीक है(इफिसियों 5:33)
पुराने नियम का इतिहास इस बात का महत्वपूर्ण लेखा रखता है कि कुछ प्रमुख लोगों की एक से ज्यादा पत्नियां थीं। एक से अधिक पत्नियों की वजह से पुराने नियम में केवल जलन,भेदभाव व मूर्तिपूजा की ही बढ़ौतरी हुई(राजा सुलैमान, 1 राजा 11:1–11)

पुराने नियम व नये नियम की शिक्षा हमें स्पष्ट रूप में यह सिखाती है कि बहु–पत्निवाद परमेश्वर की योजना, आज्ञा और संस्थापन के बिल्कुल विरूद्ध था। परमेश्वर ने उत्पत्ति 2:24 में प्रगट की गयी अपनी योजना' पुरूष अपनी पत्नी के साथ जुड़ा रहेगा' को कभी नहीं बदला। परमेश्वर ने बहुवचन का इस्तेमाल करते हुए यह नहीं कहा कि पुरूष अपनी पत्नियों के साथ जुड़ा रहेगा वरन उसन एकवचन का इस्तेमाल करते हुए कहा कि पुरूष अपनी पत्नी के साथ जुड़ा रहेगा।

यीशु ने इस आदेश को मत्ती 19:5 में दोहराया कि, ''पति और पत्नी दोनों एक देह होगें।'उसने कभी यह नहीं कहा कि एक पति बहुत सी पत्नियों के साथ में एक देह होगा। यीशु मसीह ने विवाह के बाहर किसी भी प्रकार के रिश्ते का बहिष्कार किया खास तौर पर वैवाहिक जीवन के यौन सम्बन्धों से बाहर।

और पौलुस ने विवाह के सम्बन्ध में इस आदेश को दोहराते हुए कहा कि पति अपनी पत्नी को प्रेम करे (इफिसियों 5:33)। यह क्रिया ''प्रेम करें' एक लगातार वर्तमान काल में किया जाने वाला अनिवार्य काम है। यह किसी अपवाद के लिए किसी स्थान को नहीं छोड़ता।

परमेश्वर बहुविवाह का बहिष्कार करता है। वह रखैलों को रखने से मना करता है। वह व्यभिचार का विरोध करता है। वह दूसरी औरतों के साथ गुलछर्रे उड़ाने से भी मना करता है।

4. विवाह सम्पूर्ण जीवन काल के लिए है(मत्ती 19:5–6)।
पुराने नियम में मूसा ने लोगों के ' ह्रदय की कठोरता की वजह से' उन्हें तलाक की अनुमति प्रदान की। लेकिन मूसा तलाक से कभी भी सहमत नहीं था। उसने केवल उस कुरिती को नियमित किया जो पहले से ही इस्राएल के आस पास के देशों में सक्रिय थी और जा इस्राएल को भी भेद चुकी थी। यीशु ने स्पष्ट किया कि परमेश्वर ने प्रारम्भ में तलाक की योजना को नहीं बनाया था। उसकी आज्ञा है कि ''जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य कभी अलग न करे''(मत्ती 19:1–6)! परमेश्वर तलाक से नफरत करता है (मलाकी 2:14–16)।

बाइबल केवल दो परिस्थितियों में ही तलाक का समर्थन करती है। पहला, जहां पर वैवाहिक जीवन में विश्वासयोग्यता का अभाव हो, जैसे व्यभिचार या लड़ाई झगड़े की बहुतायत, तो उस दशा में तलाक को स्वीकार किया जा सकता है। दूसरा, गैर मसीही जोड़े में, जहाँ पर एक गैर मसीही जोड़े में से एक पक्ष मसीही बन जाता है, और गैर मसीही पक्ष मसीह पक्ष के साथ जीवन व्यतीत करने से इनकार कर देता है, इस दशा में तलाक को स्वीकार किया जा सकता ह ै(1

कुरिन्थियों 7:12–16)। लेकिन परमेश्वर और उसके लोगों के बीच में रिश्ता एक वाचा है इसलिए मसीही वैवाहिक रिश्ता हमेशा जीवन भर के लिए विश्वासयोग्य रिश्ता बना रहना चाहिए।

5. विवाह अस्थायी व केवल इस ज़मीनी जीवन के लिए ही मान्य है (मत्ती 22: 30)

यीशु ने कहा कि उसके दूसरे आगमन के समय जब जी उठेगें, तो कोई ब्याह शादी न होगी। परन्तु वे स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों के नाई होंगे(मत्ती 22:30)। अतः विवाह केवल इस धरती पर रहने वाले लोगों के लिए ही परमेश्वर की योजना है, स्वर्ग या आने वाली धरती के लिए नहीं। इस संसार में विवाह का अभिप्राय मसीह के गुणों को प्रगट करना, मसीहीयों के चरित्र को प्रशिक्षित करना तथा सन्तान उत्पन्न करना है।

(6) विवाह सामान्य है, लेकिन सभी लोगों के लिए उचित नहीं है। (मत्ती 19:10–12)

बाइबल में विवाह को मसीहियों व मसीही अगुवों के लिए सामान्य माना गया है (1 कुरिन्थियों 9:5; 1 तीमुथियुस 3:2) लेकिन यीशु मसीह (मत्ती 19:10–12) और पौलुस ने (1 कुरिन्थियों 7:32–35) में अविवाहितों से कुछ विशेष बात कही। परमेश्वर ने बहुत से लोगों को अपने जीवन में कुछ समय या सम्पूर्ण जीवन काल में अविवाहित रहने के लिए बुलाया है ताकि वे अपने जीवन में परमेश्वर के विशेष कामों को अन्ज़ाम दे सकें। परमेश्वर चाहते हैं कि ये लोग सम्पूर्ण समर्पण के साथ उसकी सेवा करें। परमेश्वर अविवाहितों से एक विशेष प्रतिज्ञा करते हैं कि उनकी आत्मिक सन्तानें विवाहित जोड़ों की शारीरिक सन्तानों से कहीं अधिक होगीं। उसने वायदा किया है कि वे परमेश्वर के राज्यों के कामों में अति फलवन्त होंगे (यशायाह 54:1–5)!

अविवाहित रहना एक वरदान है (1कुरिन्थियों 7:7,32–35; मत्ती 19:10–12), परन्तु इसे दूसरों के लिये कोई अनिवार्य नियम नहीं बनाना चाहिए (कलीसिया के लोगों के साथ जबरदास्ती नहीं करनी चाहिए)।

(7) विवाह सब लोगों के सामने सार्वजनिक तौर पर किया जाना चाहिए(मत्ती 22:9–11)

परमेश्वर ने विवाह के तीन आवश्यक तत्वों का र्निमाण किया है(उत्पत्ति 2:24)।
पहला, पति और पत्नी अपने माता पिता के घर को छोड़ दें। उन्हें भावनात्मक तौर पर अपने माता पिता से नहीं वरन अपने जीवन साथी के साथ एक होकर रहना है। उन्हें आर्थिक तौर पर अपने माता पिता पर निर्भर न होकर अपने पैरों पर खड़े होना और अपने परिवार की जिम्मेदारियों को निभाना है। उन्हें अब अपने माता पिता के चलाये नहीं चलना है, वरन जिस अधिकार को परमेश्वर ने उनके जीवन में नियुक्त किया है, उसके अधीन होना है। यदि सम्भव हो तो वे विवाह के उपरान्त अपने माता पिता के साथ न रहें बल्कि अलग रहकर अपने परिवार को मज़बूत बनाएं।

दूसरा, पति व पत्नी एक दूसरे के साथ मजबूती से बने रहें। उन्होंने प्रतिज्ञा की है कि वे अपने सम्पूर्ण जीवन काल में एक दूसरे के साथ में बने रहेंगे।

तीसरा, वे दोनों एक तन हो जाते हैं। उनकी शारीरिक एकता उनकी आत्मिक, भावनात्मक व सामाजिक एकता की पराकाष्टा होती है।

एक युगल अपने विवाह की योजना की घोषणा करने के साथ ही अपने माता पिता से अलग होने के विचार को व्यक्त कर देता है। उसके पश्चात वह होने वाले अपने विवाह समारोह की तैयारी करना शुरू कर देते हैं। उनके विवाह समारोह पर वे निश्चित तौर पर अपने माता पिता के घर को छोड़ देते हैं। विवाह समारोह पर, दुल्हा व दुल्हन के माता पिता, भाई बहन, रिश्तेदार तथा अन्य लोग इस बात के गवाह होते हैं कि इन दोनों से अपने सम्पूर्ण जीवन काल के लिए एक दूसरे से विवाह करने का, एक दूसरे को प्रेम करने का, एक दूसरे के प्रति विश्वासयोग्य होने का तथा अपने जीवन की सारी ही परिस्थितियों में एक दूसरे की सहायता करने फैसला किया है।

बाइबल में, विवाह कभी भी एकान्त में या छुप कर नहीं किया गया। यह सदैव ऐसा समारोह रहा है जिसमें दुल्हे व दुल्हन दोनों के परिवार ही एक महत्वपूर्ण भूमिका को निभाते हैं। पुराने ज़माने में, मग्नी या प्रण के समय पर जीवन साथी की पसन्द का खास ध्यान रखा जाना (उत्पत्ति 21:21),कई बार दुल्हे के परिवार को आर्थिक भेंट दिया जाना (उत्पत्ति 29:18,34:12) तथा दुल्हा दुल्हन को भेटें दिया जाना (उत्पत्ति 24:59,61; 1 राजा 9:16)शामिल हुआ करता था। हालांकि बाइबल में इस प्रकार की भेंटों की अनिवार्यता को नहीं दर्शाया गया है।

विवाह एक सार्वजनिक समारोह था। जिसमें कुछ निम्नलिखित तत्व शामिल हुआ करते थेः दुल्हा व दुल्हन विवाह के वस्त्र पहनते थे(भजन 45:13–14); दुल्हा व दुल्हन के सखा व सखी उनके साथ हुआ करते थे(भजन 45:14, यूहन्ना 3:29); लोग दुल्हे के साथ दुल्हन को ब्याहने के लिए उसके विवाह की प्रक्रिया से होकर गुजरते थे (मत्ती 25:1–13); विवाह का समारोह होता था; कई बार वह समारोह पूरे सप्ताह भर चलता था (मत्ती 22:1–14; यूहन्ना 2:1–10 ; न्यायियों 14:17)। विवाह समारोह का सबसे सुन्दर व महत्वपूर्ण भाग दुल्हा दुल्हन का एक दूसरे के साथ प्रतिज्ञा करना होता था जिसका गवाह स्वयं परमेश्वर होता था(मलाकी 2:14; नीतिवचन 2:17; यहेजकेल 16:8)! विवाह की रस्मों के बाद ही विवाह सम्पन्न होता था(उत्पत्ति 29: 21–23;व्यवस्थाविवरण 22:13–21)।

(8) मसीही विवाह को यीशु मसीह व कलीसिया के बीच रिश्ते के आधार पर देखा जाता है (इफिसियों 5:22–23)।

जिस प्रकार से मसीह कलीसिया का सिर है उसी प्रकार बाइबल में पति को पत्नी का सिर होने और जिस प्रकार से मसीह ने कलीसिया को प्रेम किया है उसी प्रकार अपनी पत्नी को प्रेम करने की आज्ञा दी गयी है। बाइबल यह भी कहती है कि जिस प्रकार कलीसिया मसीह के अधीन और उसका आदर करती है उसी प्रकार पत्नी भी अपने पति के अधीन रहे और उसका आदर करे। मसीही विवाह, कलीसिया और मसीह के रिश्ते को प्रदर्शित करता है (इफिसियों 5:22–23)।
अतः मसीही विवाह द्वारा संसार में यीशु मसीह की घोषणा होती है। एक अच्छे मसीही विवाह को देखने के द्वारा, संसार के लोग मसीह और मसीहियत के बारे में अधिकाई से सीखने पाते हैं। वे केवल उनके लिए मसीह के प्रेम के बारे में ही नहीं सुनते बल्कि वे मसीही विवाह में उस प्रेम को प्रगट रूप में देख पाते हैं। वे न केवल उनके प्रति बढ़ते हुए परमेश्वर के आनन्द के बारे में सुनते हैं बल्कि मसीही रिश्तों के बीच में उस आनन्द को प्रत्यक्ष रूप में देख पाते हैं। मसीही वैवाहिक सम्बन्ध मसीह के साथ सम्बन्ध के आकर्षण का शक्तिशाली साक्षी है। प्रत्येक मसीही विवाहित परिवार एक मिश्नरी की भूमिका निभा सकता है खास तौर पर जब कोई मसीही घर लोगों के लिए खुला हो और लोग ''वहां आकर देख सकें'' कि मसीही परिवार किस तरह से कार्य करता है।

5:22–25

प्रश्न 2. एक मसीही पति व मसीह पत्नी की परमेश्वर द्वारा दी गयी ज़िम्मेदारियां क्या हैं?

ध्यान दें। परमेश्वर ने प्रत्येक स्त्री व पुरूष को बनाया है। परमेश्वर ने स्त्री की रचना के साथ ही विवाह की योजना को तैयार कर दिया था (उत्पत्ति 2:18–24)। परमेश्वर को पति और पत्नी के बीच आपसी ज़िम्मेदारियों को भी निर्धारित करने का भी अधिकार है। वह जानता है कि उसकी रचना किस प्रकार बेहतर ढंग से काम कर सकती है। यदि पति व पत्नी परमेश्वर द्वारा ठहरायी ज़िम्मेदारियों का पालन करते हैं , तभी उनका विवाह सुन्दर व अद्भुत बन सकता है।

परमेश्वर एक दूसरे की सेवा निभाने के लिए पति व पत्नी को अधिकार प्रदान करता है। परमेश्वर ने पति व पत्नी को अलग तरीके से रचा है और व चाहता है कि वे एक दूसरे की सेवा करने के लिए परमेश्वर द्वारा दी गयी ज़िम्मेदारियों व अधिकारों का अलग अलग तरीके से इस्तेमाल करें। वह चाहता है कि पति विशेष तौर पर आपसी सम्बन्धों के बीच में पहल करके अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करे। और वह चाहता है कि पत्नी अपने पति को विशेष तौर पर गर्म व मज़बूत रिश्तों में आमन्त्रित करने के द्वारा अपनी सेवा को प्रगट करें।

परमेश्वर द्वारा मसीही पति की उसकी पत्नी के प्रति सौंपी गयी ज़िम्मेदारी उसे प्रेम करना व उसकी अगुवाई करना है।
मसीही पति को अपनी पत्नी को प्रेम करने के द्वारा उसकी सेवा करनी चाहिए। उसका अपनी पत्नी को प्रेम करना ठीक उस प्रकार है जिस प्रकार यीशु ने अपने लोगों अर्थात कलीसिया को प्रेम किया। उसे प्रेम करने का मतलब किसी लालच के बिना उसमें रूची दिखाना, पूरे मन से उसे स्वीकार करना और उसे उसकी सम्पूर्ण क्षमता में तक पहुंचने में स्वीकार करना है। प्रेम का अर्थ श्रेष्ठतम निःस्वार्थ भावना रखना और अपने आप केन्द्र बिन्दु बनने से इनकार करना है। प्रेम आत्म बलिदान चढ़ाने वाली सेवा है। प्रेम का अर्थ उसकी परवाह और उसका ख्याल करना है। प्रेम का अर्थ उसके साथ अच्छे और बुरे दिनों में तथा स्वास्थ्य या बिमारी में रहना है।

प्रेम को बड़ी सुन्दरता के साथ 1 कुरिन्थियों 13:4–8 में परिभाषित किया गया है। धीरजवन्त प्रेम इन्तजार कर सकता है। प्रेम उस पर अपनी भलाई को प्रगट करने के लिए जबरदास्ती नहीं करता, बल्कि अपनी भलाई प्रगट करने के लिए उचित समय का इन्तज़ार करता है। कृपालु प्रेम सहायता करता है और वह उसकी सेवा करने का एक भी अवसर हाथ

से नहीं जाने देता। जलन न रखने वाला प्रेम उदारता के साथ उसकी सराहना करता और उसको श्रेय देता तथा उसका आदर करता है जिसके वह योग्य भी है। जो प्रेम घमण्ड नहीं करता वह विनम्र होता है और अपनी उपलब्धियों पर फूलता नहीं और न ही अपनी योग्याओं से उसे आकर्षित करने का प्रयास करता है। जो प्रेम फूलता नहीं वह प्रेम उसके साथ सम्बन्ध रखने के दौरान अपनी कमजोरी या ताकत के प्रति दीन व नम्र रहता है। प्रेम जो निरसता के साथ व्यवहार नहीं करता वह उसके साथ उचित व सोचसमझ कर व्यवहार करता है। अपनी ही इच्छा पूरी न करने वाला प्रेम निःस्वार्थ भावना के साथ खुद से बढ़कर उसकी चिन्ता करता है। आसानी से क्रोध न करने वाला प्रेम नम्रता के साथ उसके द्वारा उत्पन्न होने वाली कठिनाईयों व चोटों को सह लेता है।

मसीही पति को अपनी पत्नी की अगुवाई करने के द्वारा उसके प्रति अपनी सेवा को निभाना चाहिए। पत्नी की अगुवाई करने का अर्थ उस तरीके से अगुवाई करना है जिस प्रकार मसीह अपनी कलीसिया की अगुवाई करता है। पति ने अपनी पत्नी की अगुवाई इस प्रकार करनी चाहिए जिस प्रकार एक चरवाहा अपनी भेड़ों की चरवाही करता हैः उसने उसे खिलाना चाहिए, उसकी देखभाल करनी चाहिए, उसकी सुरक्षा करना और हर परिस्थिति को पार करने में उसकी सहायता करनी चाहिए। जिस प्रकार से एक भण्डारी अपने भण्डार का प्रबन्ध करता है उसी प्रकार पति को अपनी पत्नी की अगुवाई करनी चाहिएः उसे उसकी सम्पत्ति, गतिविधियों व उसकी रूची की देखभाल करनी चाहिए, और उसकी परमेश्वर के मार्गों में अगुवाई करनी चाहिए। पति को एक सेवक के समान उसकी सेवा करनी चाहिएः उसे उस क्षेत्र में उसकी सहायता करनी चाहिए जहां उसे मदद की सबसे अधिक जरूरत हो।

परमेश्वर द्वारा मसीही पत्नी की उसके पति के प्रति सौंपी गयी ज़िम्मेदारी उसे प्रेम करना व उसकी सहायता करना है। मसीही पत्नी को अपने पति को प्रेम करने के द्वारा उसकी सेवा करनी चाहिए। बाइबल हमें शिक्षा देती है कि पत्नी को अपने पति व बच्चों से प्रीति रखने वाला, संयमी व पवित्र, घर का कारबार करने वाली, भली और अपने पति के आधीन रहने वाली होना चाहिए ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए(तीतुस 2:4–5)। प्रेम का उसके साथ जीवन की अच्छी या बुरी परिस्थिति में, स्वास्थ्य में या बीमारी में रहना है।

मसीही पत्नी को अपने पति की सहायता करने के द्वारा उसकी सेवा करनी चाहिए। बाइबल हमें बताती है कि मसीही पत्नी को अपने पति के आधीन रहना है (इफिसियों 5:22–24; 1 पतरस 3:1–6) अपने पति का आदर करना है (इफिसियों 5:33)। वह अपने पति की अगुवाई के आधीन होकर व उसका आदर करने के द्वारा अपने पति की सेवा करती है। 'आधीन' होने का अर्थ गुलाम बनना नहीं वरन एक सेवक के समान उसके अधीन होना है (उत्पत्ति 2:18)। इसका अर्थ है कि वह स्वेच्छा से अपने पति के दल का एक उत्तम सदस्य है। उसके दल का सदस्य होने के नाते, वह अपने पति को सकारात्मक व सम्भव सुझाव , विचार, सहायता, सहयोग प्रदान करती है। वह अपने व्यक्तिगत जीवन, विवाह, उनके परिवार व उनके समाज से सम्बन्धित सारे महतवपूर्ण मुद्दों पर विचार विमर्श करती है। वह अपने पति के साथ मिलकर अच्छे निर्णय लेती है और पति के साथ मिलकर उने निर्णयों के परिणामों पर चर्चा करती है। यदि किसी बात पर वे सहमत नहीं हो पा रहे हैं तो ही उसे अपने पति को अन्तिम निर्णय लेने देना व उस निर्णय की परिणाम की जिम्मेदारी उठाने देना चाहिए। पत्नी की पति के प्रति अधीनता परमेश्वर की मांग पर आधारित है इसलिए जब पति गलत कामों में पत्नी की अधीनता की अपेक्षा करे, तो वह कोमलता के साथ इनकार कर सकती है (प्रेरितों के काम 5:29)।

पति का आदर करने का अर्थ अपने विचारों को बड़े सम्मान व तमीज़ के साथ सामने रखना तथा परमेश्वर को अपने तरीके से काम करने की अनुमति प्रदान करना है। इसका अर्थ पति की सलाह को ध्यान पूर्वक सुनना है। इसका अर्थ है कि वह अपने पति को अपनी सारी योजना में शामिल करे तथा अपनी योजना की प्रगति के बारे में उसे बताए। इसका अर्थ बिना पति द्वारा सहायता मांगे वह उसकी सेवा करे। इसका अर्थ धीरज के साथ उसकी बातों को सुनना और उसकी समस्याओं व विचारों को समझना है।

जब कोई पति उस तरीके से अपनी पत्नी की अगुवाई करना प्रारम्भ कर देता है जैसे मसीह अपनी कलीसिया की अगुवाई करता है तो पत्नी के लिए अपने पति का आदर करना व परिवार में उसकी अगुवाई के प्रति अधीन होने में कोई दिक्कत नहीं होती। बच्चों के लिए सबसे उत्तम स्थान जहां वे प्रेम और आदर करना व अगुवाई तथा अधीनता सीख सकते हैं उनके मसीही अभिभावकों का दैनिक रिश्ता होता है।

5:26–27

प्रश्न 3. उसे वचन के जल से पवित्र और शुद्ध करने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। मसीह ने हमेशा के लिए एक ही बार में कलीसिया को पूर्णतः पवित्र कर दिया है, हमेशा के लिए शुद्ध कर देने का अर्थ है कि उसने अपने वचनों के जल से शुद्ध कर दिया है। यह पानी के बपतिस्में का प्रतीक है , वचनों के अनुसार (सुसमाचार की उदघोषणा के अनुसार, उदाहरण इफिसियों 6:17 ; 1 पतरस 1:22–23) जो अप्रत्यक्ष पवित्र आत्मा के बपतिस्में का प्रत्यक्ष चिन्ह व मुहर है।

मसीह लगातार अपने वचनों द्वारा आज भी मसीहियों को शुद्ध करता है जो पवित्र आत्मा के द्वारा लोगों के जीवन भर काम करता है। उसका लक्ष्य मसीहियों को निष्कलंक व बेदाग कलीसिया के रूप में प्रस्तुत करना है। इस तरह से मसीह कलीसिया को मेम्ने के दूसरे आगमन पर उसके विवाह के लिए दुल्हन के रूप में तैयार करता है। लेकिन कलीसिया भी खुद को एक मेम्ने की दुल्हन के रूप में तैयार कर रही है (प्रकाशितवाक्य 19:7)। मेम्ने व उसकी दुल्हन (कलीसिया) के विवाह के समय वे दोनों हमेशा के लिए प्रेम की संगति व नयी धरती के सिद्धता के लिए एक हो जाएंगे।

5:32

प्रश्न 4. यह गुप्त रहस्य क्या है?

ध्यान दें। यह रहस्य पति व पत्नी के बीच के रिश्ते के बारे में बात नहीं करता–विवाह कोई रहस्य नहीं है। यहां पर विवाह की तुलना मसीह और कलीसिया के मिलन से की गयी है। मसीह द्वारा उद्धार का कार्य उन पापी व अयोग्य लोगों के लिए किया गया है जो उसकी कलीसिया बन गये और जिनमें पवित्र आत्मा द्वारा वह इतनी धनिष्ठता से घर करता है जिसे धरती में किसी भी विचारधारा के तहत परिभाषित करना मुश्किल है। क्योंकि मसीह व उसकी कलीसिया के बीच में रिश्ता इतना गहरा व मजबूत है, कि मसीही वैवाहिक रिश्ता इतनी महिमित ढंग से कार्य कर सकता जिससे विवाहित जोड़ा आनन्द से भर जाए। मसीही विवाह के कारण दूसरे लोगों को आशीष वा परमेश्वर को महिमा मिलती है।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दें: इस अनुच्छेद का कौन सा सत्य मसीहियों के लिए सम्भवतः उपयोगी है?

बाँटें व लिखें। आइये हम एक दूसरे के साथ विचार विमर्श करके इफिसियों 5:22–33के आधार पर इस्तेमाल में आने वाली बातों की एक सम्भावित सूची बनाएं।

ध्यान दें। इनमें से कौन सी उपयोगी बातें हैं जिन्हें परमेश्वर चाहते हैं कि आप उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन में इस्तेमाल करें?

लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को अपनी कॉपी में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को बाटंने में स्वतन्त्र महसूस करें। (ध्यान रखें कि हर एक समूह में लोग अलग सच्चाईयों का इस्तेमाल करेंगे या उसी सच्चाई का अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगे। सम्भावित इस्तेमाल की सूची निम्नलिखित है।)

1. इफिसियों 5:22–33 से इस्तेमाल किये जाने वाले सम्भावित तत्व।

5:22. दोनों के लिए। पत्नियाँ अपने पतियों के अधीन रहें। परन्तु कुछ परिस्थितियां ऐसी भी हैं जिसमें पति को पत्नी के अधीन होना चाहिए (इफिसियों 5:21)। अध्ययन करें कि मसीही कलीसिया किस प्रकार यीशु मसीह के अधीन होती है। इस रीति को अपने जीवन साथी के साथ रिश्ते में इस्तेमाल करें।

5:23. पतियों के लिए। अध्ययन करें कि यीशु मसीह किस प्रकार कलीसिया का सिर है और वह किस प्रकार मसीही कलीसिया की अगुवाई करता है। प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल अपनी पत्नी के साथ रिश्ते में करें।

5:25: पतियों को लिए। अध्ययन करें कि किस प्रकार यीशु मसीह कलीसिया को प्रेम करता तथा मसीही कलीसिया के लिए अपने आप को देता है। प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल अपनी पत्नी के साथ रिश्ते में करें।

5:26–27 पतियों के लिए। अध्ययन करें कि यीशु मसीह किस प्रकार मसीही कलीसिया को शुद्ध करके उसे अपने वचनों के द्वारा एक महीमित कलीसिया बनाता है। इसका अर्थ है उसे अधिक से अधिक मसीह के समान बनाना। प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल अपनी पत्नी के साथ रिश्ते में करें।

5:29 पतियों के लिए। अध्ययन करें कि यीशु मसीह मसीही कलीसिया को खिलाता व उसकी देखभाल करता है। प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल अपनी पत्नी के साथ रिश्ते में करें।

5:31 दोनों के लिए। अपना मूल्यांकन करके देखें कि कहीं आप किसी न किसी तरह से अपने माता पिता पर निर्भर तो नहीं हैं। एक दूसरे की अपने अपने माता पिता को छोड़ने और एक दूसरे से जुड़ने में सहायता करें।

5:33 पत्नियों के लिए। अध्ययन करें कि बाइबल में मसीही कलीसिया किस प्रकार यीशु मसीह के प्रति आदर को व्यक्त करती है। प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल अपने पति के साथ रिश्ते में करें।

2. इफिसियों 5:22–23 में प्राप्त जानकारियों को व्यक्तिगत तौर पर इस्तेमाल किये जाने के उदाहरण।

पतियों के लिए। मैं यीशु मसीह के समान अगुवा बनने का नया समर्पण करता हूँ। जिस किसी क्षेत्र में जरूरी हो मैं अपनी पत्नी के सहायता करना चाहता हूँ। मैं उसकी देह और आत्मा दोनो की देखभाल करना चाहता हूँ। मैं उसकी सुरक्षा करना और उसके जीवन की कठिन परिस्थितियों से उसे बाहर निकालना चाहता हूँ। मैं सारी स्वार्थी भावनाओं को त्यागकर निःस्वार्थ भावना के साथ उसकी सेवा करना चाहता हूँ।

पत्नियों के लिए। मुझे अधीनता के रूप में नई समझ प्राप्त हुई है। अधीनता तब प्रमाणित होती है जब कोई पत्नी सक्रिय रूप में अपने पति को सुझाव देती, और बिना पति की अगुवाई व परिवार की जिम्मेदारियों से मन चुराये योजना बनाती और व्यवहारिक काम करती है। पतियों को हमेशा यह याद रखना चाहिए कि उनकी पत्नियां तब ही निःस्वार्थ भावना के साथ उनकी सहायता कर सकती है जब वे पूर्ण निःस्वार्थ भावना के साथ अपनी पत्नियों को प्रेम करें।

कदम 5. प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आइये इफिसियों 5:22–33 में परमेश्वर द्वारा सिखाई गये सत्यों के आधार पर प्रार्थना करें।
(जो कुछ आपने बाइबल अध्ययन के दौरान सीखा है, प्रार्थना में उसका प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करना सीखें। याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग विषयों के लिए प्रार्थना करेंगे)

5	**प्रार्थना** (8मिनट)	**[मध्यस्थता]** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में **लगातार प्रार्थना करें।** एक दूसरे तथा संसार के अन्य लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह का अगुवा*** *:* समूह के सदस्यों को यह तैयारी गृह कार्य के रूप में लिखित तौर पर प्रदान करें या उन्हें डाउन लोड करने दें।)

1. सर्मपणः चेले बनाने के लिए समर्पित हों।

किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के जन के साथ इफिसियों 5:22–33 पर आधारित शिक्षाओं को पढ़ें, सिखाये या प्रचार करें।

2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना। रोमियों 1–4 अध्याय पर रोज़ आधा अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताएं। पसन्दीदा सच्चाई के तरीके का इस्तेमाल करें। लिखें।
3. याद करनाः संगति। 1यूहन्ना 1:7
4. प्रतिदिन बाइबल की 5 याद की गयी आयतों को दोहराएं।
5. प्रार्थनाः किसी व्यक्ति या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं (भजन 5:3)

चेलों को बनाने के सम्बन्ध में वर्तमान स्थिति को किसी कॉपी में लिखें। जिसमें आराधना के गीत, शिक्षा तथा तैयारी की सामग्री को भी लिख सकते हैं।

v/;k; 21

1	प्रार्थना

समूह का अगुवाः प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	आराधना(20 मिनट) (परमेश्वर की विशेषताएं) परमेश्वर महान व रचनात्मक है

मनन

'परमेश्वर महान व रचनात्मक है से सम्बन्धित शिक्षाओं को **पढ़ें व शिक्षा दें।**

पढ़ें भजन संहिता 139:13–18 ।

परमेश्वर ने हमारे शरीर को पूरी तरह से सिद्ध रूप प्रदान किया है। परमेश्वर बढ़ौतरी का रचयिता है और बढ़ौतरी की प्रक्रिया अपने आप में एक चमत्कार है। मनुष्य का शरीर अपने आप बढ़ता है और लगातार अपने आप को पुनःनवीन करता चला जाता है। परमेश्वर हमारे विचारों में आने वाले हर एक छोटे से छोटे जीव का रचने वाला है।

1. लहू का थक्का बनना

जब किसी व्यक्ति को कहीं चोट लग जाती है तो कुछ समय के लिए खून बहता है और फिर खून का थक्का बनते ही खून बहना रूक जाता है। वह खून का थक्का बाद में खुरन्ट का रूप ले लेता है तथा चोट ठीक हो जाती है। लेकिन खून का जमना अपने आप में एक जटिल प्रक्रिया है और किसी प्रकार के खतरे से बचने के लिए इसे काफी साफ सफाई की जरूरत पड़ती है। यदि आपके रक्त प्रवाह प्रणाली में किसी प्रकार का कोई छिद्र हो जाता है तो खून का थक्का बनना बहुत ज़रूरी होता है अन्यथा आपका खून बहता रहेगा और अन्ततः मृत्यु हो जाएगी। यदि खून गलत समय या गलत स्थान में जम जाए तो वह थक्का बनकर सारे रक्त प्रवाह को रोक देगा जैसा कि हृदय घात व किसी प्रकार के दौरे पड़ने पर होता है। उस चोट की वजह से बने थक्के का उपचार करना बहुत जरूरी है नहीं तो सम्पूर्ण रक्त प्रवाह प्रक्रिया जमने से व्यक्ति मर सकता है।

शरीर में बड़ी मात्रा में एन्जाइम्स(प्रोटीन जिनकी वजह से रासायनिक प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है) निष्क्रीय रूप में जमा रहते हैं, जो सक्रिय होने को तत्पर होते है। रक्त का जमना एक नदी से बनने वाले झरने या प्रपात के समान होता हैः एक अवयव दूसरे को सक्रिय करता है और दूसरा अवयव तीसरे को सक्रिय करता है। प्रपात के प्रत्येक खण्ड में ,कुछ एन्जाइम्स थक्के का गठन करते हैं और कुछ एन्जाइम्स थक्के को हटाने या फैलने से रोकने का काम करते हैं। इसके अलावा ये एन्जाइम्स कार्य करने अर्थात सक्रिय करने, बढ़ाने या उनकी गतिविधियों को रोकने के लिए दूसरे एन्ज़ाइम्स पर निर्भर होते हैं।थक्के को जमने तथा सही समय पर उसे खत्म होने के लिए इन एन्ज़ाइम्स की आवश्यकता होती है। रक्त जमने की प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है जिसमें अनेकों अवयव पारस्परिक रूप में मिलकर थक्का बनने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं। उनमें से किसी भी एक अवयव को हटा देने से यह प्रक्रिया प्रभावशाली ढंग से काम करना बन्द कर देती है। केवल परमेश्वर ही इस प्रकार की जमाने वाली जटिल प्रपात प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं।

2. मानवीय देह की कोशिकाएं।

मनुष्य की देह में अनगिनत कोशिकाएं पायी जाती हैं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि मनुष्य के एक किलो मांस में 2 000 000 000 000 से भी ज्यादा कोशिकाएं होती हैं। उनमें से प्रत्येक कोशिका के भीतर 10 शक्ति वर्धक प्लान्ट्स पाये जाते हैं जो मानवीय देह को काम करने के लिए शक्ति प्रदान करते हैं। लेकिन इनमें से प्रत्येक शक्तिवर्धक

पलान्ट्स 1 माइक्रोमीटर से छोटा होता है (1 मिलीमिटर में 1 हज़ार माइक्रोमीटर होते हैं)। ये शक्तिवर्धक बहुत कोशिकाएं बहुत छोटी होने के बावजूद भी मनुष्य को अपने सारे काम करने की शक्ति प्रदान करते हैं!

3. मानवीय फेफड़ों में हवा की थैलियां ।

मानवीय फेफड़ों में बड़ी मात्रा में छोटी नलकियां पायी जाती हैं जिनके सिरे पर हवा की थैलिया होती हैं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि मनुष्य के फेफड़े में लगभग 6000 000 000 हवा की थैलियां होती हैं। इन हवा की थैलियों की दीवारें रक्त धमनियों से भरी होती है जो उन थैलियों से हवा को सोखकर मनुष्य की सम्पूर्ण देह को हवा प्रदान करती है। इन हवा की थैलियों की धमनियों को इतनी बुद्धिमानी के साथ तह बनाया गया है कि अगर उनकी तह को खोला जाए तो उसके द्वारा एक फुटबॉल के मैदान को धेरा जा सकता है। कल्पना करके देखिये कि कोई कैसे आपके फेफड़े के भीतर फुटबॉल के मैदान का बाड़ा बाधं देने वाली धमनी की तह बना सकता है।

सूक्ष्मदर्शी की सहायता से हम हमारी देह की कोशिकाओं व हमारे फेफड़ों में पायी जाने वाली हवा की थैलियों का अध्ययन कर सकते हैं। परन्तु इन कोशिकाओं और थैलियों को बनाने वाला है कौन?बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर ने मनुष्य को उसके भीतर हवा की थैलियों व कोशिकाओं के साथ बनाया है? यदि हम अपने ही शरीर की गहराई को नहीं नाप सकते, तो मनुष्य के शरीर को रचने वाले की गहराई को कैसे नाप सकते हैं? अद्भुत ढंग से रचे गये मानवीय शरीर का विद्यमान होना, अद्भुत परमेश्वर के विद्यमान होने को प्रमाणित करता है।

आराधना।

उस अद्भुत रचयिता की आराधना करें जिसने इन विद्यमान अति सूक्ष्म चीजों, तथा मानवीय देह की अदभुत व कल्पना से परे जटिल प्रणाली को रचा है। आपको अद्भुत रीति से रचने के लिए परमेश्वर की आराधना करें। तीन तीन लोगों के छोटे समूहों में बंटकर परमेश्वर की आराधना करें।

3	**बांटें** (20 मिनट) (शान्त समय) रोमियों 1–4

आपने जो कुछ दिये गये बाइबल अनुच्छेद(रोमियो 1–4) से अपने शान्त समय में सीखा है उसे संक्षेप में बाटें या (अपनी कॉपी में से पढ़ें)।

बताने वाले व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुने, उसे गम्भीरता से लें और स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70 मिनट) (पवित्र आत्मा) पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व व उसके कार्य

डोटा कोर्स में पवित्र आत्मा के सम्बन्ध में निम्नलिखित शिक्षाएं दी गयी हैं

मैनुएल 2, अध्याय 21	पवित्र आत्मा को स्वभाव, लोगों के जीवन में उसका काम और कलीसिया में उसका काम।
मैनुएल 2, परिशिष्ट 2.	पवित्र आत्मा मसीहियों को उनके कष्टों बीच में सम्भालता है।
मैनुएल 4, अध्याय 45	पवित्र आत्मा के प्रमुख कार्यः
	पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, पवित्र आत्मा द्वारा भरा जाना तथा आत्मा के फल।
मैनुएल 7. अध्याय 35	पवित्र आत्मा के वरदान।
मैलुएल 7, परिशिष्ट 2.	पवित्र आत्मा के अतिरिक्त वरदान।

क.पवित्र आत्मा का स्वभाव

1. पवित्र आत्मा व्यक्ति है।

पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है। पवित्र आत्मा कोई काल्पनिक शक्ति नहीं बल्कि एक व्यक्ति है। वह सत्य बोलता है(यूहन्ना 14:16–17)वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मध्यस्थता करता है(रोमियो 8:27),वह पापी स्वभाव के विपरीत इच्छा करता है (गलातियों 5:17)वह पाप के कारण शोकित होता है(इफिसियों 4:30:31)।

पवित्र आत्मा से सम्बन्ध।
पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व पर विश्वास करने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम किस प्रकार उसका अनुभव करते हैं।
यदि पवित्र आत्मा केवल कोई शक्ति होता तो, हमारा लक्ष्य होता कि ' मैं पवित्र आत्मा की शक्ति या प्रभाव को प्राप्त कर सकता हूँ' (30% या 40 % इत्यादि)
यदि पवित्रआत्मा कोई व्यक्ति है तो हमारी मनसा यह होनी चाहिए कि, '' पवित्र आत्मा किसी प्रकार मुझ पर पूर्ण रीति से कब्जा कर सकता है?'' ' किस प्रकार पवित्र आत्मा मेरे जीवन के ज्यादातर क्षेत्रों में राज्य कर सकता है?' '' किस प्रकार मैं पवित्र आत्मा के साथ मज़बूत सम्बन्ध स्थापित कर सकता या उसकी अगुवाई के प्रति अधीन हो सकता हूँ?''

2. पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

परमेश्वर ने अपने आप को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रगट किया (देखें मैनुएल 2. परिशिष्ट 8)
हालांकि परमेश्वर स्वभाव अथाह है (अय्यूब 11:7–8 ;1 तीमुथियुस 6:15–16),परमेश्वर ने अपने आपको इस तरीके से प्रस्तुत किया है कि लोग उसे आसानी से समझ सकें। परमेश्वर ने अपने आपको कामों के द्वारा (यशायाह 43:13)और वचनों (मत्ती 4:4), आग (निर्गमन 3:3–4) और मानवीय देह में (यूहन्ना 1:1, 14,18; फिलिप्पियों 2:5–8;कुलुस्सियों 1:15,19, 2:9 ;इब्रानियों 1:1–3) तथा लोगों के जीवन में पवित्र आत्मा द्वारा प्रगट किया(रोमियो 8:8–9)।

मसीहियों को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दिया जाता है (मत्ती 28:19)। 'के नाम में' एक वचन है बहुवचन नहीं। परमेश्वर के नाम में प्रगट करता है कि परमेश्वर एक है, वह ही एकमात्र ईश्वीय सत्ता है(व्यवस्थाविवरण 6:4)। और 'पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा' दर्शाता है कि इस ईश्वरी एकता के स्वभाव में भी एक अन्दरूनी भिन्नता है। इसलिए ही यीशु को "परमेश्वर हमारे साथ", " परमेश्वर का पुत्र, यहां तक कि परमेश्वर कहा जाता है। इसी कारण पवित्र आत्मा को " परमेश्वर का आत्मा", " मसीह का आत्मा" " आप में विराजमान मसीह" कहा जाता है (रोमियो8:9–10; प्रेरितों 16:7) तथा परमेश्वर कहा जाता है (प्रेरितों 5:3,5)

पवित्र आत्मा को विरासत में मिले गुण।

पवित्र आत्मा को विरासत में, पवित्रता (रोमियों 1:4), जीवन (रोमियो 8:2), प्रेम (रोमियों 15:30) सत्य(यूहन्ना 16:13) तथा अनन्त सत्ता (इब्रानियों 9:14) जैसे परमेश्वर के गुण मिले हैं। सत्य व प्रेम अलग अलग या अकेले में विद्यमान होने वाले गुण नहीं हैं, परन्तु उन्हें त्रिएकता के व्यतित्वों के बीच में उत्पत्ति से पहले से साझा किया गया है (अर्थात ईश्वरीय स्वभाव के आन्तरिक भिन्नता में)। लेकिन सृष्टि की रचना होने के बाद सत्य और प्रेम को लोगों के बीच में भी साझा किया गया।

जगत के साथ सम्बन्ध में पवित्र आत्मा की विशेषताएं।

जगत के साथ सम्बन्ध के संदर्भ में पवित्र आत्मा में परमेश्वर के गुण भी हैं।
सर्वव्यापी (हर जगह उपस्थित होने की योग्यता): परमेश्वर (भजन 139: 7–10) तथा पवित्र आत्मा (यूहन्ना 14:16–17)।
सर्वशक्तिमान (सारी सामर्थ्य का अधिकारी): परमेश्वर (उत्पत्ति 1:1–2) तथा पवित्र आत्मा (भजन 104:30)।
सर्वज्ञानी (हर चीज़ को जाने की योग्यता): परमेश्वर (भजन 139:1–4) व पवित्र आत्मा (1कुरिन्थियों 2:10–11)।

3. पवित्र आत्मा के नाम

पुराने नियम में

पुराने नियम में हम करीब 90 बार 18 अलग अलग नामों के साथ पवित्र आत्मा के जिक्र को पाते हैं। उनमें से कई नाम परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध को दर्शाते है, जैसे 'परमेश्वर का आत्मा'। कई नाम उसके चरित्र को प्रगट करते हैं जैसे 'पवित्र आत्मा', कई नाम लोगों के जीवन में उसके कामों को प्रगट करते हैं, जैसे" बुद्धि का आत्मा'' (यशायाह11:2)।

नये नियम में

नया नियम 254 बार सीधे तौर पर 39 अलग अलग नामों के साथ पवित्र आत्मा का जिक्र करता है। कई नाम पिता (मत्ती 10:20) और पुत्र के साथ (रोमियों 8:9–10)। कई नाम तो पवित्र आत्मा की अपनी ईश्वरीयता को प्रगट करते हैं, जैसे " परमेश्वर का आत्मा " (2 कुरिन्थियों 3:17)। कई नाम उसके मूल चरित्र को व्यक्ति करते हैं, जैसे, " पवित्र

आत्मा"। कई नाम मसीहियों के साथ उसके सम्बन्ध को प्रगट करते हैं और कई उसके द्वारा किये गये कामों के साथ, जैसे "सत्य का आत्मा"(यूहन्ना 14:17) व " अनुग्रह का आत्मा(इब्रानियों 10:29)।

4. पवित्र आत्मा के चिन्ह

आग, हवा, तथा पानी पवित्र आत्मा के किन लक्षणों को प्रगट करते हैं?

प्रेरितों के काम 2:1–4;(मत्ती 3:11)। "पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा" का अर्थ है कि यीशु मसीह विश्वासियों को पवित्र आत्मा के वरदान से आशीषित करेगा(और उन्हें अपने राज्य में इकट्ठा करेगा), लेकिन जितने लोग उस पर विश्वास करने से इनकार करते हैं उन्हें वह नरक के द्वारा उन्हें दण्ड देगा। पिन्तेकुस्त के दिन " आग की सी फटती हुई जीभें " पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के वरदान का चिन्ह था जिससे जुनून व प्रेम के साथ सुसमाचार प्रचार किया जा सके (प्रेरितों 6:10)

यूहन्ना 3:3–8; प्रेरितों 2:2 " आँधी का चलना" आत्मा की अप्रत्यक्ष शक्ति को प्रगट करता है। और '' हवा जहां चाहती है वहा बहती है'' पवित्र आत्मा के नये जीवन व नये जन्म के सन्दर्भ में किये जैसे निश्चित और अनुमान से परे कामों को प्रदर्शित करता है।

2 कुरिन्थियों 1:21–22। 'तेल से अभिषेक " का अर्थ है कि मसीहियों ने पवित्र आत्मा को उसकी पूरे गुणों के साथ प्राप्त कर लिया है और वे संसार में अपनी भविष्यसूचक,याजकीय, और राजकीय सेवकाई के लिए तैयार हैं। "मुहर दारा छाप लगने' का अर्थ है कि मसीहियों ने सच में पवित्र आत्मा की सहायता द्वारा नया जन्म प्राप्त कर लिया है, वे परमेश्वर के हैं और परमेश्वर उनकी सुरक्षा करता है। 'बयाना देने'' का अर्थ है मसीहियों ने पहले ही पवित्र आत्मा को गारन्टी के रूप में प्राप्त कर लिया है तथा भविष्य में परमेश्वर उन्हें बहुत सी चीजों को प्रदान करने वाले हैं।

ख. लोगों के जीवन में परमेश्वर पवित्र आत्मा का कार्य

पवित्र आत्मा धरती पर इस समय यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है और अविश्वासियों व विश्वासियों के जीवन में काम करता है।

1.पवित्र आत्मा यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है।

पवित्र आत्मा इस धरती पर प्रभु यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व है।

पढ़ें। यूहन्ना 14:16–18; 16:13–15

ध्यान दें। यीशु ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह अपने चेलों को अनाथों के समान नहीं छोड़ेगा, वरन वह पवित्र की रूप में स्वयं वापस आयेगा। 'सलाहकार' शब्द को सबसे बेहतर 'प्रतिनिधी ' शब्द से अनुवाद किया जा सकता है, कोई ऐसा जन जो आपकी सहायता करने, खास तौर पर आपके विरूद्ध काम करने वालों तथा आप पर दोष लगाने वालों से बचाने के लिए। इसी कारण उसे, सलाहकार, बिचवई,सहायक, मददगार आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

पवित्र आत्मा प्राथमिक तौर पर मसीहीयों का प्रतिनिधित्व नहीं करता वरन वह यीशु मसीह का प्रतिनिधी है। वह मसीहियों के बीच में यीशु मसीह का प्रतिनिधी है(रोमियों 8:9–10), जो मसीहियों के बीच में यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है। उसने चेलों को यीशु मसीह द्वारा कही गयी बातों को याद दिलाया, जिसकी वजह से वे नये नियम में सुसाचार को लिख सके(यूहन्ना14:26)। उसने यीशु के बारे में गवाही दी(यूहन्ना 15:26), जिसके कारण मसीह के चेले जगत के छोर तक मसीह की गवाही दे सके (प्रेरितों 1:8)।

पवित्र आत्मा ने मसीह के चेलों की सम्पूर्ण सत्य में अगुवाई की, जो उसने मसीह से सुना था ,जिसकी वजह से मसीह के चेले नये नियम को लिखने का काम पूरा कर सके थे। वह मसीह के प्रार्थना विषयों को लेकर विनती करता, मसीह के नाम की सुरक्षा करता तथा उन चीज़ों की सुरक्षा करता है जिनमें मसीह को रूची हो। वह मसीह की धरोहर की रखवाली करता है। और मसीहियों को मसीह की समानता में रूपान्तरित करता है (इब्रानियों 7:25; 9:24)। (इसके अलावा मैनुएल 2,परिशिष्ट 2 को देखें)।उसके मानवीय स्वभाव के अनुसार यीशु मसीह अभी स्वर्ग में है(प्रेरितों 2:33), लेकिन उसके ईश्वरीय स्वभाव के अनुसार यीशु मसीह सर्वव्यापी है: वह स्वर्ग में (इफिसियों 1:20–21) और पृथ्वी पर

(मत्ती 28:20) विराजमान है। पवित्र आत्मा भी सर्वव्यापी है: वह स्वर्ग में(यूहन्ना 4:24,रोमियो 8:26–27) तथा पृथ्वी पर (प्रेरितों के काम 2:33) उपस्थित है।

यीशु मसीह पवित्र आत्मा के रूप में मसीहियों में विद्यमान है।

पढ़ें: यूहन्ना 14:16

ध्यान दें: यीशु मसीह के स्वर्ग में उठा लिए जाने से पहले, वह इस धरती पर लोगों के बीच में परमेश्वर के प्रतिनिधित्व के रूप में था–वह ''परमेश्वर हमारे साथ है'' के रूप में था(मत्ती 1:23)। लेकिन यदि मसीह की देह के सन्दर्भ में कहा जाए तो, यीशु मसीह इस धरती को छोड़कर स्वर्ग में चला गया(लूका 24:50; प्रेरितों 1:9)।

स्वर्ग से ही यीशु ने मसीहियों के लिए '' एक और प्रतिनिधित्व या सलाहकार भेजा''। यीशु मसीह का अर्थ ' कोई दूसरा व्यक्ति नहीं' लेकिन 'जैसे वह परमेश्वर का पहले प्रतिनिधी था ठीक वैसे ही यह भी परमेश्वर का प्रतिनिधी है'': जो लोगों के बीच में परमेश्वर पिता और पुत्र दोनों का प्रतिनिधित्व करेगा।

यीशु के देह धारण करने के समय में वह इस धरती पर परमेश्वर का प्रतिनिधी था। वह परमेश्वर था जिसने मनुष्य का रूप धारण करके मनुष्य के बीच में डेरा किया। वर्तमान काल में पवित्र आत्मा इस धरती पर परमेश्वर पिता तथा पुत्र दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। पवित्र आत्मा आज वह सब कुछ है और करता है जो अगर यीशु इस धरती पर आज विद्यमान होने की दशा में करते।

जब यीशु मसीह अपनी शारीरिक अवस्था में इस धरती पर थे, तो वह एक विशेष स्थान (फिलिस्तीन) तथा मानवीय इतिहास के विशेष काल (लगभव 4 ई.पू से लेकर 30 ई.पश्चात तक) सीमित थे। लेकिन यीशु मसीह को परमेश्वर के दाहिने हाथ द्वारा उठाकर परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठने के बाद(इफिसियों 1:20–21; 1 पतरस 3:22), उसने परमेश्वर पिता से पहले पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा प्राप्त किया और फिर उस प्रतिज्ञा को (अर्थात उस आत्मा के प्रत्यक्ष व श्रवणीय प्रभाव को) धरती पर रहने वाले मसीहियों पर उण्डेल दिया(प्रेरितों 2:33)। परमेश्वर के आत्मा या मसीह के आत्मा के रूप में पवित्र आत्मा किसी स्थान या इतिहास के किसी काल तक सीमित नहीं है। पवित्र आत्मा में मानवीय स्वभाव नहीं है परन्तु वह मनुष्यों (विश्वासियों)के बीच विराजमान है। इस धरती पर पवित्र आत्मा यीशु मसीह के प्रतिनिधित्व के रूप में यीशु के कामों को पूरा करता है। पवित्र आत्मा अनन्त तक मसीहियों के साथ व उनमें रहता है(यूहन्ना 14:16–17)।

पवित्र आत्मा और यीशु मसीह को अलग नहीं किया जा सकता, और न ही इन्हें अलग अलग ग्रहण किया जा सकता है क्योंकि ये दोनो मिलकर एक ही ईश्वरी मूल हैं और ईश्वरीय स्वभाव भी एक सा ही है। पवित्र आत्मा'यीशु मसीह का रूप ही है''। वह ''परमेश्वर का आत्मा'' या ''मसीह का आत्मा'' है जो मसीहियों में वास करता है(रोमियों 8:9–10; 1 पतरस 1:10–12)। पवित्र आत्मा मसीहियों के लिए वह सब कुछ करता है जो मसीह इस दुनिया में अगर मौजूद होता तो उस अवस्था में होता।

2. पवित्र आत्मा संसार को उसके पापों के सम्बन्ध में निरूत्तर करता है।

खोजें और चर्चा करें। पवित्र आत्मा का इस संसार में क्या कार्य है, जिसमें मसीही व गैर मसीही दोनों ही शामिल हैं?

पढ़ें। यूहन्ना 3:16–18; 16:8–11; रोमियो 1:18,28–32।

ध्यान दें। यहां पर निरूत्तर करने का अर्थ खुलासा करना,निरूत्तर करना या डांटना, खण्डन करना तथा छोटे शब्दों में कहें तो कायल करना है।

पवित्र आत्मा लोगों को उनके पापों के प्रति निरूत्तर करता है।

पवित्र आत्मा पाप की सच्चाई को प्रगट करता व उसका खुलासा करता है।

पवित्र आत्मा लोगों की भक्तिहीन दशा को व्यक्त करता है, जिसका अर्थ है कि वह लोगों द्वारा उस परमेश्वर के प्रति गलत तरीके स्थापित किये जा रहे सम्बन्धों को प्रगट करता है जिसने अपने आपको जगत की सृष्टि के समय तथा बाइबल में व्यक्त किया था। वह उनके जीवन में परमेश्वर के प्रति प्रेम में अभाव को प्रगट करता है। वह परमेश्वर से उनकी दूरी और उनके विद्रोह को प्रगट करता है। वह उन पर प्रगट करता है कि वे कितने आत्म–केन्द्रित, आत्म–निर्भर, अपने आप निर्णय लेने वाले, खुद को धर्मी ठहराने वाले, आत्म–सन्तुष्ट, अपनी बढ़ाई चाहने वाले,खुद में खुश और अपनी ही इच्छा को पूरा करने वाले हैं।

पवित्र आत्मा लोगों की दुष्टता को प्रगट करता है,अर्थात वह लोगों से उनके अनुचित रिश्तों को प्रगट करता है। वह लोगों के प्रति उनके प्रेम में अभाव को व्यक्त करता है। वह उनको उन कामों के निमित्त कायल करता है जिन को करने के लिए परमेश्वर ने मना किया है, तथा जिन कामों को परमेश्वर ने करने के लिए कहा है मगर वह नहीं करते हैं।

अतः वह लोगों की असलियत को उनके सामने लाकर रख देता है, अर्थात वह परमेश्वर की पवित्र ज्योति व लोगों के असली चरित्र व आचरण को प्रगट करता और उन पर जाहिर करता है कि जिन लोगों के साथ उनके अच्छे सम्बन्ध होने चाहिए असल में उनके साथ उनके समबन्ध कैसे हैं।

पवित्र आत्मा लोगों को उनकी पापमय अवस्था की गम्भीरता के प्रति कायल करता,डांटता, खण्डन करता है। वह उनके हृदयों या मनों से बातें करने के द्वारा डांटता है कि वे गलत, भक्तिहीन, दुष्ट और परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करने के दोषी हैं। वह उन सभी बहानों व बहस का खण्डन करता है जो हम परमेश्वर से बनाते या करते हैं। वह परमेश्वर की नज़रों में उनके द्वारा किये गये अपराधों के प्रति उन्हें निरूत्तर करता और उन्हें परमेश्वर के सम्मुख लज्जित करता है। वह उन्हें इस बात का एहसास दिलाता है कि वे परमेश्वर के पवित्र क्रोध व न्याय के अधीन हैं(यूहन्ना 3:18,36)। वह लोगों को एहसास दिलाता है कि उनके पापों के कारण वे मृत्यु दण्ड के योग्य है(रोमियो 6:23)। अतः वह लोगों को उनके पापों की गहराई का एहसास दिलाता तथा उनके अपराधों की गहराई, लज्जा और पश्चाताप के प्रति निरूत्तर करता है।

पवित्र आत्मा लोगों को धार्मिकता के प्रति निरूत्तर करता है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर की धार्मिकता को और उस धार्मिकता को प्रगट करता है जिसकी वह मनुष्यों से अपेक्षा करता है।
पवित्र आत्मा लोगों को उस धार्मिकता का एहसास दिलाता है जो परमेश्वर ने लोगों की ओर से स्थापित की है। जिसका अर्थ लोगों को सच्चाई के प्रति कायल करना तथा इस वास्तविकता और ज़रूरत को प्रगट करना है कि परमेश्वर ने लोगों को पापों तथा न्याय से बचाने के लिए यीशु मसीह के द्वारा किन किन कामों को किया है। वह लोगों को यह समझाता है कि यीशु मसीह के लिए मानव जाति के पापों का प्रायश्चित करने के लिए मानव रूप धारण करना व क्रूस पर अपने प्राण देना अति आवश्यक था। और वह लोगों को यह समझाता है कि यीशु मसीह इस संसार को जीतने के लिए मृतकों में से जी उठे और स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान है।

पवित्र आत्मा लोगों को उस धार्मिकता के प्रति भी निरूत्तर करता है जिसकी वह मनुष्यों से मांग करता है। जब तब लोग परमेश्वर की दृष्टि में 100 प्रतिशत धार्मिकता हासिल नहीं कर लेते, उनका उद्धार नहीं हो सकता। यदि हम सारी व्यवस्थाओं को मानते हैं और किसी एक को पूरा करने में चूक जाते हैं तब भी हम व्यवस्था के प्रति गुनहगार है, और परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरते हैं (याकू 2:10; गलातियों 3:10)! वह लोगों को कायल करता है कि उन्हें यीशु मसीह पर विश्वास करना और उसकी ओर से सिद्ध धार्मिकता को प्राप्त करना चाहिए (2 कुरिन्थियों 5:21)। अतः वह लोगों को बतलाता है कि अगर वे पश्चाताप व प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करें तो परमेश्वर की नज़रों में धार्मिक बनना सम्भव है।

पवित्र आत्मा लोगों को न्याय के प्रति निरूत्तर करता है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर के न्याय को प्रगट करता है। पवित्र आत्मा लोगों को इस बात का एहसास दिलाता है कि अन्त में परमेश्वर न्याय करेंगे, और नरक भी एक जगह है। वह लोगों को उन सत्यों, वास्तविकताओं और परमेश्वर द्वारा न्याय किये जाने की जरूरत से अवगत कराता है जो सत्य व यीशु को अस्वीकार करते है पर वे पड़ सकते हैं। पवित्र आत्मा लोगों को इस बात का एहसास दिलाता है कि वे पूरी तरह से भटके हुए और इस कारण दण्ड के भागीदार हैं। वह लोगों को कायल करता है कि वे पहले से ही पवित्र व धर्मी परमेश्वर की उपस्थिति में दोषी हैं और यदि वे पश्चाताप करके अपने आपको शुद्ध नहीं करते तो उन्हें हमेशा का दण्ड मिलेगा।

3.पवित्र आत्मा मसीहियों में काम करता है।

खोजें व चर्चा करें। मसीहियों के जीवन में पवित्र आत्मा का क्या काम है?

पिन्तेकुस्त के दिन के बाद से पवित्र आत्मा मसीहियों के लिए उन सारे कामों को सम्भव कर रहा है जिसे यीशु मसीह ने क्रूस के द्वारा सम्भव किया था। जिन चीजों का यीशु मसीह ने इतिहास में हासिल किया था उन्हीं उपलधियों को पवित्र

आत्मा विश्वासियों के जीवन में वर्तमान में लागू कर रहा है। वह लोगों को नया बनाता है,वह उनकी परमेश्वर के वचनों को सुनने में मदद करता है, वह उन्हें आज्ञा मानना सिखाता और शुद्ध करता है।

पवित्र आत्मा लोगों को नया जन्म प्रदान करता है।

यूहन्ना 3:3,5 **पढ़ें।**

ध्यान दें। *नये जन्म का अर्थ परमेश्वर के समय में उसकी इच्छा को पहिचानना है।* (2 थिस्लुनिकियों 2:13–14)। परमेश्वर की अनन्त इच्छा कुछ लोगों को चुनना है जो पवित्र आत्मा द्वारा शुद्ध किये जाने तथा सत्य पर विश्वास करने के द्वारा उद्धार प्राप्त कर सकें। परमेश्वर ने अपनी इच्छा के मत के अनुसार सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा उन्हें पहिले से ही ठहराया है। वह पवित्र आत्मा के द्वारा उन्हें नया जन्म देता तथा उन्हें नवीन करता है(यूहन्ना 3:3–8)। वह उन्हें अपने ईश्वरीय स्वभाव में भागीदार बनाता है(2 पतरस 1:4), वे उसकी ईश्वरीयता के भागीदार नहीं परन्तु उसके ईश्वरीय विशेषताओं जैसे प्रेम, पवित्रता और धार्मिकता के भागीदार होते हैं। पवित्र आत्मा इस तरह से काम करता है कि विश्वासी लोग भी अपने जन्म व नवीनीकरण के बारे में जान सकें व महसूस कर सकें। वह मसीहियों के ह्रदय में गवाही देता है कि वे परमेश्वर की सन्तान हैं और परमेश्वर उनमें और वे परमेश्वर में जीवन व्यतीत करते हैं(रोमियों 8:16; 1 यूहन्ना 2:20 27;4:13)। मसीही जन कभी 'परमेश्वर' नहीं बनते, लेकिन परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा मसीहियों के जीवन में वास करता है। पवित्र आत्मा की इच्छा मसीह द्वारा कलवरी क्रूस पर पूरे किये गये कामों को लेकर मसीहियों के जीवन में इस्तेमाल करके मसीह की महिमा करना है।

नया जन्म परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ काम है(तीतुस 3:3–7)। इसलिए मसीही लोग कहते हैं कि उनका उद्धार परमेश्वर की दया या अनुग्रह से हुआ है (इफिसियों 2:8)। आत्मा द्वारा नया जन्म दिये जाने का काम पापियों के विवेक को बुरी तरह छेद देता है और उसका मन बदल जाता है, जिसका अर्थ है की वो अपनी आत्म–निर्भरता पर भरोसा नहीं करता, पापमय संसार से दूर हो जाता तथा शैतान से दूर होकर परमेश्वर के पास चला जाता है(प्रेरितों 2:37–42;26:18)। मन परिवर्तन का अर्थ पापों से पश्चाताप तथा मसीह पर विश्वास करना होता है। और विश्वास परमेश्वर की श्रेष्ठ बुलाहट (रोमियों 10:17), परमेश्वर के अनुग्रह के वरदान(इफिसियों 2:8; फिलिप्पियों 1:29 ;प्रेरितों के काम 13:48) और उसके साथ धर्मी ठहराये जाने वाले कामों का परिणाम होता है(रोमियों 5:1)। विश्वास उस खाली हाथ के समान है जिसके द्वारा वह परमेश्वर के अनुग्रह से मिलने वाले उद्धार को स्वीकार करता है (यूहन्ना 1:12)। सुसमाचार प्रचार के द्वारा लोगों को मन बदलने के लिए पुकारा जाता है (मरकुस 1:15;प्रेरितों 3:19; 26:18; रोमियों 10:14–17)। लोगों के विश्वास पूर्ण प्रतिउत्तर देने के कारण, लोग धर्मी ठहरते हैं (रोमियों 3:22)। धर्मी ठहराये जाने के परिणामस्वरूप परमेश्वर के साथ हमारा नया रिश्ता कायम होता है(रोमियो 5:1), हमें लेपालक पन की आत्मा प्राप्त होती है (रोमियों 8:15–16;इफिसियों 1:4–5,13; प्रेरितों 15:7–11) जिसका अर्थ यह स्वीकार करने से है कि वे परमेश्वर की सन्तान है। धर्मी ठहराये जाने के फलस्वरूप आप पवित्र व नया जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

पवित्र आत्मा लोगों की परमेश्वर के वचनों को सुनने में मदद करता है।

पढ़ें। यूहन्ना 16:13–15; 14:26।

ध्यान दें। बाइबल पवित्र आत्मा का प्रमुख हथियार है, यह परमेश्वर के वचन हैं जिनके द्वारा वह मसीहियों व गैर मसीहियों के मन,ह्रदय और जीवनों को आर पार छेदता है। पवित्र आत्मा लगातार बाइबल के कुछ अनुच्छेदों को मसीहियों को उनके जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में सिखाने, प्रेरित करने और बदलने के लिए इस्तेमाल करता है(इफिसियों 6:17; इब्रानियों 4:12)। वह विश्वासियों की बाइबल के सभी सत्यों में अगुवाई करता और उन सभी बातों के बारे में बताता है जिनकी शिक्षा यीशु मसीह ने दी थी (यूहन्ना 16:13–15; 14:26)।

बाइबल का प्रत्येक वचन आत्मा के द्वारा प्रेरित है और उसमें कोई गलती नहीं है। सम्पूर्ण बाइबल मसीही सिद्धान्तों व जीवन की परिमाप से परिपूर्ण है। बाइबल सत्य की शिक्षा देने, पाप का खुलासा करने तथा बहानों या परमेश्वर के विरूद्ध की जाने वाली बहस का खण्डन करने, गलतफहमियों को ठीक करके लोगों को परमेश्वर साथ पुनः जोड़ने, तथा उन्हे वे काम सिखाने के जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक हैं तथा लोगों को परमेश्वर की योजनाओं को पूरा करने हेतू तैयार करने में लाभदायक साबित होती है(2 तीमुथियुस 3:16–17)।

परमेश्वर का वचन होने के नाते बाइबल सत्य है और पवित्र आत्मा सत्य का आत्मा है(यूहन्ना 17:17; 14:17)। बाइबल में इससे सम्बधित परमेश्वर के वचन वहां के लोगों के स्वपनों और भविष्यवाणियों का विरोध करत हैं (यिर्मयाह 23:9–32)। यिर्मयाह 23 में, झूठे भविष्यवक्ताओं की पहिचान यह थी कि वे भविष्य को लेकर अनुमान लगाना पसन्द करते थे (उदाहरण के तौर पर, भविष्य में इस्राएल को कोई नुकसान नहीं होगा) जबकि सच्चे भविष्यवक्ताओं की विशेषता यह थी कि उन्होने सदैव परमेश्वर के प्रकाशन या इच्छा को लोगों के सामने वयक्त किया करते और उनकी पश्चाप करने में अगुवाई करते थे। मसीहियों को हमेशा आत्मा द्वारा ही बातों की सत्यता को परखने के लिए उसे हमेशा परमेश्वर के वचनों के साथ मिलाकर देखना चाहिए। सच्चे मसीही लोग कभी परमेश्वर के लिखित वचनों से ज्यादा कुछ करने का प्रयास नहीं करते (1 कुरिन्थियों 4:6)। संक्षेप में पवित्र आत्मा बाइबल के द्वारा विश्वासियों की अगुवाई करता है। इसी कारण बाइबल को अपने जीवन में पढ़ना,सुनना, अध्ययन करना,मनन करना उसे कण्ठस्थ करना और इस्तेमाल करना अति महत्वपूर्ण है।

पवित्र आत्मा मसीहियों की परमेश्वर के वचनों का मानने में सहायता करता है।

पढ़ें। 1 पतरस 1:2

ध्यान दें। पवित्र आत्मा विश्वासियों को बाइबल में छुपी सच्चाईयों को समझने में सहायता करता है(इफिसियों 1:17–18)। वह बाइबल की सच्चाईयों को लेकर मसीहियों के मन,हृदय और उनके जीवन में इस्तेमाल करता और उनकी अधिकाई से परमेश्वर व उसके वचनों के अधीन होने में सहायता करता है। पवित्र आत्मा द्वारा शुद्धिकरण के काम द्वारा मसीही जन अपने जीवन में यीशु मसीह की बातों का पालन करने लगता है(1 पतरस 1:2)। परमेश्वर ने अपनी आज्ञा मानने वाले लोगों को अपना पवित्र आत्मा दिया है(प्रेरितों 5:32)। इसलिए पवित्र आत्मा कहता है, '' आज, यदि तुम उसकी वाणी को सुनों तो अपना मन कठोर न करना जिस प्रकार क्रोध दिलाने के समय किया था' (इब्रानियों 3:7–8)। इस कारण विश्वासियों की यह जिम्मेदारी है कि वे इस बात का ध्यान रखें कि उनके बीच में कोई पापमय (भक्तिहीन, दुष्ट), अविश्वासी (सन्देहयुक्त, आलोचक) या कठोर (विरोध करने वाला या विद्रोही) तथा जीवित परमेश्वर से दूर होने वाला हृदय न हो। बल्कि, मसीहियों को एक दूसरे को बाइबल में लिखें वचनों को दैनिक जीवन में मानने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए (इब्रानियों 3:12–13)। इस कारण जिसके कान हो वह सुन ले कि आत्मा इस संसार में विश्वासियों की मण्डली अर्थात कलीसिया से क्या कहता है(प्रकाशितवाक्य 2:1,7)। इस कारण जो लोग आत्मा के चलाये चलते हैं, वे सदैव परमेश्वर व उसके वचनों के अधीन करना चाहते हैं, कर सकते हैं और निश्चित तौर पर करेंगे। परमेश्वर की आज्ञा मानना तथा उसे प्रसन्न करना उनके जीवन का लक्ष्य बन जाता है। लेकिन जो लोग अपने पाप मय स्वभाव के अनुसार चलते हैं वे किसी भी कीमत पर परमेश्वर व उसके वचनों के अधीन जीवन व्यतीत न करना चाहते, न कर सकते और न ही करेंगे (रोमियों 8:5–8;कुलुस्सियों 1:9–12)। बाइबल में परमेश्वर के आत्मा के कामों की चर्चा करते समय ज्यादा ज़ोर ज्ञान प्राप्त करने पर नहीं दिया गया, वरन बाइबल में पहले से प्रगट किये गये परमेश्वर के ज्ञान का पालन करने पर ज़ोर दिया गया है।

पवित्र आत्मा मसीहियों को शुद्ध करता है।

पढ़ें। गलातियों 5:13–26

ध्यान दें। पवित्र आत्मा मसीहियों को मसीह की समानता में अधिक से अधिक रूपान्तरित करने के लिए शुद्ध करता है(2 कुरिन्थियों 3:17–18)। उनके जीवन में वास करने वाले पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा, मसीही लोग उनकी देह के धृणित कामों के लिए मृतक हो जाते हैं(रोमियो 8:13) । वे अपने पापमय मनुष्यत्व के अनुसार जीवन बिनाते से इनकार करके पवित्र आत्मा के चलाये चलने का निर्णय लेते हैं और फलस्वरूप उनमें पवित्र आत्मा के फल भी प्रगट होने लग जाते हैं। मनुष्य का पापमय स्वभाव यौन अनैतिकता और भोग विलास जैसे शारीरिक पापों में; और मूर्तिपूजा तथा जादू टोना जैसे पापों के द्वारा आत्मिक पाप; तथा स्वार्थी महत्वाकाक्षां और झगड़ों के द्वारा सामाजिक पाप प्रगट होता है। आत्मा के फल बुनियादी गुणों जैसे प्रेम, आनन्द, शान्ति ; सामाजिक सदगुणों जैसे धीरज, कृपा, भलाई तथा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता, लोगों के प्रति सज्जनता तथा अपने जीवन में संयम जैसे रिश्तों में प्रगट होते हैं।

"आत्मा के अनुसार चलना, " आत्मा की अगुवाई में होकर चलना" या " आत्मा के साथ चलना" इन सभी बातों का अर्थ है कि यीशु मसीह को अपने हृदय में प्रभु व स्वामी के रूप में रहने की अनुमति देता है, जो उसके जीवन पर प्रभुता करे, उसे ज़्यादा से ज़्यादा अपने रूप में ढाले, जैसे जैसे वह अपने आप को मसीह के अधिकार व इच्छा के अधीन करते हैं।

मसीहियों के जीवन में पवित्र आत्मा के मौजूद होने के प्रत्यक्ष प्रमाण हम आत्मा के फलों में देख सकते हैं; खास तौर पर प्रेम के द्वारा (गलातियों 5:13–26; इफिसियों 3:16–17)।

सारः पवित्र आत्मा लोगों और उनकी भटकी अवस्था के सन्दर्भ में बाइबल के आधार पर गहनता से कायल करता है, ताकि वे यीशु को जानकर उसे महिमा दे सकें और बाइबल को समझकर उसका पालन कर सकें। पवित्र आत्मा परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार मसीहियों के लिए प्रार्थना करता है (मैनुएल 2 की तथा परिशिष्ट 2 को देखे)। वह वास्तव में लोगों को रूपान्तरित करता है और लोग वास्तव में इस रूपान्तरण को महसूस करते हैं।

ग. कलीसिया में पवित्र आत्मा के कार्य

पिन्तेकुस्त के दिन, पवित्र आत्मा को उण्डेला जाना तीन बातों को प्रगट करती हैः
पिन्तेकुस्त यीशु की मसीह के रूप में उपाधि पर परमेश्वर की मुहर लगाना था। (प्रेरितों 2:32–36)
पिन्तेकुस्त कलीसिया के निर्माण का उपलक्ष्य था। (प्रेरितों 2:37–47)
पिन्तेकुस्त के दिन चेलों को उनके कामों को पूरा करने की सामर्थ प्राप्त हुई (प्रेरितों 1:8)
आईये हम पवित्र आत्मा के इन तीनों कामों पर नज़दीकी से नज़र डालें।

1. मसीहियों के अनुभव से पवित्र आत्मा यीशु मसीह की महिमा करने वाला है।

खोजें व चर्चा करें। यीशु के सम्बन्ध में पवित्र आत्मा के क्या काम हैं?
ध्यान दें। मसीही कलीसियाओं में पवित्र आत्मा यीशु मसीह को केन्द्र बिन्दु बनाता है।

पवित्र आत्मा यीशु मसीह की निज जानकारी प्रदान करता है।
पढ़ें 2 कुरिन्थियों 4:6
ध्यान दें। पवित्र आत्मा अप्रत्यक्ष परमेश्वर के प्रकाशन का प्रत्यक्ष यीशु मसीह में होकर वर्णन कर देता है। वह परमेश्वर की ज्योति को विश्वासियों के हृदय में ज्योर्तिमय करता है, और जिस प्रकार से उसने यीशु मसीह पर परमेश्वर की विशेषताओं को प्रगट किया था उसी प्रकार से वह विश्वासियों के हृदय में परमेश्वर के महिमित गुणों को ज्ञान को प्रगट कर देता है(2 कुरिन्थियों 4:6; कुलुस्सियों 1:15)। पवित्र आत्मा बाइबल के प्रचार व शिक्षाओं द्वारा उन पर जीवित परमेश्वर का ज्ञान प्रगट करता है, जिसमें यीशु मसीह का प्रकाशन भी शामिल है (यूहन्ना 20:30–32; प्रेरितों 8:35)।

पवित्र आत्मा यीशु मसीह की गवाही देता है।
पढ़ें यूहन्ना 15:26; 16:14।
ध्यान दें। पवित्र आत्मा अपने आप को केन्द्र बिन्दू नहीं बनाता, वरन वह यीशु मसीह पर केन्द्रित होकर विश्वासियों के जीवन और अनुभवों में यीशु मसीह को महिमा प्रदान करता है।

पवित्र आत्मा मसीह के वचनों को ही बोलता है।
पढ़ें यूहन्ना 14:26; 16:14–15।
ध्यान दें। पवित्र आत्मा मसीह के वचनों से अलग कोई बात नहीं करता।

पवित्र आत्मा सच्चे विश्वासियों को यीशु मसीह को अपना प्रभु स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है।
पढ़ें। 1 कुरिन्थियों 12:3
पवित्र आत्मा मसीहियों की अपने दैनिक जीवन में यीशु मसीह को अपना प्रभु और स्वामी प्रदर्शित करने में सहायता करता है। वह उन्हें यीशु मसीह के अधीन होने तथा उसकी आज्ञाओं को मानने में सहायता करता है(रोमियो 8:5–8; 1 पतरस 1:2)
साराशं:आत्मा से परिपूर्ण स्थान की परख करने के लिए, चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामुहिक अनुभव हो यह देखना जरूरी है कि क्या वहां पर यीशु मसीह को स्थान दिया जा रहा है।

2. पवित्र आत्मा कलीसिया का प्रबन्धक है।

खोजें और चर्चा करें। पवित्र आत्मा कलीसिया में क्या काम करता है?

पवित्र आत्मा कलीसिया को आत्मिक घर बनाता है।

इफिसियों 2:22 को **पढ़ें**।

ध्यान दें। पिन्तेकुस्त के दिन से पहले सारे चेले बहुत से मुक्त व्यक्तियों का समूह थे। लेकिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद वे गठकर एक मसीह की देह बन गये, जो महज कोई इमारत नहीं, कोई संगठन नहीं बल्कि एक जीवित जीव है (1 पतरस 2:4–5)

पवित्र आत्मा एक मसीही व्यक्ति को कलीसिया को समर्पित सदस्य बनने में सहायता करता है।

पढ़ें। 1 कुरिन्थियों 12:11–13

ध्यान दें। केवल पवित्र आत्मा की किसी व्यक्ति को कलीसिया का असली सदस्य बनाता है, जो मसीह की देह है। "आत्मा की द्वारा बपतिस्मा जिसका अर्थ नया जन्म पाना है, कोई भी व्यक्ति असल में मसीही और कलीसिया अर्थात मसीह की देह का समर्पित सदस्य बनता है। नये जन्म के द्वारा मसीह विश्वासियों में और विश्वासी मसीह में बस जाता है(यूहन्ना 1:12–13)। नया जन्म पाने के द्वारा मसीही जन की देह पवित्र आत्मा का मन्दिर बन जाती है और वह विश्वासी धरती पर मसीह के देह का एक अंग बन जाता है।

पवित्र आत्मा पुरनियों को मसीही मण्डली का एक सच्चा पहरूआ बना देता है।

पढ़ें। प्रेरितों 20: 17,28

ध्यान दें। केवल पवित्र आत्मा ही मुक्त कलीसियाओं में प्रभावशाली कार्य सम्भव बना सकता है, जो एक साथ मिलकर एक विश्वव्यापी कलीसिया बन जाती है। पवित्र आत्मा कुछ मुख्य कामों को करने के लिए पुरनियों को ठहराता है। चरवाहे या पासबान होने के नाते वे हमेशा लोगों पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं, हम किस की चरवाही करें जिसका अर्थ उनकी देखभाल करना, उन्हे खिलाना और उनकी सुरक्षा करना होता है। प्रबन्धक या निरिक्षक होने के नाते, वे खास ध्यान गतिविधियों पर लगाते है,खास तौर पर क्रमानुसार मण्डली के विभिन्न कामों को करने के प्रबन्ध में।

पवित्र आत्मा कलीसिया मैं ठोस सिद्धान्तों और उसके अभ्यास के लिए जिम्मेदार होता है।

पढें। प्रेरितों के काम 15:28 ; 2 तीमुथियुस 3:16–17

ध्यान दें। केवल पवित्र आत्मा कलीसिया की किसी चर्चा को बाइबल पर आधारित सामंजस्य की ओर दिशा प्रदान कर सकता है। वोटों द्वारा चुनाव करने या निर्णय लेने का तरीका बाइबल में प्रगट की गयी परमेश्वर की इच्छा का स्थान नहीं ले सकता। मसीही मण्डलियों अर्थात कलीसिया को सुनना चाहिए कि मसीह वास्तव में पवित्र आत्मा के द्वारा क्या कहना चाहता है(प्रकाशित वाक्य 2:1,7)।

पवित्र आत्मा सर्वश्रेष्ठ तरीके से मसीहियों को वरदान प्रदान करता है।

पढ़ें। रोमियों 12:4–8; 1 कुरिन्थियों 12:11

ध्यान दें। केवल पवित्र आत्मा ही फैसला करता है कि मसीहियों को कौन सा वरदान मिलना चाहिए। आत्मिक वरदानों का उद्देश्य कलीसिया का र्निमाण करना है। भिन्न प्रकार के वरदान इस बात को दर्शाते हैं कि परमेश्वर नहीं चाहता कि कलीसिया के सारे सदस्य या कलीसिया एक समान हो, वरन उनमें भिन्नता पायी जानी चाहिए। कलीसिया ऐसे लोगों से मिलकर नहीं बनी है जिसमें सारे लोग एक ही जैसे कपड़ें पहने हों या एक ही सी भाषा हो और वे सभा में एक ही प्रकार की सेवा निभाएं। जिस प्रकार से हमारी देह में बहुत से अंग होते हैं उसी प्रकार कोई भी संगठन विभिन्न प्रकार के लोगों, व्यक्तित्वों से मिलकर बना होता है। उनके विभिन्न प्रकार के आत्मिक वरदान पाये जाते हैं तथा उनके लक्ष्य भी भिन्न होते हैं। कई मसीही जन मुँह के समान हैं जो प्रचार या शिक्षा देने का काम करते हैं। वे सम्भवतः पासबान या सेवक या पुरनिये या शिक्षक की भूमिका के लिए उपयुक्त जन हैं। दूसरे मसीही जन ह्रदय के समान है जो लोगों पर दया करना तथा उनकी सेवा करना पसन्द करते हैं। उनके लिए बीमारों से मिलना, गरीबों व विक्लांगों की सहायता करना, नशे की लत के शिकार लोगों की देखभाल करना ज़्यादा अच्छा रहता हैं।

पवित्र आत्मा मसीही सभाओं व सम्मेलनों का निर्देशन करता है।

पढ़ें। इफिसियों 5:18–19; फिलिप्पियों 3:3।

ध्यान दें। केवल पवित्र आत्मा ही मसीही सभाओं या सम्मेलनों को आत्मा से परिपूर्ण बना सकता है। उदाहरण के तौर पर, आलोचनात्मक या न्यायवाचक होने के बजाय, मसीही लोग लगातार परमेश्वर को हर बात व हर परिस्थिति के लिए

धन्यवाद देने वाले होंगे। अतः पवित्र आत्मा उनकी चर्चाओं,गवाहियों,शिक्षाओं, अराधनाओं, प्रार्थनाओं और गीतों की अगुवाई करता है।

सारांशः पवित्र आत्मा ही प्रभावशाली ढंग से लोगों व गतिविधियों को संचालित करता है।

3. पवित्र आत्मा संसार भर में मसीही मिशन का संचालक है।

खोजें व चर्चा करें। मिशन के क्षेत्र में पवित्र आत्मा के क्या काम हैं?

पवित्र आत्मा लोगों को बुलाता व उनका मिश्नरी या सेवक होने के लिए चुनाव करता है।

पढ़ें। प्रेरितों 13:1–4(प्रेरितों 26:13–18; 1 कुरिन्थियों 1:1)

ध्यान दें। परमेश्वर बेहतर जानता है कि इस संसार में उसके जरूरी कामों को करने के लिए कौन व्यक्ति उपयुक्त है। वह विशेष मसीहियों को सेवक बनाने के लिए चुनता है। कलीसिया को ऐसे लोगों को सेवा करने के लिए बिल्कुल अलग कर देना चाहिए और उनको प्रार्थना में याद रखना चाहिए और यदि सम्भव हो तो उनकी आर्थिक सहायता भी करनी चाहिए।

पवित्र आत्मा हर एक मसीही सेवक को अलग लक्ष्य प्रदान करता है।

पढ़ें। 1 कुरिन्थियों 12:4–6,11(मरकुस 13:34; 1 कुरिन्थियों 3:5–9)

ध्यान दें। पवित्र आत्मा बेहतर जानता है कि कौन सा काम किस व्यक्ति के लिए उपयुक्त है। अतः पवित्र आत्मा हर एक व्यक्ति को इस तरह से वरदान वितरित करता है कि उसके द्वारा उन्हें अपने लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता मिले।

पवित्र आत्मा बन्द दरवाज़ों को खोलता है।

पढ़ें। प्रेरितों 16:6–10(कुलुस्सियों 4:3; 1 कुरिन्थियों 3:5–9)

ध्यान दें। परमेश्वर बेहतर जानता है कि इस समय पर कौन सा स्थान ज़्यादा महत्वपूर्ण है और कौन से लोग उस काम को आगे ले जाने के लिए उपयुक्त हैं। केवल वह ही अपने कार्यकर्ताओं के लिए अवसर के बन्द दरवाज़ों को खोल सकता है। मसीह विशेष प्रकार की परिस्थितियों का प्रबन्ध करके पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवकों के मन में अगुवाई करते हुए अपने काम को आगे बढ़ाता है। पवित्र आत्मा ही अपने सेवकों की प्रमुख लोगों का हृदय परिवर्तन कराने के लिए अगुवाई करता है, जैसे कूश देश को वह सरकारी अधिकारी (प्रेरितों 8:29–35) तथा रोमी दारोगा (प्रेरितों के काम 10:19–29) । पवित्र आत्मा अपने सेवकों को परख की आत्मा भी प्रदान करता है ताकि वे शत्रु की बुरी युक्तियों को पहिचान सकें और अधिकार के साथ व्यवहार कर सके(प्रेरितो 13: 9–11)।

पवित्र आत्मा मसीही सेवकों को प्रोत्साहित करता है।

पढ़ें। प्रेरितों 13:49–52।

ध्यान दें। पवित्र आत्मा नये विश्वासियों को सताव की अवस्था में भी भरपूर आनन्द प्रदान करता है।

सारांश। पवित्र आत्मा महान आज्ञा को प्रभावशाली ढंग से पूरा करता है।

5	**प्रार्थना** (8मिनट)	(प्रतिक्रिया) परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए प्रार्थना करें

जो कुछ आपने आज सीखा है उसके प्रतिउत्तर में **अपनी बारी आने पर** समूह में छोटी **प्रार्थना करें।**
या दो और तीन के झुण्डों में बंटकर, आज जो कुछ आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	(निर्धारित कार्य) अगले अध्याय के लिए

(**समूह का अगुवा** : समूह के सदस्यों को यह तैयारी गृह कार्य के रूप में लिखित तौर पर प्रदान करें या उन्हें डाउन लोड करने दें।)

1. **सर्मपणः** चेले बनाने के लिए समर्पित हों।

किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के जन के साथ 'स्त्री व पुरूष के बीच रिश्ते' बाइबल पर आधारित शिक्षाओं को पढ़ें, सिखाये या प्रचार करें।

2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना। रोमियो 5–8 अध्याय तक रोज एक अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताएं। पसन्दीदा सच्चाई के तरीके का इस्तेमाल करें। लिखें।
3. बाइबल अध्ययन। अगली बाइबल अध्ययन की घर ही में तैयारी करें। इफिसियों 6:1–4। विषयः ' मसीही परिवार की क्या विशेषताएं है"? बाइबल अध्ययन के पांच कदमों वाली पद्धति को इस्तेमाल करें। मुख्य बातों को लिखें।
4. प्रार्थनाः किसी व्यक्ति या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं (भजन 5:3)
5. चेलों को बनाने के सम्बन्ध में अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें परमेश्वर के साथ बिताये व्यक्तिगत समय पर टिप्पणियों,याद करी गयी टिप्पणियों को, बाइबल अध्ययन व इस तैयारी को शामिल कर सकते हैं। आराधना के गीत, शिक्षा तथा तैयारी की सामग्री को भी लिख सकते हैं।

अध्याय 22

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	**बाँटना** (20 मिनट)	[शान्त समय] रोमियों 5–8

आगे बढ़कर संक्षेप में ***बताएं*** (या अपने नोट्स में से पढ़ें) कि आपने शान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (रोमियों 5–8) से क्या सीखा।
अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट)	[मसीह में नया जीवन] गवाही देना : मत्ती 10:32

क–ध्यान करना

निम्नलिखित याद करने वाले पद को श्वेत/श्याम पट पर लिखें

गवाह बनना मत्ती 10:32
" जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूँगा।" मत्ती 10:32

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के हवाले लिखें:

यीशु ने अपने चेलों से ये बातें तब बोली जब उसने उन्हें जाकर उसके राज्य का सुसमाचार सुनाने की आज्ञा दी (मत्ती 10:5–10)। इस सच्चाई को जानने के बावजूद कि चेलों को उनके संदेशों का विरोध सहना पड़ेगा, चेलों को निडर होकर सुसमाचार सुनाना बहुत ज़रूरी है। यीशु ने उन्हें निडरता के साथ उसके गवाह होने के चार कारण दिये।

1. आप यीशु के निडर गवाह बन सकते हैं, क्योंकि आपके शत्रु इस सच्चाई को नहीं मिटा सकते कि एक दिन सरे आम उनका तमाशा बनाया जाएगा और आपको सरे आम निर्दोष ठहराया जाएगा।

पढ़ें, मत्ती 10:26–27। शत्रु इस सच्चाई से बच नहीं सकता कि एक दिन उसका सताव करना, विरोध करना और मसीहियों को घात करना सार्वजनिक तौर पर बेपरदा हो जायेगा! न्याय के दिन मसीह व मसीहियों के दुश्मन दुनिया में उस समय तक पैदा हुए सारे मानवों के सामने दण्ड भुगतेगें। बाइबल कहती है कि उनके सारे काम वरन सारे गुप्त कामों को न्याय किया जाएगा (सभोपदेशक 14:12)

और शत्रु इस सच्चाई को भी नहीं मिटा सकता कि एक दिन चेलों या विश्वासियों को सार्वजनिक तौर पर निंदोष ठहराया जाएगा। न्याय के दिन मसीह व मसीह के लोग धरती पर उस दिन तक पैदा हुए सारे लोगों के सामने आदर पाएगें। बाइबल कहती है कि मसीह सबको उनके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा (मत्ती 16:27)।

इसलिए यीशु मसीह के चेलों को कभी भी परमेश्वर की राज्य के सुसमाचार को खुलेआम, हिम्मत से साथ व निडरता से प्रचार करने में घबराना नहीं चाहिए।

2. आप यीशु के निडर गवाह हो सकते हैं, क्योंकि आपका शत्रु केवल आपके शरीर को धात कर सकता है आपके प्राण को नहीं।

पढ़ें मत्ती 10:28। चाहे मसीही या मसीहिया के दुश्मन कुछ भी करने का प्रयास करें, एक काम वे कभी नहीं कर सकते! वे आपके प्राण को कभी नाश नहीं कर सकते! आपकी देह आपके मूल का प्रत्यक्ष भाग है जबकि आपका प्राण (या आत्मा)आपके बजूद का अप्रत्क्ष भाग।

3. आप यीशु मसीह के निडर गवान बन सकते हैं, क्योंकि शत्रु न तो आपके प्रति परमेश्वर की इच्छा को और न की उसके प्रेम को रद्द कर सकता है।

पढ़ें मत्ती 10:29–31। यह सत्य है कि एक गौरैया के समान, आप भी एक दिन मर जाएंगे। लेकिन यदि परमेश्वर उन गौरैयों की देखभाल करता है जिनका कोई मूल्य नहीं है, तो परमेश्वर तुम्हारी देखभाल क्यों न करेगा, जिनका मूल्य गौरैयों से कहीं अधिक है? परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं कि वह आप की देखभाल करेगा और विशेष रीति से आपके जीवन में काम करेगा। इस धरती पर रहते हुए जो कुछ आपके साथ होता है वह सब उसकी सर्तक आंखों के सामने होता है और वह केवल इसलिए होता है क्योंकि या तो उसने इसकी योजना बनायी है या फिर उस कार्य को होने की अनुमति दी है। (रोमियों 8:28)

4. आप यीशु मसीह के निडर गवान बन सकते हैं, क्योंकि जिस प्रकार आप यीशु को सबसे सामने मान लेते हैं एक दिन वह भी सब के सामने आपको मान लेगा।

पढ़ें मत्ती 10:32–33। मान लेना या अंगीकार करने का अर्थ सार्वजनिक तौर पर स्वीकार कर लेना है कि यीशु मसीह आपका प्रभु और उद्धारकर्ता है। इसका अर्थ है कि आप संसार में किसी भी व्यक्ति के सामने यहां तक कि अपने शत्रु के सामने यीशु मसीह को लेकर नहीं लज्जाते हैं (मरकुस 8:34–38)।अन्तिम न्याय के दिन, यीशु भी सभी कालों में जन्में लोगों के सामने आपकों पहिचान और मान लेगा (मत्ती 25:34–36)।

ख. याद करना व पुनरावलोकन करना

1. किसी खाली कार्ड पर या कॉपी के किसी पेज पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2. ठीक तरीके से बाइबल की आयत को ***याद करें।*** गवाह बनना : मत्ती 10:32
3. ***पुनरावलोकन*** / दो–दो के समूह में बंट जाएं तथा एक दूसरे से पिछली याद की गयी बाइबल की आयत को पूछें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट) [सम्बन्ध] **मसीही परिवार : इफिसियों 6:1–4**

एक साथ मिलकर बाइबल अध्ययन के पाँच कदम वाले तरीके का इस्तेमाल करें तथा इफिसियों 6:1–4 का अध्ययन करें।

कदम 1. पढें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम इफिसियों 6:1–4 को एक साथ ***मिलकर पढ़ें***।
आइये हम बारी बारी करके तब तक एक एक आयत पढ़े जब तक निर्धारित आयतें खत्म न हो जाएं।

कदम 2. खोज। पुनरावलोकन

ध्यान दें । इस अनुच्छेद की कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद की कौन सी सच्चाई ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लिखें। एक या दो बातों को लिखें जो आपकी समझ में आयी हो। उन बातों के बारे में विचार करें तथा उन विचारों को अपनी कॉपी में लिखें।
बाँटें। (समूह के लोगों को दो मिनट सोचने व लिखने का समय प्रदान करने के बाद, अपने विचारों को व्यक्त करें। आइये हम एक दूसरे के साथ उन विचारों को बाँटे जो हमने सीखा या समझा है।
(नीचे कुछ लोगों द्वारा अपने अनुभवों को बांटने के उदाहरणों को दिया है। याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य भिन्न भिन्न बातों को बाँटेंगे, यह जरूरी नहीं है कि उनके भी अनुभव समान हों।)

6:1

खोज 1.मसीही बच्चों को अपने माता पिता की आज्ञा माननी चाहिए।

''हे बालको, प्रभु में अपने माता पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है।'' किसी ने इस प्रकार सोचा कि उन्हें अपने माता का आज्ञाकारी तभी होना है, जब वे प्रभु में हों अर्थात जब उनके माता पिता मसीह हों। लेकिन यह ठीक नहीं है। उस आज्ञा को मतलब है कि बच्चों को अपने माता पिता का आज्ञाकारी इसलिए नहीं होना है क्योंकि उनके माता पिता मसीही है या नहीं, बल्कि इसलिए आज्ञाकारी होना है क्योंकि बच्चे मसीही हैं। आज बहुत से गैर मसीही बच्चे अपने माता पिता की बात को नहीं मानते, मसीही बच्चों को अपने माता पिता की आज्ञा माननी चाहिए, क्योंकि मसीह ने उन्हें ऐसा करने की आज्ञा दी है। अगर उनके माता पिता मसीही या उनके साथ अच्छा बर्ताव करने वाले नहीं है तब भी उन्हें अपने अभिभावको की बात माननी चाहिए।

6:4

खोज 2. मसीही पिता को अपने बच्चों को निरूत्साहित नहीं करना चाहिए।

'' हे बच्चे वालों अपने बच्चों को रिस न दिलाओ''। बच्चों का कर्त्तव्य माता पिता की आज्ञा मानना है तो माता पिता का कर्त्तव्य अपने बच्चों को प्रोत्साहित करना है। यह खण्ड कुलुस्सियों 3:21 में भी लिखा है,'' हे बच्चे वालों अपने बालकों को तंग न करो, न हो कि उनका साहस टूट जाए। बच्चे तब निराश या चिड़चिड़े हो जाते हैं जब उन्हें बार–बार उनकी गलतियों का एहसास दिलाया जाता है और कभी उन्हें सही काम करने पर शाबाशी नहीं मिलती।

मेरे बच्चे होने के कारण, मेरे लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि मैं लगातार अपने बच्चों को प्रोत्साहित करूँ। यद्यपि वे सिद्ध नहीं हैं, फिर भी मुझे जानबूझकर उन्हें रिस नहीं दिलानी या उन्हें दिल को तोड़ना नहीं है। अतः मैंने यह निर्णय लिया है कि मैं उनके लिए प्रोत्साहक बनूगाँ!

कदम 3. प्रश्न वर्णन

ध्यान दें: इस खण्ड के आधार पर आप समूह से कौन सा प्रश्न पूछना चाहेंगे?
आइये हम इफिसियों 6:1–4 में दी गयी सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जिनके बारे में हम अभी तक नहीं जानते हैं।
लिखें। अपने प्रश्नों को सम्भव स्पष्ट स्वरूप प्रदान करें। उसके पश्चात अपने प्रश्नों को अपनी कॉपी में लिखें।
बाँटें (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट तक विचार विमर्श करने करने तथा उन्हें लिखने के बाद, सभी लोगों को अपने प्रश्न पूछने का अवसर प्रदान करें।
चर्चा करें। (फिर, उनमें से कुछ प्रश्नों को चुनकर, अपने समूह में चर्चा करते हुए उन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें)
(नीचे कुछ ऐसे प्रश्नों को व प्रश्नों के उत्तरों पर की गयी चर्चा को उदाहरण के तौर पर दिया गया है जिन्हें विद्यार्थी पूछ सकते हैं)

6:1

प्रश्न 1. किस आयु तक बच्चों को अपने माता पिता की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए?

ध्यान दें। यह एक अति महत्वपूर्ण प्रश्न है, क्योंकि यह प्रश्न संसार भर के सभी समाजों को छूता है। संसार में कुछ संस्कृतियों में बच्चों को सम्पूर्ण जीवनकाल में व हर परिस्थिति में अपने माता पिता के प्रति आज्ञाकारी होने की शिक्षा दी जाती है। माता पिता की मृत्यु होने तक, उनका अपने बच्चों पर अधिकार होता है।

आइये हम सबसे पहले यीशु मसीह के उदाहरण पर ध्यान दें। यीशु मसीह जब बारह वर्ष के बालक थे तो वे अपने माता पिता के आज्ञा माना करते थे (लूका 2:41–52)। लेकिन जब यीशु मसीह व्यस्क होकर अपने जीवन के कामों में व्यस्त हो गये तब यीशु ने अपने माता पिता की बात नहीं मानी और न ही उन्होने उसकी इच्छाओं को पूरा किया (मरकुस 3:31–35)। वह एक व्यस्क था और उसके जीवन के कुछ अपने लक्ष्य थे।

अतः बाइबल हमें यह शिक्षा नहीं देती कि मसीहियों को आजीवन अपने माता पिता की हर परिस्थिति में आज्ञा माननी चाहिए। लेकिन बाइबल यह जरूर सिखाती है कि जब तक वे बच्चे हैं वे अपने माता पिता के प्रति आज्ञाकारी बने, अर्थात जब तक वे अपरिपक्व, नाबालिग और पूरी तरह से माता पिता पर निर्भर हैं। व्यस्क जीवन की शुरूआत तब हो जाती है

जब वे अपने माता पिता का घर छोड़कर अलग रहना प्रारम्भ करते हैं या वे भविष्य में माता पिता पर निर्भर नहीं रहते या वे जब विवाह कर लेते हैं। अतः माता पिता के प्रति आज्ञाकारी होने की एक समय सीमा है। बच्चों को अपने व्यस्क हो जाने तक अपने माता पिता की आज्ञा माननी चाहिए।

6:2

<u>प्रश्न 2. माता पिता का आदर करने के महत्वपूर्ण व्यवहारिक तरीके क्या हैं?</u>

ध्यान दें। हालांकि बच्चों को जब तक वे बच्चे हैं तब तक ही अपने माता पिता की आज्ञाओं को मानना है परन्तु उन्हें अपने जीवन भर माता पिता का आदर करना जरूरी है। 'आदर ' करने का अर्थ, उच्च सम्मान देना, उनका ध्यान रखना, बिना किसी स्वार्थ,भय या अनिच्छा के उन्हें प्रेम करना है। निम्नलिखित उदाहरणों को संसार भर के लोगों के उनके माता पिता के सम्बन्ध, उनके सास–ससुर के साथ सम्बन्ध तथा परमेश्वर पिता के साथ उनके सम्बन्ध को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। अपने माता पिता, सास–ससुर और अपने स्वर्गीय पिता का आदर या अनादर करने के पाँच तरीके हैं।

(1) अपने माता पिता से बहस न करके उनका आदर करें।

जब आप अपने माता पिता से उन चीज़ों को लेकर बहस करते हैं जिनका कोई आत्मिक मतलब नहीं होता है तो आप उनका अनादर करते हैं।

उदाहरण के लिए आप उनसे बहस न करें कि उन्हें किस प्रकार के कपड़ें पहिनने चाहिए या उन्हें टी.वी में कौन सा कार्यक्रम देखना चाहिए या उन्हें घर का कौन सा काम करना चाहिए। बहस करने का मतलब यह जताना है कि आपके माता पिता का दृष्टिकोण बिल्कुल बकवास है।

आप अपने माता पिता का सकारात्मक तरीके से किस प्रकार आदर कर सकते हैं? अपने विचारों को बड़ी विनम्रता के साथ उनके सामने रखें और फिर परमेश्वर को अपनी इच्छा के अनुसार काम करने का अधिकार दे। इस तरीके से आप दर्शाते हैं कि आप विश्वास करते हैं कि हर परिस्थिति में परमेश्वर का नियन्त्रण है, और परमेश्वर उन कामों को पूरा कर सकते हैं जो कार्य आपके हित में हैं।

(2) अपने माता पिता से सलाह लेने के द्वारा उनका आदर करें।

जब आप अपने माता पिता की किसी भी सलाह पर ध्यान दिये बिना ही उसे अस्वीकार कर देते हैं तो आप उनका अनादर करते हैं।

आप अपने माता पिता का सकारात्मक तरीके से किस प्रकार आदर कर सकते हैं? आपके माता पिता जो भी सुझाव या सलाह देते हैं उन्हें सीखने का प्रयास करें। जब आपके पास अवसर है तो आप उनके वर्षों के अनुभव से तथा बुद्धि के संग्रह से सीखें। खास तौर आप उनके महारथ हासिल किये हुए क्षेत्रों, उनके कौशल व गुणों वाले क्षेत्रों से सीखें।

(3)आप अपने वास्तविक जीवन में अपने माता पिता को शामिल करने के द्वारा उनका आदर करें।

जब आप अपने माता पिता को इस बात की भनक नहीं लगने देते कि आप क्या सोच, क्या महसूस या वास्तव में अपने जीवन में क्या कर रहे हैं, तो आप उनका अनादर करते हैं। आप तब भी अपने माता पिता का अनादर करते हैं जब आप उन्हें अपनी योजनाओं के बारे में पता नहीं चलने देते और न हीं उन्हें अपने जीवन के मामलों में कोई हस्तक्षेप करने देते हैं। जब आप अपने माता पिता को अपने दुःख, सुख, अपने आनन्दमय समय या विकट परिस्थियों में शामिल नहीं करते तो आप उनका अनादर करते हैं। अपने माता पिता को अपने जीवन और अपने निर्णयों से दूर रखने का अर्थ है कि वे इस मामले में शामिल होने के लायक नहीं हैं।

आप अपने माता पिता का सकारात्मक तरीके से किस प्रकार आदर कर सकते हैं? अपने माता पिता के साथ अपने जीवन से जुड़ी बातों को बाँटें। कई बार ऐसा करना मुश्किल होता है, लेकिन फिर भी यह अपने माता पिता का आदर करने का एक तरीका है। उनसे बात करने के लिए पहल करें। अपने जीवन से जुड़ी गतिविधियों के बारे में उनसे बात करें: आप स्कूल में और काम पर क्या करते हैं, आप अपने मित्रों के साथ क्या करते हैं या आप अपनी मण्डली के साथ मिलकर क्या करते हैं। उनसे बातें करें कि आप परमेश्वर, लोगों और संसार के बारे में क्या सोचते हैं। उनके साथ अपने मसीही मत पर विचार करें। उन्हें बतायें कि आप क्या सोचते हैं, क्या महसूस करते हैं और क्या करना चाहते हैं। आप अपने माता पिता को अपनी योजनाओं और निर्णयों में शामिल करने के द्वारा उनका आदर करते हैं। अपने माता पिता के अनुभवों और बुद्धिमानी का सम्मान करें और उनसे सलाह लें। भले ही आपका अन्तिम निर्णय उनकी इच्छा के विपरीत

हो, आप उनको एहसास दिलाएं कि आप आपने उनकी सलाह को सुना था और उनके नज़रिये पर गम्भीरता से विचार किया था।

(4) सेवा करने के द्वारा अपने माता पिता का आदर करें।
आप यदि अपने माता पिता के कहने पर ही उनकी सेवा करते हैं तो आप उनका अनादर करते हैं। आप उनसे पहल करने की अपेक्षा करते हैं। यदि वे आपसे न कहें तो आप कोई काम नहीं करते।

आप अपने माता पिता का सकारात्मक तरीके से किस प्रकार आदर कर सकते हैं? अपने आप में यह देखने की आदत बनायें कि आप कहां सेवा कर सकते हैं, कहां पर किसी दूसरे को आपकी सहायता की ज़रूरत है या क्या कोई ऐसा काम है जिसे केवल आप ही कर सकते है या कोई दूसरा काम करना नहीं चाहता है। सेवा व सहायता करने के लिए पहल करें और अपने माता पिता के आदेश का इन्तज़ार न करें।

(5) अपने माता पिता को प्रेम करने के द्वारा उनका आदर करें।
अगर आप परम्परागत या औपचारिक तौर पर अपने माता पिता पर प्रेम प्रगट करते हैं जैसे, उनसे मिलने जाना, उन्हें उपहार देना, या इच्छा पूरी करना, तो आप उनका अनादर करते हैं।

आप अपने माता पिता का सकारात्मक तरीके से किस प्रकार आदर कर सकते हैं? सच्चा मसीही प्रेम औपचारिकताओं या परम्पराओं को पूरा करने से कहीं आगे है। सच्चा मसीही प्रेम दूसरों की कमियों को सहन कर लेता और आपके प्रति उनके द्वारा की गयी गलतियों को भी क्षमा कर देता है। जब आप मसीही बनते हैं तो सामान्यतः अभिभावकों को डर लगता है कि यीशु मसीह के प्रति आपके समपर्ण से आप पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। वे डरते हैं कि आप अपनी पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाएंगे, आपको अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी, आप अपने जीवन में सफल नहीं हो पाएंगे और आपका वेतन कम होगा जिसके कारण आप अपने माता पिता की आर्थिक मदद नहीं कर पाएंगे। उन्हें डर लगता है कि आप अपनी संस्कृति को खो देगें और उनके धर्म की प्रतिष्ठा भंग हो जाएगी। अपने माता पिता के सामने अपने विश्वास सही तरीके से रखें और उन्हें साबित कर के दिखाएं कि आप यीशु मसीह द्वारा आपके लिए किये गये कामों की वजह से अधिक ज़िम्मेदार व अधिक प्रेम करने वाले व्यक्ति बन गये है।

6:4

प्रश्न 3. पिता अपने बच्चों को किसी प्रकार प्रोत्साहित कर सकते है?

ध्यान दें। कई पिता अपने बच्चों को रिस दिलाते हैं। रिस दिलाने का अर्थ उन्हें निरूत्साहित करना है। बहुत से तरीके हैं जिनके द्वारा पिता अपने बच्चों को निरूत्साहित कर सकते हैं। माता पिता की बातों को सुनने के बाद बच्चों की प्रतिक्रिया द्वारा आप समझ सकते हैं कि बच्चों को कौन सी चीजें पसन्द नहीं हैं। उदाहरण के लिए बच्चे चिड़चिड़ाते, क्रोधित होते,तनाव महसूस करते,या अपने माता पिता से अलग हो जाते हैं। ये प्रतिक्रियाएं दर्शाती है कि पिता को बच्चों के साथ अपने व्यवहार को बदलने की जरूरत है।

किस प्रकार एक पिता अपने बच्चों में आदर को संचारित कर सकता है? मेरे विचार से वह तीन क्षेत्रों में बच्चों को विकास करने की अनुमति देने के द्वारा ऐसा कर सकता हैः जिम्मेदारी के क्षेत्र में, अपनी समझ के क्षेत्र में तथा परिपक्व सम्बन्धों के क्षेत्र में विकास करने के द्वारा।

(1) होने दें कि आपके बेटे व बेटियां ज़िम्मेदार बने।
यदि आपके जीवन का मकसद केवल अपने बच्चों को खुश रखना है, तब आपके बच्चे आगे चलकर खराब, स्वार्थी, लापरवाह बनेगें। लेकिन यदि आप उन्हें जीवन के भिन्न भिन्न क्षेत्रों में ज़िम्मेदारियां उठाना सिखाएंगे तो वे आगे चलकर ज़िम्मेदार व्यस्क बन पाएंगे। ज़िम्मेदारियों को विकसित करने के लिए चार स्तर हैं

पहला स्तर, अपने बच्चों के लिए सारे निर्णय लेना। एक बच्चे को आज्ञा मानना सीखना है! यदि बच्चों को आपके द्वारा चुनी गयी कोई चीज़ पसन्द नहीं आती है तो आप उसके सामने दूसरा विकल्प रखें। लेकिन बच्चे को चुनाव करना ज़रूर सीखना है! आप इस काम को तब करें जब आपका बच्चा बहुत छोटा हो। बच्चे आपके निर्णयों व चुनावों के द्वारा ही सीखते हैं कि क्या सही और क्या गलत है। लेकिन जैसे जैसे आपका बच्चा बढ़ता है आपके लिए उन्हें ज्यादा से ज़्यादा ज़िम्मेदारियां सौंपना ज़रूरी है।

दूसरा स्तर, अपने बच्चों के साथ मिलकर निर्णय लेना या चुनाव करना तथा उन कामों को मिलकर पूरा करना। आप इन कामों को खास तौर पर तब करते हैं जब आपका बच्चा प्राथमिक स्कूल में होता है। उनके सामने एक अच्छे आदर्श को रखें और उसके साथ साथ गुणवत्ता के स्तर व पारिवारिक नियमों को भी निर्धारित करें।

तीसरे स्तर में अपने बच्चों को अपने आप निर्णय लेने या चुनाव करने दीजिए, लेकिन अब भी उनको आपकी स्वीकृति पाने तथा सरक्षण की जरूरत है। यह काम आप उनके हाई स्कूल में होने पर करते हैं। वे जितनी आजादी प्राप्त करते हैं उतना ही उनको अधिक जिम्मेदारी निभाने वाला तथा आपके प्रति उत्तरदायी होना बहुत जरूरी है। ज़िम्मेदारियां उठाने का प्रशिक्षण देने के लिए कुछ क्षेत्र निम्नलिखित हैं: उनका गृहकार्य या काम, पारिवारिक रिश्ते, संयम, आर्थिक प्रबन्ध, अकेले सफर करना, दोस्त बनाना तथा परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करना।

अन्तिम स्तर में आप बच्चों को सारे काम पूरी तरह से अपने आप करने दें। आप उन्हें व्यस्क होने पर ऐसा करने देते हैं। अब वे परिपक्व व्यस्क हो चुके हैं और अब वे आपके प्रति नहीं वरन अपने सारे कामों में परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं। लेकिन आप आज भी मांग करने पर अपनी सलाह देने व उनकी सहायता करने के लिए उपलब्ध हैं। आपकी जिम्मेदारी अब उनको प्रेम करना, उनके लिए प्रार्थना करना और उनकी सहायता करना है जब चीज़ें उनकी हद से बाहर हो जाएं।

(2) होने दें कि आपके बच्चे अपने विश्वास को लेकर सुनिश्चित हों।

जब तक आप यह चाहते हैं कि आपके बच्चे आपके विश्वास या विचार से सहमत रहें, तब तक वे अपने विचार या विश्वास मत को विकसित करने का प्रयास नहीं करेंगें। इसलिए ऐसी जबरजस्ती न करें कि उन्हें आपके विश्वास मत, प्राथमिकताओं, अहमियत को मानना ही पड़ेगा, परन्तु अपने मत, विश्वास, अहमियत, प्राथमिकताओं को निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करें और मदद करें उनके सभी विचार बाइबल पर आधारित हों। इस तरह से वे एक जिम्मेदार व्यस्क बन पाएंगें।

अपने विश्वास का र्निमाण करने के लिए तीन कदम हैं

- पहला कदम। होने दें कि आपके बच्चें अपने आप बाइबल से सच्चाई की खोज करें (लूका 10:25–26)।
- दूसरा कदम। होने दें कि आपके बच्चे उस सच्चाई अनुसार काम करें।
- तीसरा कदम। उन कामों के परिणाम को लेकर आपस में चर्चा करें।

उदाहरण के लिए, कपड़े पहनने के मुददे पर, बाइबल में दो सिद्धान्त दिये गये हैं, आपके परिधान सामाजिक तौर पर ग्रहणयोग्य हों, जिसका मतलब है कि आपके कपड़ों को देखकर लोग कामुक न हों,और आपके कपड़े उपलक्ष्य के हिसाब से सास्ंकृतिक तौर पर उचित हों। ये दोनों सिद्धान्त निर्णय लेने के लिए एक सीमा को निर्धारित करते हैं। इस सीमा के दायरे में आपके बच्चों को पूरी आज़ादी है। आपका बच्चा अपना निर्णय लेता या चुनाव करता है। आप अपने बच्चें के साथ बैठकर उसके चुनाव के परिणाम तथा दूसरों व अपने ऊपर उसके प्रभावों पर चर्चा करें।

(3) होने दें कि आपके बेटे या बेटियां परिपक्त रिश्ते कायम करें।

आपका लक्ष्य स्वाधीनता निर्मित करना नहीं बल्कि स्वस्थ आन्तरिक–निर्भरता निर्मित करना है। बाइबल के अनुसार हर एक विश्वासी एक परिवार,एक कलीसिया या एक विशेष समाज का हिस्सा होता है। बाइबल का दृष्टिकोण किसी ऐसे समाज के बारे में बात नहीं करता, जिसमें हर कोई अपने ही रास्ते चला जा रहा हो, वरन बाइबल परिवार के सदस्य, कलीसिया के सदस्य और समाज के सदस्य के बारे में बात करती है। बाइबल के मत के अनुसार हम सभी को एक दूसरे की आवश्यकता है और हम सभी में एक दूसरे की सहायता करने के लिए अनोखी योग्यता पायी जाती है। इसलिए अपने बच्चों के अच्छे दोस्त बनाने में, भिन्न वंर्गों और समाज के लोगों के साथ रिश्ते बनाने और विपरीत लिंग के लोगों के साथ उचित सम्बन्ध बनाने में सहायता करें।

6:4

प्रश्न 4. मसीही माता पिता को अपने बच्चों की किस प्रकार परवरिश करनी चाहिए?

ध्यान दें। हर एक पिता की दो प्रमुख जिम्मेदारियां होती हैं अर्थात बच्चों की मां को प्रेम करना तथा बच्चों की परवरिश करना। अपने बच्चों को परमेश्वर के मार्गो की शिक्षा देने का अर्थ बच्चों को बाइबल की सच्चाईयों की शिक्षा देना है। बच्चों की परमेश्वर में होकर परवरिश करने का अर्थ,बच्चों को बाइबल की शिक्षाओं का पालन करना सिखाना है जिसका

मतलब बाइबल में पायी जाने वाली शिक्षाओं को अपने जीवन में इस्तेमाल करना है। प्रशिक्षण देने का अर्थ उन्हें बार बार प्रोत्साहित करना है। किसी को प्रशिक्षण देने में कई बार अनुशासन या उन्हें दण्ड देने की जरूरत पड़ती है।

(1) अपने बच्चों को इस संसार में एक उत्तम नागरिक बनने की शिक्षा दें।
अपने बच्चों को दिमागी,शारीरिक,भावनात्मक, आत्मिक और सामाजिक परिपक्वता की शिक्षा दें।
अपने बच्चों को बुद्धिमान बनाएं।
अपने बच्चों को प्रेम करना सिखाएं।
स्वस्थ्य परिवार ही मिलकर स्वस्थ्य राष्ट्र का र्निमाण करते हैं।
(2) अपने बच्चों को स्वर्ग के राज्य का उत्तम नागरिक बनाएं।
अपने बच्चों को पूरी तरह से परमेश्वर के अधीन रहना सिखाएं जैसा कि उसने अपने आपको बाइबल में प्रगट किया है।
हर परिस्थिति में उन्हें परमेश्वर पर भरोसा करना सिखाएं।
बिना किसी शर्त उन्हें परमेश्वर की आज्ञा मानना सिखाएं।
उन्हें पवित्र व धार्मिक जीवन व्यतीत करना सिखाएं।
सबसे बढ़कर, उन्हें परमेश्वर से प्रेम करना, अपने पड़ोसी से प्रेम करना और उन्हें स्वीकार करना सिखाएं।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दें: इस अनुच्छेद का कौन सा सत्य मसीहियों के लिए सम्भवतः उपयोगी है?
बाँटें व लिखें/ आइये हम एक दूसरे के साथ विचार विमर्श करके इफिसियों 6:1–4 के आधार पर इस्तेमाल में आने वाली बातों की एक सम्भावित सूची बनाएं।
ध्यान दें/ इनमें से कौन सी उपयोगी बातें हैं जिन्हें परमेश्वर चाहते हैं कि आप उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन में इस्तेमाल करें?
लिखें/ अपने व्यक्तिगत अनुभवों को अपनी कॉपी में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को बाँटंने में स्वतन्त्र महसूस करें। (ध्यान रखें कि हर एक समूह में लोग अलग सच्चाईयों का इस्तेमाल करेंगे या उसी सच्चाई का अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगे। सम्भावित इस्तेमाल की सूची निम्नलिखित है।)

1. इफिसियों 6:1–4 से उपयोग की जाने वाली सम्भावित बातें।

6:1 नाबालिग बच्चों के लिए। परमेश्वर की आज्ञाओं व बाइबल की शिक्षाओं विरूद्ध आज्ञाओं को छोड़ अपने माता पिता की सारी बातों को मानें।

6:2 सारे लोगों के लिए। हर परिस्थिति में अपने माता पिता, सास–ससुर और अपने परमेश्वर पिता का आदर करें। उनका आदर करने का कोई भी एक व्यवहारिक तरीका अपनाएं और कुछ समय के उसी का अभ्यास करते रहें।

6:4 सारे पिताओं के लिए। अपने बच्चों को कभी रिस न दिलाये या निरूत्साहित न करें, चाहे वह बालक हो या व्यस्क।

6:4 पिताओं और नाबालिग बच्चों के लिए। अपने बच्चों की परवरिश बाइबल के सिद्धान्तों के अनुसार करें और उन शिक्षाओं को जीवन में इस्तेमाल करें।

2. इफिसियों 6:1–4 में पाये जाने वाले व्यक्तिगत तौर पर इस्तेमाल किये जाने वाले तत्व।

अपने माता पिता से सलाह मांगने तथा उनके जीवन से अनुभवों को सीखना मैं अपने जीवन की आदत बनाना चाहता हूँ। मैं निश्चय ही अपने निर्णय व चुनाव खुद तय करूँगा लेकिन मैं उनके परामर्श को ध्यान से सुनने के द्वारा उन्हें आदर देना चाहता हूँ। मैं अपने बच्चों को प्रोत्साहित करने वाला बनकर उन्हें जिम्मेदार बनने के लिए,अपने विश्वास के प्रति सुनिश्चित होने के लिए लोगों के साथ परिपक्व सम्बन्ध स्थापित करने तथा संयम के साथ अपनी भावनाओं को प्रगट करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ। मैं मानता हूँ कि परमेश्वर ने एक पिता के रूप में मुझे एक बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है।

कदम 5. प्रार्थना	प्रतिउत्तर

आइये इफिसियों 6:1–4 में परमेश्वर द्वारा सिखाए गये सत्यों के आधार पर प्रार्थना करें।
(जो कुछ आपने बाइबल अध्ययन के दौरान सीखा है, प्रार्थना में उसका प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करना सीखें। याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग विषयों के लिए प्रार्थना करेंगे)

5	**प्रार्थना** (8मिनट) [मध्यस्थता] दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें।*** एक दूसरे तथा संसार के अन्य लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) [निर्धारित कार्य] अगले अध्याय के लिए

(समूह का अगुवा : समूह के सदस्यों को यह तैयारी गृह कार्य के रूप में लिखित तौर पर प्रदान करें या उन्हें डाउन लोड करने दें।)

1. सर्मपण: चेले बनाने के लिए समर्पित हों।

किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के जन के साथ इफिसियों 6:1–4 पर आधारित बाइबल अध्ययन को पढ़ें, सिखाये या प्रचार करें।

2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना। रोमियों 9–12 तक रोज आधा अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताएं। पसन्दीदा सच्चाई के तरीके का इस्तेमाल करें। लिखें।
3. याद करना: गवाही देना । मत्ती 10:32। प्रतिदिन बाइबल की 5 याद की गयी आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना: किसी व्यक्ति या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं (भजन 5:3)
5. चेलों को बनाने के सम्बन्ध में अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें आराधना के गीत, शिक्षा तथा तैयारी की सामग्री को भी लिख सकते हैं।

अध्याय 23

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	आराधना (20 मिनट) (परमेश्वर की विशेषताएं) परमेश्वर अनुग्रहकारी है।

मनन ।

परमेश्वर अनुग्रहकारी है पर आधारित शिक्षा को पढ़ें या सिखाएं।

1. फरीसियों की परम्परा।

पढ़ें। मरकुस 7:1–23। फरीसी कटटर 'धार्मिक' प्रवृति के थे। वे दिन में तीन बार प्रार्थना किया करते थे, सप्ताह में दो दिन उपवास रखा करते थे, वे अपनी छोटी से छोटी कमाई या सम्पत्ति का दसवां अशं दिया करते थे तथा अपने ही बनाये हुए 613 नियमों, कानूनों, व्यवस्थाओं को मानने की पूरी कोशिश किया करते थे। फरीसी बहुत धार्मिक थे, परन्तु वे स्वतन्त्र नहीं थे। वे पाप के गुलाम (यूहन्ना 8:34) तथा अपने ही बनाये हुए नियमों के गुलाम थे(यशायाह 29:13)।

2. कुछ आधुनिक मसीहियों की परम्पराएं।

पढ़ें। मरकुस 7:7 " वे व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं "। इसी प्रकार से कुछ कलीसिया चाहती हैं कि उनके सदस्य हर दिन सभा में मौजूद रहा करें, वे चाहते हैं कि वे प्रभु के दिन दो सभाओं में हिस्सा लें, वे किसी खास तरीके से अराधना करने तथा बपतिस्मा देने की मांग करते हैं, वे कलीसिया के अन्दर विशेष प्रकार की पौशाक पहनने पर ज़ोर देतें हैं, वे चाहते हैं कि लोग अपनी आमदनी का निश्चित अंश कलीसिया में दान दें, वे मांग करते हैं कि कलीसिया के सदस्य हर बात में पासबान व पुरनियों की बात को मानें, वे चाहते हैं कि सदस्य कुछ ऐसे सिद्धान्तों पर विश्वास करें जो स्पष्ट तौर पर बाइबल पर आधारित नहीं हैं,वे चाहते हैं सदस्य परमेश्वर के साथ प्रतिदिन व्यक्तिगत समय व्यतीत किया करें।

यद्यपि इन सभी मागों की शिक्षा बाइबल में नहीं दी गयी है, फिर भी कुछ कलीसियाएं अपने सदस्यों के लिए नये नये नियमों और व्यवस्थाओं को निर्धारित करने में लगी हैं, जो उन सदस्यों को ''मैं परमेश्वर के अनुग्रह में जीवित रहना चाहता हूँ'' से ''मुझे मनुष्यों द्वारा बनाये गये नियमों के अनुसार चलना ही पड़ेगा'' की ओर ले जाते हैं।

3. व्यवस्था के अधीन या अनुग्रह के अधीन होना।

पढ़ें यूहन्ना 1:16–17; रोमियों 5:12,17–18; 6:14। मसीही 'व्यवस्था के अधीन नहीं वरन अनुग्रह के अधीन हैं''।

- **कानूनी तौर से व्यवस्था के अधीन होना।**

आदम 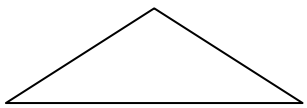 सारे लोग जन्म लेने के द्वारा आदम से जुड़े होने के कारण व्यवस्था के अधीन, तथा पाप व मृत्यु के गुलाम हैं।	परमेश्वर पवित्र व धार्मिक होने के कारण चाहते हैं कि उनके द्वारा ठहराये गये सारे नैतिक नियमों को पालन किया जाए और जितने लोग उसके बनाये नियमों को उल्लंघन करे उसे ज़रूर दण्ड दिया जाए। सारे लोग प्राकृतिक रूप में कानूनी तौर पर 'व्यवस्था के अधीन' हैं। और सब लोगों के पाप करने के कारण (रोमियों 3:23) सभी लोग दण्ड पाने के हकदार है (गलातियों 3:10; याकूब 2:10)

- **कानूनी तौर पर अनुग्रह के अधीन होना।**

मसीह 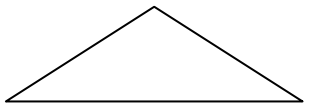 सारे लोग विश्वास के द्वारा मसीह से जुड़े होने के कारण पूरी तरह धर्मी ठहराए गये हैं, और अनुग्रह के अधीन हैं।	लेकिन परमेश्वर के प्रेमी परमेश्वर होने के कारण, उसके प्रेम ने हर एक उस जन के पापों का प्रायश्चित कर लिया है जिसने मसीह पर विश्वास किया(रोमियो 3:24–25)। यीशु मसीह ने हमारे बदले परमेश्वर की व्यवस्था की मांग को पूरा कर दिया है(2 कुरिन्थियों 5:21)। जितने लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, वे 'व्यवस्था के अधीन नहीं', लेकिन 'अनुग्रह के अधीन' हैं

मसीहियों को उनके पाप के साथ संधर्ष में उत्साहित करने के लिए प्रेरित पौलुस उन्हें सुनिश्चित करता है कि वे अपने *भीतर या बाहर* अब पाप की प्रभुता के अधीन नहीं हैं। वे परमेश्वर की धार्मिक मांग के तहत अब व्यवस्था के अधीन नहीं रहते हैं, बल्कि परमेश्वर के वरदान स्वरूप उसके अनुग्रह में रहते हैं। जो कोई आज भी "व्यवस्था के अधीन" जीवन व्यतीत करता है और जिसने अभी तक क्षमा प्राप्त नहीं की है, जो धर्मी नहीं ठहराया गया है या उसका परमेश्वर से मेल मिलाप नहीं हुआ है, वह कभी शुद्ध नहीं हो सकता है! लेकिन जो कोई "अनुग्रह के अधीन'' रहता है, जिसे क्षमा प्राप्त हो गयी है, जिसका धर्मी ठहरकर परमेश्वर के साथ मेल मिलाप हो चुका है, **वह पाप में नहीं रह सकता, नहीं रहना चाहता और न रहेगा**! इस संसार में परिशुद्ध व नया जीवन व्यतीत करने के लिए, हर व्यक्ति को यीशु मसीह में प्राप्त परमेश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता होती है।

- **भावनात्मक रीति से व्यवस्था के अधीन होना।**

जब भी कभी कोई मसीही या मसीही कलीसिया मनुष्यों के बनाये हुए नियमों को जीवन को आधार बना देते हैं, तो वे एक आज़ाद मसीही को पुनः गुलामी की ओर धकेलते हैं। कलीसिया के द्वारा बनाये गये सारे नियम विश्वासी को एक बार फिर आत्मिक रूप में 'व्यवस्था के अधीन' बना देते हैं। आत्मिक तौर पर ''व्यवस्था के अधीन' होने का अर्थ है कि मसीही महसूस करता है कि 'उसे कुछ निश्चित मांगों को पूरा करना है'' या फिर ''उसे इस दायित्व को पूरा करना ही है''। मनुष्य के द्वारा बनाये गये ये नियम, व्यवस्थाएं उपकार, मज़बूरी और कर्तव्य को दर्शाते हैं जिसका अर्थ है कि मसीही को अपनी इच्छा के हिसाब से जीवन जीने का अधिकार नहीं है! वरन उस कलीसिया के लोग नियम निर्धारित करते हैं कि उसे उस कलीसिया में ग्रहण योग्य ठहरने के लिए किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना होगा।जब वह व्यक्ति मनुष्यों के बनाये नियमों, मांगों तथा व्यवस्थाओं का सफलता पूर्वक पालन नहीं कर पाता, तो इस मण्डली का अगुवा व सदस्य मिलकर उस पर ''अनाज्ञाकारी मसीही', ' गैरआत्मिक मसीही '' तथा '' एक बहुत बुरा आदमी'' होने का आरोप लगाते हैं।

जब कभी वह व्यक्ति मानवीय नियमों, मांगों व व्यवस्था का उल्लंधन करता है तो, वे लोग इस मसीही को एहसास दिलाते हैं कि अब परमेश्वर व दूसरे मसीही गण उस से प्रेम नहीं करते! अतः इस दोष भावना, दण्ड व बदनामी से बचने के लिए व्यक्ति मनुष्यों के बनाये हुए नियमों व व्यवस्थाओं का प्रबलता से पालन करता है। जब वह ''व्यवस्था के अधीन'' जीवन बिताता है तो वह भावनात्मक तौर पर केवल यह सोचता है कि नियमों को बनाने वाले सदस्यों व अगुवों की नज़र में **वह कौन है**! इस तरीके से ये लोग न केवल मनुष्यों द्वारा बनाये गये नियमों के बल्कि उन नियमों को बनाने वाले लोगों के भी गुलाम बन जाते हैं। बाइबल हमें आगाह करती है कि यदि हम मनुष्यों को प्रसन्न करते हैं तो हम मसीह के सेवक नहीं हो सकते (गलातियों 1:10)।

- **भावनात्मक रीति से अनुग्रह के अधीन होना।**

कानूनी रूप में मसीह पर विश्वास करने वाला विश्वासी अब परमेश्वर की दोष लगाने वाली व्यवस्था के अधीन नहीं है। जब परमेश्वर उसकी ओर देखते हैं तो केवल यीशु मसीह की धार्मिकता ही नज़र आती है(2कुरिन्थियों 5:21)। कानूनी

तौर पर मसीही लोग परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन नहीं वरन उसके अनुग्रह के अधीन हैं। इसके अलावा *भावनात्मक व व्यवहारित रीति से* मसीह में विश्वासी मनुष्यों के बनाये गये उन नियमों के अधीन नहीं है जो उन पर आरोप लगाती या उन्हें दोषी और बुरा महसूस करने पर मज़बूर करती है। आत्मिक तौर पर मसीहियों को मनुष्यों के द्वारा निर्धारित किये गये किसी नियम के तहत जीवन व्यतीत करने की कोई ज़रूरत नहीं है, वह परमेश्वर के अनुग्रह के अधीन जी सकता है। यादि उससे कोई गलती हो भी जाती है तो उसे ऐसा महसूस करने की कोई ज़रूरत नहीं है कि वह परमेश्वर के प्रेम या उसके भाई बहनों के प्रेम को खो चुका है।

मसीह पर विश्वास करने वाले लोगों के पापों का परिणाम कभी भी परमेश्वर की ओर से दण्ड,दोष या अस्वीकृति नहीं है, लेकिन वह व्यक्ति *परमेश्वर की उपस्थिति से वंचित हो जाता है*! अतः जब कभी कोई मसीही व्यक्ति कोई पाप करता है तो,उसके पास तुरन्त परमेश्वर के अनुग्रह में पुनः वापस आने का मौका खुला होता है, जिसका मतलब परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को बहाल कर लेना है। एक मसीही हमेशा यह चुनाव करने के लिए आज़ाद होता है कि वह मसीही जीवन जिये या नहीं, वह प्रेम करे या न करे, कि वह पूरी तरह से दोष भावना, दण्ड, भय और बुराई से मुक्त होना चाहता है या दोष भावना, दण्ड, भय या बुराई का गुलाम होना चाहता है।

जब वह आत्मिक रीति से 'अनुग्रह के अधीन' जीवन व्यतीत करता है, तो उसका सारा ध्यान इस बात पर केन्द्रित रहता है कि **उसने परमेश्वर व दूसरों के विरूद्ध क्या किया है।** उसे तुरन्त परमेश्वर की ओर फिर कर अपने प्रेम रहित व्यवहार का अंगीकार करके माफी मांगनी चाहिए। और फिर लगातार परमेश्वर की संगति में जीवन व्यतीत करना चाहिए (1यूहन्ना 1:9)

मसीह द्वारा किये गये उद्धार के सिद्ध कामों के कारण आप वैध रूप से 'अनुग्रह के अधीन' हैं। आप अब धर्मी हैं।

और यदि आपसे कोई पाप हो जाता है तो, परमेश्वर की ओर फिरें, अपने पापों को अंगीकार करें तथा परमेश्वर की संगति में बने रहें। आप अब आत्मिक तौर पर परमेश्वर के 'अनुग्रह के अधीन' रह सकते हैं। आप शुद्ध हो चुके हैं।

आराधना।

परमेश्वर के अनुग्रहकारी होने के लिए उसकी विशेषताओं के साथ आराधना करें। परमेश्वर की आराधना हम पर उसकी दया, अगुग्रह और उस भलाई प्रगट करने के लिए भी करें जिसके हम योग्य नहीं थे। तीन तीन लोगों के छोटे समूहों में उसकी आराधना करें।

3	**बांटें** (20 मिनट) (शान्त समय) रोमियों 9–12

आपने जो कुछ दिये गये बाइबल अनुच्छेद(रोमियो 9–12) से अपने शान्त समय में सीखा है उसे संक्षेप में **बांटें या (अपनी कॉपी में से पढ़ें)।**
बताने वाले व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुनें, उसे गम्भीरता से लें और स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70 मिनट) (शिष्यता) शिष्य की विशेषताएं

क. नये नियम में 'अनुशासन' शब्द को अर्थ

1. एक शिष्य किसी गुरू या समूह के अगुवे का अनुकरणकर्ता होता है।
पढ़ें मरकुस 2:18; लूका 6:17; यूहन्ना 6:60,66; 9:28।
खोजें व चर्चा करें। इस अनुच्छेद में 'शिष्यों' का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। पुराने ज़माने में धार्मिक अगुवों व विद्वानों के शिष्य हुआ करते थे। फरीसीयों के शिष्य या चेले थे। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के भी शिष्य थे। और यीशु के पास शिष्यों की एक बड़ी भीड़ थी। इन अनुच्छेदों में 'शिष्य' शब्द का अर्थ अुनकरणकर्ता,कोई जो जुड़ा हो, किसी के साथ हो, या किसी विशेष अगुवे या समूह के अगुवे का अनुयायी है। हालांकि प्रारम्भ में बहुत से लोग यीशु मसीह का अनुसरण करते थे लेकिन बाद में उन्होंने अनुसरण करना बन्द कर दिया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वे केवल यीशु मसीह द्वारा किये जाने वाले चमत्मारों में इच्छुक थे, उससे रिश्ता रखने में नहीं।

2. शिष्य एक मसीही होता है।

पढ़ें प्रेरितों 6:7; 9:1–2,19; 11:26; 14:21–22।

खोजें व चर्चा करें। इन अनुच्छेदों में 'शिष्य' शब्द को क्या अर्थ है?

ध्यान दें। मसीही कलीयिसाओं के प्रारम्भिक इतिहास में, कई बार मसीहियों को एक मार्ग पर चलने वाले लोग कहा जाता था। उन्हें ज्यादातर शिष्य या चेले कहते थे। शिष्य शब्द एक नये धार्मिक समाज को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता था और उसका मतलब ठीक वैसा ही था जैसे मसीही शब्द का है।

निष्कर्ष। एक शिष्य विशेष गुणों को धारण करके यीशु मसीह का अनुसरण करने वाला और उसका विद्यार्थी है।

ख. शिष्य की विशेष विशेषताएं।

परिचय। एक शिष्य विशेष गुणों का धारण करके यीशु मसीह का अनुसरण करने वाला और उसका विद्यार्थी होता है।

1. यीशु का सच्चा शिष्य यीशु मसीह का अनुसरण करता है।

पढ़ें यूहन्ना 1:35–51; लूका 5:1–11;मरकुस 3:13–15

पढ़ें व चर्चा करें। यीशु का सच्चा शिष्य क्या होता है?

ध्यान दें। यीशु मसीह के आमन्त्रण पर ध्यान दें ''आओ और देखो' और 'मेरे पीछे हो लो। शिष्यता की बुलाहट वास्तव में जहां कहीं यीशु जाए 'उसके साथ होने' की थी। यीशु के सीधे व सामर्थी व्यक्तित्व तथा उसकी शक्तिशाली शिक्षाओं के प्रभाव ने लोगों पर यीशु का शिष्य होने का दबाव डाला। इन अनुच्छेदों में "शिष्य" का अर्थ ऐसा व्यक्ति होने से है जो यीशु के सारे कामों में सदा उसके साथ रहे। शिष्यता के प्रति यीशु की बुलाहट में कोई सामाजिक सीमा नहीं थी। उसके शिष्यों में पतरस, याकूब व यूहन्ना के जैसे पापी मछुवारे थे, शमौन नामक एक राजनीतिज्ञ, और तुच्छ चुंगी लेने वाला मत्ती भी था।

2. यीशु का सच्चा शिष्य यीशु मसीह से सीखता है।

पढ़ें लूका 6:40

खोजें व चर्चा करें। यीशु का सच्चा शिष्य क्या है?

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में " शिष्य "का अर्थ विद्यार्थी, अनुयायी या सीखने वाले से है।यीशु ने अपनी शिक्षाओं में कहा कि यदि कोई शिक्षक होना चाहता है तो वह पहले शिष्य या चेला बने। वह प्रशिक्षक बनने से पहले विद्यार्थी बने।

एक चेला देखने, सुनने और नकल करने के द्वारा सीखता है (यूहन्ना 13:13–15; मत्ती 4:23; 11:28–30; प्रेरितों 4:13; फिलिप्पियों 4:9–12)। वह यीशु का अनुसरण करते हुए सीखता है। वह यीशु के जीवन व सेवकाई का अवलोकन करता है। वह यीशु मसीह व प्रेरितों की शिक्षाओं व उनके उदाहरण से सीखता है।वह यीशु की शिक्षाओं का अभ्यास करने के द्वारा भी सीखता है। जिसे उसे ज्यादा से ज्यादा अनुभव प्राप्त होता है।

3. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य व्यक्तिगत तौर पर यीशु मसीह पर विश्वास करता है।

पढ़ें यूहन्ना 3:16–21

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या होती हैं?

ध्यान दें। एक शिष्य महज यीशु नामक किसी शिक्षक का अनुसरण नहीं करता वरन वह अपने पूरे मन और ह्रदय से यीशु मसीह में विश्वास करता है। वह विश्वास करता है कि यीशु मसीह मानवीय रूप धारण करके इस दुनिया में लोगों के बीच में रहने के लिए आया। वह विश्वास करता है कि उसे धर्मी ठहराया गया है और उसके पास अनन्त जीवन है।

वह विश्वास करता है कि यीशु जगत की ज्योति है और वह उस ज्योति का अनुसरण करते हुए उस ज्योति में वास करता है।

4. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य यीशु मसीह और उसकी शिक्षाओं को मानता है।

पढ़ें यूहन्ना 8:31–32।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। यीशु मसीह का शिष्य जो उसका मन करे उस बात पर विश्वास नहीं करता और न ही जो उसका मन करे वह काम करता है लेकिन वह यीशु मसीह व उसकी शिक्षाओं पर विश्वास करता है। यीशु मसीह की शिक्षाओं को पालन करने में गरीबों, परेशान व दरिद्र लोगों के प्रति काम शामिल हैं।

5. यीशु मसीह का सच्चा एक सेवक होता है।

पढ़ें यूहन्ना 12:26; 13:12–17(मरकुस 13:34; 1 कुरिन्थियों 3:9)

खोजें व चर्चा करें।यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। यीशु मसीह की बुलाहट इस धरती पर उसके काम को पूरा करने में उसका साथ देने की थी। इस धरती पर हर एक विश्वासी को पूरा करने लिए एक निर्धारित काम दिया जाता है। सेवक की एक और विशेषता यह है कि वह उन कार्यों को करना पसन्द करता है जिसे कोई कर नहीं पाता या कोई करना पसन्द नहीं करता। वह घरों के सबसे छोटे सेवक का काम भी करने को तैयार होता है जैसे, मुसाफिरों के पैर धोना।

6.यीशु मसीह का सच्चा शिष्य अपने सम्बन्धों में प्रेम प्रगट करता है।

पढ़ें यूहन्ना 13:34–35 (1 कुरिन्थियों 13:4–8)।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। यह प्रेम यीशु के प्रेम के समान ही निःस्वार्थ व आत्म–बलिदान चढ़ाने वाला प्रेम होता है। प्रेम धीरजवन्त और कृपालु होता है। प्रेम नम्र, दयालु और उदार होता है। प्रेम उच्च आचरण करने वाला व संयमी होता है। प्रेम क्षमा करता तथा दूसरों की बढ़ती को देखकर प्रसन्न होता है। प्रेम लोगों पर भरोसा करता है और वह आशा रखता है कि परमेश्वर परिस्थितियों को बदल सकता है। प्रेम लोगों के प्रति भलाई करने में धैर्य रखता है और लोगों को परमेश्वर व अन्य लोगों के प्रति भला व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

7. यीशु मसीह का सच्चा चेला यीशु में बना रहता है।

पढ़ें यूहन्ना 15:5–6

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। यीशु मसीह में बने रहने का अर्थ है कि उस व्यक्ति ने यीशु को अपने जीवन व हृदय में ग्रहण किया है। एक सच्चा चेला यीशु मसीह व बाइबल से व्यक्तिगत रिश्ता बनाने के लिए प्रयास करता है। वह अपने सम्पूर्ण जीवन को यीशु मसीह व उसकी शिक्षाओं के प्रति समर्पित करता है। परन्तु यीशु के साथ यह सम्बन्ध दिखावटी नहीं वरन सच्चा होना चाहिए। जो दिखावे के लिए यीशु मसीह से रिश्ता रखता है उसे नरक में फेंक दिया जाएगा।

8.यीशु मसीह का सच्चा शिष्य यीशु मसीह के वचनों द्वारा नियन्त्रित व रूपान्तरित होता है।

पढ़ें यूहन्ना 15:7क

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। यीशु मसीह के वचन नये शिष्यों(यूहन्ना 15:3) को शुद्ध करते(धर्मी ठहराते) हैं। शिष्य का जीवन, मन, हृदय और व्यवहार यीशु के वचनों द्वारा नियन्त्रित व प्रभावित होना चाहिए, जिसके द्वारा वह लगातार बदलते हुए उत्तम बन जाता है(यूहन्ना 15:7)

9. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य यीशु के वचनों के अनुसार प्रार्थना करता है

पढ़ें यूहन्ना 15:7ख,16 (1यूहन्ना 5:14)

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

10. यीशु का सच्चा शिष्य बहुतायत से और बने रहने वाला फल लाता है।

पढ़ें यूहन्ना 15:8,16

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। सबसे प्रमुख शिक्षा यह है कि जब शिष्य मसीह में बना रहता है तब ही आत्मिक फल लाता है। बहुतायत से व बने रहने वाले फल को लाकर ही मसीही यह साबित करते हैं कि वे यीशु मसीह के सच्चे चेले हैं।

बाइबल में फल के अलग अलग मतलब हैं।

- सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा उत्पन्न फल नये विश्वासी होते हैं(कुलुस्सियों 1:6)
- एक सच्चे परिवर्तित विश्वासी का फल उसकी नयी जीवन शैली व उसके भले काम होते हैं (मत्ती 7:15–23;लूका 3:8–14)
- शिष्यों का र्निमाण करने से मिलने वाला फल सदैव बना रहने वाला फल है। जो परिपक्व व धीरज रखने वाले मसीही को दर्शाता है(यूहन्ना 15:16)
- मसीही जन के भीतर पवित्र आत्मा द्वारा उत्पन्न फल उसका मसीही चरित्र है (गलातियों 5:22–23)

मसीह में बने रहकर शिष्य बहुत सा फल लाते हैं। परमेश्वर द्वारा छांटे जाने से शिष्य और भी अधिक फल लाते हैं। इस छांटने में परमेश्वर द्वारा डांट, संशोधन,कठिन परिस्थितियों द्वारा अनुशासन शामिल है जिसे परमेश्वर एक विश्वासी के जीवन में आने देते हैं। नये विश्वासी को लगातार मज़बूत बनाने तथा उसकी देखभाल करने से,शिष्य बने रहने वाला फल लाते हैं, जिसका अर्थ है कि नये विश्वासी परिपक्व और विश्वास में दृढ़ बन जाते हैं।

बीज बोने वाले दृष्टान्त में यीशु ने शिक्षा दी कि उसके वचन कई विश्वासियों में 100 गुना फल लाते हैं, कुछ 60 गुना और कुछ 30 गुना ही फल लाते हैं(मत्ती 13:23)। यह इसलिए होता है कि सभी मसीही एक समान पश्चाप नहीं करते,भरोसेमन्द, विश्वासयोग्य या साहसी होत हैं, न ही सारे मसीही एक समान प्रचार करने, फल लाने या दूसरे लोगों के चेले बनाने के प्रति उत्साही नहीं होते, और न सारे मसीहियों की परिस्थितियां, लक्ष्य या आत्मिक वरदान एक जैसे होते हैं।

11. यीशु का एक सच्चा शिष्य चारित्रिक प्रशिक्षण ग्रहण करता व सीखता है।

पढ़ें लूका 6:39–42

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। इससे पहले कि परमेश्वर किसी शिष्य को दूसरों को रूपान्तरित करने के लिए इस्तेमाल करे,एक शिष्य को पहले परमेश्वर द्वारा रूपान्तरित होना सीखना चाहिए। वह दूसरों को सुधारने से पहले अपनी कमजोरियों और असफलताओं को ध्यान देता है। एक शिष्य का लक्ष्य अपने चरित्र, व्यक्तित्व व व्यवहार में मसीह के समान बनना होता है।

12. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य कुर्बानी देने वाला व खुद का इन्कार करने वाला होता है।

पढ़ें लूका 6:23–26

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। मसीह का प्रचार करने और उसके नाम के खातिर अस्वीकृति,लज्जा, और कष्टों के द्वारा, उसके जीवन का उददेश्य केवल प्रतिदिन मसीह को महिमा देना होता है।

13.यीशु मसीह का सच्चा शिष्य संधर्ष, अस्वीकृति और कष्टों को सहने के प्रति समर्पित होने के लिए बुलाया गया है।

पढ़ें लूका 9:57–58।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। पहले प्रकार के शिष्य बिना किसी बुलाहट के यीशु का अनुसरण करना चाहते थे। वह यीशु का अनुसरण करने के लिए इतना उत्सुक थे कि शिष्य बनने के मूल्य को जोड़ना ही भूल गये। उन्होंने यीशु के पीछे बड़ी भीड़ को आते, चमत्कार और लोगों के उत्साह को देखा, और वह यीशु के साथ जुड़ना चाहते थे क्योंकि वह ही सारी गतिविधियों का केन्द्र बिन्दू था। परन्तु जैसे जैसे सुसमाचार की कहानी आगे बढ़ती है, यहूदा यीशु का इनकार कर देता है(यूहन्ना 5:18), गलील उसे बाहर निकाल देता है(यूहन्ना 6:66),गरदेनियों के लोग उससे उनके नगर को छोड़कर जाने की विनती करते हैं (मत्ती 8:34), सामरिया में उसे सिर छुपाने के लिए जगह नहीं मिलती(लूका 9:53),धरती भी उसे रख नहीं

सकती (मत्ती 27:23) और स्वर्ग ने भी उसका साथ छोड़ दिया (मत्ती 27:46)। एक सच्चे शिष्य को संघष, तिरस्कार व कष्ट सहना पड़ता है। यह ही शिष्य बनने की कीमत है (लूका 14:25–30)।

14. यीशु का सच्चा शिष्य बिना किसी शर्त आज्ञापालन के प्रति समार्पित होने के लिए बुलाया गया है।

पढ़ें लूका 9:59–60।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। दूसरे प्रकार का शिष्य अपनी शर्तों पर यीशु का अनुंसरण करना चाहता है। वह यीशु की शर्तों पर यीशु का अनुसरण करने को तैयार नहीं था।एक तरफ तो वह प्रेरितों के समान यीशु का नज़दीकी अनुयायी बनना चाहता था। दूसरी ओर वह यीशु के पीछे होने के लिए शर्त रखता है।वह पहले जाकर अपने पिता को दफनाना चाहता था, जिसकी उसी समय मौत हो गयी थी। यीशु मसीह उसे यह बात समझाना चाहते थे कि वह सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर है और उसकी बात को बिना किसी शर्त, योग्यता या आरक्षण के माना जाना चाहिए। वह उस व्यक्ति को यह समझाना चाहते थे कि परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर का परिवार हमारे अपने परिवार से अधिक महत्वपूर्ण है। याद रखें कि यीशु इस बात को खास प्रकार के शिष्यों से कह रहें हैं न की सारे लोगों से। यीशु के कहने का अर्थ यह नहीं है कि मसीहियों को अपने माता पिता की देखभाल नहीं करनी चाहिए(यूहन्ना 19:26–27) या उनके दफन का इन्तेज़ाम नहीं करना चाहिए (मत्ती26:12)। लेकिन यीशु मसीह के कहने का अर्थ है कि मसीही जन अपने माता पिता से बढ़कर यीशु मसीह को प्रेम करे। शिष्य को बिना किसी शर्त यीशु मसीह का अनुसरण करना चाहिए।

15.यीशु का सच्चा शिष्य यीशु को कभी न छोड़कर जाने का समर्पण करने के लिए बुलाया गया है।

पढ़ें लूका 9:61–62

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। तीसरे प्रकार का मसीही बिना यह जाने कि उसके परिवार, उसके दोस्तों व सांसारिक अभिलाषाओं का उसके जीवन पर कितना गहरा प्रभाव हो सकता हैं,यीशु का अनुसरण करना चाहता है। वह शायद अपने आप को अच्छी तरह से नहीं पहिचानता है। यीशु उसके हृदय में झांककर उन बातों को देख सकते थे जो उसे नज़र नहीं आ रही थी(यूहन्ना 2:25)। यीशु उसके मन व हृदय को जांच सकते थे। यीशु जानते थे कि जब उसका यह महत्वाकांक्षी शिष्य जब घर वापस जाएगा तो, वह अपने ही घर पर रहना पसन्द करेगा और यीशु के साथ नहीं आएगा। यीशु कहते हैं कि मसीही जन को यीशु का अनुसरण करने से कभी पीछे नहीं हटना चाहिए। एक सच्चे शिष्य को पीछे मुड़कर अपनी वृद्धा अवस्था के बारे में चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

16. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य किसी भी रिश्ते से बढ़कर यीशु को प्रेम करता है।

पढ़ें लूका 14:26

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। एक शिष्य यीशु मसीह को अपने माता पिता, अपने परिवार यहां तक कि अपने आप से बढ़कर महत्व देता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोगों को अपने माता पिता व परिवार को त्याग देना या भूल जाना चाहिए। बाइबल मसीहियों को उनके माता पिता की देखभाल करने, अपनी पत्नी को प्रेम करने, बच्चों की परवरिश परमेश्वर के वचनों के आधार पर तथा अपने पड़ोसियों को अपने समान प्रेम करने के लिए कहती है। यह पर इस्तेमाल किये गये 'नफरत' शब्द का अर्थ कम प्राथमिकता देना है (मत्ती 10:37)। यदि परिवार और यीशु मसीह में से किसी को चुनने का सवाल हो तो, चाहे परिवार की चाह कितनी भी प्रबल क्यों न हो, अस्वीकृत कर देनी चाहिए। शिष्य की सर्वोच्च वफादारी यीशु मसीह के प्रति होती है और उसका स्थान कोई रिश्ता छीन नहीं सकता। शिष्य बिना किसी शर्त के यीशु को अपना प्रभु व मार्गदर्शक चुनता है। इसलिए वह अपने सारे रिश्तों को यीशु मसीह के प्रति भक्ति और वफादारी के अधीन कर देता है।

17. यीशु मसीह का चेला एक समर्पित मसीही होने के नाते बलिदान, तिरस्कार,कष्टों को स्वीकार कर लेता है।

पढ़ें लूका 14:27।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। 'क्रूस उठाने'' का सही मतलब यही है।

18.यीशु मसीह का सच्चा शिष्य संसार की सारी महत्वाकांक्षाओं से ज्यादा यीशु को महत्व देता है।

पढ़ें लूका 14:33।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। एक शिष्य यीशु का अनुसरण करने के लिए कुछ भी छोडने के लिए तैयार होता है। वह धन, सफलता, कीर्ति और सामर्थ के प्रेम को उसे यीशु का शिष्य बनने में बाधा बनने नहीं देता। यदि एक तरफ धन, सफलता, कीर्ति और ताकत कमाने और दूसरी ओर यीशु का अनुसरण करने का सवाल हो तो, भौतिकवाद और दुनियावी सफलता के मोह को त्याग देना चाहिए। शिष्य सबसे बढ़कर यीशु मसीह के प्रति समर्पित है और इस समर्पण का स्थान किसी चीज़ ने नहीं लेना चाहिए।

19.यीशु मसीह का सच्चा शिष्य यीशु मसीह का एक गवाह होता है।

पढ़ें लूका 24:45–48।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। शिष्यों को विश्वासयोग्यता के साथ मनन करने या परम्पराओं को आगे बढ़ाने के लिए नहीं जाना जाता। वे तो मसीह के आज्ञाकारी गवाह थे। उनकी गिनती कभी विद्धानों या व्यवस्था के शिक्षकों में नहीं हुई थी, वरन वे उन छोटे बच्चों के बीच में थे जिन पर परमेश्वर ने अपने प्रकाशनों को प्रगट किया था(मत्ती 11:25–27)। वे वह छोटा झुण्ड थे जिन्हें परमेश्वर अपना राज्य देने के लिए प्रसन्न था(लूका 12:32; मत्ती 5:10)।

20 यीशु मसीह का सच्चा शिष्य यीशु के अपमान को सहने के लिए तैयार रहता है।

पढ़ें मत्ती 10:24–25

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। यीशु मसीह के दुश्मन कहते थे कि वह 'शैतान की शक्ति से काम करने वाला''(मत्ती 12:24–27), ' उसमे दुष्टात्मा है'(यूहन्ना 10:20) तथा वह 'मनुष्य के रूप में शैतान है'(मत्ती 10:25)। लोग यीशु के चेलों के साथ भी वैसा ही व्यवहार करेगें जैसा उन्होंने यीशु के साथ किया था। शिष्यों के साथ भी बुरा व्यवहार होगा, उनकी बातों को गलत समझा और तोड़ा मरोड़ा जाएगा।(मत्ती 5:10–12;2 तीमुथियुस 3:12)।

21. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य परमेश्वर की राज्य के सिद्धान्तों का अपने जीवन में इस्तेमाल करता है।

पढ़ें मत्ती 13:52।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। ''राज्य के बारे में निर्देश' पाने का मतलब वास्तव में ' राज्य के मामलों में चेला बनना' था। यीशु का शिष्य 'परमेश्वर के राज्य के सम्बन्ध में' यीशु की शिक्षाओं को समझता और उसका अपने जीवन में इस्तेमाल करता है। उसे मत्ती अध्याय 5से 7 के अनुसार राज्य के जीवन को जीने के लिए, मत्ती अध्याय 13 के बताये गये दृष्टान्त के अनुसार सेवा करने के लिए, तथा मत्ती 18 व 19 में सिखाये गये स्वभाव व रिश्तों को धारण करने के लिए निर्देशित व प्रशिक्षित किया गया है। उसका भण्डार परमेश्वर के राज्य की अनन्त सच्चाईयों से भरा होता है। उसके भण्डार से वह ज्ञान की बातों को बहुतायत से बांटता है। यह सिद्धान्त न केवल पौराणिक, परखे हुए हैं, वरन इन्हें जीवन के हर क्षेत्र तथा विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में नये तरीके से इस्तेमाल भी किया जा सकता है। यीशु मसीह के शिष्य इस काल के सच्चे 'शिक्षक' हैं(मत्ती 23:34)। वे परमेश्वर के राज्य के बारे में बताने वाले तथा परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ नियमों को इस दुनिया में समझाने वाले हैं।

22. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य दूसरे शिष्यों का र्निमाण करता है।

पढ़ें मत्ती 28:18–20

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। वह आस पड़ोस के लोगों में और दूसरे समाज के लोगों में जाकर यीशु की आज्ञाओं को मानना सिखाने के लिए पहल करता है। प्रेरितों के काम में शिष्य की प्रथम प्रगट विशेषता ' मत को मानना' थी। पौलुस का भी यही लक्ष्य था। रोमियों 1:5 में हम पढ़ते हैं कि ''उसके द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें।''और यह ही यीशु मसीह के चेलों का भी लक्ष्य बना। यीशु मसीह के शिष्यों ने सुसमाचार प्रचार किया तथा सारे जगत के लोगों को यीशु मसीह पर विश्वास करना और उनकी बातों को मानना

v/;k; 24

1	प्रार्थना

समूह का अगुवाः प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) (शान्त समय) रोमियों 13–16

आगे बढ़कर संक्षेप में **बताएं** (या अपने नोट्स में से पढ़ें) कि आपने शान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (रोमियों 13–16) से क्या सीखा।
अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) (मसीह में नया जीवन) मसीह में नया जीवन के सन्दर्भ में वचनों का पुनरावलोकन

क. याद की गयी आयतों का पुनरावलोकन करने का तरीका

पहले से याद की गयी बाइबल की आयतों का पुनरावलोकन करने के निम्नलिखित भाग हैं:

1. पुनरावलोकन करना

पुनरावलोकन करने का अर्थ है कि जिन आयतों को रोज़ आपने याद किया था उनमें से 5 को फिर से दोहराएं। आयतों को बार बार दोहराना उसे याद करने व उसको सही उच्चारण करने का सबसे बेहतर तरीका है। इसलिए आप उन 5 आयतों को आने वाले 5 सप्ताहों में दिन में कम से कम एक बार जरूर दोहराऐं जिन्हे आपने सबसे अन्त में याद किया था। इस तरीके से आप बाइबल की हर एक नयी आयत को 'पुनः दोहराव ' प्रणाली में आने से पहले 35 बार दोहरा चुके होते हैं।

2 पुनः दोहराव प्रणाली।

पुनः दोहराव प्रणाली का अर्थ है कि आप पहले याद की गयी सारी आयतों को तीन सप्ताह में एक बार जरूर दोहराते हैं। पुनः दोहराव प्रणाली आपके द्वारा याद की गयी आयतों को याद रखने का सबसे बेहतर तरीका है। अतः 100 पहले याद की गयी आयतो में से, 5 आयतों को प्रत्येक दिन दोहराएं। अतः आप पहले से याद की गयी आयतों को 3 सप्ताह में एक बार पुनः दोहराते हैं।

3. साथ ले कर चलें।

कण्ठस्थ वचनों के कार्ड होल्डर या आयतों को लिखने वाली कॉपी को साथ में रखें। यात्रा के समय, या दिन में खाली समय को आयतें दोहराने, मनन करने तथा प्रार्थना करने के लिए इस्तेमाल करें। पहले याद की गयी 5 आयतों को फिर से दोहराएं। जिन आयतों को आपने पहले दोहराया था उन्हें फिर से दोहराएं। आयतों में लिखी बातों पर मनन करें तथा उसके अनुसार प्रार्थना करें।

4. मूल्यांकन करें।

एक दूसरे से यह जानने के लिए पूछें कि क्या अभी भी आप याद की गयी आयत को ठीक तरह से जानते हैं। सामुहिक सभाओं के दौरान लोगों को दो–दो के समूह में बांट दें और आपस में एक दूसरे द्वारा सबसे आखिर में याद की गयी आयतों को जांचें। इसके अलावा कभी कभी,दो दो के समूह में बंटकर पहले याद की गयी 5 बाइबल की आयतों की श्रृंखला की भी जांच करें। एक दूसरे के साथ मिलकर जांचे कि क्या आपको उस आयत को शीर्षक, हवाला या बिना किसी गलती के वह पूरी आयत याद है। सकेंतक के रूप में, कभी आप शीर्षक, कभी हवाले या कभी बाइबल की आयत के पहले कुछ शब्द बता सकते हैं।

ख. " मसीह में नया जीवन श्रृंखला" को दो दो लोग मिलकर दोहराएं

1. मसीहः 2 कुरिन्थियों 5:17 2. वचन : मत्ती 4:4 3. प्रार्थनाः यूहन्ना 15:7	4.संगतिः 1 यूहन्ना 1:7 5: गवाहीः मत्ती 10:32

4	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट) (सम्बन्ध) असमान जुआ– सम्बन्ध 2कुरिन्थियों 6:14–7:1

एक साथ मिलकर बाइबल अध्ययन के पाचं कदम वाले तरीके का इस्तेमाल करें तथा 2कुरिन्थियों 6:14–7:1 का अध्ययन करें।

कदम 1. पढें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये हम 2कुरिन्थियों 6:14–7:1 को एक साथ **मिलकर पढ़ें**।
आइये हम बारी बारी करके तब तक एक एक आयत पढ़े जब तक निर्धारित आयतें खत्म न हो जाएं।

कदम 2. खोज। **पुनरावलोकन**

ध्यान दें । इस अनुच्छेद की कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद की कौन सी सच्चाई ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लिखें। एक या दो बातों को लिखें जो आपकी समझ में आयी हों। उन बातों के बारे में विचार करें तथा उन विचारों को अपनी कॉपी में लिखें।
बांटें। (समूह के लोगों को दो मिनट सोचने व लिखने का समय प्रदान करने के बाद, अपने विचारों को व्यक्त करें।
आइये हम एक दूसरे के साथ उन विचारों को बांटे जो हमने सीखा या समझा है।
(नीचे कुछ लोगों द्वारा अपने अनुभवों को बांटने के उदाहरणों को दिया है। याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य भिन्न भिन्न बातों को बांटेंगे, यह जरूरी नहीं है कि उनके भी अनुभव समान हों।)

6:14

खोज 1. मसीहियों को प्रत्येक समझौता करने वाली परिस्थिति समझौता करने वाले रिश्ते से तौबा करनी चाहिए।

''अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो' नये नियम की मूल भाषा में यह क्रिया वास्तव में कहती है 'कि अविश्वासियों के साथ असमान जुए में हमेशा के लिए जुते हुए न रहो। इसका कारण यह था कि कुरिन्थियों की कलीसिया के कुछ लोग अविश्वासियों के साथ असमान जूए में जुत गये थे। प्रेरित पॉलुस उन्हें आगे को अविश्वासियों के साथ किसी प्रकार का समझौता न करने की आज्ञा देता है। क्योंकि मैं हमेशा गैर मसीहियों के बीच में रहता हूँ, इसलिए मुझे अपने जीवन को परखने की ज़रूरत है कि कहीं मैं अपने जीवन के किसी क्षेत्र में गैर मसीहियों के साथ जुए में तो नहीं जुता हूँ। मुझे परिस्थितियों और रिश्तों में समझौता करने से रूकना होगा।

6:17

खोज 2. मसीहियों को रिश्तों में समझौता करने से मना किया गया हैं

''इसलिए प्रभु कहता है, उनके बीच में से निकल आओ और अलग रहो''। नये नियम की मूल भाषा में क्रिया वास्तव में कहती है कि 'तुम्हें अविश्वासियों में से तुरन्त बाहर निकल आना चाहिए और तुम्हें निश्चय ही अविश्वासियों से दूर हो जाना चाहिए।' एक बार फिर से इसकी वजह यह थी कि कुरिन्थियों की कलीसिया में कुछ लोग लगातार परिस्थितियों से समझौता कर रहे थे। पॉलुस उनसे हमेशा के लिए इन समझौता करने वाली परिस्थितियों से नाता तोड़ने के लिए कहता है। मसीही लोगों को निश्चित तौर पर कुछ रिश्ते बनाने तथा कुछ गतिविधियों में शामिल होने के लिए कहा गया है। क्योंकि मसीही लोग हमेशा गैर मसीहियों में रहते हैं, इसलिए मुझे मसीहियों को शिक्षा देना ज़रूरी है कि कौन से रिश्ते और गतिविधियों में शामिल होना मसीहियों के लिए निषेध हैं।

कदम 3. प्रश्न **वर्णन**

ध्यान दें: इस खण्ड के आधार पर आप समूह से कौन सा प्रश्न पूछना चाहेंगे?
आइये हम 2 कुरिन्थियों 6:14–7:1 में दिये गये सिद्धान्तों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जिनके बारे में हम अभी तक नहीं जानते हैं।
लिखें। अपने प्रश्नों को सम्भव स्पष्ट स्वरूप प्रदान करें। उसके पश्चात अपने प्रश्नों को अपनी कॉपी में लिखें।
बांटें(समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट तक विचार विमर्श करने करने तथा उन्हें लिखने के बाद, सभी लोगों को अपने प्रश्न पूछने का अवसर प्रदान करें।
चर्चा करें। (फिर, उनमें से कुछ प्रश्नों को चुनकर, अपने समूह में चर्चा करते हुए उन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें)
(नीचे कुछ ऐसे प्रश्नों को व प्रश्नों के उत्तरों पर की गयी चर्चा को उदाहरण के तौर पर दिया गया है जिन्हें विद्यार्थी पूछ सकते हैं)

6:14

प्रश्न1. एक जुआ क्या होता है।

ध्यान दें। यहां पर जुए का अर्थ उस 'दोहरे–जुए' से है, जिसमें दो जानवर अलग बगल जोते जाते हैं। यह एक ऐसा औज़ार है जिसके द्वारा, जो जानवर एक साथ गठे रहते हैं, ताकि वे एक ही दिशा में चल सकें, एक जैसी हरकत कर सकें, एक गति के साथ चल सकें,एक साथ रूक सकें और सामान्य तौर पर सारे काम एक साथ कर सकें। यदि एक पशु सीधी रेखा से अलग चला जाता है तो दूसरा पशु अपने आप उसके साथ साथ खिंच जाएगा। यदि एक पशु धीमा हो जाता या रूक जाता है तो दूसरा भी धीमा होने या रूकने पर मज़बूर हो जाता है। यदि वे दो पशु दो अलग स्वामियों के चलाये चलने लगे तो वे एक दूसरे के साथ खींचा तानी करते हुए मिलेगें जिससे हर प्रकार के काम में बाधा उत्पन्न हो जाएगी।

पौलुस के दिमाग में व्यवस्थाविवरण 22:10 का वचन था जिसमें लिखा था " एक बैल और गधा दोनों संग जोतकर हल न चलाना।'' उसने इस सिद्धान्त को अपना कर यह समझाने के लिए इस्तेमाल किया कि मसीहियों को गैर मसीहियों के साथ असमान जुए में नहीं जुतना चाहिए। जिस मसीही को किसी गैर मसीही व्यक्ति के साथ जुए में जोत दिया गया है एक दिन यह जरूर महसूस करेगा कि वह गैर मसीही व्यक्ति उसे कैसे परमेश्वर की राह से दूर कर देता, उसकी उन्नति को मन्द कर देता और अन्त में उसे मज़बूर कर देता है कि वह परमेश्वर पर विश्वास न करे।

गैर विश्वासियों के साथ में साधारण रिश्ता होने व उनके साथ जुए में जुतने वाले रिश्ते में निम्नलिखित भिन्नताएं होती हैं:

- आप एक अविश्वासी ड्राइवर के साथ बस में यात्रा कर सकते हैं। आप एक अविश्वासी के द्वारा तैयार किये गए खाना को किसी होटल में खा सकते हैं। आप उस स्कूल में भी जा सकते हैं जहां पर आपको पढ़ाने वाला अध्यापक गैर मसीही हो। (हालाकि आप उसके द्वारा सिखाई जाने वाली हर बात पर विश्वास करने के लिए बाध्य नहीं हैं)। हो सकता है कि जहां आप नौकरी करते हैं वहां का स्वामी गैर मसीही हो(लेकिन आप उसकी सारी मांगों को पूरा करने के लिए मज़बूतर नहीं है)। आप चाहें तो किसी गैर विश्वासी के साथ व्यापार कर सकते हैं (जब तक कि आप बीच आपसी सहमती से बाइबल के सिद्धान्तों का उल्लंघन नहीं होता)।
- परन्तु जुए में जुतने वाला सम्बन्ध एक कानूनी रिश्ता होता है (विवाह या व्यापारिक भागीदारी)। जिसके तहत आप बाइबल के सिद्धान्तों को तोड़ने, गलत कामों को करने तथा गलत व्यवहार करने के लिए मज़बूर होते हैं।

6:14

प्रश्न 2 जिन असमान जुओं वाले रिश्तों के लिए बाइबल मना करती है उसके कुछ उदाहरण क्या है?

ध्यान दें।

1. 1 कुरिन्थियों 5:9–11 में असमान जुए का सम्बन्धं

''मैं ने अपनी पत्री में तुम्हें लिखा है कि व्यभिचारियों की संगति न करना। यह नहीं कि तुम बिलकुल इस जगत के व्यभिचारियों, या लोभियों, या अन्धेर करने वालों, या मूर्ति पूजकों की संगति न करो; क्योंकि इस दशा में तो तुम्हें जगत में से निकल जाना ही पड़ता। पर मेरा कहना यह है कि यदि कोई भाई कहलाकर, व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्तिपूजक, या गाली देने वाला,या पियक्कड़, या अन्धेर करने वाला हो,तो उसकी संगति मत करना, वरन ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना।

बाइबल कहती है कि ऐसे लोगों से कोई वास्ता न रखना जो मसीही कहलाते तो हैं परन्तु गैर मसीहियों के समान व्यवहार करते हैं। अतः मसीही जन किसी ऐसे व्यक्ति के साथ ''सामाजिक असमान जुए '' में न जुते जो अपने आप को मसीही कहता तो हो पर उसके काम गैर मसीहियों के समान हों।

2. 1 कुरिन्थियों 6:1–8 में असमान जुए का सम्बन्ध

मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये यह कहता हूँ। क्या सचमुच तुम में एक भी बुद्धिमान नहीं मिलता, जो अपने भाईयों का निर्णय कर सके? तुम में भाई–भाई में मुकद्दमा होता है, और वह भी अविश्वासियों के सामने।

बाइबल आज्ञा देती है कि उन्हें अपने कानूनी मसले किसी गैर विश्वासी न्यायी के पास नहीं ले जाने चाहिए। यदि किसी मसीह का किसी दूसरे मसीह के साथ कोई वाद विवाद या झगड़ा हो तो वे मण्डली में से किसी बुद्धिमान मसीही के पास जाए और वह ही उनका न्याय करे। यदि किसी विवाद का हल न निकल पाये तो नुकसान उठाकर मामले को निर्णायक फैसले के लिए परमेश्वर के हाथों में सौप देना बेहतर है। इसलिए कोई मसीही किसी गैर मसीही व्यक्ति के साथ '' कानूनी असमान जुए ''में न जुते।

3. 1 कुरिन्थियों 7:39 में असमान जुए का सम्बन्ध।

''जब तक स्त्री का पति जीवित रहता है तब तक वह उससे बन्धी हुई है; परनतु यदि उसका पति मर जाए तो जिससे चाहे विवाह कर सकती है, परन्तु केवल प्रभु में।''

बाइबल मसीहियों को आदेश देती है वे केवल मसीही से ही विवाह करें। उस व्यक्ति को मसीही माना जाता है जो सच में परमेश्वर से जुड़ा हो अर्थात पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर उस में वास करता और उसके जीवन में उसकी अगुवाई करता हो। दूसरे शब्दों में एक विश्वासी वह जन है जिसने अपने आप को पूरी तरह से यीशु मसीह की प्रभुता के अधीन कर रखा हो।

2 कुरिन्थियों 6:14 साफ रीति से कहता है कि एक विश्वासी किसी गैर विश्वासी के साथ असमान जुए में न जोता जाए। एक मसीही केवल दूसरे मसीही से ही विवाह कर सकता है।

इस निष्कर्ष का सम्बन्ध उन स्त्री व पुरूष के खास रिश्ते से भी है जो विवाह को दिमाग में रखकर एक दूसरे के साथ मिलते हैं (जिसे कई संस्कृतियों में डेटिंग करना भी कहा जाता है)। असल में गैर मसीही व्यक्ति के साथ धनिष्ट मित्रता ही खतरनाक बात है। जब मित्र धनिष्ट हो जाते हैं तो वे अपने मन की गहन बातों व अपनी भावनाओं के साझा करते हैं और वे बातें उनके ज़हन में हमेशा के लिए बस जाती है। वे एक दूसरे पर निर्भर हो जाते तथा एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। लेकिन एक मसीही व गैर मसीही के बीच घनिष्ट रिश्ता एक असमान जुआ बन जाता है। मसीही जन, गैर मसीही की इच्छाओं, मूल्यों व लक्ष्यों से यूँ ही मुँह नहीं मोड़ सकता। वह गैर मसीही साथी के द्वारा सासांरिक अभिलाषाओं, अहमियत व लक्ष्यों की ओर खिचाव को महसूस करेगा। जो कुछ गैर मसीही विश्वास करता है उससे मसीही जन का विश्वास व व्यवहार प्रभावित होगा। क्योंकि विवाह को ध्यान में रखते हुए स्त्री व पुरूष के बीच में आगे बढ़ता हुआ रिश्ता बहुत मज़बूत व गहरा होता है, मसीही जन को गैर मसीही के साथ इस खास रिश्ते को बनाने के लिए मना किया गया है। बहुत से मसीही लोग कहते हैं, ''लेकिन यदि मैं उस गैर मसीही व्यक्ति से विवाह करता हूँ, तो मैं उसकी मसीह में अगुवाई कर सकता हूँ। क्या इससे परमेश्वर प्रसन्न न होंगे?'' नहीं परमेश्वर इससे बिलकुल प्रसन्न नहीं होगें, क्योंकि परमेश्वर ने 1 कुरिन्थियों 7:39 और 2 कुरिन्थियों 6:14 में इसे स्पष्ट तौर पर मना किया है। परमेश्वर यह भी कहता हैं ''क्या तुम जानते हो कि तुम उस व्यक्ति का उद्धार करा लोगे''? इसलिए एक मसीही किसी गैर मसीही के साथ ''असमान जुए में''या असमान मिलन के जुए'' में नहीं जुत सकता।

वह दिन बड़ा दुखदायी होगा जब आप किसी मानवीय सम्बन्ध के लिए यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध को तोड़ देगें। यदि आपका गैर मसीही मित्र आपको प्रसन्न करने के लिए मसीही बनने का फैसला करता है या आपको प्रसन्न करने के लिए अधूरे ह्रदय से मसीह का अनुसरण करने का फैसला करना है तो कोई फायदा नहीं है। हालांकि परमेश्वर के लिए कोई भी काम असंभव नहीं है, फिर भी हमें बुद्धिमानी के साथ वह करना चाहिए जिसकी परमेश्वर ने हमें आज्ञाएं दी हैं। परमेश्वर ने हमें गैर–विश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतने की आज्ञा दी है, क्योंकि वह हमारी खुशी चाहते हैं।

(4) 1 कुरिन्थियों 10:1 के अनुसार असमान जुए का रिश्ता।

'' और न तुम मूर्तिपूजक बनो, जैसे की उनमें से कितने बन गये थे, जैसे लिखा है ''लोग खाने पीन बैठे और बुतपरस्ती करते हुए उठे।'

बाइबल मसीहियों को आज्ञा देती है कि वे गैर मसीहियों के साथ मूर्तिपूजा में भागीदार न बनें। ऐसी सभाओं में लोग मदहोश होकर आपे से बाहर हो जाते थे। लोग हद से ज्यादा खाते और हद से ज्यादा शराब पीते थे। इस प्रकार की पार्टियां गन्दे नृत्य, तेज संगीत,शोर व घटिया किस्म के मज़ाक से भरी रहती थीं(1 पतरस 4:3–5, इफिसियों 5:3–5)। लोगों ने मूर्तिपूजा, व्यभिचार किया। आज इस प्रकार की पार्टियों का आयोजन डिस्को व क्लबों में किया जाता है। इन जगहों पर कई लोग धूम्रपान, नशीले पदार्थो के सेवन व अनैतिक यौन सम्बन्धों में लिप्त होते हैं। अतः एक मसीही गैर –मसीहियों के साथ मिलकर इस प्रकार की'पार्टियों वाले असमान जुए में न जुतें'।

सारांश। अविश्वासियों के साथ गैर कानूनी जुए वाले रिश्ते, अविश्वासियों के साथ में वे सभी रिश्ते हैं जिसमें मसीहियों की संगति को बढ़ते हुए स्वीकार नहीं किया जा सकता। वे गैर विश्वासियों के साथ सभी से रिश्ते हैं जिनके तहत मसीही सिद्धान्तों में समझौता किया जाता है।

प्रश्न 3. अन्य किसी असमान जुओं के लिए मसीहियों को मना किया गया है?

ध्यान दें। असमान रिश्तों में जुतने की शिक्षा उन सारे क्षेत्रों के लिए लागू होती है जहां पर गैर मसीहियों के साथ धनिष्ठ सम्बन्ध शामिल होता है। उदाहरण के लिएः

(1) एक मसीही व्यक्ति को कि गैर मसीही के साथ व्यवसाय में भागीदार नहीं बनना चाहिए।

हो सकता है कि एक गैर मसीही व्यक्ति किसी मसीही को तब तक अपने यहां नौकरी दे दे, जब तक कि वह परमेश्वर द्वारा मना किये गये कामों को नहीं करता है। लेकिन एक मसीही व गैर मसीही जन के बीच भागीदारी एक गैर कानूनी या अवैध भागीदारी होगी,जिसमें दोनों पक्ष धन का निवेश करते हैं और जिसमें जिम्मेदारियां और निर्णय साझा होते हैं। इस प्रकार की परिस्थितियां में एक गैर मसीही घूस देने या लेने में या व्यापार में किसी को धोखा देने में विश्वास कर सकता है, जिससे की मसीही जन अपने आप उसके बुरे कामों को हिस्सा बन जाता है।

(2) एक मसीही स्कूल को गैर मसीही अध्यापिकाओं अपने स्कूल में नौकरी नहीं देनी चाहिए।

(3) एक मसीही को किसी ऐसी मण्डली का हिस्सा नहीं बनना चाहिए जो बाइबल पर आधारित न हो।

उसे किसी भी ऐसी मण्डली का हिस्सा नहीं बनना चाहिए जहां पर परमेश्वर के वचन को आदर नहीं दिया जाता हो या बाइबल के संदेश को स्पष्ट रूप में प्रचार या पालन न किया जाता हो। एक मसीही किसी भी ऐसे मसीही से सलाह न ले जो बाइबल पर भरोसा न करता हो और न बाइबल को मानवीय विचार व व्यवहार का आधार मानता हो।

(4) मसीही को किसी गैर मसीही के साथ ऐसे असमान जुए में नहीं जुत जाना चाहिए कि उसकी गतिविधिया आगे चलकार मसीही की आदत बन जाएं।

गैर मसीही मूल्यों व आदत पड़ने वाली गतिविधियां निम्नलिखित हैंः टी.वी में गलत तरह के कार्यक्रम देखना, गलत किताबों व पत्रिकाओं को पढ़ना, गलत क्लब में जाना, गलत पार्टियों व संगति में जाना इत्यादि। मसीही जन को किसी ऐसी गतिविधी से परे रहना चाहिए जो मसीही मूल्यों को निरस, घिसा पिटा साबित करने की कोशिश करती है और मसीही विरोधी गतिविधियों को बढ़ावा देती है, चाहे वे मसीही विरोधी धार्मिक गतिविधियां हों या मसीही विरोधी सामजिक या न्यायिक मूल्य या फिर कोई और मसीही विरोधी स्रोत हो।

6:15

प्रश्न 4 विश्वासियों की गैर विश्वासियों के साथ सामन्य चीज़ें क्या हैं?

ध्यान दें। कुछ बातें विश्वासियों और गैर विश्वासियों में सामान्य हैं। उदाहरण के लिए दोनों ही समान तरीके का भोजन करते हैं, समान तरीके के कपड़ें पहनते हैं, एक ही बस में सफर करते हैं और एक ही तरह मुद्रा का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन अविश्वासियों में कुछ बात अलग होती है जिससे यीशु मसीह ने मसीहियों को अलग किया है। उदाहरण के तौर पर अविश्वासी का जीवन आत्म केन्द्रित होता है जबकि मसीही का जीवन यीशु मसीह पर केन्द्रित होता है। अविश्वासियों

का खज़ाना धरती पर है जबकि, विश्वासियों का खज़ाना स्वर्ग में है। गैर मसीहियों के लिए इस संसार की बदलती हुई वस्तुए अहमियत रखती है जबकि विश्वासी के लिए अटल परमेश्वर का राज्य अहमियत रखता है। अविश्वासी मनुष्य की महिमा को चाहता है जबकि विश्वासी जन परमेश्वर की महिमा की खोज करता है। अतः अगर देखा जाए तो जीवन के निर्देशन, जीवन के उददेश्य और जीवन के मूल्यों को देखा जाए तो विश्वासी और गैर विश्वासी में कोई भी चीज़ सामान्य नहीं है।

6:17

प्रश्न 5. यदि कोई विश्वासी अभी भी अपने जीवन के कई क्षेत्रों में गैर विश्वासियों के साथ असमान जुए में जुता हुआ है तो वह क्या करे?

ध्यान दें। उसे वही करना चाहिए जो 2 कुरिन्थियों 6:17 में लिखा है, ''उन में से बाहर निकल आओ को अलग रहो''। नकारात्मक आज्ञा है कि ''अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो''।

मसीहियों को गलत परिस्थिति को बदलने के लिए तुरन्त कदम उठाना चाहिए। मसीहियों को दूसरे मसीहियों के साथ समान जुए में जुतना और एक ही दिशा में आगे बढ़ना, विश्वास में एक दूसरे को प्रोत्साहित करना और मिलकर सेवा करना चाहिए। मसीहियों को विवाह, सेवा और सार्वजनिक तौर पर गवाही के लिए मसीही के साथ समान जुए में जुतना चाहिएं

7:1

प्रश्न 6. यदि किसी मसीही व्यक्ति पर गैर मसीही व्यक्ति के साथ गलत सम्बन्ध बनाने की वजह से नकारात्मक प्रभाव पड़ा हो तो वह क्या करे?

ध्यान दें। मसीही को हमेशा के लिए अपने आप को शुद्ध कर लेना चाहिए अर्थात उसे उस विशेष पाप से रिश्ता तोड़ लेना चाहिए। उसे परमेश्वर के सामने अपने पापों को अंगीकार करके परमेश्वर से क्षमा व शुद्धि प्राप्त कर लेनी चाहिए (1यूहन्ना1:9)। वास्तव में मसीही जन को हर प्रकार अशुद्धता से चाहे वह आन्तरिक हो या बाहरी अपना रिश्ता तोड़ लेना चाहिए। हर एक बात जो उसकी देह व आत्मा को अशुद्ध करती है जिसका मतलब दैहिक रूप व आत्मिक रूप (1 कुरिन्थियों 7:34) शुद्ध होना चाहिए।

मसीहियों को परमेश्वर का भय मानते हुए लगातार पवित्रता में आगे बढ़ना चाहिए। प्रत्येक मसीही का लक्ष्य पवित्र बनना होना चाहिए (रोमियों 6:13,19; 1 थिस्लुनिकियों 4:3,7;5:23)।

कदम 4. उपयोग **इस्तेमाल**

ध्यान दें: इस अनुच्छेद का कौन सा सत्य मसीहियों के लिए सम्भवतः उपयोगी है?

बांटें व लिखें। आइये हम एक दूसरे के साथ विचार विमर्श करके 2कुरिन्थियों 6:14–7:1 के आधार पर इस्तेमाल में आने वाली बातों की एक सम्भावित सूची बनाएं।

ध्यान दें। इनमें से कौन सी उपयोगी बातें हैं जिन्हें परमेश्वर चाहते हैं कि आप उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन में इस्तेमाल करें?

लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को अपनी कॉपी में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को बाटंने में स्वतन्त्र महसूस करें। (ध्यान रखें कि हर एक समूह में लोग अलग सच्चाईयों का इस्तेमाल करेंगे या उसी सच्चाई का अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगे। सम्भावित इस्तेमाल की सूची निम्नलिखित है।)

1. 2कुरिन्थियों 6:14–7:1 से उपयोग की जाने वाली सम्भावित बातें।

- ऐसे व्यक्ति के साथ ''सामाजिक जुए' में न जुतें जो अपने आप को मसीही बताता हो, लेकिन उसका व्यवहार गैर मसीहियों के समान हो। किसी भी ऐसे व्यक्ति के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित न करें जो मसीही होने का दावा करता हो परन्तु उसका व्यवहार गैर मसीहियों के समान हो। केवल सच्चे मसीही के साथ ही गहन रिश्ता स्थापित करें।
- किसी गैर मसीही व्यक्ति के साथ 'कानूनी–जुए' में न जुतें। कभी भी अपने झगड़ों या विवाद को गैर मसीही व्यक्ति के सामने न सुलझाएं। अपना मसला केवल मसीही पुरनियों व बुद्धिमान मसीही व्यक्ति के सामने रखें।
- किसी गैर मसीही के साथ 'विवाह के जुए' या 'मिलन के जुए' में न जुतें। कभी भी गैर मसीही जन को विवाह को ध्यान में रखते हुए अधिक जानने के लिए घुमाने के लिए न लेकर जाएं। विवाह के सन्दर्भ में केवल मसीही लोगों के बारे में ही जानकारी हासिल करने का प्रयास करें।

- गैर मसीहियों के साथ में गन्दी पार्टियों के जुए में न जुतें। किसी गलत पार्टी में न जाएं। केवल ऐसी ही समाओं में शमिल हो जहां आपको मसीही सिद्धान्तो से समझौता न करना पड़े।
- गैर मसीहियों के साथ में व्यवसायिक जुए में न जुतें। किसी गैर विश्वासी के साथ किसी व्यापार में भागीदार न बनें।
- केवल ऐसी ही मण्डली का भाग बने जहा पर बाइबल के अटल सिद्धान्तों को स्पष्टता से प्रचार किया जाता और माना जाता हो।
- गैर मसीहियों के साथ आदत बनाने गतिविधियों व मूल्यों में भागीदार न बनें

2. 2 कुरिन्थियों 6:14–7:1 में पाये जाने वाले व्यक्तिगत तौर पर इस्तेमाल किये जाने वाले तत्वों के उदाहरण ।

अविवाहित व्यक्ति। मैं खास तौर पर सतर्कता बरतूगां कि मैं विवाह के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने के लिए किसी सच्चे मसीही व्यक्ति के साथ ही जाऊँ। वह व्यक्ति निश्चित तौर पर यीशु मसीह को जानने तथा उससे प्रेम करने वाला होना चाहिए। मैं संकल्प करता हूँ कि विवाह को मद्देनज़र रखते हुए मैं कभी गैर मसीही के साथ बाहर नहीं जाऊँगा। 'विवाह' या 'मिलन' के सिलसिले में मैं कभी गैर मसीही के साथ असमान जुए में नहीं जुतूगां।

मैं खास तौर पर ध्यान रखूंगा कि मैं किस प्रकार की किताबों व पत्रिकाओं व समाचार पत्रों को पढ़ता हूँ। मैं गैर मसीही संसार की अभिलाषा,कल्पनाओं और मूल्यों द्वारा अपने विचारों और हृदय को अशुद्ध नहीं करना चाहता। आदतें बनाने वाली गतिविधियों के सन्दर्भ में मैं गैर मसीही संसार के असमान जुए में नहीं जुतूगां।

कदम 5. प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आइये 2 कुरिन्थियों 6:14–7:1 में परमेश्वर द्वारा सिखाए गये सत्यों के आधार पर प्रार्थना करें।
(जो कुछ आपने बाइबल अध्ययन के दौरान सीखा है, प्रार्थना में उसका प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करना सीखें। याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग विषयों के लिए प्रार्थना करेंगे)

5	**प्रार्थना** (8मिनट)	(मध्यस्थता) दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन लोगों के समूह में **लगातार प्रार्थना करें।** एक दूसरे तथा संसार के अन्य लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	(निर्धारित कार्य) अगले अध्याय के लिए

(**समूह का अगुवा** : समूह के सदस्यों को यह तैयारी गृह कार्य के रूप में लिखित तौर पर प्रदान करें या उन्हें डाउन लोड करने दें।)

1. सर्मपणः चेले बनाने के लिए समर्पित हों।

किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के जन के साथ 2कुरिन्थियों 6:14–7:1 पर आधारित बाइबल अध्ययन को पढ़ें, सिखाये या प्रचार करें।

2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना। उत्पत्ति 1–4 तक रोज़ आधा अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताएं। पसन्दीदा सच्चाई के तरीके का इस्तेमाल करें। लिखें।
3. याद करनाः श्रृंखला ' मसीह में नया जीवन 1–5' का पुनरावलोकन करें। प्रतिदिन बाइबल की 5 याद की गयी आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थनाः किसी व्यक्ति या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं (भजन 5:3)
5- चेलों को बनाने के सम्बन्ध में अद्यावधिक बना कर रखें। आराधना के गीत, शिक्षा तथा तैयारी की सामग्री को भी लिख सकते हैं।

परिशिष्ठ 8 (परमेश्वर)

परमेश्वर का स्वभाव व परमेश्वर का पुत्र

यह अतिरिक्त शिक्षा लोगों की परमेश्वर के स्वभाव व परमेश्वर के पुत्र को और भी अधिक गहराई से समझने में सहायता करने के लिए है। कोष्ठक में दिये गये बाइबल अनुच्छेद को पढ़ें।

मसीही उस परमेश्वर पर विश्वास करते हैं जिसने अपने आप को बाइबल में प्रगट किया है और वह कोई 'देवता' नहीं हैं। वह सर्वश्रेष्ठ और तेजस्वी परमेश्वर है। मसीही एक परमेश्वर पर विश्वास करते हैं अर्थात जो ईश्वरीय स्वभाव को धारण करने वाला ईश्वरीय जीव है जिसने अपने आपको मानव जाति पर प्रगट किया है (व्यवसथा विवरण 6:4)। परमेश्वर कभी अपनी सृष्टि, अपने लोगों और इतिहास में जो कुछ उसके लोगों के साथ होता है उनसे दूर नहीं रहता। उसने अपने आपको अपनी ही बनायी सृष्टि और मानवीय इतिहास में प्रगट किया है।

---

1. परमेश्वर का स्वभाव अथाह गहरा है।

बाइबल में अपने आपको प्रगट करने वाला परमेश्वर सर्वोपरी व सर्वश्रेष्ठ है। वह सर्वश्रेष्ठ व तेजस्वी है। बाइबल में खुद को प्रगट करने वाला परमेश्वर आत्मा है(मनुष्यों के समान देहधारी नहीं)वह सर्वव्यापी(सब जगह मौजूद) सर्वज्ञानी (सब कुछ जानने वाला) सर्वशक्तिमान है(सबसे ज़्यादा शक्तिशाली) है।

(1) बाइबल का परमेश्वर अथाह व अविश्वसनीय है।

बाइबल में प्रगट परमेश्वर की थाह नापी नहीं जा सकती (अय्यूब 11:7–8; 1 तीमुथियुस 6:15–16)। कोई भी धार्मिक जन, विद्वान या वैज्ञानिक परमेश्वर के स्वभाव को परिभाषित नहीं कर सकते। जब तक परमेश्वर स्वयं अपने आप को हम पर प्रगट न करें हम यह तक नहीं जान सकते कि कोई परमेश्वर है और कभी उसका स्वभाव नहीं समझ सकते है।

परन्तु परमेश्वर चाहते हैं कि हम उसे जानें। इसलिए उसने अपने आप को हम पर प्रगट किया है कि हम उसे जान सकें। लेकिन हम परमेश्वर को उसी हद तक जान सकते हैं जिस हद तक उसने अपने आप को अपनी प्रकृति में प्रगट किया है: पहले परमेश्वर का स्वभाव हमारे लिए एक रहस्य था। हम परमेश्वर के बारे में केवल वही बातें बोल सकते हैं जो परमेश्वर ने बाइबल में खुद व्यक्त की हैं।

(2) बाइबल का परमेश्वर आत्मा और अदृश्य है।

जिस परमेश्वर ने अपने आपको बाइबल में प्रगट किया है वह आत्मा है(यूहन्ना 4:24)। साधारण लोगों परमेश्वर को अपनी प्राकृतिक आंखों से नहीं देख सकते(यूहन्ना 1:18)।

परन्तु परमेश्वर चाहते हैं कि हम उसके स्वरूप को निहारने पाएं। इसलिए ही उसने अपने आप को प्रत्यक्ष रूप में हम पर अपने आपको प्रगट किया है ताकि हम उसे देख सकें। बिना अपने स्वभाव को अलग किये हुए उसने एक मनुष्य का रूप धारण किया और मानवीय इतिहास में यीशु मसीह के रूप में अपनी ही सृष्टि के बीच कदम रख दिया (यूहन्ना 1:1,14,18)। यीशु मसीह अप्रत्यक्ष परमेश्वर का प्रत्यक्ष रूप है(कुलुस्सियों 1:15)। परमेश्वर की सारी परिपूर्णता यीशु मसीह की देह में वास करती है (कुलुस्सियों 1:19; 2:9)। इसलिए यीशु कह सके, ''जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देख लिया है''(यूहन्ना 14:9)।

(3) बाइबल में प्रगट परमेश्वर अगम्य ज्योति और पहुँच से परे है।

बाइबल में अपने आप को प्रगट करने वाला परमेश्वर पहुँच से परे है (1 तीमुथियुस 6:16)। मनुष्य अपने तरीके,अपनी शक्ति व अपने ज्ञान से परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकता। लोगों व्यवस्था को मानने, भले काम करने या धार्मिक कामों को करने के द्वारा परमेश्वर के पास नहीं पहुँच सकता।

लेकिन परमेश्वर चाहता है कि हम उसके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनायें। इसलिए वह हमारे पास आया! हम परमेश्वर के साथ व्यक्गित सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं, लेकिन कोई सीढ़ी चढ़ने के द्वारा नहीं लेकिन केवल यीशु मसीह के रूप में इस धरती पर आने के द्वारा(और मसीह की आत्मा के द्वारा)।

---

2. परमेश्वर ने अपने आप को इसलिए प्रगट किया ताकि लोग उसे जान सकें।

हालांकि परमेश्वर का स्वभाव अथाह है, फिर भी परमेश्वर ने अपने आपको इसलिए प्रगट किया है कि लोग उसे जान सकें।

(1) परमेश्वर ने अपने आप को सृष्टि में होकर प्रगट किया है

परमेश्वर ने मनुष्य पर प्रगट किया कि वह विद्यमान है, कि वह पौराणिक व शक्तिशाली (भजन 19:1–7;रोमियों 1:19–20) और वह आग में और परमेश्वर के स्वर्गदूत के रूप में होकर भी प्रगट हो सकता है (निर्गमन 3:2–4; 19:18; व्यवस्थाविवरण 4:12:24)।

सृष्टि परमेश्वर की सच्चाई, उपस्थिति, शक्ति,सुन्दरता ओर क्रमबद्धता को प्रस्तुत करती है।

(2) परमेश्वर ने अपने आप को मनुष्य के हृदय में प्रगट किया है

परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था को हर एक मनुष्य के हृदय की पटियाओं पर लिखकर प्रगट किया है कि वह गलत बातों से नफरत करता और उचित बातों से प्रेम करता है और उसने मनुष्य को विवेक भी दिया जो उस पर दोष लगाता या निर्दोष ठहराता है (रोमियों 2:14–15;यशायाह 5:20)

मनुष्य का मन इस वास्तविकता को प्रगट करता है कि परमेश्वर का नैतिक आधार है।

(3) परमेश्वर ने आकाशवाणियों के द्वारा अपने आप को प्रगट किया।

परमेश्वर ने न केवल भविष्यद्वक्ताओं से बातें करने के लिए स्वर्गदूतों को ही नहीं भेजा, बल्कि परमेश्वर ने अपने दास मूसा नबी से (निर्गमन 3:4–6;19:19; गिनती 7:89), इस्राएल की मण्डली से (व्यवस्थाविवरण 4:12,32–36; 5:22–26),एलिय्याह भविष्यद्वक्ता (1राजा 19:11–12) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले (मत्ती 3:13–17) और यीशु के तीन चेलों (मत्ती 17:5) से खुद बातचीत की। पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति–भाँति से भविष्यद्ववक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में (नये नियम के दिनों में) हम से अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा बातें की (इब्रानियों)। परमेश्वर के वचन बाइबल में लिखे हुए हैं (2 तीमुथीयुस 3:16)। सारे लोग केवल इन वचनों के द्वारा ही जीवित रह सकते हैं(मत्ती 4:4)।

बाइबल में लिखे हुए वचन परमेश्वर की इच्छा,उसकी योजनाओं और उसके विचारों को प्रगट करते हैं।

(4) परमेश्वर ने अपने आपको उसके कामों के द्वारा प्रदर्शित व प्रगट किया है।

परमेश्वर ने अपने सृष्टि के बीच तथा मानव इतिहास में अद्भुत चिन्ह व चमत्कारों द्वारा, परीक्षाओं व युद्व, अपने सामर्थी हाथों व फैलाई हुई बाहों के द्वारा महान तथा भययोग्य कार्यों को किया है(व्यवस्था विवरण 4:34)। जब परमेश्वर काम करना प्रारम्भ करें तो कोई उसके काम को रोक नहीं सकता है (यशायाह 43:13)! बाइबल में न केवल उसकी बातों को बल्कि उसके कामों को भी लिखा गया है।

बाइबल के काम परमेश्वर के उद्धार तथा न्याय के कामों को व्यक्त करते हैं।

(5)परमेश्वर ने अपने आपको रूपान्तरित जीवनों के द्वारा प्रगट व प्रदर्शित किया है।

बाइबल में दिये गये परमेश्वर के वचन व काम उन लोगों के जीवन को रूपान्तरित करते हैं जो उसकी बातों व कामों पर विश्वास करते हैं। उदाहरण के तौर पर पौलुस विश्वासी बनने से पहले विश्वासियों से नफरत करता तथा उनको सताया करता था। तब एक दिन यीशु ने उस पर प्रगट होकर उसके हृदय को बदल दिया। यीशु ने उसके पापों को क्षमा करके उसे उद्धार दिया। पौलुस का जीवन बदल गया और वह नये तरीके से जीवन को जीने लगा। किसने पौलुस के जीवन को इस तरह से बदल दिया? पौलुस अपनी गवाही में कहता है कि यीशु मसीह द्वारा परमेश्वर ने उसके जीवन को बदला(1 तीमुथियुस 1:15–16)। लाखों करोड़ों मसीही लोग गवाही देते हैं कि किस प्रकार से उनके जीवन बदल गये हैं। इन सच्चे मसीहियों के पीछे सच्चा परमेश्वर है। उस ने इन्हें रूपान्तरित किया और अब भी रूपान्तरित कर रहा है। जब आप किसी सच्चे मसीही को देखते हैं और उनकी गवाहियों को सुनते हैं, तब आपको उस परमेश्वर के बारे में पता चलता है जो लोगों के जीवनों को परिवर्तित कर देता है।

मसीहियों के रूपान्तरित जीवन परमेश्वर के उद्धार की योजना को प्रगट करते हैं।

(6) परमेश्वर ने अपने आपको एक मनुष्य अर्थात यीशु मसीह में होकर प्रदर्शित व प्रगट किया हैं।

परमेश्वर आत्मा है(यूहन्ना 4:24)और इसी कारण अदृश्य भी। फिर भी, परमेश्वर ने अपने आप को प्रत्यक्ष रूप में यीशु मसीह के मानवीय शरीर में होकर प्रगट किया। अपने ईश्वरीय स्वभाव को त्यागे बिना ही परमेश्वर ने यीशु मसीह की देह में होकर अपनी सृष्टि और मानव संसार में कदम रखा (लूका 1:26–37; यूहन्ना 1:1,14,18; फिलिप्पियों 2:5–8;कुलुस्सियों 1:15,19; 2:9)। एक मनुष्य अर्थात यीशु मसीह परमेश्वर नहीं बना था परन्तु एकमात्र परमेश्वर मनुष्य अर्थात यीशु मसीह बना (यूहन्ना 1:1,14)। यीशु मसीह ''परमेश्वर की महिमा को तेज'(परमेश्वर की ईश्वरीयता तथा ईश्वरीय स्वभाव की विशेषता है)''परमेश्वर के अस्तित्व का सटीक प्रतिनिधित्व है''(परमेश्वर के अप्रत्यक्ष पहिचान की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है)(इब्रानियों 1:1–3)। इसलिए यीशु ने कहा ''जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देख लिया''(यूहन्ना 14:9)।

यीशु मसीह ने परमेश्वर के कामों,वचनों,चरित्र, व्यक्तित्व और ईश्वरीय पहिचान को व्यक्त किया है।

कई लोगों का कहना है कि परमेश्वर कभी मनुष्य का रूप धारण नहीं कर सकते। परन्तु पुराने नियम में लिखा है कि,'परमेश्वर का स्वर्गदूत झाड़ी में जलती हुई आग के रूप में प्रगट हुआ....और परमेश्वर ने उस झाड़ी में से होकर 'पुकारा मूसा!मूसा!'(निर्गमन 3:2–4)। यदि परमेश्वर किसी झाड़ी के बीच में प्रगट हो सकते हैं तो वह निश्चय ही शुद्ध मानवीय देह में वास कर सकते हैं।

(7) परमेश्वर ने अपने आप को पवित्र आत्मा द्वारा प्रगट किया है।

परमेश्वर का आत्मा, मसीही का आत्मा,या 'हम में मसीह' पवित्र आत्मा कहलाता है(रोमियों 8:9–10)। यीशु मसीह के स्वर्ग में उठा लिये जाने तथा सिंहासन पर बैठने के बाद वह पवित्र आत्मा के रूप में (एक ऐसा आयाम जो कल्पना सके परे था) संसार के गैर मसीहियों और मसीहियों के ह्रदयों में काम करने के लिए वापस आया(यूहन्ना 16:8–10)। पवित्र आत्मा मसीहियों के ह्रदय और देह (1 कुरिन्थियों 6:19–20) तथा कसीसिया (इफिसियों 2:22)में वास करता है।

पवित्र आत्मा अपने लोगों के जीवन में परमेश्वर की सामर्थी उपस्थिति को व्यक्त करता है।

---

3. बाइबल में 'पुत्र' की अभिव्यक्ति

जिस प्रकार से बाइबल में ''परमेश्वर का पुत्र' भाव का इस्तेमाल किया गया है उसे गलत नहीं समझा जाना चाहिए। मूल भाषा में(इब्रानी और अरबी) यह भाव 'का पुत्र' भलि भाँति परिचित है जिसका अर्थ शाब्दिक या प्रतीकात्मक है।
बाइबल तीन प्रकार के 'पुत्रों' के बारे में बात करती है और इन तीनों में अन्तर समझना ज़रूरी है:
(1) वास्तविक शारीरिक पुत्र (2) आत्मिक पुत्र का प्रतीक(3) तात्विक या सत्तामूलक पुत्र

---

4. यीशु मसीह परमेश्वर का शारीरिक पुत्र नहीं है।

मसीहियों के सन्दर्भ में शारीरिक पुत्र।

बाइबल में 'पुत्र' भाव कई बार शारीरिक अवतरण को दर्शाता है: अर्थात शारीरिक पुत्र। यूहन्ना 3:6में लिखा है, ''जो शरीर से जन्मा है व शरीर है'। शारीरिक माता पिता से शारीरिक बच्चे का जन्म होता है। उसके पुत्र होने की दशा का एक आरम्भ था जब वह अपनी माता के गर्भ में पड़ा।

मसीह के सम्बन्ध में शारीरिक पुत्रत्व।

लेकिन यीशु के साथ में मामला यह नहीं है। यीशु मसीह को कभी उत्पन्न नहीं किया गया। *उसकी विद्यमान अवस्था का कभी कोई प्रारम्भ नहीं था।* यीशु मसीह परमेश्वर का शारीरिक पुत्र नहीं है। 'परमेश्वर का पुत्र' का अर्थ यीशु मसीह के परमेश्वर का शारीरिक पुत्र होने से नहीं था, जिस तरह से बहुत से दूसरे झूठे धर्म बताते हैं कि मसीही लोग शिक्षा देते हैं।

यीशु मसीह की अपना शारीरिक प्रवृति थी। उसके ईश्वरीय स्वभाव के अनुसार यीशु मसीह अनन्त काल से विद्यमान था(यूहन्ना 1:1)। लेकिन उसके मानवीय स्वभाव के अनुसार वह अपनी माता अर्थात कुंवारी मरियम के द्वारा निश्चित काल में जन्मा(यूहन्ना 1:14)। लेकिन उसके जन्म में उसके पिता माने जाने वाले युसुफ का कोई योगदान नहीं था बल्कि पवित्र आत्मा ने मरियम पर छाया की और यीशु का जन्म हुआ(लूका 1:35)। संसार में दूसरे लोगों के विपरीत, यीशु मसीह का कोई शारीरिक पिता नहीं था! और संसार में सारे लोगों के बिल्कुल विपरीत यीशु पूरी तरह से पाप रहित थे(2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 4:15)।

परमेश्वर पिता और पवित्र आत्मा की कोई देह नहीं है। हम यीशु की शारीरिक देह को 'परमेश्वर की देह' नहीं कहते क्योंकि परमेश्वर की कोई देह नहीं है। और न ही परमेश्वर का स्त्री के साथ मनुष्य के समान कोई रिश्ता है। पवित्र

आत्मा का भी अपना कोई शरीर नहीं है। उसने कुंवारी मरियम की कोख में यीशु की देह का निर्माण किया (लूका 1:35)। लेकिन हम मरियम को परमेश्वर की माता नहीं बोलते, क्योंकि वह केवल यीशु मसीह के मानवीय स्वभाव की मां थी।

समय आने पर यीशु ने मानवीय स्वभाव को धारण कर लिया। अनन्तता से यीशु मसीह परमेश्वर है। सारी अनन्तता से ही यीशु मसीह 'परमेश्वर के पुत्र'के ईश्वरीय स्वभाव को धारण करे हुए है। लेकिन इतिहास के एक विशेष काल में उसने कुंवारी मरियम के द्वारा मनुष्य का रूप धारण करके अपनी ही सृजी हुई सृष्टि के बीच में कदम रखा। उसके मानवीय रूप में ही उसने मानव जाति के पापों का प्रायश्चित करने के लिए क्रूस पर अपने प्राण दिये। उसकी मानवीय देह में ही उसने मृतकों में से जी उठकर हमें हमारी *मृत्यु से पहले* रूपान्तरित जीवन की तथा *हमारी मृत्यु के पश्चात* पुनरूत्थित देह की गारन्टी(जमानत) दी है।

लोगों के लिए यीशु मसीह का ईश्वरीय व मानवीय स्वभाव के बीच सम्बन्ध हमेशा एक रहस्य ही बना रहेगा। यह रिश्ता बिल्कुल अनोखा है: वह मनुष्य का रूप धारण करने वाला परमेश्वर है (यशायाह 9:6)। यीशु मसीह को छोड़ और कोई मानवीय इतिहास में 'इमानुएल'(परमेश्वर हमारे साथ) नहीं है(मत्ती 1:23)।

---

5. यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मिक पुत्र नहीं है।

मसीहियों के सन्दर्भ में आत्मिक पुत्रत्व।

बाइबल में 'पुत्र' कहा जाना कई बार *आत्मिक* अवतरण को प्रदर्शित करता है: एक आत्मिक पुत्र। यूहन्ना 3:6 में लिखा है,"जो शरीर से जन्मा है व शरीर है'।बाइबल आत्मिक व शारीरिक पुत्र के बीच में स्पष्ट फरक को प्रदर्शित करती है।

नया जन्म प्राप्त करने के बाद मसीही जन एक आत्मिक सन्तान बन जाता है। नया जन्म पाने से *पहले* बच्चा अपने शारीरिक माता पिता का शारीरिक बच्चा होता है। लेकिन पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म प्राप्त करने के *बाद* वह स्वर्गीय पिता की आत्मिक सन्तान भी बन जाता है(यूहन्ना 1:12–13)। उसका पहले से मृतक आत्मा (इफिसियों 1:5) जिला दिया जाता है (इफिसियों 2:4–5)। वह यीशु मसीह को स्वीकार करने के द्वारा नया जन्म प्राप्त करता है(यूहन्ना 3:3–8)! नये जन्म के द्वारा ही वह परमेश्वर की सन्तान बन जाता है(यूहन्ना 1:12–13)

जगत की उत्पत्ति से पहले ही मसीही जन को पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म पाने पर (रोमियों 8:15)परमेश्वर द्वारा लेपालक आत्मिक पुत्र होने के लिए नियोजित किया गया है (इफिसियों 1:5),उसी समय वास्तव में उसे परमेश्वर द्वारा अपने आत्मिक पुत्र के रूप में गोद ले लिया जाता है। और वह अपने गोद लिये हुए आत्मिक पुत्र के सौभाग्य व अधिकार का पूर्ण रूप से तभी आनन्द उठा सकता है जब वह अपने नश्वर शरीर को त्याग देता है(रोमियों 8:23)।

मसीही केवल उस आत्मिक स्वभाव को धारण करता है जिसमें कुछ ईश्वरीय विशेषताएं होती हैं। जब मनुष्य का मानवीय स्वभाव उसे उसके माता पिता से प्राप्त होता, लेकिन उसका आत्मिक स्वभाव उसे पवित्र आत्मा के द्वारा प्राप्त होता है। हालाकि मनुष्य में ईश्वरीय स्वभाव नहीं होता लेकिन वह आत्मि स्वभाव प्राप्त व धारण करने के द्वारा कुछ ईश्वरीय गुणों का भागीदार बन जाता है, जैसे ज्ञान, भक्ति और प्रेम (2 पतरस 1:3–9)। उसका आत्मिक स्वभाव अब दोष, लज्जा, शक्ति व पाप द्वारा होने का गुलाम नहीं है परन्तु अधिकाई से मसीह की समानता में बढ़ने के लिए स्वतन्त्र हो गया है। और उसका आत्मिक स्वभाव अब शैतान का गुलाम नहीं है, वह अब शैतान की इच्छा को अपने जीवन में पूरा करने के लिए मज़बूर नहीं है (2 तीमुथीयुस 2:26)। वह अब परमेश्वर की सन्तान बन गया है, और अव उन कामों को करता है जो परमेश्वर की दृष्टि में भले हैं तथा परमेश्वर व भाईयों से प्रेम करता है(1 यूहन्ना 3:10)।

इतिहास में मसीहियों के आत्मिक पुत्रत्व का प्रारम्भ है। उसका आत्मिक पुत्रत्व उसके नये जन्म पाने से प्रारम्भ होता है।

मसीह के सन्दर्भ में आत्मिक पुत्रत्व।

लेकिन यीशु के मामले में ऐसा नहीं है। यीशु मसीह का कभी नया जन्म नहीं हुआ। *उसके पुत्रत्व की कोई शुरूआत नहीं है! यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मिक पुत्र नहीं है।* वह परमेश्वर का धार्मिक पुत्र भी नहीं है।

यीशु मसीह अनन्तता से अनन्ता तक ईश्वरीय स्वभाव का धारक है। अनन्तता से ही वह अपने स्वभाव में ही परमेश्वर का पुत्र है। अनन्तता से ही वह ईश्वरीयता को धारण किये हुए है। उसने किसी समय पर नया जन्म प्राप्त नहीं किया जैसा कि मसीही लोग प्राप्त करते हैं, परन्तु वह अनन्तता से ही आत्मिकता या ईश्वरीयता का धारक है। वह प्रारम्भ से ही परमेश्वर का पुत्र है, क्योंकि उसमें वे सारे गुण विद्यमान हैं जो परमेश्वर में पाये जाते हैं। मानवीय रूप धारण करने से पहले से ही वह परमेश्वर का पुत्र है(भजन 2:6–7; यूहन्ना 3:16)।

यीशु मसीह अनन्तता से अनन्ता तक परमेश्वर का पुत्र है। यीशु मसीह उसके जन्म लेने के द्वारा परमेश्वर का पुत्र नहीं बना है(मानवीय जन्म के द्वारा), लेकिन अनन्त परमेश्वर के रूप में उसने मानवीय इतिहास में कुवारी मरियम के द्वारा

मानवीय रूप धारण किया(लूका 1:26–37)। वह मानवीय रूप धारण करने पर भी परमेश्वर का पुत्र है, क्योंकि उसके बपतिस्मा के दौरान परमेश्वर ने यह नहीं कहा,'तू अब मेरा पुत्र बन गया है'', परन्तु परमेश्वर ने कहा ''तू मेरा प्रिय पुत्र है, जिसे मैं प्रेम करता हूँ; जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ''(मरकुस 1:11)। इसके अतिरिक्त यीशु ने स्वयं कहा कि वह परमेश्वर का पुत्र है(मत्ती 11:27; 21:37:–39 और 27:43)। प्रेरित यूहन्ना कहता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 3:35–36; 5:19–30)। और प्रेरित पौलुस कहता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है(रोमियों 1:3–4,9;5:10;8:3)।

यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर की सदृश्य तस्वीर है। यीशु मसीह अनन्तता से अनन्तता तक परमेश्वर का पुत्र है, परन्तु समय आने पर वह मनुष्यों पर अपने ईश्वरीय स्वभाव को प्रगट करता है। वह परमेश्वर की महिमा का सदृश्य तेज है (परमेश्वर का अनीवार्य गुण) तथा परमेश्वर के अदृश्य ईश्वरीय स्वभाव(कुलुस्सियों 1515, 19;2:9) की छाप (प्रभाव, प्रतिनिधित्व) है। यह उन शब्दों का भी अर्थ है अर्थात ''परमेश्वर का इकलौता पुत्र, जो परमेश्वर के साथ है, जिसने उसको (परमेश्वर) को प्रगट (प्रदर्शित व परमेश्वर का व्याख्यान) किया है।(यूहन्ना 1:18; मत्ती 11:27)।

यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मा है। ध्यान दें अन्य वचन यीशु मसीह के परमेश्वर का आत्मा होने के बारे में क्या कहते हैं। यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मा है और उसने मानव रूप धारण करने से पहले पुराने नियम के समय में भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें की(1 पतरस 1:10–12; 2 पतरस 1:19 –21)। यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मा है जिसने कुंवारी मरियम से जन्म लेते समय मानवता को अपने ऊपर धारण कर लिया (लूका 1:26–37)। यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मा है जिसने धरती पर अपनी सेवकाई के दौरान लोगों को उद्धार दिया और चंगा किया(लूका 4:18–19)। यीशु मसीह स्वर्ग में अपनी सेवकाई के दौरान परमेश्वर का आत्मा है: जब गैर मसीही लोग बाइबल को समझने का प्रयास करते हैं (2 कुरिन्थियों 3:14–18) तो वह ही उनकी आंखों,मन और हृदय पर से पटटी को हटा देता है, और पिन्तेकुस्त के बाद से वह विश्वासियों में ही रहता है(रोमियों 8:9–10; गलातियों 4:6–7)।

यीशु मसीह परमेश्वर का वचन है। ध्यान दें कि धर्मशास्त्र यीशु के परमेश्वर का वचन होने के बारे में क्या कहता है। यीशु मसीह परमेश्वर का वचन है जो अनन्तता से परमेश्वर है(यूहन्ना 1:1)। वह हर चीज का सृजनहार है(यूहन्ना 1:3, तथा उत्पत्ति 1:1–3;भजन 33:6)। वह परमेश्वर का वचन है जिसने मानवीय इतिहास में मानवीय स्वभाव को धारण किया(यूहन्ना 1:14–18)। वह परमेश्वर का वचन है जिसके पास मानवीय इतिहास के लिए परमेश्वर की इच्छा को प्रगट करने का अन्तिम प्रकाशन था। यीशु मसीह के बाद किसी भी भविष्यद्वक्ता के द्वारा कोई प्रकाशन प्राप्त नहीं होगा (इब्रानियों 1:1–2)! वह वो परमेश्वर का वचन है जिसके पास जगत के सारे लोगों के न्याय के लिए अन्तिम वचन होगा(प्रकाशितवाक्य 19:13–16)।

---

6. यीशु मसीह परमेश्वर का प्रतीकात्मक पुत्र नहीं है।

मसीहियों के सन्दर्भ में प्रतीकात्मक पुत्रत्व।

बाइबल में दिये ''पुत्र' का कई बार प्रतीकात्मक मतलब होता है : एक प्रतीकात्मक या काल्पनिक पुत्र। *किसी के साथ में 'पुत्र' जुड़ने पर दर्शाता है* कि उसका किसी के साथ में गहरा सम्बन्ध है और वह उस व्यक्ति की विशेषताओं को अपने ऊपर धारण करने के लिए आया है। उदाहरण के लिए, अभिव्यक्ति 'ज्योति की सन्तान''(लूका 16:8) उन मसीहियों को प्रगट करती है जो ज्योति अर्थात यीशु मसीह के नज़दीक खड़े हैं, और मसीह की अनोखी विशेषताओं को ग्रहण करते हैं जैसे उसकी पवित्रता, धार्मिकता, दया, प्रेम, बुद्धि और शुद्धता इत्यादि।

फिर भी, मसीही जन का 'ज्योति' के रूप में प्रतीकात्मक पुत्रत्व संसार में तब प्रारम्भ हो जाता है जब वह नया जन्म पाकर ज्योति की विशेषताओं के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करने लगता है(मत्ती 5:14)।

मसीह के सन्दर्भ में प्रतीकात्मक पुत्रत्व।

लेकिन यीशु के साथ में ऐसा मामला नहीं है। *परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु मसीह का पुत्रत्व कभी काल्पनिक या प्रतीकात्मक नहीं था।*

यीशु मसीह परमेश्वर को प्रस्तुत करने वाला कोई चिन्ह नहीं वरन वह स्वयं परमेश्वर है। वह बस परमेश्वर की नज़दीकी में खड़ा या परमेश्वर की गुणों को धारण करने वाला कोई जन नहीं है। वह परमेश्वर है। वह ज्याति का प्रतीक नहीं है,वह स्वयं ज्योति है (यूहन्ना 1:4–9; 8:12)। वह परमेश्वर को प्रगट करने वाला प्रतिनिधी नहीं वरन, वह वास्तविकता है, वह खुद परमेश्वर है(रोमियों 9:5; कुलुस्सियों 2:9; तीतुस 2:13; इब्रानियों 1:3; 2:8–9;1यूहन्ना 5:20)!

यीशु मसीह की कोई शुरूआत व कोई अन्त नहीं है। इतिहास के किसी भी पन्ने पर यीशु मसीह कहीं कोई 'वास्तविकता'' नहीं बनें। वह अनन्तकाल से ही वास्तविकता है(यूहन्ना 1:1)। *उसकी ईश्वरीय पुत्रत्व(वास्तविकता) की कोई शुरूआत या कोई अन्त नहीं है* (प्रकाशितवाक्य 1:8; 2:8;22:12–13)!

यीशु मसीह प्रतीकात्मक परमेश्वर का पुत्र नहीं है।''परमेश्वर के ''जुड़े हुए वाक्य या भाव शाब्दिक नहीं बल्कि प्रतीकात्मक थे। अभिव्यक्तियां जैसे ''परमेश्वर के हाथ' या 'परमेश्वर के कान'(यशायाह 59:1–2) का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर के शारीरिक हाथ या कान हैं, परन्तु इसका अर्थ है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है और हमारा उद्धार करता है। 'परमेश्वर की आखें' का मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर की शारीरिक आंखें हैं, परन्तु इसका अर्थ है कि परमेश्वर हर एक व्यक्ति और हर चीज़ को देखता है (इब्रानियों 4:13)। इसी प्रकार ''परमेश्वर का पुत्र' भी परमेश्वर के शारीरिक पुत्र होने को नहीं वरन अभौतिक व सत्तापूरक 'परमेश्वर के पुत्र 'को दर्शाता है।

7.यीशु मसीह को उसकी मृत्यु और जी उठने के बाद ही परमेश्वर के पुत्र के रूप में नियुक्त(घोषित) या स्वीकार किया गया है।

(1) यीशु मसीह अपने प्रथम आगमन से पूर्व ही परमेश्वर का पुत्र है।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा परमेश्वर ने कहा,' *मैं उसका पिता होऊंगा और वह मेरा पुत्र होगा'*(2शमुएल 7:15;इब्रानियों 1:5)। जबकि 2 शमुएल 7:12–16 का लेखक दाऊद के पुत्र के बारे में बोलता है, वहीं दूसरी ओर 2 इतिहास 17:11–14 में लेखक कहता है कि ये वचन 'दाऊद के पुत्र में'' केवल उसी में ये वचन पूरे होंगे। 'उसका राज्य सदा तक स्थिर रहेगा'' (1 इतिहास 17:14)। स्वर्गदूत जिब्राएल के द्वारा मरियम को बोले गये शब्द पुष्टि करते हैं कि यह भविष्यद्वाणी यीशु मसीह में पूरी होगीः'' और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद को सिंहासन उस को देगा।और वह दाऊद के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होग(लूका 1:32–33)।

(2)यीशु मसीह उसके जन्म पर परमेश्वर का पुत्र था।

यीशु मसीह के जन्म के समय जिब्राएल स्वर्गदूत ने मरियम से कहाः वह महान होगा और सर्वशक्तिमान परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा''(लूका 1:32)। वह इस उपाधि को स्वर्ग में अपने राजकीय अभिषेक के समय प्राप्त करेगा(लूका 1:32–33)। केवल उसके राज्याभिषेक के दौरान ही मानव जगत में यह स्पष्ट हुआ है कि यीशु मसीह ही परमेश्वर का पुत्र है, जिसने परमेश्वर की परिपूर्णता को धारण कर रखा है।

(3) पानी का बपतिस्मा लेते समय यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र था।

जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा यीशु मसीह का बपतिस्मा हुआ, तब आकाशवाणी हुई'' तू मेरा प्रिय पुत्र है,जिससे मैं प्रेम करता हूँ, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ'' (मरकुस 1:11)।

(4) मृतकों में से जी उठने से पहले व बाद में वह परमेश्वर का पुत्र है।

पौलुस '' परमेश्वर के पुत्र के सन्दर्भ में .....सुसमाचार'' प्रचार करता है (रोमियों 1:1–3)। वह मनुष्य के पुत्र के स्वभाव के बारे में बात करते हुए यीशु के ''शरीर के भाव' व यीशु के ''आत्मा के भाव'' के अन्तर को प्रगट करती है(रोमियों 1:3–4)। यीशु मसीह की देह या मानवीय स्वभाव उसके जन्म के बाद अर्थात दाऊद की वंशावली के बाद 'कमजोरियों को प्रगट करता हैः वह थका, उसे भूक और प्यास लगी, वह चिन्तित हुआ व परीक्षा में पड़ा,वह सच में मज़बूत चरित्र का था। यीशु मसीह के मृतकों में से जी उठने के बाद उसका स्वभाव पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा सामर्थ से परिपूर्ण थाः उसकी देह प्रकृति के नियमों के अधीन नहीं, वरन पूरी तरह से पवित्र आत्मा के द्वारा नियन्त्रित थी। वह बन्द कब्र में से कपड़े वहा छोड़कर बाहर भीतर आ जा सका। वह प्रगट व गायब हो सका। अन्त में वह स्वर्ग पर चढ़ गया और परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ जा बैठा।

वचनः ''और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है (रोमियों 1:4) का मतलब यह नहीं है कि जब वह मरे हुओं में से जी उठा तभी वह परमेश्वर का पुत्र ठहरा। यीशु मसीह के अनन्ता से परमेश्वर होन के कारण, सारा जोर ''सामर्थ' शब्दा पर पड़ता है जिसका अर्थ है ''सामर्थ से परिपूर्ण''। उसके जन्म के बाद उसकी सारी सामर्थ्य उसकी महिमा में छुपी हुई थी इस कारण वह इसे देख नहीं पा रहा था। लेकिन उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद स्वर्ग और पृथ्वी पर पूर्ण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र धोषित कर दिया गया(मत्ती 28:18;यूहन्ना 13:3; इफिसियों 1:20–22),जो पुनरूत्थान से पहले उसके शारीरिक भाव से परे था।यद्यपि यीशु मसीह अनन्तकाल से अनन्तकाल तक परमेश्वर के पुत्र हैं, उन्होने अपनी सामर्थ्य का इस्तेमाल करना अपने पुनरूत्थान, उठा लिये जाने और अपने राज्याभिषेक के दौरान करना प्रारम्भ कर दिया। उसकी मृत्यु व पुनरूत्थान के समय आज्ञाकारिता को साबित करने के द्वारा, सारी दुनिया में मसीही कलीसियाओं का फैलाव होने लगा (यूहन्ना 12:31–32; रोमियों 1:5;16:25–26)

(5) स्वर्ग में अपने राज्याभिषेक के समय भी यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है

इब्रानियों की पत्री में परमेश्वर कहते हैं कि :"तू मेरा पुत्र है; आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ हैं''(शाब्दिक अर्थः ''आज मैं ने तुझे जन्म दिया है''(भजन 2:7; इब्रानियों 1:5)। हालांकि स्वर्गदूतों को सामुहिक तौर पर 'परमेश्वर के पुत्र'' कहकर

सम्बोधित किया गया है (बेन आ –एलोहीम) (उत्पत्ति 6:2,4; अय्यूब 1:6;2:1),लेकिन कभी किसी स्वर्गदूत को परमेश्वर का पुत्र कहकर सम्बोधित नहीं किया गया–यह एक ऐसा सम्बोधन है जो उसको सबसे अलग पहिचान देता है। भजन संहिता 2:7–9 सम्भवतः यहूदा के राजा की उपासना को ध्यान में रखते हुए लिखा गया, लेकिन अगर हम पूरे भजन 2 को देखते हैं तो वह राजा–मसीह के बारे में भविष्यवाणी है, जो राजा दाऊद की वंश में पैदा होगा (यिर्मयाह 23:5–6; यहेजकेल 37:24–28)। नया नियम भजन 2 को मसीह से सम्बन्धित भजन मानता है (प्रेरितों 4:25–26; 13:33)। भजन 2 में मसीह (परमेश्वर का अभिषिक्त) इन वचनों को अपने विश्वास के आधार के रूप में इस्तेमाल करता है जब इस धरती का राजा और संसार की शक्तियां उसके खिलाफ जमा होती है(भजन 2:2)।

परमेश्वर का वचनः ''आज तू मुझसे पैदा हुआ है'' का अर्थ यह नहीं है कि यीशु मसीह अपने जन्म पर ही परमेश्वर के पुत्र बने। इब्रानियों 1 में दिया गया सन्दर्भ दर्शाता है कि 'आज' शब्द यीशु मसीह के पदोन्नति तथा उसके राज्याभिषेक को प्रगट करता है (भजन संहिता 110:4;इब्रानियों 1:13)। अतः उसके पुनरूत्थान, स्वर्ग चले लाने और उसके राज्याभिषेक पर यीशु मसीह को उसकी राजकीय वैभव से सुसज्जित किया गया और उसे ''परमेश्वर का पुत्र' उपाधि दी गयी। यह उपाधि धरती पर सारे लोगों (प्रेरितों 2:36; फिलिप्पियों 2:9–11) और स्वर्ग के सारे स्वर्गदूतों में सर्वश्रेष्ठ पद है(इब्रानियों 1:3–5)। ''परमेश्वर की पुत्र' उपाधि उसकी सच्चाई के बारे में,उसकी पहिचान के बारे में बताती है और यह उस नाम को दर्शाती है जिसके द्वारा उसे पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण व राज्याभिषेक के बाद से जाना जाता है अर्थात उसके अभौतिक, सत्तामूलक, त्रिएकत्व और अनन्त बोध में।

---

(8) यीशु मसीह अभौतिक, सत्तामूलक, त्रिएक और अनन्त बोध में परमेश्वर का पुत्र है।

सत्तामूलक भाव में बाइबल का परमेश्वर यीशु मसीह का पिता है।

'औन्टोलोजी' का अर्थ 'चीज़ों के विद्यमान होने का सिद्धान्त' है। अनन्तता से ही परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र का एक सा ही ईश्वरीय अस्तित्व व स्वभाव रहा है। परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र का रिश्ता कभी भी शारीरिक रिश्ता नहीं रहा है जैसा कि बहुत से झूठे धर्म कहते हैं कि मसीही लोग ऐसी शिक्षा देते हैं। यह हमेशा ही अभौतिक, सत्तामूलक, त्रिएक और अनन्त बोध में आन्तरिक सम्बन्ध रहा है।

बाइबल का परमेश्वर ही ''प्रभु यीशु मसीह का पिता और परमेश्वर है''(1 कुरिन्थियों 1:3; इफिसयों 1:3)। यीशु मसीह ' परमेश्वर का पुत्र, प्रिय, जिससे परमेश्वर प्रसन्न है' है(मत्ती 3:17;17:5)। वह परमेश्वर को एकमात्र 'इकलौता बेटा है'(यूहन्ना 1:18;3:16)। वह 'परमेश्वर का अपना बेटा' है(रोमियों 8:32)। वह 'परमेश्वर का अनन्त पुत्र है'(यूहन्ना 17:5,24)। संसार में पाये जाने वाले दूसरे धर्मों के ''देवता' अभौतिक, सत्तामूलक, त्रिएक और अनन्त बोध में यीशु मसीह के पिता नहीं है, इस कारण वे किसी तरीके से परमेश्वर नहीं हैं। उनकी बाइबल के परमेश्वर से कोई समानता नहीं है। पुराना नियम यीशु मसीह को 'बलवन्त परमेश्वर' तथा 'अनन्त का पिता' कहकर बुलाता है(यशायाह 9:6; 10:20–21)। और नया नियम हमें सिखाता है कि परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र दोनों एक ही हैं(यूहन्ना 10:30)।

मसीही कलीसिया विश्वास व अंगीकार करती है कि केवल एक ही परमेश्वर है, जिसका एक ईश्वरीय अस्तित्व व स्वभाव है और जिसने अपने आपको अपनी सृष्टि और मानवीय इतिहास में परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा के रूप में प्रगट किया है(मत्ती 28:19)।

बाइबल का परमेश्वर मसीहियों का पिता है लेकिन सत्तामूलक बोध में नहीं वरन आत्मिक बोध में।

मसीही जन न 'परमेश्वर' हैं और न ही 'परमेश्वर' बनेंगे, वे केवल परमेश्वर की रचना हैं। परमेश्वर पर विश्वास करने से पहले मसीही लोग बाइबल के परमेश्वर के दुश्मन थे(रोमियों 5:10)। लेकिन यीशु मसीह पर विश्वास करने के बाद वे 'परमेश्वर के आत्मिक पुत्र व पुत्री'(इफिसियों1:5) या 'परमेश्वर की आत्मिक सन्तानें '(यूहन्ना 1:12–13) बन गये। परमेश्वर के आत्मिक सन्तानों के रूप में, मसीही लोग बाइबल के परमेश्वर के गुणों को ज्यादा से ज्यादा प्राप्त करते हैं। (इफिसियों 4:24; 2 पतरस 1:4; 1 यूहन्ना 3:1–3)।

बाइबल का परमेश्वर स्वर्ग से सारे मसीहियों पर राज्य करता है, यीशु मसीह के द्वारा अपनी उद्धार की योजना सारे मसीहियों पर पूरा करता है, और पवित्र आत्मा के द्वारा सारे मसीहियों में वास करता है। मसीहियों में एकता केवल बाइबल के परमेश्वर की एकता और ईश्वरीय स्वभाव में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की एकता से ही आ सकती है। मसीही कलीसियाओं के एक बाइबल के एक समान परमेश्वर की आराधना करने के द्वारा, उनके पापों से उद्धार दिलाने के लिए एक उद्धारकर्ता के होने, उनके बीच में समान पवित्र आत्मा के वास करने से, एक ही विश्वास होने से, समान आशा और समान प्रेम होने से प्रगट होती है(इफिसियों 4:3–6)।

---

(9) यीशु मसीह मरियम का शारीरिक पुत्र (उसके मानवीय स्वभाव के अनुसार का) और साथ ही साथ परमेश्वर से उत्पन्न (ईश्वरीय स्वभाव के अनुसार)पुत्र है।

यीशु मसीह की वंशावली सिद्ध करती है कि यीशु मरियम का शारीरिक पुत्र था।

मत्ती की वैध वंशावली। मत्ती ने सुसमाचार खास तौर पर यहूदियों के लिए लिखा, इसलिए वह कानूनी मामलों को लेकर बड़ा ही उत्सुक था।वह अब्राहम से लेकर यीशु तक कानूनी वंशावली का लेखा प्रस्तुत करता है। मत्ती 1:1–12 में यह वंशावली अब्राहम से प्रारम्भ होकर,दाऊद,सुलैमान (नातान नहीं)से जरूब्बाबिल(538 ई.पू जिस समय पर यहूदी लोग बाबुल से लौटकर आये थे) (एज्रा 1:11–2:2)। मत्ती 1:13–16 में वंशावली जरूब्बाबिल से होकर अबीहूद(रेसा से नहीं) से होकर याकूब (हेली नहीं),'युसुफ के पिता, जो मरियम का पति हुआ, जिससे यीशु का जन्म हुआ और जो आगे चलकर मसीह कहलाया''(मत्ती 1:13–16)।याकूब युसुफ का शारीरिक पिता था। युसुफ यीशु का शारीरिक पिता नहीं था, लेकिन कानूनी या वैध पिता था, क्योंकि वह मरियम का वैध पति था। इसलिए मत्ती अन्त में कहता है: यीशु यहूदियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

यीशु मसीह उसके मानवीय स्वभाव में 'अब्राहम का पुत्र' है(उत्पत्ति 22:18; मत्ती 1:1;प्रेरितों 3:25; गलातियों 3:8,16), 'दाऊद का पुत्र' (2 शमुएल 7:12–16; यशायाह 9:6–7; 11:1; यिर्मयाह 23:5–6; लूका 1:32 प्रकाशितवाक्य 22:16), 'मरियम का पुत्र'(मत्ती1:18;लूका 1:31) था लेकिन वह युसुफ का शारीरिक पुत्र नहीं था।

लूका की वैध वंशावली। लूका ने अपना सुसमाचार अन्यजातियों को ध्यान में रखकर लिखा था इसलिए वह ऐतिहासिक तथ्यों को लेकर बड़ा उत्सुक था(लूका 1:1–4)। वह यीशु की वंशावली को यीशु से आदम और परमेश्वर तक आरोहण क्रम में लिखना प्रारम्भ करता है। लूका 23 में लूका लिखता है कि:''यीशु पुत्र था, अतः यहूदियों ने सोचा कि वह हेली से उत्पन्न, युसुफ का पुत्र है''। जैसा नीचे साबित होता है, इसका मतलब सम्भवतः यह रहा होगा,''युसुफ हेली का दामाद था' और हेली मरियम का पिता था और यीशु का नाना था। लूका 3:23–27 में वंशावली युसुफ के बाद हेली(याकूब से नहीं) से होती हुई फिर रेसा (अबीहूद से नहीं) से होती हुई जरूब्बाबिल तक पहुंचती है। और लूका 27–31 में यह वंशावली जरूब्बाबिल से प्रारम्भ होकर नातान (सुलैमान से नहीं) के द्वारा दाऊद तक पहुंचती है और लूका 3:28–37 में अब्राहम से लेकर आदम तक लगभग इस वंशावली के सारे महत्वपूर्ण नायकों के नामों को जिक्र किया जाता है। अतः लूका यह कहते हुए समाप्त करता है कि यीशु संसार के सारे लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

लूका में पायी जाने वाली वंशावली कुछ निम्नलिखित कारणों से युसुफ की वंशावली न होकर मरियम की वंशावली थी:

- लूका ने बड़ी सावधानी के साथ यीशु के जन्म से सम्बन्धित हुई घोषण से जुड़ें तथ्यों को खोजा, अर्थात यीशु के जन्म व उसकी वंशावली के तथ्यों को(लूका अध्याय 1–3)।
- जिब्राएल फरिश्ते ने मरियम को बताया कि यीशु युसुफ का पुत्र नहीं होगा, लेकिन वह मरियम का शारीरिक पुत्र कहलाएगा, जिसके लिए पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से कुंवारी द्वारा बच्चा जनने का चमत्कार होगा(लूका 1:26–37)। जिब्राएल ने यह भी कहा कि यीशु दाऊद के सिंहासन का वारिस होगा, लेकिन अनोखी बात यह होगी कि वह अन्तिम राजा होगा और उसका राज्य कभी खत्म न होगा(लूका 3:32)
- महायाजक जर्कयाह ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर यह भविष्यवाणी की कि यीशु आने वाला प्रतिज्ञा किया हुआ उद्धारकर्ता अर्थात मसीह होगा जो दाऊद के घराने में जन्म लेगा(लूका 1:69)। क्योंकि इस्राएल के कानून के हिसाब से स्त्री भी कानूनी वारिस बन सकती थी(गिनती 27:8), इस कारण से मरियम का दाऊद की वंशावली में अति महत्वपूर्ण स्थान है।
- बाइबल में वंशावली का जिक्र करते समय केवल अति महत्वपूर्ण नामों का ही जिक्र किया गया है उस पंक्ति में आने वाले बाकि नामों को छोड़ दिया गया है। उदाहरण के लिए मत्ती अपनी वंशावली में योराम औरर उज्जियाह के बीच में राजा अहज्जियाह,(अथालियाह),योआश और अमाजियाह को छोड़ देता है (मत्ती 1:8–9)। अतः 'का पिता'' का अर्थ ''का दादा'' या 'का परदादा'' भी हो सकता है, क्योंकि उस वंशावली के महत्वहीन लोगों को नज़अन्दाज़ कर दिया गया है। मत्ती ने दाऊद और जरूब्बाबिल के बीच 17 नामों का जिक्र किया था, जबकि लूका ने 23 नामों का। यहां तक कि लूका भी बहुत सी पीढ़ियों का जिक्र करना भूल गया है। उसने दाऊद से लेकर आदम तक कवेल 34 नामों का ही जिक्र किया, कि 850 वर्षों का लेखा होने के हिसाब से काफी कम नाम हैं।
- इसके अलावा अभिव्यक्ति:"आदम, पमरेश्वर का पुत्र" बिल्कुल समझ में नहीं आती है(लूका 3:38)।
- उसी तरीके से यह वाक्य भी: ''यीशु, युसुफ का पुत्र था, जैसा कि समझा जाता था, हेली का पुत्र था'' (लूका 3:23) ठीक वाक्य नहीं है। यहां पर भी एक पीढ़ी छूट गयी है। अतः युसुफ सम्भवतः हेली का दामाद था,जिसका अर्थ हुआ कि मरियम हेली की बेटी थी।लेकिन वंशावली में पुरूषों के वंश को ही स्थान दिया जाता था महिलाओं का नहीं इस कारण युसुफ का नाम वंशावली में लिखा गया जो मरियम का पति था।
- यहूदी तालमुद मरियम को ''हेली की पुत्री बुलाते हैं''। यह तभी संभव हो सकता है जब लूका के द्वारा लिखी गयी वंशावली मरियम की वंशावली हो। एक साइनिटिक–सीरीयन हस्तलिपि में लूका 2:4 का इस तरह से अनुवाद किया गया है:क्योंकि वे(युसुफ और मरियम) दाऊद के घराने व पीढ़ी से सम्बनध रखते हैं। इस कारण लूका 3:23 के

हिसाब से ''युसुफ को हेली का दामाद माना जाना चाहिए'',जबकि मत्ती 1:16 में लिखा है कि युसुफ,याकूब का बेटा था।

निष्कर्ष। अतः मत्ती यीशु की वंशावली उसके पिता युसुफ से होकर प्रस्तुत करते हैं, लेकिन लूका यीशु की वंशावली को उसकी माता यीशु के माध्यम से होकर प्रस्तुत करते हैं।

इस तरह से देखा जाए तो यीशु मसीह शारीरिक तौर पर ''अब्राहम के पुत्र'''दाऊद के पुत्र'' और 'मरियम के पुत्र हैं'' क्योंकि उसे उसका मानवीय स्वभाव अब्राहम, दाऊद और मरियम से ही प्राप्त हुआ था(मत्ती1:1,16)। इस प्रकार से अदृश्य व अनन्त परमेश्वर ने संसार के इतिहास व अपनी प्रत्यक्ष सृष्टि में कदम रखा।

लेकिन यीशु मसीह परमेश्वर का शारीरिक पुत्र नहीं था वरन वह उसके द्वारा उत्पन्न पुत्र था।(यूहन्ना 1:14,18; 3:16,18)।

हम पहले वर्णन करेगें: उत्पन्न करना(पैदा करना, बनाना, किसी का पिता बनना)' या 'जन्म देना'(गेनाओ)
उसके बाद हम वर्णन करेगें: 'इकलौता पुत्र'(ग्रीकः मोनोजेनस) और अन्त में : त्रीएकता।

ग्रीक शब्द 'गेनाओ' के छः मतलब हैं:

(1) शारीरिक भाव में पिता बनना। शारीरिक बेटा पैदा करना।

- शारीरिक रूप में उत्पन्न करना–मनुष्य द्वारा बोला गया। वंशावली में देखें: सक्रिय क ने ख को उत्पन्न किया (उत्पत्ति 4:18)। उदासीनः ''उसमें क्या प्रजनन हुआ/गर्भधारण हुआ''(मत्ती 1:20); ''एक पुरूष द्वारा बीज पड़ना या गर्भधारण होना''; ''व्यभिचार द्वारा प्रजनन या गर्भधारण नहीं'(विवाह के रिश्ते के बाहर नहीं) (यूहन्ना 8:41); 'पाप में उत्पन्न''(यूहन्ना 9:34)।

- शारीरिक रूप में उत्पन्न–पवित्र आत्मा की सहायता से उत्पन्न। लूका 1:35 में लिखा है: 'पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।''पवित्र आत्मा ने कुंवारी मरियम पर ईश्वरीय प्रभाव डाला और उसमें केवल यीशु के शरीर की रचना की। उसने यीशु मसीह के ईश्वरीय स्वभाव की रचना नहीं की,क्योंकि उसका ईश्वरीय स्वभाव तो अनन्त है। अनन्त परमेश्वर एक मनुष्य के शरीर में मनुष्यों के बीच में पैदा हुआ और उसे 'यीशु' नाम दिया गया। यीशु ने अपनी मां से अपने मानवीय स्वभाव को प्राप्त किया अपने पिता से नहीं। दूसरे मनुष्यों के समान यीशु किसी शरीर की सहायता से उत्पन्न नहीं हुए थे, क्योंकि परमेश्वर की कोई देह नहीं है।

(2) आत्मिक भाव(प्रतीकात्मक) में पिता बनना। आत्मिक बच्चे पैदा करना।

- आत्मिक रूप से पैदा होना–मनुष्य के प्रभाव से। पौलुस कुरिन्थियों की पुस्तक में लिखता है: "इसलिए कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता(अर्थातः मैंने तुम्हें जन्म दिया है) हुआ''(1 कुरिन्थियों 4:15)इस अर्थ पौलुस उन्हें सुसमाचार सुनाने के द्वारा उनका पिता बन गया।

- आत्मिक रूप से पैदा होना –पवित्र आत्मा के प्रभाव से। जब लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं तो वे ''परमेश्वर के द्वारा जन्म पाते हैं''(ग्रीकः ek theou egennethesan)(यूहन्ना 1:13; 1यूहन्ना 2:29; 3:9; 4:7;5:1,4,18); या ऊपर से पैदा हुआ' (यूहन्ना 3:3); या ' आत्मा से जन्मा' (यूहन्ना 3:5)। पवित्र आत्मा उनके नये जन्म का मूल व कारण है। 'हर एक जन जो विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है वह परमेश्वर से जन्मा है। (उसे परमेश्वर द्वारा नयी आत्मिक सृष्टि के रूप में जन्म दिया गया है)(जिसे परेमश्वर ने उत्पन्न भी कहा गया है) (1 यूहन्ना 5:1)। "और हर एक जन जो उत्पन्न करने वाले को प्रेम करता है(आत्मिक जीवन को नयी सृष्टि के रूप में)(जिसे पिता कहा गया), जो उससे उत्पन्न हुआ है उसे भी प्रेम करता है''(निश्चित काल)(जिसे पुत्र कहा जाता है)(1 यूहन्ना 5:1)। इसे यीशु मसीह से जोड़कर देखा जा सकता है लेकिन सम्भवतः इसे मसीही भाइयो के लिए कहा गया है(1 यूहन्ना 2:9–10)

1 "दाऊद के वंश से जन्मा" (ग्रीकः गीनोमाई=पैदा होने वाला)(रोमियों 1:3)
2 "स्त्री से उत्पन्न" (ग्रीकः गीनोमाई =पैदा होने वाला)(गलातियों 4:4)

(3)अनोखे भाव में पिता बनना। अनन्त पिता(अभौतिक व सत्तामूलक) बनना(मानना व स्वीकार)(अभौतिक व सत्तामूलक पुत्रत्व)

पवित्र आत्मा के प्रभाव द्वारा यीशु मसीह के पुनरूत्थान,स्वर्गारोहण व राज्याभिषेक पर, परमेश्वर का पुत्र इस धरती पर अपनी सर्वश्रेष्ठ *शक्ति का इस्तेमाल करने लगा,* और उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में *स्वीकार किया जाने लगा,* जिसके पास स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार था (मत्ती 28:18; रोमियों :4; प्रकाशितवाक्य 1:5–6)। इस घटना पर परमेश्वर ने कहा, ''तू मेरा पुत्र है; आज से मैं तेरा पिता हूँ"(इब्रानियों 1:5, भजन 2:7)। यीशु मसीह अपने प्रथम आगमन से पहले(यूहन्ना 3:16; इब्रानियों 1:6) और अनन्तकाल से ही परमेश्वर का पुत्र था(यूहन्ना 17:1–5), लेकिन उसने अपनी मृत्यु(जहां उसने पापों के लिए प्रायश्चित किया) , उसके पुनरूत्थान (मृतकों में से), उसके स्वर्गारोहण (स्वर्ग पर) और उसके राज्याभिषेक (परमेश्वर के सिंहासन पर)के पश्चात परमेश्वर के पुत्र होने के अपने सम्पूर्ण अधिकार का इस्तेमाल करना प्रारम्भ कर दिया। (इब्रानियों 1:8–9)

(4) शारीरिक भाव में एक माता बनना(जन्म देना)।

''उसने एक पुत्र को जन्म दिया'' (लूका 1:57)। "स्त्री बच्चे को जन्म देती है"(यूहन्ना 16:21)। "इस कारण मैं पैदा हुआ"(यूहन्ना 1:37)। ''वह अपनी भाषा के लोगों में जन्मा" (प्रेरितों 2:8)। ''मैं एक रोमी नागरिक के रूप में पैदा हुआ'' (प्रेरितों 22:28)।

(5) आत्मिक भाव(प्रतीकात्मक) में माता बनना।

सिय्योन पर्वत की वाचा (हाज़िरा) " गुलाम होने वाले बच्चों को जन्म देती है", जो पाप व व्यवस्था के गुलाम होते हैं (गलातियों 4:24–5; गलातियों 3:21–23)

(6) उत्पन्न करना या उसकी वजह बनना।

"मूर्खता और अविद्या के विवादों से झगड़े उत्पन्न होते हैं।" (2 तीमुथियुस 2:23)।

ग्रीक शब्द 'मोनोगेन्स का अर्थ है 'इकलौता–बेटा'।

यूहन्ना 1:18 में यह पद किसी मानवीय सम्बन्ध को नहीं प्रगट करता है। यह भूतकाल में होने वाली शुरूआत को नहीं दर्शाता। यह पद केवल मसीह के त्रीएक पुत्रत्व को प्रगट करता है।

(1) इकलौते–पुत्र को यीशु के मानवीय स्वभाव से नहीं जोड़ा जा सकता।

"इकलौते–पुत्र'' शब्द से जोड़कर यह नहीं कहा जा सकता कि यीशु परमेश्वर का शारीरिक इकलौता पुत्र था,क्योंकि वह मानव का रूप धारण करने से पहले ही परमेश्वर को इकलौता पुत्र था (यूहन्ना 3:16)। अतः''इकलौते पुत्र'' का इस सृजे गये संसार से कोई ताल्लुक नहीं है। एकमात्र इकलौता–पुत्र सृष्टि से ऊपर है।

(2) इकलौता–पुत्र यीशु के मसीह होने के कार्यकाल के प्रारम्भ को नहीं दर्शा सकता।

इकलौता–पुत्र शब्द 'केवल'(ग्रीकः मोनोस) व 'पीढ़ी'(ग्रीकःमोनोस, जो ग्रीक शब्द गीनोमाई से लिया गया है, जिसका अर्थ 'पैदा होना'' होता है) से नहीं लिया गया है, क्योंकि यीशु मानव जाति में पैदा हुआ अनोखा जन है। यीशु 'परमेश्वर' है(यूहन्ना 1:1) और वह 'इकलौता उत्पन्न परमेश्वर है' (यूहन्ना 1:18 ग्रीक भाषा में बेहतर ढंग से लिखा गया है)। और क्योंकि परमेश्वर अनन्त है इसलिए 'इकलौते पुत्र'को किसी शुरूआत से नहीं जोड़ा जा सकता। मानवीय इतिहास में यीशु के मसीह के रूप में लक्ष्य की उसके जन्म के साथ शुरूआत तथा उसके दूसरे आगमन के साथ अन्त है। अतः 'इकलौते पुत्र' को यीशु के मसीह होने के कार्यकाल अर्थात समय से नहीं जोड़ा जा सकता । इकलौता पुत्र समय से परे है।

(3) इकलौते पुत्र को केवल त्रीएकता में यीशु के पुत्रत्व के रूप से जोड़कर देखा जा सकता है।

क्योंकि इकलौता पुत्र किसी ऐसी चीज़ की ओर ईशारा करता है जो सृष्टि और समय से परे है, इसका अर्थ हुआ कि :'वह अपनी किस्म का अनोखा है' या 'अपनी श्रेणी में 'इकलौता' है'! इसी कारण से एन आई वी अनुवाद में 'इकलौता' को 'एक मात्र' परमेश्वर का पुत्र करके अनुवाद किया गया है। अभौतिक व सत्तामूलक भाव से यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है–उसका स्वभाव ईश्वरीय है। यीशु मसीह परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1; रोमियों 9:5; कुलुस्सियों 2:9; तीतुस 2:13; इब्रानियों 1:8; 1 यूहन्ना 5:20; प्रकाशितवाक्य 1:8,17–18;2:8; 22:13) वह अनन्त काल के लिए परमेश्वर है।

त्रीएकता।

(1) परमेश्वर को केवल यीशु ने ही प्रगट किया है।
सारे संसार में कोई भी जन या धर्म ऐसा नहीं है जो परमेश्वर पिता को जानता है केवल यीशु मसीह व उन लोगों को छोड़कर जिन पर यीशु ने पिता को प्रगट का चुनाव किया हो(मत्ती 11:27; यूहन्ना 10:15 17:25–26)! अतः हर एक मनुष्य यीशु मसीह अर्थात परमेश्वर के पुत्र के साथ अपने सम्बन्ध को ध्यान में रखते हुए उसका आदर करता है (मत्ती 10:40; लूका 10:16; लूका 2:34; 1 पतरस 2:6–8)।

(2)परमेश्वर के तीन भिन्न रूप।
केवल *एक ही परमेश्वर* है(मरकुस 2:29) और उसका *एक ही नाम है*(मत्ती 28:19)। फिर भी वह एक परमेश्वर बाइबल में अपने आप को परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा के रूप में प्रगट करता है। (मत्ती 28:19; 1 कुरिन्थियों 8:6; इफिसियों 4:3–6)। उसने अपने आप ही इस बात को हम पर प्रगट किया है कि उसकी *ईश्वरीयता में भी आन्तरिक भिन्नता है।* यहां पर आकर बातें हमारी समझ से परे हो जाती हैं, और हमें ज़रूरत पड़ती है कि हम बाइबल में प्रकाशित परमेश्वर के प्रकाशनों के प्रति समर्पित हो जाएं अर्थात उस पर विश्वास करें। अनन्त काल ही से परमेश्वर पिता परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा का अनोखा रिश्ता है।

'त्रीएकता 'शब्द बाइबल आधारित नहीं है परन्तु यह ईश्वरीय ज्ञान सम्बन्धी शब्द ज़रूर है तो दर्शाता है कि मसीही लोग एक परमेश्वर पर, एक ईश्वरीय शक्ति पर विश्वास करते हैं जिसने अपने आप को तीन रूपों में प्रगट किया है। लैटिन भाषा में ''रूप' को प्रस्तुत करने के लिए 'व्यक्ति' शब्द का इस्तेमाल किया गया है।लेकिन आधुनिक भाषा में 'व्यक्ति' शब्द का अर्थ 'एक वैयक्तिक जीव' माना जाता है लेकिन मूल लैटिन शब्द का अर्थ यह नहीं था।

मूल ग्रीक या यूनानी भाषा के शब्द 'पॉस्टिस'' का अर्थ ' अनिवार्य स्वभाव, निचोड़ या वास्तविक जीव' होता है, जिसे 'रूप' को प्रदर्शित करने के लिए इस्तेमाल किया गया। यह शब्द कभी किसी अलग व्यक्तित्व का बोध नहीं कराता बल्कि वह ईश्वरीयता में विद्यमान भिन्नता को प्रगट करता है! वह बताता है कि एक परमेश्वर ने अपने आप को अपनी सृष्टि व मानव इतिहास में (परमेश्वर) स्वर्गीय पिता(परमेश्वर) स्वर्ग में पुत्र (यूहन्ना 17:5) तथा धरती पर मनुष्यों के बीच में पवित्र आत्मा (परमेश्वर)के रूप में प्रगट किया।

बाइबल हमारे सामने यीशु और परमेश्वर को अलग करके प्रगट नहीं करती, वरन एक परमेश्वर को प्रगट करती है जिसने अपने आप को स्वर्गीय परमेश्वर व धरती पर भी 'परमेश्वर हमारे साथ है''के रूप में प्रगट किया। त्रीएक परमेश्वर सर्वव्यापी परमेश्वर है।

(3) परमेश्वर पिता,परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा एक ही परमेश्वर हैं।
मसीहियों को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दिया जाता है"(मत्ती 28:19)। दिये गये ''नाम' एकवचन हैं, बहुवचन नहीं। परमेश्वर का एक नाम दर्शाता है कि वह एक परमेश्वर है, एक ईश्वरीय जीव(व्यवस्थाविवरण 6:4)। ''पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा'' प्रगट करते हैं कि ईश्वरीय एकता के भीतर एक भिन्नता पायी जाती है। वही एक ईश्वर अपने आपको परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रगट करता है। पिता,पुत्र व पवित्र आत्मा एक हैं तथा उनका स्वभाव समान है।

(4) पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के काम अलग अलग हैं:
'परमेश्वर पिता के रूप में' बाइबल का परमेश्वर अनन्त परमेश्वर है, सृष्टि का रचयिता तथा हर चीज़ व हर व्यक्ति का मूल है जो हर चीज़ या हर व्यक्ति की मंजिल को तय करता है (रोमियों 11:36)। वह ही सृष्टि, प्रकाशन तथा विश्राम को बनाने वाला है। पिता होने के नाते वह स्वर्ग और पृथ्वी पर अपने परिवार का मुखिया है (इफिसियों 3:14–15), वह पिता जिसके साथ उसके आत्मिक सन्तानों का व्यक्तिगत तथा घनिष्ठ आत्मिक सम्बन्ध है (मत्ती 6:9–13)।

''परमेश्वर के पुत्र'' के रूप में बाइबल के परमेश्वर ने अपने ईश्वरीय स्वभाव को अलग किया बिना मानव इतिहास में कुंवारी मरियम के द्वारा मनुष्य का रूप धारण किया(फिलिप्पियों 2:6–7;कुलुस्सियों 2:9)। वह ''परमेश्वर हमारे साथ'' है(यशायाह 7:14; मत्ती 1:23)। वह 'परमेश्वर का वचन' है जो जगत के मानवीय इतिहास में प्रगट हुआ–एक व्यक्ति जिसने प्रत्यक्ष रूप में परमेश्वर को प्रगट किया तथा मनुष्य को परमेश्वर के वचन सुनाए(यूहन्ना 1:1,14,18)। कैल्सेडोन की चौथी परिषद के अनुसार (451 ई. पश्चात)यीशु मसीह का ईश्वरीय व मानवीय स्वभाव, 'अमिश्रित, अटल,अविभाजित,अटूट' है। श्रेष्ठ नियमों व मान्यता (मत्ती 11:27), आदर (यूहन्ना 5:23), शक्ति(यूहन्ना 1:3; 5:21, 27) उसमें जीवन बिताने (यूहन्ना 5:26), कार्य के(यूहन्ना 10:30), सम्पत्ति (यूहन्ना 16:15) हिसाब से परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर पिता के समान है। उसका ईश्वर का पुत्र होने का दावा करने पर ही, यीशु मसीह को मृत्यु दण्ड दिया गया था(यूहन्ना 10:30,33; मत्ती 26:63–66)।

और पवित्र आत्मा के रूप में परमेश्वर धरती के लोगों के हृदय और जीवन में (रोमियों 8:9–10; 1 कुरिन्थियों 19–20) तथा मसीही कलीसिया के बीच में (इफिसियों 2:19–22)वास करता है।

एक छोटे से उदाहरण के रूप में हम 'आग'(सूर्य) को देखते हैं। आग (सूर्य) हमारे जीवन का आवश्यक भाग है, लेकिन उसके अस्तित्व के तीन मुख्य रूप हैं: आग अर्थात सूर्य विद्यमान है, हम उसे ज्योति के समान देख सकते हैं और हम उससे गर्मी को प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार से परमेश्वर विद्यमान है (सारे जगत में एकमात्र ईश्वरीय शक्ति के रूप में), वह यीशु मसीह के द्वारा अपने आप को धरती पर प्रगट करता है और पवित्र आत्मा के रूप में अप्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं।

(5) यीशु मसीह व पवित्र आत्मा को परमेश्वर कहा गया।
परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा का समान स्वभाव होने के कारण, यीशु मसीह को 'परमेश्वर हमारे संग' (मत्ती 1:23),' परमेश्वर का पुत्र'(मत्ती 26:63–64) और 'परमेश्वर ' भी कहा गया (यशायाह 9:6; यूहन्ना 1:1;रोमियों 9:5; 20:28; तीतुस 2:13; इब्रानियों 1:8–9)। और इसी कारण पवित्र आत्मा को भी''परमेश्वर का आत्मा'',''मसीह का आत्मा'', 'आप में मसीह'' (रोमियों 8:9–10) और 'परमेश्वर '(प्रेरितों 5:3,5) भी कहा गया।

निष्कर्ष। ''परमेश्वर का पुत्र'' केवल यीश मसीह के पुत्रत्व को प्रगट करता है जिसकी कोई शुरूआत नहीं है। यीशु मसीह अभौतिक, सत्तामूलक त्रीएकत्व और अनन्त भाव में परमेश्वर के पुत्र हैं। अनन्त व अदृश्य परमेश्वर ने कुंवारी मरियम के द्वारा मनुष्य का रूप धारण करके प्रत्यक्ष परमेश्वर के रूप में अपने आपको प्रगट करते हुए धरती पर कदम रखा।

10.यीशु मसीह ने अपने आप को 'मनुष्य का पुत्र' कहा।

मनुष्य के पुत्र लोगों का सम्बन्ध

पुराने नियम में 'मनुष्य के पुत्र' का सामान्य अर्थ मनुष्य था(भजन 8:4)। यहेजकेल भविष्यवक्ता के अनुसार, यह मनुष्य की सारी कमज़ोरियों और निर्भरताओं को प्रगट करता है(यहेजकेल 2:1,3,6,8;3:1,4,10,17,25 इत्यादि)। इसी प्रकार से 'दुष्टता की सन्तान'(2शमूएल3:34)का अर्थ ''दुष्ट लोगों'' से है, ''परदेशियों के पुत्र'' (निर्गमन 12:43) का अर्थ परदेशियों से है;' बिजली का पुत्र'' (मरकुस 3:17) का अर्थ 'उत्तेजना पूर्ण मनुष्य से'' है। इसी प्रकार से ''संगीत की बेटी' (सभोपदेशक 12:4) को अर्थ संगीत के स्वरों से है।

मनुष्य के पुत्र से मसीह का सम्बन्ध

(1) दानिय्येल 7:9–14 में ''मनुष्य के पुत्र का वर्णन'' सुसमाचार में मसीह की उपाधि बन गयी।

(यूहन्ना 12:34को छोड़कर) सुसमाचार के हर मामले में, इस उपनाम को यीशु मसीह ने अपने लिए इस्तेमाल किया। मत्ती 26:64 की तुलना दानिय्येल 7:13 से करें। केवल स्तिफनुस ने ही यह कहा कि वह मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिने पर खड़ा हुआ देखता हूँ (प्रेरितों 7:56)। इसके अलावा उसके बारे में सम्बोधित करते हुए किसी बात को नहीं सुना गया। प्रकाशितवाक्य 1:13 व 14:14 यीशु के मसीह, उद्धार और न्याय के मध्यस्थ,के रूप में कार्य करने के सम्बन्ध में ''मनुष्य का पुत्र' का इस्तेमाल करता है।

(2) 'मनुष्य का पुत्र' उपनाम कई अनुच्छेदों में मसीह की दीनता को प्रगट करता है

उसके पास अपना कोई स्थाई घर नहीं था (मत्ती 8:20), वह अपने जीवन में बहुत से कष्टों को सहने पर था(मत्ती12:12,)उसे धोखा देकर मृत्यु दण्ड मिलने वाला (मत्ती 26:24) और दफन किया जाने वाला था (मत्ती 12:40)।

(3) 'मनुष्य का पुत्र' उपनाम कई अनुच्छेदों में मसीह को सम्मान प्रदान करता है।

वह मृतकों में से जी उठेगा(मत्ती 17:9), जिस तरह से वह धरती को छोड़कर गया ठीक इसी प्रकार एक दिन वह स्वर्गदूतों के साथ अपनी पिता की महिमा में वापस आयेगा (मत्ती 16: 27; 24:27,30,44) और एक न्यायी के रूप में अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा(मत्ती 25:31;26:64)।

(4) 'मनुष्य का पुत्र' उपनाम कभी यीशु को महज़ एक मनुष्य के रूप में नहीं दर्शाता, परन्तु मनुष्य का रूप धारण करने वाले परमेश्वर के रूप में प्रगट करता है।

मनुष्य का पुत्र व्यवस्था का परमेश्वर है (सब्त) (मत्ती 12:8)। मनुष्य का पुत्र को इस धरती पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (मत्ती 9:6)। मनुष्य का पुत्र इस मकसद के साथ दुनिया में आया कि वह बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने

प्राण दे (मत्ती 20:28)। मनुष्य का पुत्र खोये हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आया (लूका 19:10)। मनुष्य का पुत्र फिर से मृतकों में से जी उठेगा (मरकुस 10:33–34)। यशायाह 42:1–7;यशायाह 49:1–8; यशायाह 52:13–53:12 में 'परमेश्वर के दास' की तुलना करें (इब्रानीः आबेद याहवेह)।

(5) यहूदियों सामने इस उपनाम का इस्तेमाल यहूदियों के बीच में करने के द्वारा, यीशु ने अपने आप को अचानक से नहीं परन्तु धीरे–धीरे प्रगट किया।

यदि उसने एकदम जाकर अपने आप को मसीह कह दिया होता, तो शायद वह उसे स्वीकार कर लेते। लेकिन अब यहूदी सोचने लगे कि, ''यह मनुष्य का पुत्र कौन है''?(यूहन्ना 12:34)

यीशु उनके और हमारे सामने चुनौति रखता हैः ''तुम मसीह के बारे में क्या सोचते हो?वह किसका पुत्र है?(मत्ती 22:42)।

परिशिष्ट 9

(पवित्र आत्मा)
पवित्र आत्मा मसीहियों को उनके कष्टों के बीच में सम्भालता है

रोमियों 8:26–27 मसीहियों में परमेश्वर के कामों का वर्णन किया गया है।

अनुवाद। **8:26,** और इसी तरह से पवित्र आत्मा हमेशा हमारी कमज़ोरियों में सहायता करने(हाथ बढ़ाने)के लिए आता है। क्योंकि हम नहीं जानते हैं कि जिस तरह से प्रार्थना करनी चाहिए वह कैसे की जाती है, लेकिन आत्मा हमारी ओर से *लगातार* निःशब्द आहें भर भर के (जिसे शब्दों में बयान करने से बाहर है) प्रार्थना करता है। **8:27** और जो *लगातार* हमारे हृदयों को जांचता है वह आत्मा की मनसा को जानता है, क्योंकि आत्मा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार लगातार सन्तों के लिए प्रार्थना करता है।

इसी तरह से का मतलब है, जिस प्रकार से आने वाले समय में महिमित भविष्य की आशा मसीहियों को *वर्तमान कष्टों* का सामना करने का बल प्रदान करती है, उसी प्रकार पवित्र आत्मा उसकी *वर्तमान कमजोंरियों* में सहायता करता है।

दुर्बलताएं किसी भी प्रकार की दुर्बलताएं हो सकती हैंः या तो इस टूटे संसार की सामान्य तकलीफें या फिर यीशु के खातिर सताव। वे परीक्षाएं भी हो सकती हैं(इब्रानियों 4:15) या शरीर में लगे हुए कांटे (2 कुरिन्थियों 12:5)। किसी भी प्रकार की दुर्बलता में मसीहियों को प्रार्थना करने के लिए नहीं रोका गया है।

पवित्र आत्मा की निरन्तर सहायता के द्वारा मसीहियों को दुर्बलता और क्लेशों में सम्भाला जाता है। पवित्र आत्मा बड़ी दीनता के साथ मसीहियों के बोझों और दुःखों को अपने ऊपर ले लेता है उनकी सहायता करता है।

मसीहियों के जीवन में बहुत सी नैतिक व आत्मिक असफलताएं होती हैं(रोमियों अध्याय 7), जिसकी वजह से उसे जो काम या प्रार्थना करनी चाहिए वह नहीं कर पाता। मसीहियों को सदैव ही इस बात का पता नहीं होता कि उसे क्या प्रार्थना करनी चाहिए अर्थात उस समय पर क्या प्रार्थना करनी चाहिए। हालांकि व सामान्य तौर पर प्रार्थना करना जानता है ले(मत्ती 6:9–13; कुलुस्सियों 1:9–12),लेकिन उसे किसी खास जरूरत के समय,कठिनाई और परिस्थिति में प्रार्थना करना नहीं आता है। वह नहीं समझ पाता कि प्रार्थना में बोले गये शब्द परमेश्वर की मनसा से मेल खा रहे हैं या नहीं (2कुरिन्थियों 12:7–10; फिलिप्पियों 1:22–24; 1 यूहन्ना 5:14)। कई बार मसीहियों को अपने मन के भीतर छुपी ज़रूरतों के बारे में भी पता नहीं रहता। इसी कारण वह उन ज़रूरतों को अपनी प्रार्थनाओं में व्यक्त नहीं करते या कर नहीं पाते।

प्रार्थना परमेश्वर (पिता) से की जाती है(मत्ती 6:9)। परमेश्वर हृदय को जाँचता है(यिर्मयाह 17:10; प्रकाशितवाक्य 2:23)। पवित्र आत्मा मसीहियों के हृदय में वास करता है(1 कुरिन्थियों 3:16) और विश्वासी की वास्तविक ज़रूरत को जानता है। और परमेश्वर हमेशा पवित्र आत्मा की मनसा का पहिचानता है। पवित्र आत्मा परमेश्वर का आत्मा होता है और हमेशा परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार हर अहम ज़रूरत के लिए प्रार्थना करता है।

मसीही अपनी ज़रूरतों को शब्दों में बयान नहीं कर सकते, क्योंकि वे ऐसा करना जानते ही नहीं और वे अपनी ज़रूरतों को बता ही नहीं पाते।

मसीही बातों में अपनी ज़रूरतों को व्यक्त नहीं करते, क्योंकि उसे पता ही नहीं होता कि उसके जीवन में वे ज़रूरतें हैं।

एक सच्चे वकील या सहायक के रूप, पवित्र आत्मा मसीही जन की असल ज़रूरत को पहिचानता है और परमेश्वर से उन ज़रूरतों के पूरा होने के लिए प्रार्थना करता है।

पाँच प्रमुख बातों का अवलोकन किया गया हैः

पहला अवलोकनः पवित्र आत्मा मध्यस्थता करता है प्रार्थना करने वाला मसीही नहीं।

कई मसीही लोग इन आयतों के बारे में कहते हैं कि ये आयतें बताती है कि मसीही लोग परमेश्वर से किस प्रकार प्रार्थना करते हैं। वे कहते हैं कि पवित्र आत्मा उनसे बड़ी आहें भर भर के प्रार्थना करवाता है अर्थात चाह,इच्छा, भावों के साथ प्रार्थना करवाता है, जिन्हें शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता, जिन्हें आप सुन तो सकते हैं परन्तु आप समझ नहीं सकते। वे कहते हैं कि पवित्र आत्मा उन्हें प्रार्थना के लिए शब्द प्रदान करता है और बताता है कि उन्हें अपनी प्रार्थनाओं और निवेदनों को किस प्रकार रखना हैः चाहे वे बुद्धिजीवी बातें हो या अबोध बातें हों। इस प्रकार की व्याख्या से एक बात आसानी से समझ में आती है कि मसीही लोग आहें भर भर के शोर मचाते हुए प्रार्थना करते हैं और कहा जाता है कि पवित्र आत्मा उनमें होकर प्रार्थना कर रहा है। इसकी वजह से मसीही लोग ऐसा भी सोचने लगे हैं कि परमेश्वर के सामने सबसे ज्यादा ग्रहण योग्य प्रार्थना अबोध भाषा में प्रार्थना हैं। दूसरे मसीही लोग इस प्रकार की प्रार्थना को 'अन्यान्य भाषा में प्रार्थना के नाम से जानते हैं(1 कुरिन्थियों 14:14–17), जिसे संयोग से लोगों की रीति से प्रार्थना कहा गया आत्मा की रीति से प्रार्थना नहीं।

सही बात यह है कि पवित्र आत्मा स्वयं हमारे लिए मध्यस्थता करता है। प्रमुख बात यह नहीं है कि मसीही लोग किस तरह से प्रार्थना करते हैं परन्तु *पवित्र आत्मा* किस प्रकार मसीहियों के लिए परमेश्वर से मध्यस्थता करता है। मनुष्य प्रार्थना *नहीं करता* बल्कि पवित्र आत्मा मध्यस्थता करता है। परमेश्वर द्वारा मनुष्यों की प्रार्थना का उद्देश्य नहीं वरन आत्मा की प्रार्थना की मनसा को पहिचाना जाता है। परमेश्वर मनुष्यों की प्रार्थनाओं में कराहने को नहीं परन्तु आत्मा की कराहट को सुनता है (8:27)।

दूसरा अवलोकन : आत्मा की मध्यस्थता(8:27) मसीह की मध्यस्थता के समान है(8:34)।

यूहन्ना रचित सुसमाचार में, *आत्मा मसीह का पक्ष लेने वाला है,* जो धरती पर रहने वाले मसीहियों पर यीशु मसीह और उसके विचारों और उसकी इच्छाओं को प्रगट करता है (यूहन्ना 14:16–17,26; 16:14रोमियों 8:9–10)। लेकिन रोमियों की पुस्तक में *पवित्र आत्मा मसीहियों को सहायक है,* जो मसीहियों और उनकी जरूरतों को स्वर्ग में परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करता है(8:34; इब्रानियों 7:25; 1 यूहन्ना 2:1–2)! पवित्र आत्मा धरती पर मसीहियों में अपना स्थान धारण करते हुए स्वर्ग में परमेश्वर के सामने उसकी ज़रूरतों को प्रस्तुत करता है। अतः मसीहियों के पास में स्वर्ग के न्यायालय में मसीह उनका मध्यस्थ है और पवित्र आत्मा खुद उसके मन से होकर मध्यस्थता करता है। मसीह की मध्यस्थता एक पिता द्वारा अपने परिवार के

सभी सदस्यों के लिए की जाने वाली प्रार्थना है, लेकिन पवित्र आत्मा की मध्यस्थता एक माँ की प्रार्थना के समान है जो अपने बच्चों की ज़रूरतों को पिता के सामने रखती है।

तीसरा अवलोकनः पवित्र आत्मा की कराहट लुभावने वाले शब्दों को जोड़कर बनी प्रार्थना नहीं है।

आत्मा की मध्यस्था की विषय वस्तु निश्चय ही होती है, लेकिन या तो उसे प्रगट किया या सुना जाता है या फिर बिल्कुल भी प्रगट किया या सुना नहीं जाता।

इस भाग का ग्रीक (अलालिटौस, 'लाइलो' अर्थात 'बोलना') और सीरिया या अरमेनिया का अनुवाद कहता है किः 'पवित्र आत्मा हमारे लिए स्वयं निःशब्द (अबोल, शब्दों द्वारा प्रगट नहीं किया गया, निःशब्द,शब्दों द्वारा बयान से बाहर बातें) वेदनाओं,आहों के साथ प्रार्थना करता है, *वेदना जो लुभावने शब्दों में न प्रगट होती है* और न सुनी जाती है लेकिन उन्हें साधारण शब्दों में महसूस व सुना जा सकता है।

बाइबल का लैटिन अनुवाद कहता हैःआत्मा हमारे लिए उच्चारणहीन (जिसे न बोला, न प्रगट किया और न सुना जा सके) वेदनाओं के साथ प्रार्थना करता हैः *ऐसी वेदनाएं जिन्हें न तो प्रगट किया जा सकता और न सुना जा सकता है।*

चौथा अवलोकन : आत्मा की मध्यस्थता मसीहियों की बोल या अबोल कराहट के रूप में परमेश्वर के सिंहासन तक पहुँचती हैं।

आत्मा के कराहने को मसीही जन के हृदय पर *पंजीकृत होने पर ही समझा जा सकता है*, क्योंकि परमेश्वर मसीही जन के हृदय को ही जाँचता और वहाँ ही वह उसकी निःशब्द(जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता) अकथनीय (ध्वनि रहित) कराहट प्राप्त होती है। आत्मा की मध्यस्थता अपनी अबोल और अकथनीय कराहट के द्वारा मसीहियों को अपनी प्रार्थना का औज़ार बना लेती है। *अतः कराहट या तो ध्वनि द्वारा प्रगट होती है या निःशब्द आहों द्वारा।*

अतः मसीहियों को सावधान रहना चाहिए कि कहीं वे अपनी ध्वनियुक्त व पवित्र आत्मा द्वारा ध्वनिरहित कराहट के बीच दुविधा में न पड़ें। मसीही जन जानता है कि पवित्र आत्मा उसके हृदय में परमेश्वर से उसके लिए प्रार्थना करने हेतू निःशब्द या अकथनीय कराहट या आहों का इस्तेमाल करता है, लेकिन जब वह लुभावने शब्दों, आहें भरते हुए और दूसरे प्रकार की आवाज़ों के साथ प्रार्थना करता है तो वह उन प्रार्थनाओं को आत्मा द्वारा मध्यस्थता करना नहीं कह सकता। मसीहियों को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर सदैव हमारे हृदय के लक्ष्यों और उद्देश्यों को जाँचता है (8:27; इब्रानियों 4:12–13)! रोमियों 8:26–27 बताते हैं कि किस पवित्र आत्मा मसीहियों के लिए मध्यस्था करता है न कि मसीहियों को किस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए!

पाँचवा अवलोकन : परमेश्वर जानते हैं कि आत्मा उसकी सिद्ध इच्छा के अनुसार प्रार्थना या मध्यस्थता करता है।

परमेश्वर लगातार मसीही के हृदय की जाँच करता है। वह उसके हृदय में बसी हर बात को जानता है (1 शमूएल 16:7; 1 इतिहास 28:9; यिर्मयाह 17:9–10; 1 कुरिन्थियों 4:5; इब्रानियों 4:13) और मसीहियों के लिए

पवित्र आत्मा द्वारा की जाने वाली प्रार्थना की विषय वस्तु,उसके अर्थ व मकसद को जानता है। रोमियों 8:26–27 में वचन पवित्र आत्मा द्वारा मसीहियों के लिए सेवकाई करने के बारे में बताते हैं न कि मसीही जन परमेश्वर से क्या प्रार्थना कर रहा है! मसीही कभी इस बात का दावा नहीं कर सकता कि जिन बातों को वह बेमतलब शब्दों के साथ या आहें भर के प्रार्थना कर रहा है वे पवित्र आत्मा द्वारा उसके लिए की जाने वाली प्रार्थनाएं हैं। क्योंकि पवित्र आत्मा की प्रार्थनाओं की विषय वस्तु को उस पर प्रगट नहीं किया गया।

क्योंकि पवित्र आत्मा परमेश्वर का आत्मा है और ठीक परमेश्वर के समान ही सोचता है, आत्मा की मध्यस्थता सिद्ध और प्रभावशाली होती है। वह कभी असफल नहीं होता। इसी कारण एक भी सच्चा मसीही भटकता नहीं है(8:29–30)। इसी कारण उस मसीही को कुछ नहीं होता जिसे परमेश्वर की अनुमति न मिली हो या जिसने उसके लिए परमेश्वर की सिद्ध इच्छा को पूरा करने के लिए कोई यत्न न किया हो(8:28)। मसीहियों के ह्रदय में उठने वाली ये कराहटें व आहें इस बात को दर्शाती है कि 'परमेश्वर हमारे मांगने या हमारी कल्पनाओं से ज्यादा हमारे लिए करता है' (इफिसियों 3:20)।

परिशिष्ट 10 (मसीही चरित्र)
जीभ के द्वारा कानाफूसी व संयम

1. कानाफूसी व निन्दा

खोजें व चर्चा करें। बाइबल चुगली व निन्दा करने के बारे में क्या कहती है?
पढ़ें।

- नीतिवचन 10:18 (निन्दा फैलाने वाला मूर्ख होता है)
- नीतिवचन 11:13 (लुतराई करने वाला भेद प्रगट करता है)
- नीतिवचन 16:28 (कानाफूसी करने वाला परममित्रों में भी फूट करा देता है)
- नीतिवचन 17:9 (कानाफूसी करने वाला परममित्रों में भी फूट करा देता है)
- नीतिवचन 26:20 (कानाफूसी झगड़ा उत्पन्न करती है।)
- याकूब 3:1–12 (जीभ अधर्म का एक लोक है और सारी देह पर कलंक लगाती है।)
- 1 यूहन्ना 2:9–11 (जो अपने भाई से बैर रखता है वह अभी भी अन्धकार में रहता है।)

2. नुकसान।

खोजें व चर्चा करें। बाइबल चुगली व निन्दा करने के बारे में क्या कहती है?
पढ़ें।

नीतिवचन 25:18 (कानाफूसी का अर्थ किसी का पीछे से तलवार या तीर से मारने के समान होता है)
नीतिवचन 26:28 (झूठी बातों से घायल करने वाला उससे बैर रखता है)
मत्ती 5:21–22 (क्रोध करना हत्या के समान है)

3.न्याय।

खोजें व चर्चा करें। बाइबल चुगली व निन्दा करने के बारे में क्या कहती है?
पढ़ें।

- नीतिवचन 6:16–19 (परमेश्वर कानाफूसी करने वाले, झूठे साक्षी और झगड़ा उत्पन्न करने वाले मनुष्य से घृणा करता है)
- नीतिवचन 19:5,9 (झूठा साक्षी दण्ड पायेगा व अन्त में नाश किया जाएगा।)
- नीतिवचन प्रेरितों 5:1–11 (हनन्याह और सफीरा ने परमेश्वर से झूठ बोला और दोनो मर गये)

4. बुद्धि।

खोजें व चर्चा करें। बाइबल चुगली व निन्दा करने के बारे में क्या कहती है?
पढ़ें।

- नीतिवचन 8:7–8 (बुद्धिमान व्यक्ति कभी झूठ नहीं बोलता)
- नीतिवचन 13:3 (बुद्धिमान व्यक्ति अपने मुँह की चौकसी करता व अपने प्राण की रक्षा करता है)
- नीतिवचन 14:15 (बुद्धिमान व्यक्ति हर सुनी हुई बात पर विश्वास नहीं करता)
- नीतिवचन 18:13 (बुद्धिमान व्यक्ति पहले बात को सुनकर फिर जवाब देता है)
- नीतिवचन 18:17 (बुद्धिमान व्यक्ति हमेशा दोनों पक्षों की जाँच करता है)
- नीतिवचन 20: 19 (बुद्धिमान व्यक्ति बक बक करने वाले लोगों से दूर रहता है)
- नीतिवचन 22:24 (बुद्धिमान व्यक्ति क्रोधी व्यक्ति से मित्रता नहीं करता)
- मत्ती 5:37 (बुद्धिमान व्यक्ति सदैव ईमानदार, पारदर्शी व सच्चा होता है)

5. जीभ पर संयम बरतने के सिद्धान्त

पढें मत्ती 5:21–26 व मत्ती 12:33–37।
खोजें व चर्चा करें। बाइबल के सिद्धान्त क्या हैं (सिद्धान्त जो हमेशा से सत्य हैं)?

मसीही का ह्रदय उसकी बातों से पता चल जाता है?
एक पेड़ उसके फलों से पहिचाना जाता है। उसी प्रकार एक मनुष्य उसके मुँह से निकली हुई बातों से पहिचाना जाता है। कानाफूसी करने वाली बातें, निन्दा, पीठ पीछे चुगली या गुस्से में की जाने वाली बातें मनुष्य के ह्रदय की दशा को बयान कर देती हैं।

मसीहियों को अन्त में अपने मुँह से बोली गयी हर एक बेकार बात का हिसाब देना पड़ेगा।

यीशु मसीह, मसीही व उसके भाई बहनों के बीच में मौजूद होता है।

शिष्यता की पुकार यीशु मसीह को शिष्यों और उसके भाई बहनों के बीच लाकर खड़ा कर देती है। यीशु मसीह हमारे भाई बहनों से कभी अलग नहीं होगा। हर एक अपशब्द (कानाफूसी, निन्दा या गुस्से में कही गयी बात), जिसके द्वारा मण्डली या लोगों के बीच में भाईयों या बहनों का अपमान होता है या जिसके कारण भाई या बहन के मन में मण्डली के विरूद्ध दूरी या बैरभाव उत्पन्न होता है, हमारी आराधना व बलिदान को परमेश्वर के सामने ग्रहणयोग्य ठहरने में रूकावट डालता है। मसीही आराधना को भाई व बहनों की सेवा से अलग नहीं किया जा सकता (1यूहन्ना 2:9–11)। यीशु मसीह ने हमारे भाई बहनों की देखरेख को हमारे हाथों में सौंपा है। क्रूस पर अपनी जान देने वाले भाई अर्थात यीशु मसीह तक पहुँचने के लिए हमें ज़मीनी भाई बहनों से रिश्ता जोड़ना बहुत ज़रूरी है। यह परमेश्वर का अनुग्रह है कि वह हमें न्याय के दिन दण्डित करने की बजाय भाई बहनों से मेल मिलाप करने का अवसर प्रदान करता है।

परिशिष्ट 11 (शिष्यता)
शिष्यता के प्रशिक्षण में व्यवहारिक तरीकों के इस्तेमाल करने का लाभ

शिष्यता प्रशिक्षण कोर्स बहुत से व्यवहारिक तरीकों की शिक्षा देता है। उनके क्या उपयोग व अभिप्राय हैं?

1. आराधना करने का लाभ।

परमेश्वर को जानना ।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए हमें सबसे पहले परमेश्वर को जानना जरूरी होता है। परमेश्वर के किसी विशेष गुण या विशेषता पर मनन करते या शिक्षा देते हुए हर बार जब आराधना करते हुए मिलते हैं,तो लोग परमेश्वर को और भी बेहतर तरीके से जान पाते हैं। जो लोग अलग पृष्ठभूमि या 'देवताओं' पर आस्था रखने वाले मतों से आते हैं, उन्हें ऐसे परमेश्वर के बारे में पता चलता है कि जिसने अपने आप को बाइबल और यीशु मसीह में होकर प्रगट किया है। परमेश्वर की कुछ विशेषताएं, परमेश्वर की पवित्रता, परमेश्वर की धार्मिकता, परमेश्वर का प्रेम, परमेश्वर की दया और परमेश्वर की विश्वासयोग्यता हैं।

आराधना करना सीखना

आराधना केवल गीत गाने से बढ़कर है। आराधना भय, प्रशंसा,अधीनता, और परमेश्वर के प्रति सर्मपण का भाव है, जो भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और जीवन की विभिन्न शैलियों में प्रगट होता है।

–विषय वस्तु में विविधता।परमेश्वर की आराधना करने के द्वारा खास तौर पर ऊपर बताए गये परमेश्वर के गुणों के अनुसार आराधना करने से,हर एक आराधना सभा भिन्न, आर्कषक व शिक्षाप्रद बन जाती है।

–तरीकों में विविधताएं। प्रार्थना में की जाने वाली आराधना,शब्दों में,संगीत में,गीतों में,और शान्ति में हो सकती है। और जीवन में की जाने वाली आराधना का कारण पापों का दूर होना, आदतों का बदलना, आदर्श जीवन जीना, और परमेश्वर तथा मनुष्यों की सेवा करना हो सकता है।

2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय में पसन्दीदा सिद्धान्त के तरीके का लाभ।

परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना(शान्त समय या भक्ति का समय) एक मसीही अनुशासन है,जिसका अभ्यास मसीह को अपने जीवन में लगातार और यदि सम्भव हो तो प्रतिदिन करना चाहिए।

परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय का पसन्दीदा सैद्धान्तिक तरीका एक मसीही को एक ही समय में बहुत से मसीही अनुशासन में प्रशिक्षित करता हैः प्रार्थना, वचन पढ़ना, चुनाव करना ,मनन करना, मध्यस्थता करना तथा दूसरों को सुसमाचार प्रचार करना।

कदम 1. प्रार्थना

आप परमेश्वर से मिलने के लिए अपने ह्रदय को तैयार करना सीखते हैं। परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए आप अधिकाई से प्रार्थना करते हैं। आप चाहें तो इस प्रकार छोटी प्रार्थना कर सकते हैं," हे परमेश्वर मेरी आंखों को खोल ताकि मैं तेरी व्यवस्था की सुन्दर बातों को देख सकूं "(भजन 119:18)।

कदम 2.बाइबल से अनुच्छेद को पढ़ें।

आप अकेले बाइबल पढ़ना सीखते हैं। आप केवल एक शान्त स्थान में जाकर, अपने भीतरी विचारों पर ही मनन करके या किसी मानव रचित कविता पर ध्यान लगाकर परमेश्वर से मुलाकात नहीं कर पाते हैं। आपकी परमेश्वर से मुलाकात तब होती है जब आप परमेश्वर से उसके वचनों द्वारा बात करने के लिए कहते हैं। इसलिए आप बाइबल के खण्ड को पढ़े और अपेक्षा करें कि परमेश्वर बाइबल में लिखित वचनों के द्वारा आप से बात करेगें।

कदम 3. पसन्दीदा सिद्धान्त का चुनाव करें।

आप चुनाव करने के द्वारा अपने आप को सीमित करना सीखते हैं।

–उददेश्य। बाइबल अध्ययन का उद्देश्य बाइबल खण्ड को समझना तथा उससे प्राप्त शिक्षा को अपने जीवन में लागू करता है, तो परमेश्वर के साथ व्यतीत करने वाले व्यक्तिगत समय का उद्देश्य उस दिन के लिए परमेश्वर के साथ घनिष्ठ

सम्बन्ध स्थापित करना है। इसलिए बाइबल के अनुच्छेद में सारे सत्यों या सिद्धान्तों पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाय किसी एक सत्य पर ध्यान केन्द्रित करता अच्छा है ।

–सीमित करना। बाइबल अनुच्छेद में प्राप्त बहुत सी सच्चाईयों में से किसी एक सच्चाई का चुनाव करने के लिए अपनी इच्छाओं को आत्मिक मुद्दों तक सीमित जुड़ा रखने का प्रयास करें। इसे आपको उन बातों पर ध्यान लगाने में सहायता मिलती है जो वास्तव में महत्वपूर्ण है, और आपका ध्यान आपकी पसन्द की बातों में या उन बातों की ओर भटकने से बच जाता है जो अपने आप को आपके सामने अत्यावश्यक प्रस्तुत करती हैं। इससे आपको 15 मिनट के भीतर ही परमेश्वर के साथ पर्याप्त समय बिताने में सहायता मिलती है। गहन बाइबल अध्ययन में इससे कहीं ज़्यादा समय लगता है।

कदम 4. अपने पसन्दीदा सत्य पर मनन करें।

आप बाइबल की सच्चाईयों पर मनन करना सीखते हैं।

–उद्देश्य। बाइबल के अनुच्छेद को पढ़ने तथा उस पर मनन करने में काफी बड़ा अन्तर है। बाइबल पढ़ने का उददेश्य बाइबल की अधिक जानकारी हासिल करना व उसके भली प्रकार से बाइबल के परिदृश्य को देखना होता है। बाइबल अनुच्छेद पर मनन करने का उद्देश्य उस अनुच्छेद के गूढ़ प्रकाशन को प्राप्त करना तथा यह पता करता है कि परमेश्वर आपसे उस प्रकाशन के द्वारा अपने जीवन में क्या काम करने की अपेक्षा करते हैं।

–तरीका। मसीही मनन के अर्न्तगत आपकी पसन्दीदा सच्चाई में शब्दों के अर्थ के बारे में विचार करना, प्रार्थना के द्वारा यह जानना कि परमेश्वर आपसे क्या कहना चाहते हैं और उस सच्चाई को अपने जीवन से जोड़कर देखना शामिल होता है। अपनी कौपी में लिखने के द्वारा एक निष्कर्ष तक पहुँचें।

कदम 5. अपने पसन्दीदा सत्य के लिए प्रार्थना करें।

जब परमेश्वर आपसे बात चीत करते हैं तो आप परमेश्वर को प्रतिउत्तर देना सीखते हैं। आप प्रार्थना करना सीखते हैं।

–बाइबल में लिखित बातों में परमेश्वर द्वारा बोली गयी बातों को जानने से आपको प्रार्थना के विषयों को जानने में सहायता मिलती है।
–आपकी प्रार्थनाएं परमेश्वर के साथ बातचीत बन जाती है– आप केवल उन बातों का ही जवाब देते हैं जो बातें परमेश्वर ने बाइबल के द्वारा आपसे कही हैं।
–आप केवल अपने लिए ही नहीं, वरन दूसरों के लिए,परिवार के सदस्यों, आपके नज़दीक व दूर रहने वाले लोगों के लिए भी प्रार्थना करते हैं।

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत(शान्त समय) करने का लाभ।

यदि आप में से दो लोग या छोटा समूह एक समान बाइबल अनुच्छेद को सप्ताह में प्रतिदिन पढ़ते और फिर सप्ताह में एक बार उसके बारे में समझाते हैं तो आप इस प्रकार प्रतिदिन एक दूसरे की बढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। छोटे समूह में हर सप्ताह अपने विचारों को व्यक्त करने से हर एक जन को लगातार परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताने में सहायता मिलती है।

अपने छोटे समूह में परमेश्वर के साथ पिछले सप्ताह व्यक्तिगत समय के दौरान सीखी गयी बातों को साझा करने के द्वारा असल में आप एक दूसरे प्रेम के रिश्ते व कामों में बढ़ने की प्रेरणा दे रहे हैं (इब्रानियों 10:24–25)।

अपने छोटे समूह में परमेश्वर के साथ पिछले सप्ताह व्यक्तिगत समय के दौरान सीखी गयी बातों को साझा करने के द्वारा असल मे आप एक दूसरे को सिखा रहे हैं(कुलुस्सियों 3:16)। क्योंकि पवित्र आत्मा हर मसीही में वास करता है, वह छोटे समूह के प्रत्येक सदस्य को शिक्षक या समूह का अगुवा बनने की शिक्षा देता है।

4. पाँच कदमों के बाइबल अध्ययन के तरीके का लाभ।

पाँच कदमों वाले बाइबल अध्ययन के तरीके का उद्देश्य छोटे समूह के सारे सदस्यों को सक्रीय रूप से बाइबल अध्ययन के 5 भागों में शामिल करना है। नहीं तो समूह के अगुवे के लिए बाइबल अध्ययन को बाइबल शिक्षा में परिवर्तित करना और कुछ ही बोलने वाले लोगों का पूरे बाइबल अध्ययन पर कब्ज़ा करना बहुत आसान हो जाता है।

कदम1. पढ़ना
आप एक साथ मिलकर बाइबल पढ़ना सीखते हैं।
समूह के एक सदस्य द्वारा बाइबल पढ़ने की बजाय,समूह के सभी सदस्यों को बाइबल अनुच्छेद में बारी बारी एक या दो वचन पढ़ने का अवसर मिलता है। प्रारम्भ से ही समूह का प्रत्येक सदस्य बाइबल अध्ययन में शामिल हो जाता है।

–बाइबल पढ़ने का उददेश्य जानकारी हासिल करना तथा बाइबल खण्ड का अच्छा परिदृश्य प्राप्त करना होता है। लेकिन बालबल अध्ययन का उद्देश्य बाइबल अनुच्छेद में प्राप्त सारी सच्चाईयों को समझना और उन्हें सम्भवतः इस्तेमाल करना है।

कदम 2. खोज करना

आप बाइबल की उन बातों पर ध्यान केन्द्रित करना सीखते हैं जिन्हें आप समझ सकते हैं न कि उन बातों पर जो आपकी समझ से बाहर हैं। इससे पहले की आप बाइबल अनुच्छेद की सारी कठिन सच्चाईयों को समझने या सारे प्रश्नों के उत्तर देने की दलदल में धँसने लगें, आपको सुझाव दिया जाता है कि आप उन बातों पर ध्यान दें जो आपको आसानी से समझ आ रही हैं और जो बातें आपके मन और हृदय को छूती हैं। बाइबल अध्ययन का समय सकारात्मक आनन्ददायक सत्यों की खोज और सच्चाईयों के उत्तेजना पूर्ण इस्तेमाल से भरा होना चाहिए। यह समय समस्याओं, बिना उत्तर प्राप्त प्रश्नों, और कठिन बहस जैसे नकारात्मक तत्वों से भरा नहीं होना चाहिए। इसी कारण से सत्य की खोज को प्रश्नों से पहले रखा गया है।

कदम 3. प्रश्न करना

आप सही तरीके से बाइबल की व्याख्या करना सीख जाते हैं।

बाइबल में लिखित बातें किसी मनुष्य के नहीं परन्तु परमेश्वर के विचार हैं(यशायाह 55:8–9)। बाइबल में बहुत सी बातें हैं जिन्हें समझना मुश्किल है(2 पतरस 3:16)। इसलिए परमेश्वर के लिए आपको वे सारी बातों को समझाना जरूरी हैं जिन्हें उसने बाइबल में रखने की चाह की थी।

– जिस प्रकार से यातायात सम्बन्धी नियम होते हैं जिससे दुर्घटनाएं न हों, वैसे ही बाइबल की व्याख्या करने के अपने नियम होते हैं, जिससे आप बिना कोई गलती करे बाइबल को समझ सकते हैं। मैनुएल 3, अध्याय 29 " बाइबल की उचित व्याख्या को देखें। बाइबल अपने आप में ही बाइबल का उत्तम टीका है। हमेशा बाइबल अनुच्छेद की व्याख्या सम्पूर्ण बाइबल के प्रकाशन में होकर करें। सदैव पुराने नियम की व्याख्या नये नियम के प्रकाशन में होकर करें। समूह का अगुवा आपके द्वारा पूछे गये प्रश्न का समाधान करने के लिए बाइबल के दूसरे अनुच्छेद को पढ़ने का सुझाव दे।

–समूह के अगुवे को प्रश्न नहीं पूछना चाहिए। उसे समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक ऐसे प्रश्न को पूछने का अवसर प्रदान करना चाहिए जो वह समूह के साथ चर्चा करना चाहता है। इस तरह समूह के सारे महत्वपूर्ण प्रश्नों का हल मिल जाएगा। और प्रश्न भी न्यायोच्चित प्रश्न होने चाहिए।

कदम 4.लागू करना

आप बाइबल की शिक्षाओं को अभ्यास करना सीखते हैं(मत्ती 7:24–27)।

–इससे पहले कि वे अपने जीवन में बाइबल अनुच्छेद से प्राप्त सच्चाईयों या सिद्धान्तों को इस्तेमाल करना प्रारम्भ कर दें यह अच्छा होगा कि आप आपस में विचार विमर्श करने के बाद बाइबल से प्राप्त सच्चाईयों पर आधारित सम्भावित कामों की सूची बना लें।

– फिर आप में से प्रत्येक जन उसी सूची में लिखे हुए कामों में एक को लेकर अपने व्यक्तिगत जीवन में उसे लागू करने का प्रयास करें। आप परमेश्वर से पूछ सकते हैं कि वह आपको क्या विश्वास दिलाना,समझाना और करवाना चाहता है। आप स्वेच्छा से अपने व्यक्तिगत अनुभवों को समूह के साथ बांट सकते हैं लेकिन ऐसा करने के लिए आप पर कोई जोर नहीं डाला जाना चाहिए।

कदम 5.प्रार्थना

परमेश्वर के आप से बात करने पर आप परमेश्वर को प्रतिउत्तर देना सीखते हैं।

–बाइबल अनुच्छेद को इकट्ठा अध्ययन करने के बाद,समूह में बारी बारी करके बाइबल अनुच्छेद के माध्यम से परमेश्वर द्वारा की गयी बात का प्रतिउत्तर दें और प्रार्थना करते समय उन्हीं सच्चाईयों को दोहराएं।

–एक वार्तालात की तरह बाइबल अध्ययन और प्रार्थना दो पहलु हैं। पहले परमेश्वर बाइबल अध्ययन के द्वारा आपसे बातें करता है। फिर प्रार्थना के द्वारा आप परमेश्वर से बात करते हैं।

5. मनन तथा याद करने का लाभ।

आप दो मसीही सिद्धान्तों अर्थात मनन करना और याद करना सीखते हैं जो वचन पढ़ने और अध्ययन करने से बिल्कुल अलग हैं।

–आप बाइबल के अनुच्छेद को याद करने से पहले बाइबल अनुच्छेद में मतलब पर मनन करना सीखते हैं।

–आप परमेश्वर के वचनों में से कुछ को अपने मन व हृदय में बसाने का प्रयास करते हैं(भजन संहिता 119:9,11) ताकि जब कभी आप पाप के द्वारा किसी परीक्षा में पड़ें, जब कभी आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करना चाहते हों, जब कभी आप बाइबल में लिखित प्रतिज्ञाओं की उदघोषणा करना चाहें या जब कभी आप परमेश्वर के उत्तर में से लेकर लोगों के प्रश्नों का उत्तर देना चाहें या जब कभी आप परमेश्वर की सच्चाई से शिक्षा देना चाहें तो पवित्र आत्मा उन्हीं वचनों की आपको याद दिला सके।

–आप बाइबल की कुछ अति महत्वपूर्ण आयतों को याद करते हैं।

6.परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना करने का लाभ।

जब परमेश्वर आपसे बातचीत करते हैं तो आप भी परमेश्वर को प्रतिउत्तर देना सीखते हैं। आप सीखते हैं कि बाइबल पढ़ना व उस पर मनन करना दूसरी पुस्तकों को पढ़ने व उन पर मनन करने के समान नहीं होता। बाइबल पढ़ना, अध्ययन करना, मनन करना, और बाइबल के वचनों को याद करना परमेश्वर और आपके बीच बातचीत का केवल आधा हिस्सा है। परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसकी हर बात का जवाब दें। अतः परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताने ,बाइबल पढ़ने व अध्ययन करने के बाद परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर के रूप में प्रार्थना करना अति महत्वपूर्ण है।

7. घर में तैयारी करने का लाभ।

आप घर पर तैयारी करने के द्वारा शिष्य के रूप में अपने प्रशिक्षण प्राप्त करने के काम को लगातार बनाये रखते हैं। आप जब दूसरे मसीही मित्रों के साथ हों केवल तब ही आत्मिक अनुशासन का पालन न करें बल्कि जब आप अकेले या अपने गैर मसीही मित्रों के साथ हों तब भी अनुशासन बनाये रखें।